ज्ञानिनो उपकार उलवे ॥ २ ॥ त्रिजे बोले नाणआसायणाए ते ज्ञानिनि आशातना करे ॥ ३ ॥ चउथे बोले नाणअंतराएणं ते । ज्ञाननि अंतराय पाडवे ॥ ४ ॥ पांचमे बोले नाणपउसेणं ते । ज्ञानिउपर द्वेषकरे ॥ ५ ॥ छठे बोले नाणविसंवायणाजोगेणं ते । ते ज्ञानिसाथे खोटाझघडा विखवादकरे ॥ ६ ॥ एछ प्रकारे बांधे ते ॥ पांच तथा १० प्रकारे भोगवे । ते पांच किया ते कहेछे । मतिज्ञानावरणीय ॥ १ ॥ श्रुतज्ञानावरणीय ॥ २ ॥ अवधिज्ञानावरणीय ॥ ३ ॥ मनपर्यवज्ञाना वरणीय ॥४॥ केवलज्ञानावरणीय ॥५॥ ए ॥ ५ ॥ ज्ञान प्रगट थावा द्ये नहि तथा १० प्रकारे भोगवे ते कहेछे सोयावरणे ॥ १ ॥ सोयविन्नाणावरणे ॥ २ ॥ नेत्तावरणे ॥ ३ ॥ नेत्तविनाणावरणे ॥ ४ ॥ घाणावरणे ॥ ५ ॥ घाणविन्नाणावरणे ॥ ६ ॥ रसावरणे ॥ ७ ॥ रसविन्नाणावरणे ॥ ८ ॥ फासावरणे ॥ ए ॥ फासविन्नाणावरणे १० ए ॥ १० ॥ प्रकारे भोगवे । हवे ज्ञानावरणी

य कर्मनि स्थिति ॥ जघ० । अंतर्मुहुर्त्तनि । उत्० । त्रिश कोडाकोडि सागरोपमनी । अने अबाधा काल करे तो । त्रिण हजार वरसनि स्थिति ॥ १ ॥ हवे दर्शनावरणीय कर्म ॥ ६ ॥ प्रकारे बांधे ते कहेछे ॥ पहिले बोले । दंशणपडिणीयाए ॥ १ ॥ दंशणनिएहवणयाए ॥ २ ॥ दंशण आसायणाए ॥ ३ ॥ दंशण अंतराएणं ॥ ४ ॥ दंशणपउसेणं ॥ ५ ॥ दंशण विसंवायणाजोगेणं ॥ ६ ॥ ए ॥ ६ ॥ प्रकारे बांधे ते ॥ ९ ॥ प्रकारे भोगवे । ते कहेछे । चक्षुदर्शनावरणीय ॥ १ ॥ अचक्षुदर्शनावरणीय ॥ २ ॥ अवधिदर्शनावरणीय ॥ ३ ॥ केवलदर्शनावरणीय ॥ ४ ॥ निद्रा ॥ ५ ॥ निद्रानिद्रा ॥ ६ ॥ प्रचला ॥ ७ ॥ प्रचलाप्रचला ॥ ८ ॥ थिणद्धिनिद्रा ॥ ९ ॥ ए ॥ ९ ॥ प्रकारे भोगवे ॥ दर्शनावरणीय कर्मनि स्थिति जघ० । अंतर्मुहुर्त्तनि । उत्० ॥३०॥ कोडाकोडि सागरोपमनि । अनेअबाधा काल करे तो । त्रिण हजार वरसनि स्थिति ॥ २ ॥ त्रिजुं वेदनीय

कर्म तेहना २ भेद ॥ सातावेदनीय ॥ १ ॥ असाता वेदनीय ॥ २ ॥ तेहमां सातावेदनीय दशप्रकारे बांधे ते कहेछे । पाणाणुकंपयाए ॥ १ ॥ भुयाणुकंपयाए ॥ २ ॥ जीवाणुकंपयाए ॥ ३ ॥ सत्ताणुकंपयाए ॥ ४ ॥ बहुणं पाणाणं भुयाणं जीवाणं सत्ताणं अडुखणयाए ॥ ५ ॥ असोयणयाए ॥६॥ अजुरणयाए ॥ ७ ॥ अतिप्पणयाए ॥ ८ ॥ अपिट्टणयाए ॥ ९ ॥ अपरियावणयाए ॥१०॥ ९ ॥१०॥ प्रकारे बांधे । ते ॥ ८ ॥ प्रकारे भोगवे । मणुणासद्दा ॥ १ ॥ मणुणारुवा ॥ २ ॥ मणुणागंधा ॥ ३ ॥ मणुणारसा ॥ ४ ॥ मणुणाफासा ॥ ५ ॥ मणसुहया ॥ ६ ॥ वयसुहया ॥७॥ कायसुहया ॥८॥ ९ ॥८॥ प्रकारे भोगवे । हवे एहनि स्थिति । जघ० ॥ २ ॥ समयनि उत्० ॥ १५ ॥ कोडाकोड सागरोपमनि । अबाधा काल करे तो । जघ० । अंतर्मुहुर्त्तनि । उत्० । दोढ हजार वरसनी स्थिति । हवे असातावेदनीय ॥ १२ ॥ प्रकारे बांधे ते कहेछे । परडुखणयाए ॥ १ ॥

॥ ४ ॥ परपिट्टणयाए
परसोयणयाए ॥ २ ॥ परजुरणयाए ॥३॥ परतिप्पणयाए ॥ ४ ॥ परपिट्टणयाए
॥५॥ परपरियावणयाए ॥६॥ बहुणं पाणाणं भुयाणं जीवाणं सत्ताणं दुःखणया
ए ॥७॥ सोयणयाए ॥८॥ जुरणयाए ॥ए॥ तिप्पणयाए ॥१०॥ पिट्टणयाए ॥११
परियावणयाए ॥ ए ॥ १२ ॥ प्रकारे बांधे ते ॥८॥ प्रकारे भोगवे । ते । अमणुणा
सद्दा ॥ १ ॥ अमणुणारुवा ॥ २ ॥ अमणुणागंधा ॥ ३ ॥ अमणुणारसा ॥ ४ ॥
अमणुणाफासा ॥ ५ ॥ मणदुहया ॥ ६ ॥ वयदुहया ॥ ७ ॥ कायदुहया ॥ ८ ॥
ए ॥ ८ ॥ प्रकारे भोगवे । हवे एहनि स्थिति । जघ० ॥ १ ॥ सागरना ॥ ७ ॥
भाग करिये एहवा ॥ ३ ॥ भाग एक पल्प ने असंख्यातमे भाग ऊणानि
उत्० । त्रिश कोडाकोडि सागरोपमनि । एहनो आबाधाकाल ॥ ३ ॥ हजार
वरसनो ॥ ३ ॥ हवे चउथुं मोहनीय कर्म ते ७ प्रकारे बांधे ॥ तिव्वकोहे ॥ १ ॥
तिव्वमाणे ॥ २ ॥ तिव्वमायाए ॥ ३ ॥ तिव्वलोहे ॥ ४ ॥ तिव्वदंसणमोहणिज्जे ॥

५ ॥ तिव्रचरित्तमोहणिज्जं ॥ ६ ॥ ए ६ प्रकारे बांधे ते २८ प्रकारे ज्ञोगवे ।
अनंतानुबंधि क्रोध ते पर्वतनि राइसमान ॥ १ ॥ अनंतानुबंधि मान ते पथर
ना स्तंज्ञसमान ॥ २ ॥ अनंतानुबंधि माया ते वांशनि गांठसमान ॥ ३ ॥ अनं
तानुबंधि लोज्ञ ते किरमजना रंगसमान ॥४॥ ए ॥ ४ ॥ रे गति करे नरकनि।
स्थिति करे जावजीवनि । घातकरे समकितनि ॥ ४ ॥ अप्रत्याख्यानी क्रोध ते
तलावना खोटसमान ॥ १ ॥ अप्रत्याख्यानी मान ते हाडकाना स्तंज्ञ समा
न ॥ २ ॥ अप्रत्याख्यानी माया ते । घेटाना शृंगसमान ॥ ३॥ अप्रत्याख्यानी
लोज्ञ ते नगरनि खालना कर्दमसमान ॥ ४ ॥ ए चारे गति करे तिर्यंचनि ।
स्थिति करे वरस एकनि । घात करे देशव्रतनि ॥ ८ ॥ पच्चखाणावरणीय क्रोध
ते वेलुनि लिटिसमान ॥ १ ॥ पच्चखाणावरणीय मान ते लाकडाना स्तंज्ञस
मान ॥ २ ॥ पच्चखाणावरणीय माया ते गोमुत्रिकासमान ॥ ३ ॥ पच्चखाणावर

णीय लोभ ते गाडाना खंजन समान ॥ ४ ॥ ए चारे गति करे मनुष्यनि ॥
स्थिति करे च्यार मासनि । घात करे सर्व व्रतनि ॥ १२ ॥ संज्वलनो क्रोध ते
पाणिनि लिटिसमान ॥ १ ॥ संज्वलनो मानते नेत्रना स्तंभसमान ॥ २ ॥
संज्वलनो माया ते वांसनि छोइ समान ॥ ३ ॥ संज्वलनो लोभ ते । पतंग
तथा हलिद्रना रंगसमान ॥ ४ ॥ ए ॥ ४ ॥ रे गति करे देवतानि । स्थिति
करे पनर दिननि । घात करे केवलज्ञाननि ॥ १६ ॥ ए ॥१६॥ कषाय । हवे
॥ ९ ॥ नो कसाय कहेछे । हास्य ॥ १७ ॥ रति ॥ १८ ॥ अरति ॥ १९ ॥
भय ॥ २० ॥ शोक ॥ २१ ॥ दुगंछा ॥२२॥ स्त्रीवेद ॥२३॥ पुरुषवेद ॥ २४
॥ नपुंसकवेद ॥२५॥ ए चारित्र मोहनीयनि ॥२५॥ प्रकृति ॥ हवे दंसण मो
हनीयनि ॥ ३ ॥ प्रकृति कहेछे । समकित मोहनीय ॥ १ ॥ मिथ्यात्व मोह
नीय ॥ २ ॥ समामिथ्यात्व मोहनीय ॥ ३ ॥ ए ॥ ३ ॥ दर्शन मोहनीयनि ।

एवं सर्व मिलि ॥ २८ ॥ प्रकृति । हवे एहनि स्थिति जघ० । अंतर्मुहुर्तनि । उत्० ॥ ३० ॥ कोमाकोमिसागरोपमनि । अबाधा काल करे तो । जघ० । अंतर्मुहुर्त्तनी । उत्० ॥ ७ ॥ हजार वरसनि छे ॥ ४ ॥ हवे पांचमुं आयुष कर्म । सोल प्रकारे बांधे । तेहमांहि । नारकिनुं आयुष ॥ ४ ॥ प्रकारे बांधे । ते महारंभयाए ॥ १ ॥ महापरिग्गहियाए ॥ २ ॥ कुणिमाहारेणं ॥ ३ ॥ पंचिंदियवहेणं ॥ ४ ॥ तिर्यंचनुं आयुष ॥ ४ ॥ प्रकारे बांधे ॥ माइल्लयाए ॥ १ ॥ नियमिल्लयाए ॥ २ ॥ अलियवयणेणं ॥ ३ ॥ कुमतोलेकुममाणे ॥ ४ ॥ मनुष्यनुं आयुष ॥ ४ ॥ प्रकारे बांधे । पगइभद्दयाए ॥ १ ॥ पगइविणीयाए ॥ २ ॥ साणुकोसयाए ॥ ३ ॥ अमछरियाए ॥ ४ ॥ देवतानुं आयुष ॥ ४ ॥ प्रकारे बांधे । सरागसंजमेणं ॥ १ ॥ संजमासंजमेणं ॥ २ ॥ बालतवोकमेणं ॥ ३ ॥ अकामनिजराए ॥ ४ ॥ ए १६ प्रकरे बांधे । ते ॥ ४ ॥ प्रकारे जो

कर्म ॥ ४ ॥ प्रकारे बांधे ॥ कायअणुज्जुयाए ॥ १ ॥ न्नासाणुज्जुयाए ॥२॥ न्नावा
णुज्जुयाए ॥ ३ ॥ विसंवायणाजोगेणं ॥ ४ ॥ ते ॥ १४ ॥ प्रकारे न्नोगवे । अणि
ठसद्दा ॥ १ ॥ अणिठरुवा ॥ २ ॥ अणिठगंधा ॥ ३ ॥ अणिठरसा ॥ ४ ॥
अणिठफासा ॥ ५ ॥ अणिठगइ ॥ ६ ॥ अणिठठिइ ॥ ७ ॥ अणिठेलावणे
॥८॥ अणिठजसोकित्ति ॥ए॥ अणिठेउठाणकम्मबलवीरियपुरिसाकारपरक्कमे
॥ १० ॥ हिणसरया ॥ ११ ॥ दिणसरया ॥ १२ ॥ अणिठसरया ॥ १३ ॥ अ
कंतसरया ॥ १४ ॥ ए ॥ १४ ॥ प्रकारे न्नोगवे ॥हवे नाम कर्मनि ॥ए३॥ प्रकृ
ति कहेछे ॥ नरकगति ॥ १ ॥ तिर्यंचगति ॥ २ ॥ मनुष्यगति ॥३॥ देवगति ॥
॥ ४ ॥ एकेंड्रिय जाति ॥ ५ ॥ बेइंड्रियजाति ॥ ६ ॥ तेइंड्रिय जाति ॥ ७ ॥ च
उरिंड्रिय जाति ॥ ८ ॥ पंचेंड्रियजाति ॥ ए ॥ उदारिकसरिर ॥ १० ॥ वैक्रेयस
रिर ॥ ११ ॥ आहारकसरिर ॥ १२ ॥ तेजससरिर ॥ १३ ॥ कार्मणसरिर ॥

॥ १४ ॥ उदारिकअंगोपांग ॥ १५ ॥ वैक्रेयअंगोपांग ॥ १६ ॥ आहारकअंगो
उपांग ॥ १७ ॥ उदारिकबंधन ॥ १८ ॥ वैक्रेयबंधन ॥ १९ ॥ आहारकबंधन॥
॥ २० ॥ तेजसबंधन ॥ २१ ॥ कार्मणबंधन ॥ २२ ॥ उदारिकसंघातन ॥२३॥
वैक्रेयसंघातन ॥ २४ ॥ आहारकसंघातन ॥ २५ ॥ तेजससंघातन ॥ २६ ॥
कार्मणसंघातन ॥ २७ ॥ वज्रऋषभनाराचसंघयण ॥ २८ ॥ ऋषभनाराचसंघ
यण ॥ २९ ॥ नाराचसंघयण ॥ ३० ॥ अर्द्धनाराचसंघयण ॥ ३१ ॥ किलकुंसं
घयण ॥ ३२ ॥ छेवट्ठसंघयण ॥ ३३ ॥ समचउरंशसंठाण ॥ ३४ ॥ निगोह्पपरि
मंडलसंठाण ॥ ३५ ॥ सादिसंठाण ॥ ३६ ॥ वामनसंठाण ॥ ३७ ॥ कुब्जसंठाण
॥ ३८ ॥ हुंडसंठाण ॥ ३९ ॥ कालोवर्ण ॥ ४० ॥ निलोवर्ण ॥ ४१ ॥ रातोवर्ण
॥ ४२ ॥ पिलोवर्ण ॥ ४३ ॥ धोलोवर्ण ॥ ४४ ॥ सुरभिगंध ॥ ४५ ॥ दुरभि
गंध ॥ ४६ ॥ तिखोरस ॥ ४७ ॥ कडुवोरस ॥ ४८ ॥ कसायलोरस ॥ ४९ ॥

ये तो ॥ अनंता मोक्षना सुख पामीये ॥ ३ ॥ हवे वाउकायना बे भेद । सुक्ष्म ने बादर ॥ सुक्ष्मते आखा लोकमां भर्यांछे । ते आपणी नजरे न आवे ॥ हवे बादर वायराना नाम कहेछे ॥ पहेले बोले उगमणो ने आथमणो वा ॥ १ ॥ उत्तर ने दक्षीणनो वा ॥ ३ ॥ उंचो निचो ने त्रिछो वा ॥ ४ ॥ वंतोलियो ने मंरूलीयो वा ॥ ५ ॥ गुंजवा ने सुधवा ॥ ६ ॥ एआदिलेइने घणी जातिनो वायरो छे ॥ ते सुंकरवेकरी हणायछे ॥ उघाडे मोढे बोल्ये ॥ झापट नांखवे ॥ सुपडे सोवे झाटकवे ॥ कांतवे । विंझवे ॥ तालोटा वगाडवे ॥ विंझणे विंझवे ॥ हींचोले हीं चकवे ॥ आदिलेइने घणी जातिना शस्त्रेकरी हणाय छे ॥ एकवार उघाडे मोढे बोल्ये ॥ असंख्याता जीव हणाय छे ॥ तेमांथी एकेको जीव निकलीने ॥ वडना बीज जेवडी काया करेतो ॥ जंबुद्विपमां समाय नहि ॥ तेना कुल सातलाख क्रोड छे ॥ तेनुं आउखुं । जघन्य । अंतर्मुहूर्तनुं ॥ उत्कृष्टुं ॥ त्रणहजार वर्षनुं ॥ तेनी

दया पालीये तो अनंता मोक्षना सुख पामीये ॥४॥ पांचमे बोले वनस्पतिकाय तेना बे भेद। सुक्ष्म॥ अने॥ बादर॥ सुक्ष्म ते आखा लोकमां भर्यांछे॥ ते आपणी नजरे न आवे। बादरवनस्पतिकायना बे भेद॥ प्रत्येक अने साधारण॥ प्रत्येक कोने कहीये। सरीरे सरीरे एकेको जीव होय॥ तेने प्रत्येक कहीये॥ अने एक सरीरे अनंता जीव होय। तेने साधारण कहीये॥ हवे प्रत्येकना नाम कहेछे॥ पहेले बोले वृक्ष ने वेलानी जात॥ रिंगणी तलसी ने गुलमनी जात॥ एरंडा आकडा धतुरानी जात॥ दाडम सेलडी ने केलानी जात॥ थ्रो केवडो दाभडो ने तरणानी जात॥ फूल कमल ने नागरवेलनी जात॥ बोरडी केरडो ने कसेलानी जात॥ जुवार बाजरो मठ मकाइनी जात॥ तांदलजो सूवा मोघरी वालोरफलीनी जात॥ ए आदि लेइने घणी जातिनी प्रत्येक वनस्पति छे॥ तेमां भगवाने त्रण प्रकारना जीव कह्याछे॥ संख्याता॥ असंख्याता॥ अनं

ता ॥ तेनी दया पालीये तो अनंता मोक्षना सुख पामीए तेनुं आउखुं० अंत०
उत्० दशहजार वर्षनुं ॥ हवे साधारण वनस्पतिना नाम कहेछे ॥ पहेले बोले
लीलफूल सेवालनी जात ॥ गाजर मूलानी जात ॥ झुंगली लसणनी जात ॥
आडु ने गरमरनी जात ॥ रतालु पिंमालुनी जात ॥ कंटालो थोर खुरसाणी कुं
वार सेलरानी जात ॥ मोथ लुणीनी जात ॥ उगता अंकुरा अने कुणी काक
मीनी जात ॥ ए आदि घणी जातिनी साधारण वनस्पति छे ॥ एक कंद मुलना
ककमामां । अनंता जीव छे ॥ तेनुं आउखुं । जघन्य । उत्० अंतर्मुहुर्तनुं । बेहुना
कुल २८ लाख क्रोमछे तेनी दया पालीये तो अनंता मोक्षना सुख पामीये ॥ हवे
त्रसकायना चार भेद । बे इंडीय । तेइंडीय । चौरेंडीय । पंचेंडीय । हवे बे इंडीयना बे
भेद । अप्रजाप्ता । ने प्रजाप्ता ॥ बेइंडीय तेकोने कहीये । जेने काया । जीभ्या । बे इंडीय
होय । तेने बेइंडीय कहीये । तेना नाम ॥ जलो । किमा पोरा । करमीया ॥ सरमिया

मामणमुंमा । अलसीया । लट । लाल । संख । बीप । कोमा ॥ आदि लेइने घणी जातिना । बेइंडीय जीव ढे ॥ तेना कुलसातलाखक्रोमढे ॥ तेनुं आउखुं जघन्य ॥ अंतर्मुहुर्तनुं उत्कृष्टुं । बारवर्षनुं ॥ तेनी दया पालीये तो अनंता मोक्षना सुख पामीये ॥ तेइंडीयना बे भेद । अप्रजाप्ता ॥ ने प्रजाप्ता ॥ तेइंडीय ते कोने कहीये ॥ काया मूख ने नासिका होय तेने । तेइंडीय कहीये ॥ तेना नाम ॥ जु । लीख । चांचम । मांकम । कीमी । कंथुवा । माटला । धनेमा । जूवा । ईतमी । गींगोमा ॥ घीमेल । गधैया । कानखजुरा ॥ मंकोमा ॥ एआदि लेइने घणी जातिना ॥ तेइंडीय जीव ढे ॥ तेना कुल ॥ आठलाख क्रोम ढे ॥ तेनुं आउखुं ॥ जघन्य । अंतर्मुहुर्तनुं ॥ उत्कृष्टुं । ओगणपंचास दिवसनुं ॥ तेनी दया पालीये तो अनंता मोक्षना सुख पामीये ॥ हवे चौरिंडीयना बे भेद । ते अप्रजाप्ता । ने प्रजाप्ता । चौइंडीय ते कोने कहीये ॥ जेहने काया । मुख । नासिका । अने आंख । होय

तेने चौइंडीय जीव कहीये। तेना नाम माखी मसला। डांस। मछर। भमरा। तीड।
पतंग। करोलीया। कंसारी। वींछी। खडमांकडी। बगा। धुडीया। फूदा॥ एआदि
लेइने घणी जातिना॥ चौइंडीय जीव छे॥ तेना कुल नवलाख क्रोडछे। तेनुंआउखुं।
जघन्य। अंतर्मुहुर्ततनुं॥ उत्कृष्टुं॥ छमासनुं॥ तेनी दया पालीये तो अनंता मो
क्षना सुख पामीये॥ हवे पंचेंडीय ते कोने कहीये। जेने काया। मुख नासिका।
आंख। कान। एप्रमाणे होय। तेने पंचेंडीय कहीये॥ तेना बे भेद॥ अप्रजाप्ता।
अने प्रजाप्ता। तेनी ॥४॥ जाति॥ नारकी। तिर्यंच। मनुष्य। देवता। तेमां १४
भेद नारकीना॥ ४८ भेद तिर्यंचना॥ ३०३ भेद मनुष्यना॥ १९८ भेद देव
ताना॥ वली तेमां देवताना चार भेद॥ भवनपति॥ वाणव्यंतर॥ जोतिषी॥
वैमानिक॥ मनुष्यना चार भेद॥ १५ कर्मभूमीना मनुष्य॥ ३० अकर्म भूमी
ना मनुष्य॥ ५६ अंतरद्विपना मनुष्य॥ १४ स्थानकना समूर्छीम मनुष्य॥ हवे

नारकीने देवतानी स्थिती ॥ जघन्य दशहजार वर्षनी । उत्कृष्टी तेत्रीस सागरोपमनी ॥ तिर्यंचने मनुष्यनी स्थिती । जघन्य अंतर्मुहूर्तनी । उत्कृष्टी त्रणपल्योपमनी तेनी दया पालीये तो अनंता मोक्षना सुख पामीये ॥ इतिश्री छकायना बोल सम्पूर्ण ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

श्रीपार्श्वनाथाय नमः ॥ अथ श्रीनवतत्व लिख्यते ॥ हवे विवेकि सम्यक्त्वदृष्टि जीवने । नवपदार्थ जेहवा छे । तेहवा । तथा रूप बुद्धिप्रमाणे गुरु आम्नायथि धारवा ॥ ते नवपदार्थना नाम कहेछे ॥ जीवतत्व ॥ १ ॥ अजीवतत्व ॥ २ ॥ पुण्यतत्व ॥ ३ ॥ पापतत्व ॥ ४ ॥ आश्रवतत्व ॥ ५ ॥ संवरतत्व ॥ ६ ॥ निर्जरातत्व ॥ ७ ॥ बंधतत्व ॥ ८ ॥ मोक्षतत्व ॥ ९ ॥ हवे जीवतत्व ते केहने कहिये ॥ चैतन्यलक्षण ॥ सदास उपयोगी ॥ असंख्यात प्रदेशी । सुखदुःखनो जाण ॥ सुखदुःखनो वेदक तेहने जीवतत्व कहिये ॥ १ ॥ अजीवतत्व ते केहने कहिये

रनीपरे ॥ लोहपिंम अग्निनी परे । लोलीभूत थइ बंधाय ॥ तेहने बंधतत्व कहि
ये ॥८॥ मोक्षतत्व ते सकल आत्माना प्रदेशथि सकल कर्मनुं छुटवुं ॥ सकल
बंधनुं मुकाववुं ॥ सकल कार्यनि सिद्धि थाय ॥ तेहने मोक्षतत्व कहिये ॥ ए ॥
ए नव पदार्थनुं जाणपणुं ॥ तेहने तत्व कहिये ॥ हवे जीवनो एक भेद छे ॥ स
कल जीवोनुं चैतन्य लक्षण एक छे ॥ माटे संग्रहनये करि । एक भेदे जीव क
हिये ॥ तथा बे प्रकारे पण जीव कहिये ॥ त्रस ॥ १ ॥ थावर ॥ २ ॥ तथा ॥ सिद्ध
॥ १ ॥ ने संसारी ॥ २ ॥ तथा त्रण भेदे जीव ॥ स्त्री वेद ॥ १ पुरुषवेद ॥ २ ॥
नपुंसकवेद ॥ ३ ॥ तथा भवसिद्धिया ॥ १ ॥ अभवसिद्धिया ॥२॥ नोभवसिद्धि
य नो अभवसिद्धिया ॥ ३ ॥ तथा च्यार भेदे जीव ॥ नारकी ॥ १ ॥ तिर्यंच ॥ २ ॥
मनुष्य ॥ ३ ॥ देवता ॥ ४ ॥ तथा चक्षुदर्शनी ॥ १ ॥ अचक्षुदर्शनी ॥ २ ॥ अ
वधि दर्शनी ॥३॥ केवलदर्शनी ॥४॥ तथा पांचप्रकारे जीव ॥ एकेंद्रिय ॥ १ ॥ बे

इंद्रिय ॥२॥ तेइंद्रिय ॥३॥ चउरिंद्रिय ॥४॥ पंचेंद्रिय ॥५॥ तथा । सजोगी ॥१॥
मनजोगी ॥ २ ॥ वचनजोगी ॥ ३ ॥ कायजोगी ॥ ४ ॥ अजोगी ॥५॥ तथा ।
छ प्रकारे जीव ॥ पृथवीकाय ॥ १ ॥ अप्काय ॥ २ ॥ तेउकाय ॥ ३ ॥ वाउकाय
॥ ४ ॥ वनस्पतिकाय ॥ ५ ॥ त्रसकाय ॥ ६ ॥ तथा ॥ सकषायी ॥ १ ॥ क्रोधक
षायी ॥ २ ॥ मानकषायी ॥३॥ मायाकषायी ॥ ४ ॥ लोभकषायी ॥ ५ ॥ अक
षायी ॥ ६ ॥ तथा सात प्रकारे जीव । नारकी ॥ १ ॥ तिर्यंच ॥ २ ॥ तिर्यंचणी
॥३॥ मनुष्य ॥४॥ मनुष्यणी ॥ ५ ॥ देवता ॥६॥ देवी ॥ ७ ॥ तथा । आठ प्र
कारे जीव सलेशी ॥ १ ॥ कृष्णलेशी ॥ २ ॥ निललेशी ॥ ३ ॥ कापुतलेशी
॥ ४ ॥ तेजुलेशी ॥५॥ पद्मलेशी ॥६॥ शुक्ललेशी ॥७॥ अलेशी ॥८॥ तथा
नव । प्रकारे जीव ॥ पृथवी ॥१॥ अप ॥२ ॥ तेउ ॥३॥ वाउ ॥४॥ वनस्पति ॥५॥
बेइंद्रिय ॥६॥ तेइंद्रिय ॥७॥ चउरिंद्रिय ॥८॥ पंचेंद्रिय ॥९॥ तथा दश भेदे जी

व ॥ एकेंद्रिय ॥१॥ बेइंद्रिय ॥२॥ ते इंद्रिय ॥३॥ चउरिंद्रिय ॥४॥ पंचेंद्रिय ॥५॥
ए ५ ना अप्रजाप्ता । ने । प्रजाप्ता । एवं ॥ १० ॥ तथा ॥ इग्यार भेदे जीव ॥
एकेंद्रिय ॥१॥ बेइंद्रिय ॥२॥ तेइंद्रिय ॥ ३ ॥ चउरिंद्रिय ॥ ४ ॥ नारकी ॥ ५ ॥
तिर्यंच ॥६॥ मनुष्य ॥७॥ भवनपति ॥८॥ वाणव्यंतर ॥९॥ ज्योतिषी ॥ १० ॥
वैमानिक ॥११॥ तथा ॥१२॥ भेदे जीव ॥ पृथवी ॥१॥ अप ॥२॥ तेउ ॥३॥ वाउ
॥४॥ वनस्पति ॥५॥ त्रसकाय ॥६॥ ए छना अप्रजाप्ता ने प्रजाप्ता ॥ एवं ॥१२॥
तथा तेरभेदे जीव ॥ कृष्णलेशी ॥ १ ॥ निललेशी ॥२॥ कापुतलेशी ॥३॥ ते
जुलेशी ॥ ४ ॥ पद्मलेशी ॥ ५ ॥ शुक्ललेशी ॥ ६ ॥ ए । छना अप्रजाप्ता ने ।
प्रजाप्ता ॥ एवं ॥१२॥ ने । एक अलेशी ॥१३॥ एवं ॥१३॥ हवे जीवना ॥१४॥
भेद कहे छे ॥ सुक्ष्म एकेंद्रियनो अप्रजाप्तो ॥ १ ॥ ने प्रजाप्तो ॥ २ ॥ बादर ए
केंद्रियनो अप्रजाप्तो ॥ ३ ॥ ने प्रजाप्तो ॥ ४ ॥ बेइंद्रियनो । अप्रजाप्तो ॥ ५ ॥

ने। प्रजाप्तो ॥ ६ ॥ तेइंडियनो। अप्रजाप्तो ॥ ७ ॥ ने। प्रजाप्तो ॥ ८ ॥ चउरिं
डियनो अप्रजाप्तो ॥ए॥ ने प्रजाप्तो ॥ १० ॥ असंज्ञी पंचेंडियनो अप्रजाप्तो
॥ ११ ॥ ने प्रजाप्तो ॥ १२ ॥ संज्ञी पंचेंडियनो अप्रजाप्तो ॥ १३ ॥ ने प्रजाप्तो
॥ १४ ॥ हवे व्यवहार विस्तार नये करीने पांचसेंत्रेंसठ न्नेद जीवना कहे बे ॥
तेहमां त्रणसेंनेत्रणन्नेद मनुष्यना ॥ एकसोअठाणुन्नेद देवताना ॥ अमृतालो
सन्नेद तिर्यंचना ॥ चउदन्नेद नारकीना ॥ ए ॥ ५६३ ॥ न्नेद जीवना ॥ हवे
तेहमां ॥ मनुष्यना ॥ ३०३ ॥ न्नेद कहेबे ॥ ते ॥ १५ कर्म न्नूमिना मनुष्य
॥ ३० अकर्मन्नूमिना मनुष्य ॥ ५६ अंतर द्विपना मनुष्य ॥ एवं ॥ १०१
क्षेत्रना गर्न्नज मनुष्यना ॥ अप्रजाप्ता ने प्रजाप्ता ॥ एवं ॥ २०२ ॥ ने
एकसोने एक क्षेत्रना समुर्छिम मनुष्यना अप्रजाप्ता एवं ॥ ३०३ ॥ न्नेद
मनुष्यना ॥ हवे कर्मन्नूमि ते केहने कहिये ॥ असी ॥ १ ॥ मसी ॥ २ ॥ कृषी

॥ ३ ॥ ए ॥३॥ प्रकारना व्यापारे करी जीवे तेहने कर्मभूमिनां मनुष्य कहिये॥ ते कर्मभूमिना क्षेत्र केटलाछे ॥५॥ भरत ॥५॥ ऐरवतने ॥ ५ महाविदेह । एवं ॥ १५ ॥ ते कर्मभूमि किहां छे ॥ एकलाख जोजननो जंबुद्विप छे ॥ तेहमां ॥१॥ भरत ॥१॥ ऐरवत॥१॥महाविदेह । ए ॥३॥ क्षेत्र कर्मभूमिनां जंबुद्विपमां छे ॥ तेहने फरतो ॥ बे लाख जोजननो लवण समुद्र छे॥ तेहने फरतो चारलाख जोजननो धातकीखंडद्विप छे ॥ तेहमां ॥२॥ भरत ॥२॥ ऐरवत ॥ २ ॥ महाविदेह छे ॥ तेहने फरतो ॥८॥ लाख जोजननो । कालोदधि समुद्र छे ॥ तेहने फरतो ॥ ८ ॥ लाख जोजननो । अर्द्धपुष्कर । द्विप छे ॥ तेहमां ॥ २ भरत ॥ २ ऐरवत ॥ २ महाविदेह छे ॥ एवं । छउ ॥ १२ ॥ ने ॥ ३ ॥ पनर ॥ कर्मभूमिना मनुष्य कह्या ॥ हवे ॥ ३० अकर्मभूमिना मनुष्य कहे छे ॥ अकर्मभूमि ते केहने कहिये ॥ ३ कर्मरहित । दशप्रकारना कल्पवृक्षेकरीने जीवे तेहने अक

व्यथकि एक ॥६॥ क्षेत्रथकि लोकप्रमाणे ॥७॥ कालथकि अनादिअनंत ॥ ८ ॥
भावथकि । अवर्णे । अगंधे । अरसे । अफासे । अमुर्त्ति ॥९॥ गुणथकि स्थिर
सहाय ॥ १० ॥ आकाशास्तिकाय द्रव्यथकि एक ॥११॥ क्षेत्रथकि लोकालोक
प्रमाणे ॥ १२ ॥ कालथकि अनादिअनंत ॥ १३ ॥ भावथकि । अवर्णे । अगं
धे । अरसे । अफासे । अमुर्त्ति ॥ १४ ॥ गुणथकि ॥ अवगाहनादान ॥ १५ ॥
हवे काल द्रव्यथकि अनेक ॥ १६ ॥ क्षेत्रथकि । अढिद्विपप्रमाणे ॥ १७ ॥ का
लथकि अनादिअनंत ॥ १८ ॥ भावथकि । अवर्णे । अगंधे । अरसे । अफासे ।
अमुर्त्ति ॥ १९ ॥ गुणथकि वर्त्तनालक्षण ॥ २० ॥ एवं ॥ २० ॥ ने ॥ १० ॥ पूर्वे
कह्या ते ॥ एवं ॥ ३० ॥ भेद अरूपि अजीवना जाणवा ॥ हवे ॥ ५३० ॥ भेद
रूपि अजीवना कहेछे तेहमां । वर्ण ॥५॥ कालो ॥ १ ॥ निलो ॥२॥ रातो ॥३॥
पिलो ॥ ४ ॥ धोलो ॥ ५ ॥ एकेका वर्णमांहि वीश वीश भेद लाभे ॥ ते ॥२॥

गंध ॥ ५ ॥ रस ॥ ५ ॥ संठाण ॥८॥ स्पर्श ॥ एवं । विश पंचा सो ॥ हवे ॥२॥
गंध ते । सुरभिगंध ॥ १ ॥ दुरभिगंध ॥ २ ॥ एकेका गंधमांहि त्रेविश त्रेविश
भेद लाभे ॥ ५ ॥ वर्ण ॥ ५ ॥ रस ॥ ५ ॥ संठाण ॥ ८ ॥ स्पर्श । एवं ॥ २३ छ
ठेतालिश भेद जाणवा ॥ हवे ॥ ५ ॥ रस ते ॥ तिखो ॥१॥ कडुवो ॥२॥ कसा
यलो ॥३॥ खाटो ॥४॥ मिठो ॥५॥ एकेका रसमां वीश वीश भेद लाभे ॥ ५ ॥
वर्ण ॥ २ ॥ गंध ॥५॥ संठाण ॥ ८ ॥ स्पर्श । एवं । वीश पंचा सो ॥ हवे ॥ ५ ॥
संठाण ॥ परिमंमल संठाण ॥ १ ॥ वटसंठाण ॥ २ ॥ त्रंश ॥३॥ चउरंस ॥ ४ ॥
आयतसंठाण ॥५॥ एकेका संठाणमां वीश वीश भेद लाभे ॥५॥ वर्ण ॥ २ ॥
गंध ॥५॥ रस ॥८॥ स्पर्श । एवं । वीश पंचा सो ॥ हवे ॥८॥ स्पर्श । खरखरो
॥ १ ॥ सुंहालो ॥ २ ॥ भारि ॥ ३ ॥ हलवो ॥ ४ ॥ टाढो ॥ ५ ॥ उन्हो ॥ ६ ॥
चोपड्यो ॥७॥ लुखो ॥८॥ एकेका स्पर्शमां । त्रेविश त्रेविश भेद लाभे ॥ ५ ॥

वर्ण ॥ ४ ॥ गंध ॥५॥ रस ॥५॥ संठाण ॥६॥ स्पर्श ॥ एवं ॥२३॥ भेद लाभे।
खरखरामां खरखरो ने सुंहालो बे वर्जवा ॥ एम बेबे स्पर्श वर्जवा ॥ एवं ॥२३
भग १८४ ॥ एवं सर्व मिलिने ॥५३०॥ भेदरूपि अजीवना कह्या ॥ एवं सर्व
मिलिने ॥ ५६० ॥ भेद। अजीवना जाणवा ॥ इति अजीवतत्वं समाप्तं ॥ २ ॥
हवे नव भेदे पुण्यउपराजे ते कहे छे ॥ अन्नपुन्ने ॥ ४ ॥ पाणपुन्ने ॥ २ ॥ लयण
पुन्ने ॥ ३ ॥ शयणपुन्ने ॥ ४ ॥ वत्थपुन्ने ॥ ५ ॥ मनपुन्ने ॥ ६ ॥ वचनपुन्ने ॥ ७ ॥
कायपुन्ने ॥ ८ ॥ नमस्कार पुन्ने ॥ ए ॥ ए ॥ ए ॥ भेदे पुण्य उपराजे ॥ तेहना
शुभ फल ॥ ४२ ॥ भेदे भोगवे ॥ शातावेदनिय ॥ १ उंच गोत्र ॥ २ ॥ मनु
ष्यगति ॥ ३ ॥ मनुष्यानु पूर्व्वी ॥ ४ ॥ देवतानि गति ॥५॥ देवानुपूर्व्वी ॥६॥
पंचेन्द्रियनि जाति ॥ ७ ॥ उदारिक शरिर ॥ ८ ॥ वैक्रेय शरिर ॥ ए ॥ अहा
रक शरिर ॥ १० ॥ तैजस शरिर ॥ ११ ॥ कार्मण शरिर ॥ १२ ॥ उदारिकन

अंग उपांग ॥ १३ ॥ वैक्रेयना अंग उपांग ॥ १४ ॥ आहारकना अंग उपांग ॥ १५ ॥ वज्ररिषभनाराचसंघयण ॥ १६ ॥ समचउरंस्रसंठाण ॥ १७ ॥ शुभ वर्ण ॥ १८ ॥ शुभगंध ॥ १९ ॥ शुभरस ॥ २० ॥ शुभस्पर्श ॥ २१ ॥ अगुरु लघुनाम ॥ २२ ॥ पराघातनाम ॥ २३ ॥ उस्वासनाम ॥ २४ ॥ आतापनाम ॥ २५ ॥ उद्योतनाम ॥ २६ ॥ शुभचालवानि गति ॥ २७ ॥ निर्माणनाम ॥ २८ ॥ त्रसनाम ॥ २९ ॥ बादरनाम ॥ ३० ॥ प्रजाप्तनाम ॥ ३१ ॥ प्रत्येकनाम ॥ ३२ ॥ स्थिरनाम ॥ ३३ ॥ शुभनाम ॥ ३४ ॥ सौभाग्यनाम ॥ ३५ ॥ सुस्वरनाम ॥ ३६ ॥ आदेयनाम ॥ ३७ ॥ जशोकीर्तिनाम ॥ ३८ ॥ देवतानुं आउषूं ॥ ३९ ॥ मनुष्यनुं आउषूं ॥ ४० ॥ तिर्यंचनुं आउषूं जुगलवत् ॥४१॥ तिर्थंकरनामकर्म ॥ ४२ ॥ एवं ॥ ४२ ॥ भेद पुण्यना जाणवा इति पुण्यतत्वं समाप्तं ॥ ३ ॥ हवे ॥ १८ ॥ प्रकारे पाप उपराजे ते कहेछे ॥ प्राणातिपात ॥ १ ॥

ख्याती राज्यधानी द्वीपा जोतिषीना छे । चोरासी लाष सताणु हजार त्रे वीस विमान वेमानिकना छे ॥ संष्याता वास मनुष्यना छे । सेष दंडक नवना असंष्याता असंष्याता वास छे ॥ तेसर्व वर्णव अन्य सिद्धांतादिकथि जाणवो ॥२४॥ हवे सिद्धसिलाना बार नाम कहेछे ॥ इसितिवा ॥१॥ इसिपन्नारातिवा ॥ २ ॥ तणुतिवा ॥ ३ ॥ तणुतणुतिवा ॥ ४॥ सिधितिवा ॥५॥ सिद्धाल एतिवा ॥ ६ ॥ मुतितिवा ॥ ७ ॥ मुत्ताल एतिवा ॥ ८ ॥ लोयगेतिवा ॥ ए ॥ लोगथुन्नियातिवा ॥ १० ॥ लोगपडिबोहेतिवा ॥ ११ ॥ सवपाणभुय जीवसत्तसुहावहेतिवा ॥ १२ ॥ ए बार मोक्षना नाम कह्या ॥ ए नामद्वार किंचित्मात्र संपूर्ण ॥ १ ॥ हवे चोविस द्वार ते चोविस दंडक उपरे उतारवा ते कहेछे ॥ पेहलो नारकीनो दंडक ॥ तेमांहे सरीर त्रण ॥ वैक्रेयण॥ तेजस०॥ कार्मण ॥ अवघेणा भवधारणि सरीरनी ज० अंगु० असं० ॥ उ० पांचसे धनुषनी ॥ अने उत्तरवै

क्रेय सरीरनी ॥ ज० अंगु० संष्या० ॥ उ० हजार धनुषनी ॥ पेहेली नरकेज०
अंगु० असं० ॥ उ० पोणा आठ धनुष्य ने छ अंगुलनी ॥ अने उत्तरवैक्रेय करे
तो ज० अंगु० संष्या० उ० साढापनर धनुष ने बार अंगुलनी ॥ बीजी नरके
ज० अंगु० असं० ॥ उ० साढापनर धनुष्य ने बार अंगुलनी ॥ अने उत्तरवै
क्रेय करे तो ज० अंगु० संष्या० ॥ उ० सवाएकत्रिस धनुषनी ॥ त्रीजि नरके
ज० अंगु असं० ॥ उ० सवाएकत्रिस धनुषनी ॥ अने उत्तरवैक्रेय करे तो ज०
अंगु० संष्या० ॥ उ० साढीबासठ धनुषनी । चोथी नरके ज० अंगु० असं० ॥
उ० साढीबासठ धनुषनी ॥ अने उत्तरवैक्रेय करे तो । ज० अंगु० संष्या० ॥
उ० सवासो धनुषनी ॥ पांचमी नरके ज० अंगु० असं० ॥ उ० सवासो धनु
षनी ॥ अने उत्तरवैक्रेय करे तो ज० अंगु० संष्या० ॥ उ० अढीसे धनुषनी ॥
छठि नरकेज० । अंगु० असं० उ० अढिसे धनुषनी ॥ अने उत्तरवैक्रेय करे

तो ज० अंगु० संप्या० उ० पांचसें धनुषनी ॥ सातमी नरके ज० अंगु० असं० ॥ उ० पांचसें धनुपनी ॥ अने उत्तर वैक्रेय करे तो ज० अंगु० संष्या० ॥ उ० हजार धनुपनी । संघयण क०॥ नारकीअसंघेणी ॥संठाणनारकीनेएकहुंमसंठाण ॥ कपाय च्यारे।क्रोध मान माया ने लोन ॥पण नारकीने क्रोधघणो॥ संज्ञा च्यारे आहारसंज्ञा॥नयसंज्ञा । मैथुनसंज्ञा । परिग्रहसंज्ञा । पण नारकीने नय घणो । लेस्या नारकीने त्रण समुचे ॥पेहेली ने बीजी नरके एक कापुत लेसा॥ त्रीजी नरके बे लेस्या कापुत घणी अने नील थोमी ॥ चोथी नरके एक नीललेस्या ॥ पांचमी नरके बे लेस्या नील घणी अने कृष्ण थोमी ॥ छठी नरके एकली कृष्णलेस्या ॥ सातमी नरके महाकृष्णलेस्या ॥ इंडी पांच । सुतइंडि ॥ १ ॥ चषुइंडी ॥ २॥ घाणइंडी ॥ ३ ॥ रसइंडी ॥४॥ फरसइंडी ॥५॥ समुद्घात च्यार ॥ वेदनी कषाय मारणांतिक। वैक्रेय ॥ सनि कहेता पेहेली नरके संज्ञी

असज्ञी बे होय ॥ बीजीथी मांभी सातमी नरकसुधी एकला संज्ञी छे॥ वेद नारकी
ने एक नपुंसक वेद ॥ नारकीने ५ पर्या भाषामन भेलाबांधे। द्रष्टीनारकीने त्रण॥
समकीतद्दष्टी ॥ मिथ्यातद्दष्टी॥ समा मिथ्याद्दष्टी॥ दर्शण त्रण नारकीने॥ चषुदर्श
न ॥ अचषुदर्शन । अवधिदर्शन ॥ ज्ञान त्रण नारकीने । मतिज्ञान। श्रुतज्ञान ॥
अवधिज्ञान॥ अज्ञान त्रण नारकीने। मतिअज्ञान॥श्रुतअज्ञान। विभंग ज्ञान॥
जोग इग्यार नारकीने ॥ च्यार मनना । च्यार वचनना । त्रए कायाना ॥ ते वैक्रेय
वैक्रेय नोमिश्र ने कार्मणकाय जोग ॥ एवं इग्यार जोग ॥ उपयोग नव ॥ त्रण
ज्ञान त्रण अज्ञान। त्रण दर्शन एवं नव॥तहा तेमज आहार लेतो जघन्य उत्कृ
ष्टो छ दिसनो । आहार ले ॥ ते बे प्रकारनो॥ उज आहार ने। रोम आहार॥तेपण
असुभ॥ तेपण अचेत ॥ उववाय ते आवीने उपजे पहेलीनर्कें बे दंभकना ते मनुष्य
गर्भज अने ॥ तिर्यंचगर्भज ने समुर्छिम॥ए बे दंभकना आविने उपजे अने बीजीथी

मांभीने सातमी सुधी गर्भजतिर्यंच अने गर्भज मनूष्यना आवी उपजे । थिति पहेली नरके जघन्य दस हजार वरसनी॥ उत्कृष्टी एक सागरनी॥ बीजी नरके ज० एक सागरनी ॥ उ० त्रण सागरनी ॥ त्रीजी नरके ज० त्रणसागरनी ॥ उ० सात सागरनी ॥ चोथी नरके ज० सात सागरनी उ० दस सागरनी॥ पांचमी नरके ज० दस सागरनी ॥ उ० सतर सागरनी ॥ छठी नरके ज० सतर सागरनी । उ० बावीस सागरनी॥ सातमी नरके ज० बावीस सागरनी ॥ उ० तेत्रीस सागरनी॥ समोहिया मरण। अने असमोहियामरण। बे मरण छे। चवण ते नारकी चविने पेहेलीथी छठीसुधिना बे दंडकमां जाय मनुष्यने तिर्यंचमां जाय॥ अने सातमी नरकनो एक दंडक मांते तिर्यंचमां जाय॥ गइ कहेतां। पेहेलीथी मांडी छठी सुधिना नारकी मरीने बेगती मां जाय ते॥ मनुष्यने तिर्यंचमां जाय॥ आवे पण बेगतिनो ॥ मनुष्य ने तिर्यंचनो सातमी नरकना नारकी बे गतिमांथी आवे मनुष्यने तिर्यंच ने जाय एक तिर्यंच

निगतिमां ॥ प्राणदस लाभे ॥ जोग त्रण मन वचन नें कायाना । ए त्रण ॥ ए प्रथम दंडक नारकीनो संपूर्ण थयो ॥ १ ॥ हवे दस भवनपतिना दस दंडक ॥ तेहमां सरीर त्रण ॥ वैक्रेय ॥ तेजस ॥ कार्मण ॥ अवघेणा भवनपतिनी ॥ जघन्य अंगुलनो अ संख्यातमो भाग ॥ उत्कृष्टी सात हाथनी । अने उत्तरवैक्रेय करे तो जघन्य अंगुल नो संख्यातमो भाग ॥ उत्कृष्टीलाष जोजननी । संघेण नथी । संठाण एक समचउरं ससंठाण ॥ कषाय च्यारे पण देवताने लोभघणो ॥ संज्ञाच्यारे पण देवताने परि ग्रह संज्ञा घणी । लेस्या च्यार कृष्णलेस्या । नीललेस्या । कापुतलेस्या ॥ तेजुले स्या । इंद्री पांचे छे ॥ समुद्घात पांच ॥ वेदनी कषाय मारणांतिक । वैक्रेय ने तेजस संज्ञी असंज्ञी बे जाणवा ॥ वेद बे स्त्री ने पुरुष । प्रजा ५ भाषामन भेला बांधे ॥ दृष्टी त्रण ॥ दर्शण त्रण । केवलदर्शन एक नही ॥ ज्ञान त्रण ॥ मतिज्ञान श्रुत ज्ञान अवधिज्ञान ॥ अज्ञान त्रण ॥ मतिअज्ञान । श्रुतअज्ञान ॥ विभंगज्ञान ॥

नी देवीनी ज० दस हजार वरसनी। उ० एक पल्योपम देसे ऊंणीनी॥ समोहियाम
रण अने असमोहिया मरण॥ ए बे मरण लाभे। चवण ते चविने पांच दंमकमां
जाय॥प्रथवी॥ पाणी॥ वनस्पति॥ मनुष्य ने तिर्यंच ए पांचमां जाय॥गइकहे०।
मरिने बेगतिमां जाय मनुष्यने तिर्यंचमां॥ आगइ ते आवे पण बेगतिनो॥ मनुष्य
नेतिर्यंच नो॥ प्राणदस लाभे। जोग त्रण॥ इति दस भवनपतिना दस दंडक सं
पूर्ण॥१९॥ हवे पांचस्थावरना पांचदंडक कहेछे प्रथवी॥१॥ पाणी॥२॥ तेउ॥३॥
वनस्पति॥४॥ए च्यार ने सरीर त्रण॥उदारिक॥ तेजस ने कार्मण॥ अने वाउ ने
सरीर च्यार। उदारिक। वैक्रेय। तेजस ने कार्मण॥ अवघेणा प्रथवी पाणि तेउ वा
उ ए च्यारेनी॥ जघन्य ने उत्कृष्टी अंगुलनो असंख्यातमो भाग ॥ अने वनस्प

मिश्रमोहनीय ॥ ७ ॥ ए ७ प्रकृतिने कांइक उदय आवे ॥ तेहने क्षय करे ॥ अने सत्तामां दल छे ॥ तेहने उपशमावे । तेहने ॥ क्षयोपशमसम्यक्त्व कहिये ॥ ते सम्यक्त्व असंख्याति वार आवे ॥ अने ७ प्रकृतिना दलने सर्वथा उपशमावे ढांके तेहने उपशमसम्यक्त्व कहिये । ते समकित पांचवार आवे ॥ अने ७ प्रकृतिना दलने सर्वथा क्षय करे । तिवारे क्षायकसमकित कहिये ॥ ते सम्यक्त्व १ वार आवे ॥ चोथे गुणठाणे आव्यो थको जीवादिक पदार्थ ॥ द्रव्यथकि १ क्षेत्रथकि २ कालथकि ३ भावथकि ४ नोकारसीआदि छमासी तप जाणे सरदहेपरूपे पण फरसि शके नहि तिवारे गौतमस्वामि हाथ जोडि मान मोडि श्रीभगवंतने पुछता हवा ॥ स्वामिनाथ ते जीवने स्युं गुण निपनो ॥ तिवारे श्रीभगवंत कहे ॥ गौतम ते जीव समकित व्यवहारपणे शुद्ध प्रवर्त्ततो । ते जीव जघन्य त्रीजे भवे मोक्ष जाय ॥ उत्कृष्टो पंदर भवे मोक्ष जाय ॥ वेद

कसमकित एकवार आवे एक समयनि स्थिती छे। पूर्वे जो आयुषनो बंध पड्यो न होय तो ॥ ७ ॥ बोलमां बंध पाडे नहि ॥ नरकनुं आयुष ॥ १ ॥ व नस्पतिनुं आयुष ॥ २ ॥ तिर्यंचनुं आयुष ॥ ३ ॥ वाणव्यंतरनुं आयुष ॥ ४ ॥ ज्योतिषीनुं आयुष ॥ ५ ॥ स्त्रीवेद ॥ ६ ॥ नपुंसकवेद ॥ ७ ॥ ए ॥ ७ ॥ बोलमां आ युषनो बंध पाडे नहि ॥ ते जीव ॥ ८ ॥ आचार समकितना आराधि। चतुर्विध संघनिवाछलका परमहर्ष भक्तिभरथको जघन्य पहिले देवलोके उपजे। उत्० । बारमे देवलोके उपजे। पन्नवणानि शाखे ॥ पूर्व कर्मने उदये करिने व्रत पच्च खाण करि न शके। पण अनेक वरसनि श्रमणोपाशकनि प्रवर्ज्यानो पालक कहिये दशाश्रुत स्कंधे श्रावक कह्याछे ते माटे दर्शन श्रावकने। अविरय सम दिठी कहिये ॥ ४ ॥ पांचमुं देशविरतिगुणठाणुं तेहना स्युं लक्षण। इग्यार प्र कृतिने क्षयोपशमावे। ते ॥७॥ पूर्वे कहि ते। अने अप्रत्याख्यानी क्रोध ॥१॥

मान ॥ २ ॥ माया ॥ ३ ॥ लोभ ॥ ४ ॥ एवं ॥ ११ ॥ प्रकृतिने क्षय करे तो।
क्षायकसमकित कहिये ॥ अने ॥ ११ प्रकृ० ढांके उपशमावेतो उपशम
समकित कहिये । अने ॥ ११ प्रकृतिने कांइक ढांके कांइक क्षय करे तेहने
क्षयोपशम समकित कहिये ॥ पांचमे गुणठाणे आव्योथको जीवादिक पदार्थ
द्रव्यथी क्षेत्रथि कालथि भावथि नोकारसीआदि देइने छमासीतप जाणे सर
दहेपरूपे शक्तिप्रमाणे फरसे। एक पच्चखाणथि मांडिने ॥ १२ व्रत ॥ ११
श्रावकनि पडिमां आदरे। जावत् संलेखणासुधि अनशन करि आराधे। ति
वारे गौतमस्वामी हाथ जोडि मान मोडि श्रीभगवंतने पुछता हवा । ते जी
वने स्युं गुण निपनो। तिवारे श्रीभगवंते कह्युं ॥ ज० त्रिजे भवे मोक्ष जाय ॥
उ० ॥ १५ भवे मोक्ष जाय ॥ ज० पहिले देवलोके उपजे ॥ उत्० १२ मे
देवलोके उपजे। ते साधुना व्रतनि अपेक्षाये देशविरति कहिये ॥ पणपरिणा

मथि अव्रतनि क्रिया उतरि गइछे ॥ अल्पइछा ॥ अल्पआरंभ ॥ अल्पपरि
ग्रहीछ॥ सुशिल । सुव्रति ॥ धर्मिष्ठ । धर्मव्रति । कल्पउग्रविहारी । महासंवेगवि
हारीष। उदासी ॥ वैराग्यवंत ॥ एकांतआर्य ॥ सम्यगमार्गी ॥ सुसाधु । सु
पात्र ॥ उत्तम । [illegible]वादि । आस्तिक्य । आराधक । जैनमार्गप्रभावक ॥ अ
रिहंतना शिष्य वर्णव्याछे । गीतार्थ जाणेछे सिद्धांतनि शाख छे । श्रावकपणुं ।
एक भवमां प्रत्येक हजारवार आवे ॥ ५ ॥ छठुं प्रमत संजतिगुणठाणुं तेहनुं
स्युं लक्षण ॥ १५ प्रकृतिने क्षयोपशमावे ते ११ ॥ प्रकृति पूर्वे कहि ते ।
अने पच्चखाणावर[illegible]धक्रोध ॥ १ ॥ मान ॥ २ ॥ माया ॥ ३ ॥ लोभ ॥ ४ ॥
एवं ॥ १५ प्रकृतिने क्षयकरे तो । क्षायिकसमकित कहिये । अने ॥ १५ प्रकृ
तिने ढांके तो । उपशमसमकित कहिये ॥ अने कांइ ढांके ने कांइ क्षय करे तो ।
क्षयोपशमसमकित कहिये ॥ तिवारे गौतमस्वामि हाथ जोडि मान मोडि श्री

भगवंतने पुछता हवा । ते जीवने स्युं गुण निपजें । तिवारे श्रीभगवंते कह्युं
जे । ते जीव द्रव्यथि क्षेत्रथि कालथि भावथि जीवादिक नव पदार्थने तथा नो
कारसीआदि छमासि तप जाणे सरद्दहेपरूपे फरसे ॥ साधुपणुं एक भवमां
नवसेंवार आवे । ते जीव जघन्य । त्रिजे भवे मोक्ष जाय ॥ उत्० ॥ १५
भवे मोक्ष जाय ॥ आराधक जीव । जघ० । पहिले देवलोके उपजे । उत्० ।
अनुत्तर विमाने उपजे ॥ १७ भेदे संजम निर्मल पाले ॥ १२ भेदे तपस्या
करे पण जोग चपल । कषाय चपल ॥ वचन चपल दृष्टि चपलताना अंश
छे । तेणे करिने यद्यपि उत्तम अप्रमादिथका रहेछे । तोपण प्रमाद रहेछे माटे
प्रमादपणे करि तथा कृष्णादिक लेशा अशुभ जोग कोइक काले प्रणति प्र
णमेछे माटे कषाय प्रकृष्टमत्त थइ जायछे । तेहने प्रमत्त संजतिगुणठाणुं कहिये
॥ ६ ॥ सातमुं अप्रमत्त संजतिगुणठाणुं तेहनुं स्युं लक्षण । पांच प्रमाद छांडे ।

तिवारे सातॅम गुणठाण आवे। ते ॥ ५ प्रमादना नाम ॥ मद। विसय। क साय। निंद्दा। विगंहा। पंचमा भणिया। एए पंच पमाया। जीवापरूंति संसारे ॥ १ ॥ ए ॥ ५ ॥ प्रमाद छंमी अने ॥ १६ ॥ प्रकृतिने उपशमावे ॥१५॥ पूर्वे कहि ते। अने संजलनो क्रोध। एवं ॥ १६ ॥ प्रकृतिने क्षयोपशमावे तेहने स्युं गुण निपनो। ते जीव जीवादि पदार्थ द्रव्यथि क्षेत्रथि कालथि भावथि तथा नोकारसि आदि देइने छमासी तप ध्यानअनुगतपणे जाणे सरदहेपरूपे फ रसे। ते जीव जघन्य०। तेज भवे मोक्ष जाय ॥ उत्कृष्टो त्रिजे भवे मोक्ष जाय ॥ गति तो प्राये कल्पातीतनि थाय ॥ ध्यानने विषे ॥ अनुष्ठाननेविषे। अप्रमत्त उद्यत थका रहेछे। तथा शुभ लेश्यापणेज करिने ॥ नथि प्रमत्त क षाय जेहने ॥ तेहने अप्रमत्त संजतिगुणठाणुं कहिये ॥ ७ ॥ आठमुं नियट्टि बादरगुणठाणुं तेहनुं स्युं लक्षण ॥ १७ प्रकृति ने क्षयोपशमावे ॥ १६ पूर्वे

कहि ते । अने संजलनो मान । ए ॥ १७ ॥ प्रकृति ने क्षयोपशमावे । तिवारे गौतमस्वामी । हाथ जोमि मान मोमि । श्रीन्नगवंतने पुछता हवा । स्वामीनाथ ते जीवने स्युं गुण निपनो । तिवारे श्रीन्नगवंते कह्युं ॥ परिणामधारा । अपूर्व करण जे कोइ काले जीवने कोइ दिने आव्युं नथि । ते श्रेणि ज्जुगत जीवादिक पदार्थ । डव्यथि । क्षेत्रथि । कालथि । न्नावथि । नोकारसी आदिदइ छमासी तप जाणे । सरदहेपरूपे फरसे । ते जीव । जघन्य । तेज न्नवे मोक्ष जाय ॥ उत्० । त्रिजे न्नवे मोक्ष जाय । इहांथि श्रेणि ॥ २ करे । उपशमश्रेणि ॥ १ ॥ ने क्षपकश्रेणि ॥ २ ॥ उपशम श्रेणिवालो जीव ते मोहनीय कर्मनि प्रकृतिना दलने उपशमावतो इग्यारमा गुणठाणासुधिजाय ॥ पमिवाइ पण थाय । हाय मान परिणामपण परिणमे ॥ अने क्षपकश्रेणिवालो जीव ते । मोहनीय कर्मनि प्रकृतिना दलने खपावतो शुद्ध मूलमांथि निर्जरा करतो । नवमे दशामे

गुणठाणे थइने बारमे गुणठाणे जाय। अपमिवाइज होय। वर्द्धमान परिणाम परिणमे। हवे नियट्टिबादरनो अर्थ ते निवर्त्योछे बादर कषायथि। बादर संपराय क्रियाथि। श्रेणि करवे। अभ्यंतर परिणामे। अध्यवसाय स्थिरथते बादर चपलताथि निर्वृत्योछे। माटे नियट्टिबादरगुणठाणुं कहिये। तथा बिजुं नाम। अपूर्व करणगुणठाणुं पण कहिये॥ स्यामाटे जे॥ कोइ काले जीवे पूर्वे श्रेणि करि नहुंति। अने ए गुणठाणे पहिलुंज करण ते पंमितवीर्यनुं आवरण क्षयकरणरूपकरणपरिणामधारा वर्द्धनरूप श्रेणि करे तेहने अपूर्वकरण गुणठाणुं कहिये॥ ८॥ हवे नवमुं अनियट्टिबादरगुणठाणुं तेहनुं स्युं लक्षण एकविश प्रकृतिने क्षयोपशमावे ते॥ १७ प्रकृति पूर्वे कहि ते। अने संजलनि माया॥ १॥ स्त्रीवेद॥ २॥ पुरुषवेद॥ ३॥ नपुंसकवेद॥ ४॥ एवं॥ २१॥ प्रकृतिने क्षयोपशमावे। तिवारे गौतमस्वामि हाथ जोमी मान मोमी श्रीजग

कहि ते । अने संजलनो मान । ए ॥ १७ ॥ प्रकृति ने क्षयोपशमावे । तिवारे
गौतमस्वामी । हाथ जोडि मान मोडि । श्रीभगवंतने पुछता हवा । स्वामीनाथ
ते जीवने स्युं गुण निपनो । तिवारे श्रीभगवंते कह्युं ॥ परिणामधारा । अपूर्व
करण जे कोइ काले जीवने कोइ दिने आव्युं नथि । ते श्रेणि जुगत जीवादिक
पदार्थ । द्रव्यथि । क्षेत्रथि । कालथि । भावथि । नोकारसी आदिदइ छमासी
तप जाणे । सरद्हेपरूपे फरसे । ते जीव । जघन्य । तेज भवे मोक्ष जाय ॥
उत्० । त्रिजे भवे मोक्ष जाय । इहांथि श्रेणि ॥ २ करे । उपशमश्रेणि ॥ १ ॥
ने क्षपकश्रेणि ॥ २ ॥ उपशम श्रेणिवालो जीव ते मोहनीय कर्मनि प्रकृतिना
दलने उपशमावतो इग्यारमा गुणठाणासुधिजाय ॥ पडिवाइ पण थाय । हाय
मान परिणामपण परिणमे ॥ अने क्षपकश्रेणिवालो जीव ते । मोहनीय क
र्मनि प्रकृतिना दलने खपावतो शुद्ध मूलमांथि निर्जरा करतो । नवमे दशमे

गुणठाणे थइने बारमे गुणठाणे जाय । अपमिवाइज होय । वर्द्धमान परिणाम परिणमे । हवे नियट्टिबादरनो अर्थ ते निवर्त्योंछे बादर कषायथि । बादर संपराय क्रियाथि । श्रेणि करवे । अभ्यंतर परिणामे । अध्यवसाय स्थिरथते बादर चपलताथि निर्वत्योंछे । माटे नियट्टिबादरगुणठाणुं कहिये । तथा बिजुं नाम । अपूर्व करणगुणठाणुं पण कहिये ॥ स्यामाटे जे ॥ कोइ काले जीवे पूर्वें श्रेणि करि नहुंति । अने ए गुणठाणे पहिलुंज करण ते पंम्तिवीर्यनुं आवरण क्षयकरणरूपकरणपरिणामधारा वर्द्धनरूप श्रेणि करे तेहने अपूर्वकरण गुणठाणुं कहिये ॥ ८ ॥ हवे नवमुं अनियट्टिबादरगुणठाणुं तेहनुं स्युं लक्षण एकविश प्रकृतिने क्षयोपशमावे ते ॥ १७ प्रकृति पूर्वें कहि ते । अने संजलनि माया ॥ १ ॥ स्त्रीवेद ॥ २ ॥ पुरुषवेद ॥ ३ ॥ नपुंसकवेद ॥ ४ ॥ एवं ॥ २१ ॥ प्रकृतिने क्षयोपशमावे । तिवारे गौतमस्वामि हाथ जोमी मान मोमी श्रीजग

वंतने पुछता हवा। स्वामिनाथ ते जीवने स्युं गुण निपनो तिवारे भगवंते कह्युं। ते जीव जीवादिक पदार्थ तथा नोकारसी आदि देइने छमासी तप द्रव्यथि क्षेत्रथि कालथि भावथि निर्विकार अमायीविषयनिरवंछपणे। जाणे सरदहेपरूपे फरसे ते जीव जघन्य तेज भवे मोक्ष जाय। उत्०। त्रीजे भवे मोक्ष जाय॥ हवे अनियट्टि बादरते। सर्वथा प्रकारे निवर्त्यों नथि अंश मात्र हजि बादरसंपराय क्रिया रहि छे माटे अनियट्टिबादर गुणठाणुं कहिये॥ तथा आठमा नवमा गुणठाणाना शब्दार्थ घणा गंभिर छे॥ ते अन्य पंचसंग्रहादिक ग्रंथ तथा सिद्धांतथि समजवा॥ ९॥ दशमुं सूक्ष्म संपरायगुणठाणुं तेहनुं स्युं लक्षण॥ २७॥ प्रकृति ने क्षयोपशमावे॥ २१॥ प्रकृति पूर्वे कहिते। अने। हास्य॥ १॥ रति॥ २॥ अरति॥ ३॥ भय॥ ४॥ शोक॥ ५॥ दुगंछा॥ ६॥ एवं॥ २७॥ प्रकृति ने क्षयोपशमावे॥ तिवारे गौतमस्वामि

हाथ जोमि मान मोमि ॥ श्रीन्नगवंतने पुछता हवा स्वामिनाथ । ते जीवने स्युं गुण निपने । तिवारे न्नगवंते कह्युं । ते जीव ज्व्यथि क्षेत्रथि कालथि न्नावथि जीवादिक पदार्थ तथा नोकारसी आदी देईने छमासी तप निरन्निलाष निर्वंछक निर्वेदकतापणे निराशी अव्यामोह अविभ्रमपणे जाणे सरदहेपरूपे फरसे ते जीव । जघन्य० तेज न्नवे मोक्ष जाय । उत्० । त्रीजे न्नवे मोक्ष जाय ॥ सूक्ष्म थोमिक लगारेक पातली सी ॥ संपराय क्रिया रहि छे । तेहने सुक्ष्मसंपराय गुणाठाणुं कहिये ॥ १० ॥ इग्यारमुं उपशांतमोहगुणठाणुं तेहनुं स्युं लक्षण ॥ २८ प्रकृति ने उपशमावे ते ॥ २१ प्रकृति पूर्वे कहि ते । अने संजलनो लोन्न ॥ १ ॥ एवं ॥ २८ ॥ मोहनीय कर्मनि प्रकृतिने उपशमावे सर्वथा ढांके । नस्म नारि प्रछन्न अग्निवत् । तिवारे गौतमस्वामि हाथ जोमि मान मोमि श्रीन्नगवंतने पुछता हवा । स्वामिनाथ ते जीवने स्युं गुण निपनो । तिवारे

श्रीभगवंते कह्युं। ते जीव जीवादिक पदार्थ द्रव्यथि क्षेत्रथि कालथि भावथि
नोकारसी आदि देइने छमासी तप वीतराग भावे जथाख्यात चारित्रपणे॥
जाणे सरदहेपरूपे फरसे। एहवामां जो काल करे तो । अनुत्तर वीमानमां
जाय पछि मनुष्य थइ मोक्ष जाय। अने जो सूक्ष्म लोभनो उदय थाय तो
कषाय अग्नि प्रकटे पछि पडे दशामांथि सर्वथा पडे तो पहिले गुणठाणे
जाय। पण इग्यारमेथि चढवुं तो नथि। उपशांतते उपशम्यो छे मोह सर्वथा
जले करि अग्नि ढलव्यानिपरे टाल्यो नहि। ढांक्योछे माटे उपशांतमोह गु
णठाणुं कहिये॥ ११॥ बारमुं क्षीणमोह गुणठाणुं तेहनुं स्युं लक्षण जे २८
प्रकृति ने सर्वथा खपावे। क्षपकश्रेणि। क्षायकभाव। क्षायक समकित॥ क्षा
यकजथाख्यातचारित्र॥ करणसत्य। जोगसत्य। भावसत्य अमायी अकषायी
वीतरागी। भावनिर्ग्रंथ। संपूर्ण संबुड॥संपूर्ण भावितात्मा॥ महातपस्वी। महा

सुशिल । अमोही । अविकारी । महाज्ञानी ॥ महाध्यानि ॥ वर्द्धमान पारणा
मी । अपमिवाइ थइ अंतर्मुहुर्त्त रहे । ए गुणठाणे काल करवो नथि । पुनर्नव
वे नहि । वेहले समये पांच ज्ञानावरणिय नव दर्शनावरणिय पंचविधअंतरा
यक्षयकरणोद्यमकरि तेरमा गुणठाणाने पहिले समये क्षयकरि केवल ज्योति
प्रकटे माटे क्षीण ते क्षय कर्योछे मोह सर्वथा जेगुणठाणे ॥ तेहने क्षीण
मोह गुणठाणुं कहिये ॥ १२ ॥ तेरमुं सजोगी केवलि गुणठाणुं तेहनुं । स्युं ल
क्षण । दश बोलसहित तेरमे गुणठाणे विचरे ॥ सजोगी ॥ १ ॥ सशरिरी॥२॥
सलेशी ॥ ३ ॥ शुकललेशी ॥ ४ ॥ जथाख्यातचारित्र ॥ ५ ॥ क्षायकसमकित
॥ ६ ॥ पंडितवीर्य ॥ ७ ॥ शुकलध्यान ॥ ८ ॥ केवलज्ञान ॥ ९ ॥ केवलदर्शन
॥ १० ॥ ए ॥ १० ॥ बोलसहित ॥ जघन्य । अंतमुहुर्त्त । उत्० । देशोउणी पूर्व
कोडिसुधि ॥ विचरे घणा जीवने तारि प्रतिबोधि निहाल करिने॥बिजा त्रिजा

नीय ॥ १ ॥ आयुष ॥ २ ॥ नाम ॥ ३ ॥ गोत्र ॥ ४ ॥ ए ॥ ४ ॥ कर्म क्षीण क
रिने मुक्तिपद पामे ॥ शरिर उदारिक । तेजस कार्मण । सर्वथा छांमिने समश्रेणि
ऋजुगति अन्य आकाश प्रदेशानावगाहतो अणफरसतो । एक समय मात्र
मां । उर्ध्वगति । अविग्रहगतिये तिहां जाय । एरंडबीज बंधन मुक्तवत् । निर्लेप
तुंबिवत् । कोदंड मुक्तबाणवत् इंधनवन्हिमुक्त धुम्रवत् । तिहां सिद्ध क्षेत्रे
जइ साकारोपयोगे सिद्ध थाय । बुद्ध थाय ॥ पारांगत थाय । परंपरगत थाय ।
सकल कार्य अर्थसाधिकृत कृतार्थ । निष्ठितार्थ । अतुल शुखसागर निर्मग्नसा
दिअनंत भागे सिद्ध थाय ॥ ए सिद्ध पदनो भावस्मरण ॥ चिंतन मनन कदा
काले मुझने होशे । सो घटि पल धन्य सफल होशे ॥ हवे अजोगी ते । जो
गरहित केवलसहित विचरे तेहने अजोगी केवली गुणठाणुं कहिये ॥ १४ ॥
इति लक्षण गुणद्वार बीजो संपूर्ण ॥ २ ॥ हवे त्रिजो स्थितिद्वार कहेछे ॥ प

ह्विला गुणठाणानि स्थिति ३ प्रकारनि छे ॥ अणादिया अपज्जवसिया ते
जे मिथ्यात्वनि आदि नथि ने अंतपण नथि ते अन्नव्यजीव आश्रि मिथ्यात्व
॥ १ ॥ अणादिया सपज्जवसिया ते जे मिथ्यात्वनि आदि नथि पण अंत छे
ते नव्यजीवना मिथ्यात्व आश्रि ॥ २ ॥ सादियासपज्जवसिया ते जे मिथ्या
त्वनि आदि पण छे ने अंत पण छे ते पमिवाइ समदिठिना मिथ्यात्वआश्रि तेह
नी स्थिति जघन्य । अंतर्मुहूर्त्त ॥ उत्० । अर्द्ध पुजल परावर्त्तन देशे उणी ॥ पछि
अवश्य समकित पामिने मोक्ष जाय ॥ ३ ॥ १ ॥ बिजा गुणठाणानि स्थिति ।
जघ० ॥ १ समय । उत्० ॥ ६ आवलिकाने ॥ ७ समयनि ॥ २ ॥ त्रिजा
गुणठाणानि स्थिति । ज० । उ० । अंतर्मुहूर्त्तनी ॥३॥ चोथागुणठाणानि स्थिति
ज० । अंतर्मुहूर्त्त । उ० ॥ ६६ सागरोपमझाझेरानि ॥ ते ३३ सागरोपमनि
स्थितिये ॥ ३ वार बारमे देवलोके उपजे । त्रिण पूर्वकोमि अधिक मनुष्यना

नव आश्रि जाणवि ॥ तथा बेवार अनुत्तर विमानमां ३३ सागरोपमनि
स्थितिये उपजे ॥ ३३ ऊ छासठ सागरोपमने पूर्वकोडि ३ अधिक मनु
ष्यना नव आश्रि जाणवि ॥ ४ ॥ पांचमा छठा तेरमा गुणठाणानि स्थिति
ज० अंत० उ० देशोऊणि ते साढाआठ वर्षे ऊणि पूर्वकोडनि ॥ सातमांथि ते
इग्यारमा गु० सुधि ज० ॥ १ समय० ॥ उ० अंत । बारमां गु० । स्थिति
ज० । उ० । अंत० ॥ चउदमा गुणठाणानि स्थिति पांच ह्रस्व अक्षर । अ[1]।
इ[2] । उ[3] । ऋ । लृ । बोलवा प्रमाणे जाणवि । इति त्रिजो स्थितिद्वार समाप्तं ॥
॥ ३ ॥ हवे चोथो क्रियाद्वार कहेछे । पहिले ने त्रिजे गुणठाणे ॥ २४ ॥ क्रिया
लाभे । इरियावहिया क्रिया वर्जिने ॥ बिजे । चोथेगु० ॥ २३ क्रिया लाभे इरिया
वहिया ॥ १ ॥ ने मिथ्यात्वनि ॥ २ ॥ ए ॥ २ ॥ वर्जिने ॥ पांचमे गु० ॥ २२ क्रिया
लाभे मिथ्यात्व ॥ १ ॥ अविरति ॥ २ ॥ इरियावहिया ॥ ३ ॥ ए ॥ ३ ॥ वर्जिने ॥ छठे

गुणठाणे ॥ २ ॥ क्रिया । आरंभिया ॥ १ ॥ मायावत्तिया ॥ २ ॥ ए ॥ २ ॥
लाभे । सातमे गुणठाणेथि ते दशमा गुणठाणा सुधि ॥ १ ॥ मायावत्तिया
क्रिया लाभे ॥ इग्यारमे बारमे तेरमे गुणठाणे ॥ १ ॥ इरियावहिया क्रिया
लाभे । चउदमे गुण०कोइ क्रिया लाभे नहि ॥ इति ॥४ थो ॥ क्रियाद्वार समाप्तं
॥ ४ ॥ हवे पांचमो सत्ताद्वार कहेछे ॥ पहिलागुणठाणाथिते इग्यारमा गुणठाणा
सुधि । आठ कर्मनि सत्ता । बारमे ॥७॥ कर्मनि सत्ता । १ मोहनियकर्म वर्जिने॥
तेरमे चउदमे गुण० ॥ ४ ॥ कर्मनि सत्ता । वेदनीय ॥ १ ॥ आयुष ॥ २ ॥ नाम
॥ ३ ॥ गोत्र ॥ ४ ॥ इति पांचमो सत्ताद्वार समाप्तं ॥ ५ ॥ हवे छठो बंधद्वार क
हेछे ॥ पहिला गुणठाणाथि ते सातमा गुणठाणासुधि त्रिजुं गुणठाणुं वर्जिने
॥ ८ ॥ कर्म बांधे । अने जो ॥ ७ ॥ बांधे तो आयुष वर्जिने । त्रिजे आठमे न
वमे गु० ॥ ७ ॥ कर्म बांधे । आयुष वर्जिने ॥ दशमे गुण० ॥ ६ ॥ कर्म बांधे ।

आयुष ॥ १ ॥ ने मोहनीय । ए ॥ २ ॥ वर्जिने ॥ इग्यारमे बारमे तेरमे गुण०
॥ १ ॥ सातावेदनीय बांधे ॥ चउदमे गुण० । अबंध० इति ॥ ६ ठो ॥ बंधद्वार
सम्मत्तं ॥ ६ ॥ हवे ॥ ७ ॥ मो वेद ने ॥ ८ ॥ मो उदयद्वार भेलो कहेछे ॥ पहि
ला गुणठाणाथि ते दशमा गुणठाणासुधि ॥ ८ ॥ कर्म वेदे ने ॥ ८ ॥ नो उदया
इग्यारमे बारमे ॥ ७ ॥ कर्म वेदे ने ॥ ७ ॥ नो । उदय मोहनीय वर्जिने ॥ तेरमे
चउदमे ॥ ४ ॥ कर्म वेदे ने ॥ ४ ॥ नो उदय वेदनीय ॥ १ ॥ आयुष ॥ २ ॥
नाम ॥ ३ ॥ गोत्र ॥ ४ ॥ इति ॥ ७ मो वेदने ८ मो उदयद्वार समाप्तं ॥ ७ ॥ ८॥
हवे नवमो उदीरणाद्वार कहेछे । पहिला गुणठाणाथि मांडिने ॥ ७ मा गुणठा
णासुधि ॥ ८ ॥ कर्मनि उदीरणा । तथा ॥ ७ ॥ नीकरतो आयुष वर्जिने ॥
आठमे नवमे गुणठाणे ॥ ७ ॥ कर्मनि उदीरणा ते आयुष वर्जिने । तथा ॥
॥ ६ ॥ नि करे तो । आयुष ॥ १ ॥ मोहनीय ॥ २ ॥ ए ॥ २ ॥ वर्जिने । दशमे

गुणठा ॥ नि उदीरणा करे ॥ आयुष ॥ १ ॥ मोहनीय ॥ २ ॥ ए ॥ २ ॥ वर्जिने ।
ठाणे ॥ ५ ॥ नि करे तो । आयुष ॥ १ ॥ मोहनीय ॥ २ ॥ वेदनीय ॥ ३ ॥ ए
क्रिया ॥ वर्जिने ॥ इग्यारमे बारमे ॥ ५ ॥ नि उदीरणा । आयुष ॥ १ ॥ मोह
ठाणे ॥ २ ॥ वेदनीय । ए ॥ ३ ॥ वर्जिने । तथा ॥ २ ॥ नि करे तो । नाम ॥१॥
॥ ४ ॥ ॥ २ ॥ ए ॥ २ ॥ नि ॥ तेरमे गुणठाणे ॥ २ ॥ कर्मनि उदीरणा ॥ नाम ॥
र्म १ ॥ गोत्र ॥ २ ॥ ए ॥ २ ॥ नि करे ॥ चउदमे गुण० उदीरणा करे नहि ॥
इति ॥ ए ॥ मो उदीरणाद्वार समाप्तं ॥ ए ॥ चेवक० निश्चये ॥ हवे ॥ १० ॥
॥ मो निर्जराद्वार कहेछे ॥ पहिलाथि ते ॥ ११ ॥ मा गुणठाणासुधि ॥ ८ ॥ कर्म
हेले निर्जरा ॥ बारमे ॥ ७ ॥ कर्मनि निर्जरा । मोहनीय वर्जिने ॥ तेरमे चउदमे
॥ कर्मनि निर्जरा । वेदनीय ॥ १ ॥ आयुष ॥ २ ॥ नाम ॥ ३ ॥

॥ ५ ॥ कर्मबंधना ॥ मिथ्यात्व ॥ १ ॥ अविरति ॥ २ ॥ प्रमाद ॥ ३ ॥ कषाय
४ ॥ जोग ॥ ५ ॥ पहिले । त्रिजे गु० ॥ ५ ॥ कारण लाभे ॥ बीजे चोथे ॥ ४॥
॥ ण लाभे ॥ मिथ्यात्व वर्जिने । पांचमे छठे गुण० ॥ ३ ॥ कारण लाभे ॥
स्यात्व ॥ १ ॥ अविरति ॥ २ ॥ ए ॥ २ ॥ वर्जिने ॥ सातमेथि ते दशमा गु
णासुधि ॥ २ ॥ कारण लाभे ॥ कषाय ॥ १ ॥ जोग ॥ २ ॥ ए ॥ २ ॥ लाभे ॥
शति ॥ बारमे तेरमे १ कारण लाभे ते ॥ जोग ॥ १ ॥ चउदमे कोइ कारण
ते निज ति १२ मो कारणद्वार समाप्तं ॥ १२ ॥ हवे १३ मो परिसहद्वार क
॥ निज हिलाथि ते चोथा गुणठाणासुधि यद्यपि परिसह २२ लाभे पण दुःख
वमे ॥ । निर्जरारूप प्रणमे नहि ॥ पांचमाथि ते ए मा गुणठाणासुधि २२
ह लाभे ॥ एक समये २० वेदे । टाढनो तिहां तापनो नहि तापनो तिहां
ढनो नहि ॥ चालवानो तिहां बेसवानो नहि ॥ बेसवानो तिहां चालवानो

नहि ॥ दशमे इग्यारमे बारमे ॥ १४ ॥ परिसह लाभे ॥ आठ जे मोहनीय
कर्मने उदये हता ते वर्ज्या ते कहेछे ॥ अचेलनो ॥ १ ॥ अरतिनो ॥२॥ स्त्रीनो
॥ ३ ॥ बेशवानो ॥ ४ ॥ आक्रोशनो ॥ ५ ॥ मेलनो ॥ ६ ॥ सत्कार पुरस्कारनो
॥ ७ ॥ ए ॥ ७ ॥ चारित्र मोहनीय कर्मने उदये हता ते ॥ ने ॥ ८ ॥ मो दंशण
परिसह ॥ दर्शन मोहनीयने उदये हतो ते ॥ ए ८ वर्जिने शेष ॥ १४ रह्या ॥ तेमांहि
लाएक समये ॥ १२ ॥ वेदे ॥ टाढनो तिहां तापनो नहि । तापनो तिहां टाढनो
नहि ॥ चालवानो तिहां थानकनो नहि । थानकनो तिहां चालवानो नहि ॥
तेरमे चउदमे गुणठाणे ॥ ११ ॥ परिसह लाभे ॥ पूर्वे ॥ १४ ॥ कह्या तेहमांथि ॥
प्रज्ञानो ॥ १ ॥ अज्ञाननो ॥ २ ॥ ए ॥ २ ॥ ज्ञानावरणिय कर्मने । उदये हता
ते अने ॥ १ ॥ अलाभनो अंतरायकर्मने उदये हतो ते । ए । ३ वर्जिने । शेष
॥ ११ ॥ रह्या ते मांहिला ॥ १ ॥ समये ए वेदे ॥ टाढनो तिहां तापनो नहि ।

गुण ६१ ॥

तापनो तिहां टाढनो नहि । चालवानो तिहां थानकनो नहि । थानकनो तिहां चालवानो नहि ॥ इति १३ मो परिसहद्वार समाप्तं ॥ १३ ॥ हवे ॥ १४ ॥ मो मार्गणाद्वार कहेछे ॥ पहिले गुणठाणे मार्गणा ॥ ४ ॥ त्रीजे चोथे पांचमे सातमे जाय ॥ बिजे गुण० मार्गणा ॥१॥ पडे तो पहिले आवे । पण चढवुं नथि ॥ त्रिजे मार्गणा ॥ ४ ॥ पडे तो पहिले आवे । अने चढे तो चोथे पांचमे अने सातमे जाय ॥ चोथे मार्गणा ॥ ५ ॥ पडे तो पहिले बिजे त्रिजे आवे । अने चढे तो पांचमे सातमे जाय ॥ पांचमे मार्गणा ॥५॥ पडे तो पहिले बिजे त्रिजे चोथे आवे । अने चढे तो सातमे जाय ॥ छठे मार्गणा ॥ ६ ॥ पडे तो पहिले बिजे त्रिजे चोथे पांचमे आवे ॥ अने चढे तो सातमे जाय ॥ सातमे मार्गणा ॥ २ ॥ पडेतो छठे चोथे आवे । अने चढे तो ॥ ८ ॥ मे जाय ॥ आठमे मार्गणा ॥ ३ ॥ पडे तो । सातमे चोथे आवे । चढे तो नवमेजाय ॥ नवमे मार्गणा ॥ ३ ॥

इग्यारमे बारमे जाय ॥ इग्यारमे मार्गणा ॥
पडे तो नवमे चोथे आवे । चढे तो इग्यारमे बारमे जाय ॥ इग्यारमे मार्गणा ॥
पडे तो दशमे तथा पहिले आवे ।
॥ २ ॥ काल करे तो अनुत्तर विमाने जाय ॥ पडे तो दशमे तथा पहिले आवे ।
चढवुं नथि ॥ बारमे मार्गणा ॥१॥ तेरमे जाय पडवुं नथि ॥ तेरमे मार्गणा॥१॥
चउदमे जाय । पडवुं नथि । चउदमे मार्गणा एके नथि मोक्ष जाय । इति मा
र्गणाद्वार १४ मो समाप्तं ॥ १४ ॥ हवे पनरमो आत्माद्वार कहेछे ॥ आत्मा ॥
॥ ८ ॥ द्रव्यआत्मा ॥ १ ॥ कषायआत्मा ॥ २ ॥ योगआत्मा ॥ ३ ॥ उपयोग
आत्मा ॥ ४ ॥ ज्ञानआत्मा ॥ ५ ॥ दर्शनआत्मा ॥ ६ ॥ चारित्रआत्मा ॥ ७ ॥
वीर्यआत्मा ॥ ८ ॥ पहिलेत्रिजे गुण० ॥ ६ ॥ आत्मा । ज्ञान ॥ १ ॥ ने चारित्र
॥ २ ॥ ए ॥ २ ॥ वर्जिने ॥ बिजे चोथे गुण० ॥ ७ ॥ आत्मा । चारित्र वर्जिने ॥
पांचमे गुणठाणे ॥ पण ॥ ७ ॥ आत्मा देशथि चारित्र छे ॥ छठेथि दशमा गु

णठाणासुधि ॥ ८ ॥ आत्मा । इग्यारमे बारमे तेरमे ॥ ७ आत्मा ॥ कषाय न
जिने ॥ चउदमे ६ आत्मा ॥ कषाय ने जोग वर्जिने । सिद्धमां ॥ ४ ॥ आत्मा ।
ज्ञान आत्मा ॥ १ ॥ दर्शन आत्मा ॥ २ ॥ द्रव्य आत्मा ॥ ३ ॥ उपयोगआत्मा
॥ ४ ॥ इति १८ मो आत्माद्वार समाप्तं ॥ १८ ॥ हवे १६ मो जीवभेदद्वार क
हेछे । पहिले गुणठाणे ॥ १४ ॥ भेद । लाभे ॥ बिजे गुण० ॥ ६ ॥ भेद लाभे ॥
बेइंद्रिय ॥ १ ॥ तेइंद्रिय ॥ २ ॥ चउरिंद्रिय ॥ ३ ॥ असंज्ञितिर्यंचपंचेंद्रिय
॥ ४ ॥ ए ॥ ४ ॥ ना अपर्जाप्ता ॥ ने ॥ संज्ञी पंचेंद्रियनो अपर्जाप्तो ने पर्जाप्तो ॥ ए ॥
॥ ६ ॥ त्रिजे गुण० ॥ १ ॥ संज्ञी पंचेंद्रियनो पर्जाप्तो लाभे । चोथे गुणठाणे
॥ २ ॥ भेद लाभे । संज्ञी पंचेंद्रियनो अपर्जाप्तो ने । पर्जाप्तो ॥ ए ॥ २ ॥
पांचमाथि ते ॥ १४ ॥ मा गुणठाणासुधि ॥ १ ॥ संज्ञि पंचेंद्रियनो पर्जाप्तो
लाभे ॥ इति १६ मो जीवभेदद्वार समाप्तं ॥ हवे १७ मो जोगद्वार कहेछे ॥

पहिले बिजे ने चोथे गुणठाणे जोग ॥ १३ ॥ लाभे । बे । आहारकना वर्जिने ॥ त्रिजे गुण० १० जोगलाभे ॥ ४ ॥ मनना ॥ ४ ॥ वचनना ॥ १ ॥ उदारिकनो ॥ १ ॥ वैक्रेयनो । ए ॥ १० ॥ लाभे ॥ पांचमे गुणठाणे ॥ १२ ॥ जोग ॥ आहारकना ॥ २ ॥ ने एक कार्मणनो । ए ॥ ३ ॥ वर्जीने ॥ १२ ॥ लाभे ॥ छठे गुण० ॥ १४ ॥ जोग लाभे ॥ १ ॥ कार्मणनो वर्जिने । सातमे गुण० ॥ ११ ॥ जोग ॥ ४ ॥ मनना ॥ ४ ॥ वचनना ॥ १ ॥ उदारिकनो ॥ १ ॥ वैक्रेयनो॥ १ ॥ आहारकनो । एवं ॥ ११ ॥ आठमांथि मांमिने ॥ १२ ॥ मां गुणठाणासुधि जोग ॥ ९ ॥ लाभे ॥ ४ ॥ मनना ॥ ४ ॥ वचनना ने ॥ १ ॥ उदारिकनो । ए ॥ ९ ॥ तेरमे गुणठाणे । जोग ॥ ७ ॥ लाभे ॥ बे मनना । बे वचनना । ए ॥ ४ ॥ ने उदारिकनो ॥ १ ॥ उदारिकनो मिश्र ॥२॥ कार्मणकायजोग ॥ ३ ॥ एवं ॥७॥ चउदमे गुण० जोग नथि । इति १७ मो जोगद्वार समाप्तं ॥ १७ ॥ हवे ॥ १८ ॥ मो

णठाणाद्वार कहेछे ॥ पहिले ने त्रिजे गुणठाणे ॥ ६ ॥ उपयोग लाभे ॥ ३ ॥ जिने ॥ ३ ॥ ३ ॥ दर्शन । एवं ॥ ६ ॥ बिजेचोथे पांचमे गुण० ॥ ६ ॥ उपयोग लाभे ॥ ३ ॥ ज्ञान ॥ ३ ॥ दर्शन ॥ एवं ॥ ६ ॥ छठाथि ते बारमा गुणठाणा सुधि उपयोग ॥ ७ ॥ लाभे ॥ ४ ॥ ज्ञानने ॥ ३ ॥ दर्शन । एवं ॥ ७ ॥ तेरमे चउदमे गुणठाणे तथा सिद्धमां ॥ २ ॥ उपयोग । केवल ज्ञान ॥ १ ॥ ने । केवलदर्शन ॥ २ ॥ इति १८ मो उपयोगद्वार समाप्तं ॥ १८ ॥ हवे १९ मो लेशाद्वार कहेछे ॥ पहिलाथि ते छठा गुणठाणासुधि ॥ ६ ॥ लेशालाभे ॥ सातमे गुण० उपलि ॥ ३ ॥ लेशा लाभे । आठमेथि मांमिने बारमा गुणठाणा सुधि ॥ १ ॥ शुकललेशा लाभे ॥ तेरमे गुणठाणे ॥ १ ॥ परमशुकललेशा लाभे । चउदमे गुण० लेशा नथि । इति १९ मो लेशाद्वार समाप्तं ॥ १९ ॥ हवे २० मो चारित्रद्वार कहेछे । पहिलाथि ते चोथा गुणठाणासुधि कोइ चारित्र नथि ।

पांचमे गुणठाणे देशथि सामायक चारित्र छे । छठे सातमे गुणठाणे ॥ ३ ॥ चारित्र लाभे । सामायक चारित्र ॥ १ ॥ छेदोपस्थापनीयचारित्र ॥ २ ॥ परिहार विशुद्धचारित्र ॥३॥ । ए ॥३॥ लाभे । आठमे नवमे गुणठाणे ॥२॥ चारित्र लाभे । सामायक ॥ १ ॥ छेदोपस्थापनीय ॥२॥ दशमे गुण० १ सुक्ष्मसंपरायचारित्र लाभे ॥ इग्यारमेथि ते चउदमा गुणठाणासुधि १ जथाख्यातचारित्र लाभे ॥ इति २० मो चारित्रद्वार समाप्तं ॥ २० ॥ हवे २१ मो समकितद्वार कहेछे । पहिले ने त्रिजे गुणठाणे समकित नथि ॥ बिजे गुण० १ सास्वादान समकित लाभे ॥ चोथेथि ते सातमा गुणठाणासुधि ॥ ४ ॥ समकित लाभे । उपशम ॥ ॥ १ ॥ क्षयोपशम ॥२॥ वेदक ॥३॥ क्षायकसमकित ॥४॥ आठमे नवमे गुणठाणे ॥ ३ ॥ समकित लाभे । उपशम ॥ १ ॥ क्षयोपशम ॥ २ ॥ क्षायक ॥३॥ दशमे इग्यारमे गुणठाणे ॥२॥ समकित लाभे । उपशम ॥ १ ॥ क्षायक ॥ २ ॥

बारमे तेरमे चउदमे गुणठाणे तथा सिद्धमां ॥ २ ॥ क्षायकसमकित लाभे ॥ इति २१ मो समकितद्वार समाप्तं ॥ २१ ॥ हवे २२ मो अल्पबहुत्वद्वार कहे छे ॥ सर्वथि थोडा इग्यारमा गुणठाणावाला ॥ एक समये उपशमश्रेणिवाला ५४ जीव लाभे माटे ॥ १ ॥ तेथि बारमा गुणठाणावाला संखेजगुणा ॥ एक समये क्षपकश्रेणिवाला । एकसो ने आठ जीव लाभे माटे ॥२॥ तेथि आठमा नवमा दशमा गुणठाणावाला संखेज गुणा॥ जघन्य बसे॥उत्० नवसें लाभे माटे ॥३॥ तेथि तेरमां गुणठाणावाला संखेजगुणा ॥ जघ० बे क्रोडि ॥ उत्०नव क्रोडि लाभे माटे ॥४॥ तेथि सातमां गुणठाणावाला संखेजगुणा । जघ० । बसे क्रोडि। उत्० ।नवसें क्रोडि लाभे माटे ॥५॥ तेथि छठां गुणठाणावाला संखेजगुणा। जघ० । बे हजार क्रोडि । उत्० । नव हजार क्रोडि लाभे माटे ॥ ६॥ तेथि पांचमां गुणठाणावाला असंखेजगुणा । तिर्यंच श्रावक लाभ्या माटे ॥ ७ ॥

तेथि बिजा गुणठाणावाला असंखेजगुणा ४ गतिमां लाभे माटे ॥ ८ ॥ तेथि त्रिजा गुणठाणावाला असंखेजगुणा ॥ ४ गतिमां विशेष छे माटे ॥ ९ ॥ तेथि चोथा गुणठाणावाला असंखेजगुणा घणि स्थिति छे माटे ॥१०॥ तेथि चउदमां गुणठाणावाला ने सिद्धभगवंतजि अनंतगुणा ॥ ११ ॥ तेथि पहिला गुणठाणा वाला अनंतगुणा ॥ एकेंद्रिय प्रमुख सर्व मिथ्यादृष्टि छे माटे ॥ १२॥ इति २२ मो अल्पबहुत्वद्वार समाप्तं ॥२२॥ इति गुणठाणाना २२ द्वार समाप्तं ॥ हवे भाव ६ कहेछे ॥ उदयभाव ॥१॥ उपशम भाव ॥२॥ क्षायकभाव ॥३॥ क्षयोपशमभाव ॥ ४ ॥ पारिणामिकभाव ॥ ५ ॥ सन्निवाइभाव ॥ ६ ॥ हवे उदयभावना ॥ २ ॥ भेद ॥ जीवउदयनिष्पन्न ॥ १ ॥ ने अजीवउदयनिष्पन्न ॥ २ ॥ जीवउदयनिष्पन्नना ॥ ३३ ॥ बोल पामे ॥ ४ ॥ गति ॥ ६ ॥ काय ॥६॥ लेश्या ॥ ४ ॥ कषाय ॥ ३ ॥ वेद । एवं ॥ २३ ॥ ने मिथ्यात्व ॥ १ ॥ अज्ञान ॥ २ ॥

अविरति ॥ ३ ॥ असंज्ञिपणुं ॥ ४ ॥ आहारकपणुं ॥ ५ ॥ छद्मस्थपणुं ॥ ६ ॥
सजोगिपणुं ॥ ७ ॥ संसार परियट्टणा ॥ ८ ॥ असिद्ध ॥९॥ अकेवलि ॥ १० ॥
एवं ॥ ३३ ॥ हवे अजीव उदयनिष्पन्नना ३० बोल पामे ॥५॥ वर्ण ॥ २ ॥ गंध
॥५॥ रस ॥८॥ स्पर्श ॥ ५ ॥ शरिर ॥ ५ ॥ शरिरना व्यापार । एवं ॥३०॥ एवं
उभय मिलिने ॥३३॥ ने ॥३०॥ त्रेशठ । भेद । उभयभावना कह्या ॥१॥ हवे उपश
मभावे ॥ ११ ॥ बोल छे । च्यार कषायनो उपशम ॥ ४ ॥ रागनो उपशम ॥५॥
द्वेषनो उपशम ॥६॥ दर्शनमोहनीयनो उपशम ॥७॥ चारित्रमोहनियनो उपशम
॥८॥ एवं ॥८ मोहनियनि प्रकृति ॥ अने उवसमियादंशणलब्धि ते समकित ॥९॥
उवसमियाचरित्तलब्धि ॥१०॥ उवसमिया अकषायछउमत्थवीतरागलब्धि ॥११॥
एवं ॥ ११ ॥ हवे क्षायक भावे ३७ बोल छे ॥ ५ ॥ ज्ञानावरणिय ॥ ९ ॥ दर्श
नावरणिय ॥२॥ वेदनीयनि ॥ १ ॥ रागनि ॥ १ ॥ द्वेषनि ॥४॥ कषायनि ॥१॥ द

र्शनमोहनीयनि ॥ १ ॥ चारित्रमोहनीयनि ॥ ४ आयुषनि ॥ २ नामनि ॥२॥
गोत्रनि ॥ ५ ॥ अंतरायनि । एवं ॥३७ ॥ प्रकृतिने क्षय करे तेहने क्षायकन्नाव
कहिये । ते ए बोल पामे ॥ क्षायकसमकित ॥ १ ॥ क्षायकजथाख्यातचारित्र
॥ २ ॥ केवलज्ञान ॥ ३ ॥ केवलदर्शन ॥४॥ अने क्षायकदानादिलब्धि ॥ ५ ॥
एमं ए बोल ॥ ३ ॥ हवे क्षयोपशमन्नावे ॥ ३० ॥ बोल छे ॥ ४ ॥ ज्ञान प्रथम
॥३॥ अज्ञान ॥३॥ दर्शन ॥ ३ ॥ दृष्टि ॥ ४ ॥ चारित्र प्रथम ॥ १ ॥ चरित्ताचरि
त्त ते श्रावकपणु पामे ॥ १ ॥ आचार्यगणिनि पदवी ॥ १ ॥ चउद पूर्व ज्ञाननी
प्राप्ति ॥ ५ ॥ इंद्रिय ५ नि लब्धि ॥५॥ दानादिलब्धि । एवं सर्व मिली ॥३०॥
बोल ॥ ४ ॥ हवे पारिणामिक न्नावना ॥ २ ॥ न्नेद । सादिपारिणामिक ॥ १ ॥
अनादिपारिणामिक ॥ २ ॥ सादि विणशे ॥ अनादि विणशे नहि । सादिपारि
णामिकना अनेक न्नेद छे । जुनी सुरा मदिरा जुनो गोल तंडुल ए आदि ७३

बोल भगवतीनि शाखे छे ॥ अनादिपारिणामिकभावना ॥ १० ॥ बोल ॥ धर्मा
स्तिकाय ॥ १ ॥ अधर्मास्तिकाय ॥ २ ॥ आकाशास्तिकाय ॥ ३ ॥ पुद्गलास्ति
काय ॥ ४ ॥ जीवास्तिकाय ॥ ५ ॥ काल ॥ ६ ॥ लोक ॥ ७ ॥ अलोक ॥ ८ ॥
भव्य ॥ ए ॥ अभव्य ॥ १० ॥ एवं ॥ १० ॥ ५ ॥ हवेसन्निवाइभावना २६
भांगा ॥ १० ॥ द्विकसंजोगीना ॥ १० ॥ त्रिकसंजोगीना ॥५॥चउकसंजोगीना
॥ १ ॥ पंचसंजोगिनो । एवं ॥ २६ ॥ भांगा । एहनो विचार श्रीअनुयोगद्वार
सिद्धांतथि जाणवो ॥ ६ ॥ हवे ॥ १४ ॥ गुणठाणा उपर ॥ १० ॥ क्षेपकद्वार
उतारेछे । तेहमां प्रथम हेतुद्वार कहेछे ॥ २५ ॥ कषाय ॥ १५ ॥ जोग एवं ४०
ने ॥ ६ ॥ काय ॥ ५ ॥ इंद्रिय ॥ १ ॥ मन ए ॥ १२ ॥ अव्रत । एवं ॥ ५२ ॥ ने
॥ ५ ॥ मिथ्यात्व । एवं ५७ हेतु । पहिले गुणठाणे ॥ ५५ ॥ हेतु ते आहार
कना २ वर्जिने ॥ १ ॥ बिजे गु० ५० हेतु ते ५५ मांथि ५ मिथ्यात्व टल्या ॥२॥

त्रिजे गुण० ४३ हेतु ते ५०मांथि अनंतानुबंधि॥४॥उदारिकनो मिश्र॥१॥वैक्रेयनो मिश्र॥२॥आहारकना॥२॥मिथ्यात्व॥५ एवं॥१४॥वर्ज्या शेष ४३॥३॥ चोथे गुण० ४६ हेतु ते पूर्वे कह्या ४३ ते अने उदारिकनो मिश्र॥१॥वैक्रयनो मिश्र॥२॥कार्मण कायजोग॥३॥ए ३ वध्या सर्व मिलिने ४६॥४॥पांचमे गुणठाणे ४० हेतु ते पूर्वे ४६ कह्या तेहमांथि अप्रत्याख्यानीनि चोकडि॥४॥त्रश कायनो अव्रत॥१॥कार्मणकायजोग॥१॥एवं ६ घट्या शेष ४० हेतु॥५॥ छठे गुण० २७ हेतु पूर्वे ४० कह्या तेहमांथि प्रत्याख्यानावरणियनि चोकडि॥४॥ पांच स्थावरनो अव्रत॥५॥इंद्रिय ५ नो अव्रत॥५॥ने एक मननो अव्रत॥१॥एवं॥१५॥वर्ज्या शेष॥२५॥रह्या ने आहारकना॥२॥वध्या। एवं सर्व मिलि॥२७॥हेतु॥६॥सातमे गुण०॥२४॥हेतु ते पूर्वे २७ कह्या तेह मांथि॥उदारिकमिश्र॥१॥वैक्रेयमिश्र॥२॥आहारकमिश्र। ए॥३॥ वर्ज्या।

शेष ॥ २४ ॥ हेतु ॥ ७ ॥ आठमे गुण० २२ हेतु ते पूर्वे २४ कह्या तेहमांथि । वैक्रे
यनो ॥ १ ॥ आहारकनो ॥ २ ॥ ए ॥ २ ॥ वर्ज्या । शेष ॥ २२ ॥ हेतु ॥ ८ ॥ नवमे
गुण० १६ हेतु ते पूर्वे २२ कह्या तेहमांथि । हास्य ॥ १ ॥ रति ॥ २ ॥ अरति ॥३॥
भय ॥ ४ ॥ शोक ॥ ५ ॥ दुगंछा ॥ ६ ॥ ए ६ वर्ज्या । शेष ॥ १६ ॥ हेतु ॥९॥ दशमे
गुण० १० हेतु ते ॥ ९ ॥ जोगने ॥ १ ॥ संजलनो लोभ । एवं ॥ १० ॥ हेतु ॥१०॥
इग्यारमे बारमे गुण० ॥ ९ ॥ हेतु ते ९ जोग जाणवा ॥ ११ ॥१२॥ तेरमे गुण० ७
हेतु ते ७ जोग जाणवा ॥ १३ ॥ चउदमे गुण० हेतु नथि ॥ १४ ॥ इति पहिलो हे
तुद्वार समाप्तं ॥ १ ॥ हवे बीजो दंडक द्वार कहेछे । पहिले गुण० २४ दंडक । बिजे
गुण० १९ दंडक ते ५ स्थावरना वर्ज्या । त्रिजे चोथे गुण० १६ दंडक ते ३ विकलें
द्रिय वर्ज्या । पांचमे गुण० २ दंडक संज्ञिमनुष्य १ संज्ञितिर्यंच ॥ २ ॥ ए ॥ २ ॥
छठाथि ते चउदमा गुणठा० सुधि १ मनुष्यनो दंडक । इति २ दंडकद्वार समाप्तं

॥ २ ॥ हवे त्रिजो जीवाजोनिद्वार कहेछे । पहिले गुण० ८४ लाख जीवा जोनि ॥
बिजे गुण० ३२ लाख ते एकेंद्रियनि वर्जि ॥ त्रिजे चोथे गुण० २६ लाख जीवा
जोनि ॥ पांचमे गुण० ॥ १८ लाख जीवा जोनि । छठाथि ते १४ मा गुणठाणासु
धि १४ लाख जीवा जोनि । इति त्रिजो जोनिद्वार समाप्तं ॥ ३ ॥ हवे ४ थो अंतर
द्वार कहेछे।पहिले गुण०जघ० अंतरमुहूर्त्त उत्० ६६सागर जाझेरानुं अथवा १३२
सागर जाझेरानुं ते ६६ सागर चउथे गुण० रहे अंत० त्रीजे गु० रहि पाछो चउ
थे ६६ रहि मिथ्यात्वे आवे ॥ बिजाथि मांडिने इग्यारमा गुणठाणासुधि ज० अं
त० अथवा पल्यनो असंख्यातमो भागते एटला काल विना उपसम श्रेणीकरि
ने पडे नहीं उत्० अर्द्धपुद्गल देशे उणुं । बारमे तेरमे ने चउदमे गुण० आंत
रुं नथि । ए एक जीवआश्रि इति ४ अंतरद्वार समाप्तं ॥ ४ ॥ हवे ५ मो
ध्यानद्वार कहेछे पहिले बिजे त्रिजे गुण० २ ध्यान पहिला । चोथे पांचमे

गुण० ३ ध्यान पहिला । छठे गुण० २ ध्यान आर्त्त १ ने धर्म ॥ २ ॥ सा
तमे गुण० १ धर्मध्यान० । आठमेथि मांडिने चउदमा गुण० १ शुकलध्या
न । इति ५ मो ध्यानद्वार समाप्तं ॥ ५ ॥ हवे छठो फरसनाद्वार कहेछे । प
हिलुं गुणठाणुं १४ राजलोक स्पर्शे ॥ बिजुं गुण० हेठुं पंडगवनथि ते ६ ठि नर
कलगे फरसे तथा उंचुं अधोगाम विजयथि तेए ग्रैवेयकसुधि फरसे ॥ २ ॥ त्रिजुं गुण०
लोकनो असंख्यातमो भाग फरसे ॥ ३ ॥ चोथुं गुण० अधोगाम विजयथि १२मा दे
वलोकसुधि फरसे अथवा पंडगवनथि छठीनरक सुधी फरसे ॥ ४ ॥ पांचमुं गुण० पण
इमज अधोग्रामविजयथि १२मा देवलोक सुधि फरसे ॥ ५ ॥ छठाथि ते इग्यारमा गु
णठाणावाला अधोगाम विजयथि ५ अनुत्तरविमानसुधि फरसे ॥ बारमुं गुण० लो
कनो असंख्यातमो भाग फरसे । तेरमुं गुण० सर्व लोक फरसे । चउदमुं गुण० लो
कनो असंख्यातमो भाग फरसे ॥ इति ६ ठो फरसनाद्वार समाप्तं ॥ ६ ॥ हवे

तिर्थंकर गोत्र ४ गुणठाणे बाधे ॥ चोथे पांचमे छठे ने सातमे ए ॥ ४ ॥ गुण ठाणे बांधे । शेष गुणठाणे न बांधे ॥ तिर्थंकर देव ए गुणठाणा फरसे ते । ४ । ६ । ७ । ८ । ९ । १० । १२ । १३ ॥ १४ ॥ ए॥९॥ फरसे इति ७ मो द्वार समाप्तं ॥ ७ ॥ गुणठाणा १४ मां । १ ॥ ४ । ५ । ६ ।१३ । ए ५ शास्वता । शेष ए गुण० अशास्वता । इति आठमो द्वार समाप्तं ॥८॥ गुणठाणा ॥ १४ ॥ मां । १ । २ । ३ । ४ । ५ । ६ । ७ । ए ७ गुण० ६ संघयण । आठमाथि ते १४ मा गुण ठाणासुधि । एकवज्ररूषभ नाराचसंघयण । इति ९ मो द्वार समाप्तं ॥ ९ ॥ आर्याजी ॥ १ ॥ अवेदि ॥ २ ॥ परिहारविशुद्धचारित्रवंत ॥ ३ ॥ पुलाकलब्धि वंत ॥४॥ अप्रमादि साधु ॥५॥ चउद पुर्वीसाधु ॥ ६॥ आहारकशरीरि ॥ ७ ॥ ए ॥७॥ नुं कोइ देवता साहारणकरि शके नहि । इति १० मो द्वार समाप्तं॥१० इति १० क्षेपक द्वार समाप्तं इति गुणठाणाद्वार समाप्तं ॥

अथ श्री मह्होटो बासठियो लि
ख्यते॥गाथा॥जीव१गइ२ इंदिय
३ काय ४। जोग ५ वेय ६ कषाय
७ लेस्सा ८। सम्मत्तं ए नाण १०
दंसण ११।संजय १२ उवउग १३
आहारे १४।१। नासग १५ प
रित्त १६ पज्जत १७। सुहुम १८
सन्नि १ए नव ह २० चरिमेय
२१ ॥ जीवेयखेत्तेवंधे । पुग्गलए
महादंमएचेव।२।ए २ गाथानो
विस्तार कहेछे ॥

१ समुच्चय जीवमां जीवना नेद॥१४
गुणठाणा॥१४॥जोग॥१५॥उपयो
ग॥१२॥लेश्या॥६॥इति॥१॥द्वार॥
१ नरकगतिमां॥जीवना नेद॥३॥संज्ञी
नो अप०१ ने प्रजाप्तो॥२॥ असं
ज्ञीनो अप०॥३॥गुण०४प्रथमा॥जो
ग॥११॥ते४मनना४॥वचनना१वैक्रे
य१॥वैक्रेयनो मिश्र॥१॥कार्मणकाय
जोग॥एवं११॥उपयोग॥ए॥३ज्ञान
॥३॥अज्ञान३दर्शन॥लेश्या३प्रथम
२ तिर्यंचनि गतिमां जीवना नेद॥१४

गुण० ५॥ प्रथम॥ जोग १३॥ आहारकना २ वर्जिने॥ उप० ९॥ ३ ज्ञान ३ अज्ञान ३ दर्शन॥ लेश्या ६ ॥

३ तिर्यंचणीमां जीवना भेद २ संज्ञीनो अप्र० ने प्रजाप्तो २ गुण० ५ प्रथम ॥ जोग १३ ॥ उप० ९॥ ज्ञान ३ अज्ञान ३ दर्श० ३॥ लेश्या ६॥

४ मनुष्यनि गतिमां जीवना भेद ३ संज्ञीनो अप्र० ने प्रजाप्तो॥२॥ असंज्ञीनो अप्र०॥ ३ ॥ ए३॥ गुण० १४॥ जोग० १५॥ उप० १२॥ लेश्या ६

५ मनुष्यणीमां जीवना भेद २ संज्ञीना॥ गुण० १४। जोग १३ आहारकना २ वर्जिने॥ उप० १२॥ लेश्या ६॥

६ देवतानि गतिमां जीवना भेद ३ संज्ञीनो अप्र० १ ने प्रजाप्तो २ असंज्ञीनो अप्र० ३॥ गुण० ४ पहिला ॥ जोग ११। ४ मनना ॥४॥ वचनना॥ २ वैक्रेयना॥ १ कार्मणनो॥ एवं ११ ॥ उप० ९ लेश्या ६ ॥

७ देवांगनामां जीवना भेद २ संज्ञीनो अप्रजाप्तो १॥ ने प्रजाप्तो २ ॥

गुण० ४ प्रथम॥ जोग ११।४मन
ना ४ वचनना॥२वैक्रेयना ने १कार्म
णनो॥एवं ११॥उपयोग ९॥लेश्या ४
८ सिद्धगतिमां जीवना भेद नथि॥गु
णठाणा नथि॥जोग नथि॥उपयो०
२केवलज्ञान १॥केवलदर्शन२।ले
श्या नथि॥एहनो अल्पबहुत्व॥सर्व
थि थोडी मनुष्यणी १॥तेहथि मनु
ष्य समुर्छिम भेलता असंखेज्जगु
णा २॥तेहथि नारकि असंखेज्जगु
णा ३॥तेहथि तिर्यंचणी असंखेज्ज
गुणि ४॥ तेहथि देवता असंखेज्ज
गुणा५॥तेहथिदेवीसंखेज्जगुणि६॥
तेहथिसिद्धभगवंत अनंतगुणा ७।
तेहथि तिर्यंच अनंतगुणा ८॥इति
बिजो द्वार ॥
९ सइंदियामांजीवनाभेद१४॥गुण०
१२प्रथम॥जोग १५उपयोग१०॥
केवलज्ञान १ केवलदर्शन २ ए २
वर्जीने॥लेश्या ६ ॥
एकेंद्रियमां जीवना भेद ४॥सूक्ष्म
एकेंद्रियनो अप्रजाप्तो ने १ प्रजा

प्तो २॥बादर ऐकेंद्रियनो अप्रजा
प्तो ३ ने प्रजाप्तो ४ ॥ गुण० १ प्र
थम ॥ जोग ५ उदारिक १ उदारि
कनो मिश्र २ वैक्रेय ३ वैक्रेयनो
मिश्र ४ कार्मणकायजोग ५ ॥ उप
योग ३॥ बे अज्ञानने ॥ १ अचक्षु
दर्शन ॥ लेश्या ४

५ बेइंद्रिय १ तेइंद्रिय २ चउरिंद्रिय
ए ३ मां ॥ जीवना भेद २ पोतपो
तानो अप्रजाप्तो १ ने प्रजाप्तो २॥
गुण० २ पहिला । जोग ४ । २ उ
दारिकना ॥ १ कार्मणनो ॥ ने ॥ १ व्यव
हारवचननो । एवं ४ ॥ उपयोग बेइं
द्रियतेइंद्रियमां ५ । २ ज्ञान ॥ २ अ
ज्ञान ॥ ने ॥ १ अचक्षुदर्शन एवं ५ ॥
अने चउरिंद्रियमां ६ ते १ चक्षुद
र्शन वध्युं एवं ६ ॥ लेश्या ३

६ पंचेंद्रियमां जीवना भेद ४ ॥ संज्ञि
नो अप्रजाप्तो १ ने प्रजाप्तो २
असंज्ञीनो अप्रजाप्तो ३ ने प्रजा
प्तो ४ एवं ४ ॥ गुण० १२ प्रथम ॥ जो
ग १५ ॥ उपयोग १० केवलज्ञान १

ीहोटो

७१ ॥

केवलदर्शन२ए२वर्ज्या॥लेश्या६॥
७ अणिंदियामां जीवनोभेद १ संज्ञि
नो प्रजाणो ॥गुणठाणा २तेरमुं ने
चउदमुं ॥जोग७।२मनना ते सत्य
मन १ व्यवहारमन २ बे वचनना
ते सत्यवचन १ व्यवहारवचन २
एवं ४॥ अने उदारिकनो ५ उदारि
कनो मिश्र ६ कार्मणकायजोग ७॥
उपयोग २॥केवलज्ञान १ केवल
दर्शन२॥लेश्या१शुकल॥एहनो अ
ल्पबहुत्व॥सर्वथि थोमा पंचेंडिया

१।तेहथिचउरिंडियाविशेषाहिया
२।तेहथितेइंडियाविशेषाहिया ३।
तेहथि बे इंडिया विशेषाहिया ४।
तेहथि अणिंदिया अनंतगुणा५।
तेहथि एकेंडिया अनंतगुणा ६॥ते
हथि सइंडिया विशेषाहिया ७ ॥
इति त्रिजो द्वार समाप्तं
१ सकायामां जीवनाभेद १४॥ गुण
१४॥जोग१५॥उप०१२॥लेश्या६।
४ पृथवीकाय १ अपकाय २ वनस्प
तिकाय ३॥ए ३ मां जीवना भेद

४।गुण० १।जोग३।।उप० ३।लेश्या४।
६ तेउकाय १ वाउकाय २।। ए २ मां
जीवना भेद ४।।गुण० १।। जोग तेउ
मां ३ ने ।। वाउमां ५ ते २ वैक्रेयना
वर्ज्या।। उप० ३ ।। लेश्या ३ ।।
७ त्रसकायमां जीवना भेद १० ते ४
एकेंद्रियना वर्ज्या।।गुण० १४।।जोग
१५ ।। उपयोग १२ ।। लेश्या ६ ।।
८ अकायमां जीवना भेद नथि गुण०
नथि।जोग नथि उप० २ लेश्या नथि
एहनो अल्पबहुत्व।सर्वथी थोडात्र
सकाया १।तेहथि तेउकाया असंख्ये
ज्जगुणा २।।तेहथि पृथवीकाया वि
शेषाहिया३।।तेहथि अपकाया वि
शेषाहिया४।।तेहथि वाउकाया वि
शेषाहिया ५।। तेहथि अकाया अ
नंतगुणा ६।।तेहथि वनस्पतिकाया
अनंतगुणा ७।। तेहथि सकाया वि
शेषाहिया ८ ।। इति चउथो द्वार
१ सजोगीमां जीवना भेद १४।।गुण०
१३।।जोग १५।।उप० १२।।लेश्या ६
२ मनजोगीमां जीवनो भेद १ ।। सं

ज्ञीनो प्रजाप्तो ॥ गुण० १३ जोग १४ एक कार्मणनो वर्जिने ॥ उपयोग १२ ॥ लेश्या ६ ॥

३ वचनजोगीमां जीवना भेद ॥ ५ ॥ बे इंडिय १ तेइंडिय २ चउरिंडिय ३ असंज्ञीपंचेंडिय ४ संज्ञिपंचेंडिय ५ ए ५ ना प्रजाप्ता ॥ गुण० १३ जोग १४ कार्मण वर्जिने ॥ उप० १२ ॥ लेश्या ६ ॥

४ कायजोगीमांजीवनाभेद१४॥गुण१३॥जोग१५॥उप०१२॥ लेश्या६

५ अजोगीमां जीवनो भेद १ संज्ञीनो प्रजाप्तो॥गुणठाणुं। १॥चउदमुं॥जोग नहि॥उपयोग२केवल ज्ञानने केवल दर्शन॥लेश्या नथि॥एहनो अल्पबहुत्व॥सर्वथि थोमा मनजोगी १॥तेहथि वचनजोगी असंखेज्जगुणा २॥तेहथि अजोगी अनंतगुणा३॥तेहथिकायजोगीअनंतगुणा ४ ॥ तेहथि सजोगी विशेषाहिया ५ ॥ इति पांचमो द्वार ॥

१ सवेदीमां जीवना भेद १४ ॥गुण९

प्रथम॥जोग १५।उ० १०केवलज्ञा
न १ केवलदर्शन वर्जिने॥लेश्या ६
३ स्त्रीवेद १ पुरुषवेद २ ए २ मां। जी
वना भेद २ संज्ञीना॥गुण०ए॥जो
ग १५॥पुरुषवेदमां॥ अने॥स्त्रीवे
दमां १३।ते।२॥ अहारकनावर्जि
ने ॥ उप० १० ॥ लेश्या ६ ॥
४ नपुंसकवेदमां जीवना भेद १४।गु
णए॥जोग१५॥उपयोग१०केवल
ज्ञान१केवलदर्शनवर्जिने लेश्या६
५ अवेदीमां जीवनो भेद १ संज्ञीनो
प्रजाप्तो॥गुण०६॥नवमाथि ते १४
मासुधि॥ जोग ११। ४ मनना ४व
चनना॥ने॥२उदारिकना॥१॥कार्म
णनो॥ एवं ११॥उपयोग ए।३ अ
ज्ञान वर्जिने॥लेश्या १ शुकल ॥ए
हनो अल्पबहुत्व॥सर्वथि थोमा पू
रुषवेदी॥१॥तेहथि स्त्रीवेदी संखेज्ज
गुणा २ ॥ तेहथि अवेदी अनंतगु
णा ३ ॥ तेहथि नपुंसकवेदी अनंत
गुणा ४ ॥ तेहथि सवेदी विशेषा
धिया ५ ॥ इति वेदद्वार ॥

१ सकषायीमां जीवना भेद १४ ॥ गुण० १० प्रथम ॥ जोग १५ ॥ उपयोग १० ॥ केवलज्ञान १ केवलदर्शन २ वर्जिने ॥ लेश्या ६ ॥

४ क्रोध १ मान २ माया ३ ए३ मां जीवना भेद १४ ॥ गुण ए ॥ जोग १५ ॥ उपयोग १० ॥ लेश्या ६ ॥

५ लोभकषायीमां जीवना भेद १४ ॥ गुणठाणा १० पहिला ॥ जोग १५ ॥ उपयोग १० ॥ लेश्या ६ ॥

३ अकषायीमां जीवनो भेद ॥ १ ॥ संज्ञीनो प्रजाप्तो ॥ गुण४ उपरला ॥ जोग ११ । ४ मनना ॥ ४ वचनना ॥ २ उदारिकना ॥ १ कार्मणनो ॥ एवं ११ । उपयोगए । ५ ज्ञान ४ दर्शन । एवं ए ॥ लेश्या ६ । एहनो अल्पबहुत्व सर्वथि थोडा अकषायी १ ॥ तेहथि मानकसायी अनंतगुणा २ ॥ तेहथि कोह कषायी विशेषाहिया ३ तेहथिमायाकषायी विशेषाहिया ४ ॥ तेहथि लोभकषायी विशेषाहिया ५ तेहथिसकषायी विशेषाहिया ६ । इति सातमो द्वार ॥

१ सलेशीमां जीवना भेद १४ ॥ गुण
१३॥जोग१५॥उप०१२॥लेशा६।
४ कृष्ण १ निल २ कापुत ३ ए ३ ले
शीमे॥जीवना भेद १४॥गुणठाणा
६ प्रथम॥जोग१५॥उपयोग१० बे
केवलना वर्ज्या॥लेशा पोतपोतानि
५ तेजुलेशीमे जीवना भेद ३ संज्ञि
नो अप्रजाप्तो १॥प्रजाप्तो २॥बा
दर एकेंद्रियनो अप्रजाप्तो ३ ॥गु
ण० ७ प्रथम॥जोग १५ उपयोग
१० ॥ लेशा १ तेजु ॥

६ पद्मलेशीमां जीवना भेद २ संज्ञि
ना॥गुण० ७ प्रथम॥जोग १५॥
उपयोग १० ॥ लेशा १ पदम ॥
७ शुकललेशीमां जीवना भेद २॥सं
ज्ञिना॥गुण०१३ प्रथम।जोग १५॥
उपयोग १२॥ लेशा १ शुकल॥
८ अलेशीमां जीवनो भेद १ संज्ञिनो
प्रजाप्तो॥गुण० १ चउदमुं॥जोग
नथि॥उपयोग २॥ केवल ज्ञान १
ने केवलदर्शन २॥ लेशा नथि ॥
एहनो अल्पबहुत्व॥सर्वथि थोडा

शुकल लेशी १ ॥ तेहथि पदमले
शीसंखेज्जगुणा २ ॥ तेहथि तेजुले
शीसंखेज्जगुणा ३ ॥ तेहथि अलेशी
अनंतगुणा ४ ॥ तेहथि कापुतलेशी
अनंतगुणा ५ ॥ तेहथि निललेशी
वीशेषाहिया ६ ॥ तेहथि कृष्णलेशी
विशेषाहिया ७ ॥ तेहथि सलेशी वि
शेषाहिया ८ ॥ इति ८ मो द्वार ॥
१ समुचय सम्यक्त्वदृष्टिमां जीवना
भेद ६ ॥ बेइंद्रिय १ ॥ तेइंद्रिय २ ॥ च
उरिंद्रिय ३ ॥ असंज्ञीपंचेंद्रिय ४ ॥ ए
४ना अप्रजाप्ता ॥ अने संज्ञीपंचेंद्रि
यनो अप्रजाप्तो । ने । प्रजाप्तो ॥ एवं
६ ॥ गुण० १ २ पहिलुं त्रिजुं वरजी
ने ॥ जोग १५ ॥ उपयोग ९ ॥ ३ अ
ज्ञान वर्जिने ॥ लेशा ६ ॥
२ सास्वादान सम्यक्त्वदृष्टिमां जीवना
भेद ६ ॥ गुण० बिजुं ॥ जोग १३ आ
हारकना २ वर्जिने ॥ उपयोग ६ ॥
३ ज्ञान ॥ ३ दर्शन ॥ लेशा ६ ॥
३ उपशम सम्यक्त्वदृष्टिमां जीवना
भेद २ संज्ञीना ॥ गुण० ८ ॥ चोथाथि

११ मासुधि॥ जोग १५ उपयोग ७॥
४ ज्ञान ॥ ३ दर्शन ॥ लेश्या ६॥
५ क्षयोपशमने वेदकसम्यक्त्वदृष्टिमां
जीवना भेद २ संज्ञीना ॥ गुण० क्ष
योपशम सम्यक्त्वदृष्टिमां ४ थी न
वमासुधि॥ अने। वेदकमां ४ थी सा
तमासुधि जोग १५ उप० ७। लेश्या ६
६ क्षायक सम्य० जीवना भेद २ सं
ज्ञीना॥ गुण० ११॥ चोथाथि ते १४
मासुधि ॥ जोग १५ उपयोग ९॥ ३
अज्ञान वर्जिने ॥ लेश्या ६ ॥

७ मिथ्यात्व दृष्टिमां जीवना भेद १४
गुण १ प्रथम ॥ जोग १३ आहा
रकना २ वर्जिने ॥ उपयोग ६ । ३
अज्ञान ॥ ३ दर्शन ॥ लेश्या ६ ॥
८ समामिथ्यात्व दृष्टिमां॥ जीवनो भे
द १ संज्ञिनो प्रजाप्तो॥ गुण० १ त्रि
जुं॥ जोग १० ४ मनना॥ ४ वचनना
१ उदारिकनो॥ १॥ कार्मणनो। एवं
१० ॥ उप० ६ लेश्या ६ ॥
एहनो अल्पबहुत्व ॥ सर्वथि थोडा
सास्वादन समकिति १ तेहथि

उपसम समकिति संखेजगुणा २॥ तेहथि मिश्रदृष्टि संखेज्जगुणा ३॥ तेहथि क्षयोपशम समकिति अ संखेज्जगुणा ४॥तेहथि वेदक सम किति संखेज्जगुणा५॥तेहथि क्षाय कसमकिति अनंतगुणा६॥तेहथि समुचय समकिति विशेषाहिया ७ तेहथि मिथ्यात्व दृष्टि अनंतगुणा इति ए मो द्वार ॥

१ समुचयज्ञानिमां जीवना भेद६॥ बेइंद्रिय १।तेइंद्रिय २।चउरिंद्रिय ३। असंज्ञीपंचेंद्रिय ४। ए४ना अ प्रजाप्ता॥ने॥संज्ञीनो अप्रजाप्तो ने प्रजाप्तो॥एवं ६॥गुण० १२पहिलुं त्रिजुं वर्जिने॥जोग१५॥उपयोग ए ॥५ ज्ञानने ४ दर्शन ॥ लेश्या ६

२ मतिज्ञानी १ श्रुतज्ञानीमां २ जीवना भेद६॥गुण० १० पहिलुं त्रिजुं तेरमुं चउदमुं वर्जिने॥जोग१५ ॥ उप० ७ ॥ लेश्या ६ ॥

४ अवधिज्ञानीमां॥जीवना भेद २।

संज्ञीना॥गुण १०॥जोग १५॥उप
योग० ७ ॥ लेश्या० ६ ॥
५ मनपर्यवज्ञानीमां जीवनो भेद १
संज्ञीनो प्रजाप्तो॥गुण० ७॥छठाथि
बारमांसुधि ॥ जोग १४ कार्मणनो
वर्जिने ॥ उप० ७ ॥ लेश्या० ६ ॥
६ केवलज्ञानीमां जीवनो भेद १ सं
ज्ञिनो प्रजाप्तो॥गुण०२॥ तेरमुं ने
१४ मुं॥जोग७॥उपयोग२॥लेश्या
१ परमशुकल ॥
७ अज्ञानीमांजीवना भेद१४॥गुण२

पहिलुं ने त्रिजुं ॥ जोग १३ आ
हारकना २ वर्जिनेउप० ६ । ३ अ
ज्ञान ३ दर्शन ॥ लेश्या ६ ॥
८ मतिश्रुत अज्ञानीमां जीवना भेद
१४॥गुण० २पहिलुंनेत्रिजुं॥जोग
१३ ॥ उपयोग० ६॥लेश्या० ६ ॥
१० विभंग ज्ञानीमां जीवना भेद २
संज्ञीना॥गुण० २ पहिलुं ने त्रिजुं
॥जोग १३॥उप० ६॥लेश्या० ६॥
एहनो अल्प बहुत्व॥सर्वथि थोमा
मनपर्यवज्ञानी १॥तेहथि अवधि

ज्ञानी असंख्यात गुणा ३॥ तेहथि मतिज्ञानी ने श्रुतज्ञानी माहोमां हि तुल्यने विशेषाहिया ४॥ तेहथि विभंग ज्ञानी असंख्यात गुणा ५॥ तेहथि केवलज्ञानी अनंतगुणा ६॥ तेहथि ज्ञानीविशेषाहिया ७॥ तेहथि मति श्रुत अज्ञानी माहोमां हितुल्य ने अनंतगुणा ८॥ तेहथि अज्ञानी विशेषाहिया ॥१०॥ इति १० मो द्वार ॥

१ चक्षुदर्शनीमां जीवना भेद ६॥ चउरिंद्रिय १॥ असंज्ञि पंचेंद्रिय २॥ संज्ञीपंचेंद्रिय ३॥ ए ३ ना अप्रजाप्ता ने । प्रजाप्ता ॥ गुण० १२ प्रथम ॥ जोग १४ कार्मणनोवर्जिने ॥ उप० १० केवलना २ वर्ज्या ॥ लेश्या ६

२ अचक्षुदर्शनीमां जीवना भेद १४ गुण० १२ जोग १५ उप० १० लेश्या ६

३ अवधिदर्शनीमां जीवना भेद २॥ गुण० १२॥ जोग १५ उप १० लेश्या ६

४ केवलदर्शनीमां जीवनो भेद ॥ १॥ गुण० २ तेरमुं चउदमुं। जोग ७ उप०

२ ॥ लेश्या० १ ॥

एहनो अल्पबहुत्व ॥ सर्वथि थोडा अवधिदर्शनी १॥ तेहथि चक्षुदर्शनी असंख्यातगुणा २॥ तेहथि केवलदर्शनी अनंतगुणा ३॥ तेहथि अचक्षुदर्शनी अनंतगुणा ४॥ इति ११ मो ॥ द्वार ॥

१ संजतिमां जीवनो भेद १ संज्ञीनो प्रजाप्तो ॥ गुण० ए छठाथि ते १४ मा सुधि॥ जोग १५॥ उप० ए। ३ अज्ञानवर्जिने लेश्या० ६ ॥

३ सामायक १ छेदोपस्थापनीय २ ए बे चारित्रमां जीवनो भेद १ संज्ञिनो प्रजाप्तो॥ गुण० ४ छठाथी एमा सुधि॥ जोग १४ कार्मणनोवर्जिने॥ उपयो ७ । ४ ज्ञानने ३ दर्शन एवं ७ ॥ लेश्या० ६ ॥

४ परिहारविशुद्धचारित्रमां जीवनो भेद १ ॥ गुण २ छठुं ने सातमुं ॥ जोग ए। ४ मनना ४ वचनना ॥ ने ॥१॥ उदारिकनो ॥ एवं ए॥ उप० ७ ॥ लेश्या० ३ ॥ उपलि ॥

रित्रिया संखेज्ज गुणा २ ॥ तेहथि
यथाख्यातचारित्रियासंखेज्जगुणा
३ ॥ तेहथि छेदोपस्थापनीयचारि
त्रिया संखेज्जगुणा ४ ॥ तेहथि सा
मायकचारित्रिया संखेज्जगुणा ५॥
तेहथि संजति विशेषाहिया ६ ॥
तेहथि संजतासंजति असंख्यात
गुणा ७ ॥ तेहथि ॥ नो संजति ॥
नोअसंजति नो संजतासंजति
अनंतगुणा ८॥ तेहथि असंजति
अनंतगुणा ९॥ इति १२ मो द्वार

१ सागारोवउत्तामां जीवना भेद १४।
गुण १४। जोग १५। उप १२। लेशा ६
२ अणागारोवउत्तामां जीवना भेद
१४ ॥ गुण० १३ दशमुं वर्जिने ॥
जोग १५ ॥ उप० १२ ॥ लेशा६॥
एहनो अल्पबहुत्व॥ सर्वथि थोडा
अणागारोवउत्ता १॥ तेहथि साागा
रोवउत्ता संखेज्जगुणा २ ॥ इति
१३ मो द्वार॥
१ आहारकमां जीवनाभेद १४ ॥गु
ण० १३ पहिला ॥जोग १४ कार्म

१ भासगामां जीवना भेद ५॥बेइंद्रि
य १।तेइंद्रिय २। चउरिंद्रिय ३।अ
संज्ञीपंचेंद्रिय ४।संज्ञीपंचेंद्रिय ५।
ए५ना अपजाप्ता॥गुण० १३ प्रथम
जोग १४ कार्मणनो वर्जिने॥उपयो
ग १२॥ लेश्या ६॥

२ अभासगामां जीवना भेद १०॥ते
१४ मांथि। बेइंद्रिय १ तेइंद्रिय २
चउरिंद्रिय ३ असंज्ञीपंचेंद्रिय ४
ए ४ वर्ज्या॥गुण० ५ते पहिलुं १
बिजुं २ चोथुं ३ तेरमुं ४ चउदमुं

णनो वर्जिने॥उप० १२॥लेश्या० ६।

२ अणाहारकमां॥ जीवनाभेद ८॥
सात अपजाप्ता ने १ संज्ञिनो
पजाप्तो। एवं ८॥गुण० ५ पहिलुं
बिजुं चोथुं तेरमुं ने चउदमुं ए५॥
जोग १ कार्मणनो॥उपयोग १०॥
मनपर्यवज्ञान १ ने चक्षुदर्शन२ए
२ वर्जिने॥ लेश्या ६॥

एहनो अल्पबहुत्व॥सर्वथि थोमा
अणाहारक १॥ तेहथि आहारक
असंखेज्जगुणा २॥इति १४मो द्वार॥

५॥ए५॥जोग५॥ते२उदारिकना
॥२वैक्रेयना॥ने।१।कार्मणनो उप०।
११ ते॥मनपर्यवज्ञान नहि॥
लेश्या ६॥
एहनो अल्पबहुत्व॥सर्वथि थोडा
भासगा १॥तेहथि अभासगा अ
नंतगुणा २॥ इति १५ मो द्वार॥
१ परीतसंसारिमां जीवना भेद १४॥
गुण० १४जोग१५उप० १२लेश्या६
२ अपरीतसंसारीमां जीवनाभेद
१४॥गुण० १॥पहिलुं।जोग१३आ

हारकना २ वर्जिने॥उप० ६॥अज्ञा
न ३॥ दर्शन ३॥ लेश्या ६
३ नोपरितनोअपरीतमां जीवना भे
द०।गुण०॥जोग०॥नथि॥उप०२।
॥ लेश्या० नथि०
एहनो अल्पबहुत्व॥सर्वथि थोडा
परीत १॥तेहथि नोपरीतनोअपरी
तअनंतगुणा २॥तेहथि॥अपरीत
अनंतगुणा ३॥ इति १६ मो द्वार।
१ प्रजाप्तामां जीवना भेद ७॥गुण०
१४॥जोग १५॥उप० १२॥लेश्या॥६।

२ अप्रजाप्तामां जीवना भेद ७।।गुण०
३।ते।पहेलुं।बिजुं।ने चउथुं।।जोग
५।।ते।२ उदारिकना।।२ वैक्रियना ने
१।।कार्मणनो उप० ८।। ३ ज्ञान।। ३
अज्ञान २ दर्शन।।एवं ८।।लेश्या ६
३ नोप्रजाप्तानोअप्रजाप्तामां।जीवना
भेद ०।।गुण० ।।जोग० ।।नहि।उप०
२ ।। लेश्या नथि ।।
एहनो अल्पबहुत्व ।।सर्वथि थोडा
नोप्रजाप्तानोअप्रजाप्ता १ ।। तेह
थि अप्रजाप्ता अनंतगुणा २।। तेह
थि प्रजाप्ता संखेज्जगुणा ३ ।।इति
१७ मो द्वार ।।

१ सुक्ष्ममां जीवना भेद २ ।। सुक्ष्म
एकेंद्रियनो अप्रजाप्तो १ ने प्रजा
प्तो २।। गुण० १ प्रथम ।। जोग ३ बे
उदारिकना।।ने।१।कार्मणनो।उप० ३
बे अज्ञान।।१।अचक्षुदर्शन।।ए ३।।
लेश्या ३ ।।
२ बादरमां जीवना भेद १२।।ते २ सु
क्ष्मना वर्ज्या।गुण० १४। जोग १५ उ
पयोग १२ ।। लेश्या ६ ।।

३ नोसुक्ष्मनोबादरमां जीवना भेद०
गुण० जोग० नथि॥उप० २॥ लेश्या
नथि॥एहनो अल्पबहुत्व॥सर्वथि
थोडानोसुक्ष्मनोबादर १ ॥ तेहथि
बादरअनंतगुणा २॥तेहथिसुक्ष्म०
असंखेज्जगुणा ३॥इति १८मो द्वार॥
१ संज्ञीमां जीवना भेद २॥ गुण० १२
पहिला॥जोग १५॥उप० १०केव
लना २ वर्ज्या ॥ लेश्या ६ ॥
२ असंज्ञीमां जीवना भेद १२ते २
संज्ञीना वर्ज्या॥ गुण० २ प्रथम॥

जोग ६ । २ उदारिकना॥२ वैक्रेय
ना॥ १ कार्मणनो॥ १॥व्यवहारवच
ननो॥ एवं ६॥उप० ६।२ ज्ञान॥२
अज्ञान॥२ दर्शन॥एवं ६॥ लेश्या ४
प्रथम ॥
३ नो संज्ञीनो असंज्ञीमां जीवनो
भेद १॥संज्ञीनोप्रजाप्तो॥गुण० २
तेरमुं चउदमुं॥जोग ७॥ उपयोग२
॥लेश्या १ परम शुकल॥एहनो अ
ल्पबहुत्व॥सर्वथि थोडा संज्ञी १॥ते
हथि नोसंज्ञीनोअसंज्ञीअनंत

गुणा २ ॥ तेहथि असंज्ञी अनंत
गुणा ३ ॥ इति १९ मो द्वार ॥
१ भव्यमांहि जीवना भेद १४॥ गुण०
१४॥ जोग १५॥ उप० १२॥ लेश्या ६॥
२ अभव्यमां जीवना भेद १४ गुण०
१ प्रथम ॥ जोग १३ आहारकना
२ वर्जिने ॥ उप० ६ ॥ लेश्या ० ६ ॥
३ नोभव्यनोअभव्यमां जीवना भे
द० ॥ गुण० ॥ जोग० ॥ नथि ॥ उपयो
ग २ । लेश्या नथि ॥
एहनो अल्पबहुत्व ॥ सर्वथि थोमा
अभव्य १॥ तेहथि नोभव्यनोअ
भव्य अनंतगुणा २॥ तेहथि भव्य
अनंतगुणा ३॥ इति २० मो द्वार॥
१ चरममां जीवना भेद १४॥ गुण०
१४॥ जोग १५॥ उप० १२॥ लेश्या ६।
२ अचरममां जीवना भेद १४ गुण० १
प्रथम ॥ जोग १३ आहारकना २
वर्जिने ॥ उप० ९ ॥ लेश्या ६ ॥
एहनो अल्पबहुत्व ॥ सर्वथि थोमा
अचरम १॥ तेहथि चरम अनंतगु
णा २ ॥ इति २१ मो द्वार ॥

१ समुच्चयकेवलीमां जीवना भेद २
संज्ञीना॥गुण० ११ उपला॥जोग
१५ ॥उप० ९। ३ अज्ञान वर्जिने॥
लेश्या ६ ॥

२ वीतरागिमां जीवनो भेद १ ॥ गुण
४।जोग ११॥उप० ९॥ लेश्या १॥

३ जुगलियामां जीवना भेद २।संज्ञी
ना॥गुण० २पहिलुं ने चउथुं॥जोग
११ ते।४ मनना।४ वचनना।२ उ
दारिकना॥ने।१ कार्मणनो॥एवं ११॥
उप० ६ बे ज्ञान।बे अज्ञान बेदर्शन।
एवं ६॥ लेश्या ४ प्रथम ॥

४ असंज्ञीतिर्यंचमां जीवना भेद २।
गुण० २ प्रथम॥जोग ४ ते॥२ उदा
रिकना ॥ १ कार्मणनो॥ने। १ व्यव
हार वचननो॥एवं ४॥ उपयोग ६ ते
२ ज्ञान।२ अज्ञान२। दर्शन॥एवं
६ ॥ लेश्या ३ प्रथम

५ समुर्छिम मनुष्यमां जीवनो भेद
१॥गुण० १ पहिलुं॥जोग ३।ते॥२
उदारिकना॥ने।१ कार्मणनो॥एवं ३॥
उपयोग ३। ते बे अज्ञान।ने १ अच

क्षुदर्शन। एवं ३ ॥ लेश्या ३ ॥
एहनो अल्पबहुत्व ॥ सर्वथि थोडा
जुगलीया १॥तेहथि समुर्छिम मनु
ष्य असंखेज्जगुणा २॥तेहथि अस
ञ्ज्ञी तिर्यंच असंखेज्जगुणा ३॥तेह
थि वीतरागी अनंतगुणा ४॥ तेह
थि समुचय केवली विशेषाहिया ५
१ उदारिकशरिरमां जीवना भेद
१४॥गुण० १४॥जोग १५॥उप०
१२ ॥ लेश्या ६ ॥
२ वैक्रेयशरिरमां जीवना भेद ४ ॥ते

॥२संज्ञीना॥ने।१असंज्ञीतिर्यंचनो
अप्रजाप्तो॥अने।१बादर वाउकाय
नो प्रजाप्तो॥एवं॥४॥गुण० ७ प्रथम
जोग १२।ते।२ आहारकना ने १
कार्मणनो।ए ३ वर्ज्या ॥ उप० १०
ते २ केवलना वर्ज्या ॥ लेश्या ६
३ आहारकशरिरमां जीवनो भेद १
संज्ञीनो प्रजाप्तो॥ गुण० २ छठुंने
सातमुं॥जोग १२ ते।२ वैक्रेयना॥ने।
१ कार्मणनो॥ए ३॥ वर्ज्या॥उप० ७
ते ४ ज्ञान ने ३ दर्शन ॥ लेश्या ६

५तेजस कार्मणशरिरमां जीवना भेद १४ ॥ गुण० १४ ॥ जोग ॥ १५ उप योग १२ ॥ लेशा ॥ ६ एहनो अल्पबहुत्व ॥ सर्वथि थोमा आहारक शरीरि १ ॥ तेहथि वैक्रेय शरीरि असंख्यातगुणा २ ॥ तेहथि उदारिक शरीरि असंख्यातगुणा ३ ॥ तेहथि तेजस कार्मण शरिरी मांहोमांहि तुल्य ने अनंतगुणा ५

॥ इति महोटो बासठियो समाप्तं ॥

अथ श्रीअठाणुं बोलनो अल्प बहुत्वद्वारलिख्यते

१ सर्वथी थोमा गर्भज मनुष्य
२ मनुष्यणी संखेजगुणी
३ बादर तेउकाया प्रजाप्ता असं०
४ अनुत्तर विमानना देवता असं०
५ उपली त्रिकना देवता संखेजगुणा
६ मझमत्रिकना देवता संखेजगुणा
७ हेठली त्रिकना देवता संखेजगुणा
८ बारमा देवलोकना देवता संखे०
९ इग्यारमा देवलोकना देवता सं०
१० दसमा देवलोकना देवता संखे०
११ नवमा देवलोकना देवता संखे०
१२ सातमी नरकना नारकी असं०
१३ छठी नरकना नारकी असंखेज०
१४ आठमा देवलोकना देवता अ०
१५ सातमा देवलोकना देवता अ०
१६ पांचमी नरकना नारकी असंखेज०
१७ छठा देवलोकना देवता असंखे०
१८ चोथी नरकना नारकी असंखे०
१९ पांचमा देवलोकना देवता असं०
२० त्रिजी नरकना नारकी असंखे०

२१ चोथा देवलोकना देवता असं०
२२ त्रिजा देवलोकना देवता असं०
२३ त्रिजी नरकना नारकी असंखे०
२४ समुर्छिम मनुष्य असंखेजगुणा
२५ बीजा देवलोकना देवता असं०
२६ बीजा देवलोकनी देवी संखेज०
२७ पहेला देवलोकना देवता संखेज०
२८ पहेला देवलोकनी देवी संखेज०
२९ भवनपति देवता असंखेजगुणा
३० भवनपतिनी देवी संखेजगुणी
३१ पहेली नरकना नारकी असंखे०

३२ खेचर पुरुष असंखेजगुणा
३३ खेचरनी स्त्रि संखेजगुणी
३४ थलचर पुरुष संखेजगुणा
३५ थलचरनी स्त्रि संखेजगुणी
३६ जलचर पुरुष संखेजगुणा
३७ जलचरनी स्त्रि संखेजगुणी
३८ व्यंतर देवता संखेजगुणा
३९ व्यंतरनी देवी संखेजगुणी
४० जोतिषी देवता संखेजगुणा
४१ जोतिषीनी देवी संखेजगुणी
४२ खेचर नपुंसक संखेजगुणा

४३ थलचर नपुंसक संखेजगुणा
४४ जलचर नपुंसक संखेजगुणा
४५ चउरिंद्रिय प्रजाप्ता संखेज गुणा
४६ पंचेंद्रीय प्रजाप्ता विसेषाहीया
४७ बेंद्रिय प्रजाप्ता विसेषाहीया
४८ तेंद्रीय प्रजाप्ता विसेषाहीया
४९ पंचेंद्रीय अप्रजाप्ता असंखेजगु०
५० चउरिंद्रीय अप्रजाप्ता विसेषाही
५१ तेंद्रीय अप्रजाप्ता विसेषाहीया
५२ बेंद्रीय अप्रजाप्ता विसेषाहीया

५३ बादर प्रत्येक शरीरि वनस्पति० प्रजाप्ता असंखेजगुणा
५४ बादर निगोदा प्रजाप्ता असं०
५५ बादर पुढवी काया प्रजाप्ता अ०
५६ बादर अपकाया प्रजाप्ता असं०
५७ बादर वाउकाया प्रजाप्ता असं०
५८ बादर तेउ काया अप्रजाप्ता अ०
५९ बादर प्रत्येक शरीरि वणसई० अप्रजाप्ता असंखेजगुणा
६० बादर निगोदा अप्रजाप्ता अ०
६१ बादर पुढवी अप्रजाप्ता असं०

६२ बादर अपकाया अप्रजाप्ता अ०
६३ बादर वाउ अप्रजाप्ता असंखे०
६४ सुक्ष्म तेउ अप्रजाप्ता असंखेज०
६५ सुक्ष्म पुढवी अप्रजाप्ता विसे०
६६ सुक्ष्म अप अप्रजाप्ता विसेषा०
६७ सुक्ष्म वाउ अप्रजाप्ता विसेषा०
६८ सुक्ष्म तेउ प्रजाप्ता संखेजगुणा
६९ सुक्ष्म पुढवी प्रजाप्ता विसेषादी०
७० सुक्ष्मअप पर्याप्ता विसेषादीया
७१ सुक्ष्म वाउ पर्याप्ता विसेषादीया
७२ सुक्ष्म निगोदा अपर्याप्ता अ०

७३ सुक्ष्म निगोदा प्रजाप्ता संखे०
७४ अभव्य अनंतगुणा
७५ पडिवाइ समदिठी अनंतगुणा
७६ सिद्धभगवंतजी अनंतगुणा
७७ बादर वणसई प्रजाप्ता अनंत०
७८ बादर प्रजाप्ता विसेषादीया
७९ बादर वणसइ अपर्याप्ता असं०
८० बादर अप्रजाप्ता विसेषादीया
८१ समुचय बादर विसेषादीया
८२ सुक्ष्म वणसइ अपर्याप्ता असं०
८३ सुक्ष्म अपर्याप्ता विसेषादीया

८४ सुक्ष्म वणसइ पर्याप्ता संखेज०
८५ सुक्ष्म पर्याप्ता विसेषाहीया
८६ समुचय सुक्ष्म विसेषाहीया
८७ भव्य सिद्धीया विसेषाहीया
८८ निगोदीया जीव विसेषाहीया
८९ वणसइ जीव विसेषाहीया
९० एकेंद्रीया जीव विसेषाहीया
९१ तिर्यंच जीव विसेषाहीया
९२ मिथ्याद्दष्टी जीव विसेषाहीया
९३ अविरति जीव विसेषाहीया
९४ सकसाया जीव विसेषाहीया
९५ छउमथा जीव विसेषाहीया
९६ सजोगी जीव विसेषाहीया
९७ संसारथा जीव विसेषाहीया
९८ सव जीवा विसेषाहीया

॥ इतिश्री अठाणुं बोलो अल्प बहुत्व संपूर्ण ॥

॥ ॐ नमः श्रीवीतरागाय नमः ॥ श्रीपार्श्वनाथाय नमः ॥ श्रीगणधरेभ्यो नमः ॥
अथ श्रीछआराना बोल लिख्यते ॥ दसकोडा कोडि सागरोपमना छ आरा
जाणवा । तेहमां पहिलो आरो ॥ ४ ॥ कोडाकोडि सागरोपमनो जाणवो । ए
आरो सुसमसुसमनामा जाणवो । एकलुं सुखमां सुख जाणवुं ॥ ए आरानेवि
षे ३ गाउनुं देहमान । अने ३ पल्योपमनुं आउखुं । उत्तरते आरे २ गाउनुं
देहमान । अने २ पल्योपमनुं आउखुं जाणवुं ॥ ए आरे बसे छपन पांसली ।
उत्तरते आरे एकसो अठाविस पांसली जाणवी ॥ ए आराने विषे ॥ १ ॥ वज्र
ऋषभनाराच संघयण ने ॥ १ ॥ समचउरंस संठाण जाणवुं ॥ स्त्रि पुरुषना रूप
सोभाग्य । घणा । दिपे । ए आराने विषे अठम भक्ते आहारनी इछा उपजे । ती
वारे शरीर प्रमाणे आहार करे । धरतिनी सरसाइ साकर सरखी जाणवि ।
उत्तरते आरे खांडसरखि जाणवि । ए आरानेविषे ॥ १० ॥ दश प्रकारना क

ल्पवृक्ष मनवंछीत सुख पहोचाडे। ते कल्पवृक्षनां नाम कहेछे । गाथा। मतं
गायभिंगा तुडियंगा। दिव जोइ चित्तगा। चित्तरसा मणवेगा। गिहगारा अ
णियगणाउ ॥ १ ॥ मतंगाय कहेता। मिठा मधुररसना कल्पवृक्ष थइ आवे
॥ १ ॥ भिंगा कहेता । रत्नजडाव भाजनना कल्पवृक्ष थइ आवे ॥ २ ॥
तुडियंगा कहेता ॥४ए॥ उगणपंचास जातिनां वाजिंत्रना। क० थ० ॥ ३ ॥दिव
कहेता। रत्नजडाव दीवीओना क० ॥ ४ ॥ जोइ कहेता। सूर्यनी जोतिना क०
॥ ५ ॥ चित्तगा कहेता। चित्रामणसहित फूलनी माळाना क० ॥ ६ ॥ चितरसा
क० चितने गमे तेवा रसवति भोजनना। क० ॥ ७ ॥ मणवेगा क० । रत्नज
डाव आभरणना। क० ॥ ८ ॥ गिहगारा क०। बेतालीस भोमिया आवासना
क० ॥ ए ॥ अनियगणाउ क० ॥ रत्नजडाव नाकने वायेउडे एहवा वस्त्रना ।
क० १०। ए १०। प्रकारना कल्पवृक्ष मनवंछित्त सुख आपे। ए आराने विषे

ठेक थाकता जुगलना आउखा आमा ६ मास रहे। तीवारे जुगल परभवनुं आउखुं बांधे। तिवारे जुगलीणी एक जोमलुं प्रसवे। ते गेरुनी प्रतिपालना ४ए दिन करे। जुगलजुगलीणीने त्तण मात्रनो विजोग न पमे। एकने ठीक ने एकने बगासुं आवे मरिने देवता थाय। एहना शरीरनो निहरण देवता करे। गति तो १ देवनी जाणवी॥ ए आराने विषे जुगलीयाने वेर विरोध इर्षा ऊेहेर नही॥ इति पहिलो आरो संपूर्ण॥१॥ हवे पहिलो आरो उतरीने। बीजो आरो बेठो। तीवारे अनंता वर्ण गंध रस फर्सना पर्जव॥ अनंता ७ हीणा थया। ए आरो ३ त्रण कोमाकोम सागरोपमनो। सूसमनामे जाणवो। एकलुं सुख जाणवुं। ए आराने विषे ७ बे गाउनुं देहमान अने ७ पल्योपमनुं आउखुं। उत्तरते आरे॥ १॥ एक गाउनुं देहमान ने एक पल्योपमनुं आउखुं। ए आराने विषे वज्ररुषभ नाराच संघयण॥ समचउरंस संठाण॥ ए आरो॥१७॥

एकसो अठावीस पांसळी ॥ उतरते आरे ६४ पांसळी जाणवि । ए आरे ७ठ नक्ते आहारनी ईछा उपजे ॥ तिवारे शरीर प्रमाणे आहार करे । धरतिनि सरसाई खांड सरखि । उतरते आरे गोळ सरखि जाणवी । ए आरे १० प्रकारना कल्प वृक्ष मनवंछीत सूखपोचाडे । छेक थाकतां । जूगळना आउखा आडा ॥ ७ मास छेरुनी प्रतिपाळणा ॥ ६४ दिन करे । जुगळ जुगळीणीने । क्षण मात्रनो वि जोग न पडे । एकने छीक ने एकने बगासूं आवे । मरिने देवता थाय । एना श रीरनुं निहरण देवता करे ॥ गत्ति १ देवतानि जाणवि । इति बिजो आरो संपूर्ण ॥ २ हवे बीजो आरो उतरीने । त्रिजो आरो बेठो तिवारे । अनंता वर्ण गंध रस फर्सना पर्जव अनंताहीणा थया । ए आरो ॥ २ ॥ बे कोडाकोड सागरोप मनो जाणवो । ए आरो सूसमदुसमनामा जाणवो । सुख घणुं ने दुख थोडुं जाणवुं ॥

ए आराने विषे एक गाउनुं देहमान ने ॥ १ ॥ एक पल्योपमनुं आउखुं जा
णवुं ॥ उत्तरते आरे ५०० ॥ पांचसें धनुषनुं देहमान ने कोड पूर्वनुं आउखुं
जाणवुं । ए आराने विषे वज्र रुषभनाराच संघयण। नेसमचउरंस संठाण जा
णवुं । ए आरानेविषे ॥ ६४ चोसठ पांसली जाणवी । उत्तरते आरे ३२ बत्रिस
पांसली जाणवि । ए आराने विषे चउथ भक्ते आहारनी इछा उपजे ॥ तिवारे
शरीरप्रमाणे आहार करे । धरतिनि सरसाइ गोल सरखि जाणवि॥उतरतेआ
रे थोडेरी जाणवि ॥ ए आरे दस प्रकारना कल्पवृक्ष मनवंछीत सूख पोंचाडे ।
छेक थाकतां जूगलना आउखा आडा छ मास रहे । तीवारे जूगल परभवनुं
आउखुं बांधे । तिवारे जूगलिणी एक जोडलुं प्रसवे ॥ ते छेरुनी प्रतिपालणा
४९ दिन करे । जूगल जूगलिणीने क्षणमात्रनो विजोग न पडे । एकने छीक ने
एकने बगासूं आवे तिवारे मरीने देवता थाय ।एहना शरीरनो निहरण देवता

करे । ए ३ आरा जूगलना जाणवा एकलो जूगल धर्म जाणवो । ए आराने
विषे । जरारोग कुरुप नहि प्रतिपूर्ण अंग उपांग विषयसूख भोगवे ते दान पू
न्यना फल जाणवा ॥ ए आराने विषे छेक थाकता चोरासि लाख पूर्व त्रण व
र्षने साढा आठ महीना बाकी रह्या । तीवारे सर्वार्थसिध महाविमान थकी ते
त्रीस सागरोपमनुं आउखुं भोगवीने चविने । विनिता नगरी । नाभी कुलगर
राजापिता । मरुदेवी मातानी कुंखे ऋषभ देवस्वामी उपना । सवानव मासे
जन्म्या ॥ प्रथम ऋषभनु सुपन देखि ऋषभदेव नाम दिधुं । रुषभदेवस्वामीये
जूगलाधर्म निवारीने । असि मसि कसि आदि देईने ७२ बोतेर कला सिख
वि । अनुकंपा निमिते ॥ २० विस लाख पूर्वलगे तो कुमरपणे रह्या ॥ ६३ ॥
त्रेसठ लाख पूर्वलगे राज्य भोगव्युं । भरतने राज्य आपिने । चार हजार पु
रुष संघाते संजम लिधो । एक लाख पूर्व लगे संजम पाल्यो ॥ केवल पामिने ।

अष्टापद पर्वत उपरे । पद्मासने वेसीने । दसहजार साधुसंघाते स्वामिनिर्वाण पधास्या । ते स्वामिना ६ कल्याणिक थया । पेहेले कल्याणीके उत्तरासाढा नक्षत्रमां सर्वार्थसिध विमानथकी चविने मातानि कुंखे उपना ॥ १ ॥ बिजे क० उ० जन्म्या ॥ २ ॥ त्रीजे क० उ० राज्य बेठा ॥ ३ ॥ चोथे क० उ० संजम लिधो ॥ ४ ॥ पांचमे क० उ० केवलज्ञान उपनुं ॥ ५ ॥ ए ५ ने ६ ठुं क० अभीच नक्षत्रमां मोक्ष पधास्या । ए ६ ॥ ए आराने विषे गति पांच जाणवि । इति त्रीजो आरो संपूर्ण ॥ ३ ॥ हवे त्रीजो आरो उतरीने चोथो आरो बेठो । तीवारे अनंता वर्ण गंध रस फर्सना पर्जवहीणा थया । ए आरो १ कोडाकोड सागरोपममां बेतालीस हजार वर्ष उणो जाणवो । ए आरो दुसम सूसमनामे जाणवो । दुख घणुं ने सूख थोडुं जाणवुं । ए आराने विषे ५०० पांचसे धनुषनुं देहमान ने । कोड पूर्वनुं आउखुं ॥ उतरते आरे सात हाथनुं देहमान ने । सवासो वर्षनुं

आउखुं ॥ ए आराने विषे ० संघयण ने ६ संठाण जाणवा । ए आरानेविषे ३२ बत्रिस मांसळि उतरते आरे १६ सोळ पांसळी जाणवी । ए आरानेविषे दिन २ प्रते आहारनि इछा उपजे । तिवारे ३२ कवळनो आहार करे । धरतिनि सर साइ सारेरि ॥ उतरते आरे थोमेरी जाणवि । ए आरो ठेक थाकतां पंच्योतेर वर्षने साढाआठ महिना बाकीरह्या ॥ तिवारे दशमा देवलोकथि वीस सागरोपमनुं आवखूं भोगविने चविने । माहणकुंरू गाम नगरनेविषे । रुषभदत्त ब्राह्मणने घेर देवानंदाजीनी कुंखे । महा विरस्वामी उपना ॥ तिहां स्वामी साढीब्यासी रात रह्या । ब्रासिमी राते शक्रेंद्रनो आसन चल्यो । तिवारे शक्रेंद्रे उपयोग मुकीने जोयुं प्रभुने भीरवाग कुले उपनादीठा अनंते काले अछेरु थयुं । तिवारे हरण गमेषी देवताने कह्युं । जे जाओ जइने महाविरस्वामिनो गर्भ साहरो । साहरीने खत्रीकुंरू गाम नगरने विषे । सिद्धार्थराजाने घरे । त्रिसला

देवी क्षत्रियाणीनी कुंखे मुको। अने त्रिसलादेवि राणीनी कुंखे। पुत्रिपणे गर्भ
छे ते देवानंदाजीनी कुंखे मुको॥ तिवारे हरण गमेषी देवता तेहत प्रमाण
करी। तेज वेलाइं आव्यो। आविने भगवंतने वंदणा नमस्कार करीने कह्युं
जे स्वामी रुडुं जाणजो हुं तमारो गर्भ साहरुं छुं। तिवारे माता देवानंदाजीने
अवस्वापिनी निद्रा मुकिने नाभिथि गर्भ साहरीने त्रिसलादेवीजीनी कुखे मुक्यां
तिहां स्वामि सर्वे थईने सवानवमासे जन्म्या। त्रिस वर्ष घरमां रह्या।
एकाकीपणे संजम लिधो। संजम लेईने साढाबार वर्ष ने एक पखवाडिया सु
धि। आकरा तप जप ध्यान ज्ञान करिने। स्वामि केवलज्ञान केवलदर्शन
पाम्या। बहोतेर वर्षनुं आउखुं भोगविने। चोथा आराना ३ वर्ष ने साढा
आठ महिना बाकी रह्या। तिवारे महाविरस्वामि निर्वाण पधार्या। ते स्वा
मिना छ कल्याणिक थया। तेमां॥५॥ कल्याणिक तो उतराफाल्गुणी नक्षत्र

मां थया । ते चवनक० ॥ १ ॥ गर्भ साहारण क० ॥ २ ॥ जन्म क० ॥ ३ ॥
दिक्षा क० ॥ ४ ॥ केवलज्ञान क० ॥ ५ ॥ ए पांचने । स्वांति नक्षत्रमां निर्वाण
पधार्या ॥ ६ ॥ ए आराने विषे गति ५ जाणवि ॥ महाविरस्वामि निर्वाण पधार्या
तेज वखते गौतमस्वामिने केवलज्ञान उपनुं । ने ते १२ बार वर्ष केवल
प्रवर्जा पालिने निर्वाण पधार्या । तेहज वेलाए सुधर्मास्वामिने केवल
ज्ञान उपनुं । ते ॥ ८ ॥ आठ वर्ष सुधि केवल प्रवर्जा पालिने निर्वाण पधा
र्या । तेहज वेलाए जंबुस्वामिने केवलज्ञान उपनुं ॥ ते ॥ ४४ ॥ चुमालिस
वर्षसूधि केवल प्रवर्जा पालिने नीर्वाण पधार्या । महाविरस्वामि पछी । नर्तत्ते
त्रमां ॥ ६४ ॥ चोसठ वर्षसूधि केवलज्ञान रह्युं । चोथा आरानो जन्मेलो होय
ते पांचमा आरामां मोक्ष जाय । पांचमा आरानो जन्मेलो पांचमा आरामां
मोक्ष जाय नही । जंबूस्वामि मोक्ष पहोंतापछी ॥ १० ॥ दश बोल वीछेद गया

ते । परमअवधिज्ञान ॥ १ ॥ मनपर्यवज्ञान ॥२॥ केवलज्ञान ॥३ ॥ परिहारवि
सुधचारित्र ॥ ४ ॥ सुक्ष्मसंपरायचारित्र ॥ ५ ॥ जथाख्यातचारित्र ॥ ६ ॥ पूला
कलब्धी ॥७॥ क्षायकसमकीत ॥८॥ आहरकशरिर ॥९॥ जिनकल्पीसाधु॥१०॥
ए ॥१०॥ बोल इति चोथो आरो संपूर्ण ॥४॥ हवे चोथो आरो उतरीने पांचमो
आरो बेठो । तीवारे अनंता वर्ण गंध रस फर्सना पर्जव हीणा थया । एआरो
दुसमनामा एकलुं दुख जाणवुं । ए आरो २१ हजार वर्षनो जाणवो । ए आ
रानेविषे । ७हाथनुं देह मान ने १२५ वर्षनुं आउखुं । उतरते आरे ॥ १ ॥ हा
थनुं देहमान ने २० वर्षनुं आउखुं ॥ ए आरानेविषे ॥ ६ ॥ संघयण ने । ब
संठाण जाणवा । उतरते आरे १ छेवटुं संघयण ने ॥ १ ॥ हुंड संठाण जाणवुं
। ए आरानेविषे ॥ १६ ॥ सोल पांसली ॥ उतरते आरे ॥ ८ ॥ आठ पांसलिजा
णवि । ए आरानेविषे । दिन २ प्रते आहारनि इछा उपजे । तीवारे शरीर प्र

माणे आहार करे । धरतिनी सरसाइ । कांइक सारेरि जाणवि । उतरते
आरे कुंभारना निभाडानी गारसरखि जाणवी। हवे पांचमा आरानां लक्षण
कहेछे १ मोटानगर ते गामडा सरिखा थाशे १॥ गाम ते मसाणसरिखा थासे
॥ २ ॥ भला कुलनां छोरु ते दास दासीपणा करस्ये ॥ ३ ॥ प्रधान ते ला
लचि थासे ॥ ४ ॥ राजा तेजमंझसरिखा थास्ये ॥ ५ ॥ भला कुलनी
स्त्री ते लजारहित थास्ये ॥ ६ ॥ रूडाकुलनी स्त्रि वेस्यासरिखि थास्ये ॥ ७ ॥
पोताना पुत्र पोताने छांडे चालशे ॥ ८ ॥ शिष्य गुरुना अपवाद
बोलसे ॥ ९ ॥ दुर्जन लोक सुखि थास्ये ॥ ॥ १० ॥ सजन लोक दूखि
थास्ये ॥ ११ ॥ दुर्भिक्ष दुकाल घणा पडस्ये ॥ १२ ॥ उंदर सर्पादीकनी
दाढ घणी थास्ये ॥ १३ ॥ ब्राह्मण अर्थना लोभी थास्ये ॥ १४ ॥ हिंसाधर्मना
परूपक घणा थास्ये ॥ १५ ॥ एक धर्मनां घणा भेद थास्ये ॥ १६ ॥ मिथ्याति

देवता घणा पूजास्ये ॥ १७ ॥ मिथ्याति लोक घणा थास्ये ॥ १८ ॥ माणसने
देवदर्शन दुर्लभ थास्ये ॥१९॥ विद्याधरनी विद्याना प्रभाव थोडा हुस्ये ॥२०॥
गोरस दुध दहिमां सरसाइ थोडी हुस्ये ॥ २१ ॥ बलद प्रमुखनां बल आउखा
थोडां हुस्ये ॥ २२ ॥ साधु साध्विने मासकल्प तथा चोमासां करवा जेवां खेत्र
थोडां हुस्ये ॥ २३ ॥ श्रावकनि ११ पडिमा ॥ साधुनी १२ पडिमा विछेद जा
स्ये ॥ २४ ॥ गुरू शिष्यने भणावसे नहि ॥ २५ ॥ शिष्य अविनित कलहका
री हुस्ये ॥ २६ ॥ अधर्मकारि जगडाकारी कलहकारी कुमाणस घणा हुस्ये सु
माणस थोडा हुस्ये ॥२७॥ आचार्य आप आपणा गछनी परंपरा सामाचारि जू
दि २ प्रवर्तावसे । तथा मूढ मूर्ख जनने मोहिने मिथ्यात्त्व पासमां पाडस्ये॥उत्
सूत्र भाखस्ये । आप आपणी प्रसंसामां राचसे । नंदक कुबूद्धि होस्ये ॥ २८ ॥
सरल भद्रिक ॥ न्याइ प्रमाणिक माणस थोडा हुस्ये ॥ २९॥ म्लेछनां राज घणा

ढुस्ये ॥ ३० ॥ दिंड राजा अल्पऋधिया ने थोडा ढुस्ये ॥ ३१ ॥ मोटा कुलना रा
जा ढुस्ये ते निच काम करसे । अन्याय अधर्म कुविसनमां घणा राजसे ॥ ३२
ए ॥ ३२ ॥ लक्षण जाणवां । ए आरानेविषे धातु सर्वे विछेद जास्ये । लोढानी
धातु रहेसे चामडानी मोहरो चालस्ये । ते धनवंत कहेवासे । ए आरानेविषे ॥ १
एक उपवास करसे ते मास खमणसरिखो थासे । ए आरानेविषे । ज्ञान तथा सू
त्र सर्वे विछेद जास्ये । तेमां दसविकालीकना ॥ अध्ययन ॥ ४ ॥ पहेला रहेस्ये ।
ते उपरे ॥ ४ ॥ जीव एका अवतारि थास्ये । तेनां नाम । दुपसह नामा साधु
॥ १ ॥ फल्गुणि नामा साध्वि ॥ २ ॥ नागील श्रावक ॥ ३ ॥ नागश्रि श्राविका
॥ ४ ॥ ते आषाढ सूद १५ पूनमने दिने शक्रेंद्रनुं आसन चलसे । तिवा
रे शक्रेंद्र उपयोग मुकि जोसे जे । आज पांचमो आरो उतरीने काले
छठो आरो बेससे । तिवारे शक्रेंद्र आवसे । ते ॥ ४ ॥ जीवने कहेसे जे

काले छठो आरो बेससे । माटे आलवो पडिकमो निसलथाउ । ते ४ जीव सर्व जीवने खमाविने संथारो करस्ये । तारे संवर्तक वायरो थास्ये । तिणे करिने पहाड । पर्वत । गढ कोठा वाव कुवा सरोवर सर्वे वीसराल थास्ये ॥ वैताढ पर्वत १ गंगा २ सिंधु ३ ऋषभकुट ४ लवणनिखाडी ए ५ वर्जिने शेष सर्व थानक त्रुटी पडस्ये ॥ ते ४ जीव समाधि प्रणामे काल करीने देवलोकमां जासे तिवारे ४ बोल विछेद जास्ये पेहले पोहरे । जैनधर्म वीछेद जास्ये ॥ १ ॥ बीजे पोहरे ॥ ३६३ ॥पा खंडि मिथ्यातिनो धर्म विछेद जास्ये॥२॥ त्रीजे पोहरे राजनीती विछेदजास्ये॥३॥ चोथे पोहरे बादर अग्नि विछेद जास्ये ॥ ४ ॥ ए आरे बेसता गति ॥५॥ जाणवी उतरता ४ गतितेमोक्ष अटकी इति पांचमो आरो संपूर्ण । हवे पांचमो आरो उ तरीने छठो आरो बेठो । तीवारे अनंता वर्ण गंध रस फर्सना पर्जवहीणा थया । ए आरो २१ एकवीस हजार वर्षनो जाणवो।ए आरो दुसमदुसमनामा एकलुं दुःख

मांडुःख जाणवुं । ए आरे ॥ १ ॥ एक हाथनुं देहमान ने ॥ २० ॥ वर्षनुं आउ
खुं । उतरते आरे । मूढा हाथनी काया ने १६ सोल वर्षनुं आउखुं । जाणवुं ।
ए आराने विषे १ छेवटुं संघयण ने हुंरू संठाण जाणवुं । उतरते आरे पण ६
मज जाणवुं । ए आराने विषे ॥८॥ आठ पांसली ॥ उतरते आरे ॥४॥ चार पां
सली जाणवी ॥ ए आराने विषे । ६ वर्षनी स्त्री गर्भ धरस्ये । ते काला कुदर्शनी
रोगीने रिसाल नखने मूवाला घणा एहवा छोकरा घणा जणसे । ते कुतरीनी प
रे परीवार भेलो फेरवस्ये । ए आराने विषे गंगासिंधु नदि रहेसे ॥ तेमां ७२ बी
ल छे ॥ तेमां त्रणत्रण ॥ माल छे । तेमां मनुष्य त्रीजंच पंखी बीज मात्र रहेसे ॥ गं
गा सिंधुनो साढीबासठ जोजननो पोहोट छे तेमां । रथना चिला प्रमाणे पहोलुं
ने गाडानि धुरि बूडे एटलुं उंडुं पाणि रहेसे । तेहमां मछ कछ घणा थासे । ते ७२ बी
लनां मनुष्य सांझे ने प्रभाते । मछ कछ काढीने वेलुमां भारसे । सूर्य घणो तपसे

टाढ घणी पमस्ये । तेणे करी सीऊ वाइ रहेसे । तेहनो आहार करस्ये । तेना हामका चामका तिर्यंच चाटीने रहेस्ये मानवीना माथानि तुंबलीमां पाणीला विने पिसे । एणिपरे २१ एकविस हजार वर्ष पूरा करसे । ए आराने विषे नवकाररहित समकितरहित व्रत पचखाणरहित हसे । ते एहवा छठा आराने विपे आविने अवतरसे । ते माटे एहवुं जाणिने जे जीव जिनधर्म करसे ते जीव सूखि थासे ॥ इति ६ आराना बोल संपूर्ण ॥

ॐनमः॥ अथ चोविस जिनांतरा लिख्यते॥ अढार कोडाकोडि सागरने आंतरे ॥ पेहेला श्री आदिनाथ तिर्थंकर थया॥ विनीता नगरीनेविषे॥ नाभी राजा पीता। मरुदेवा राणी माता ॥ हेमवर्णं ॥ वृषभ लंछन। पांचसें धनुषनुं देहमान। चोरासी लाख पुर्वनुं आउषुं ॥ वीस लाख पुर्व तो कुंवर पणे रह्या। त्रेंसठ लाख पूर्वनुं राज्य पाल्युं ॥ एक लाख पुर्वनी प्रवर्ज्या पाली। प्रवर्ज्या लीधापछि एक हजार

वरसे। केवलज्ञान उपनुं। साधु। साधवी। श्रावक। श्रावीकारूप। चतुर्विध सं
घतिर्थ थापीने। द्वादसांगी गणीनी पेटी आपीने॥ त्रीजा आराना। त्रण व
रसने साढाआठ महिना। छेक थाकता बाकी रह्या॥ तिवारे महावद तेरसने
दहाडे। दस हजार साधुसंघाते अष्टापद पर्वत उपरे स्वामी नीरवाण मोक्ष पधार्या
॥१॥पहेला श्रीआदीनाथ तिर्थंकर निरवाण मोक्षपोहोंतापछि पंचास लाख कोडि
सागरनेआंतरे॥बीजा अजितनाथ तिर्थंकर थया। अयोध्या नगरीनेविषे। जी
तसत्रुराजा पिता॥ विजयादेवी राणी माता॥ हेमवर्णे॥ गज कहेतां हस्तिनुं
लंछन। साढाचारसें धनुषनुं देहमान॥ बहोतेर लाष पूर्वनुं आउषूं॥ तेमांअ
ढारलाष पूर्व तो कुंवरपणे रह्या। त्रेपन लाष पूर्वनुं राज पाल्युं। एक लाष
पूर्वनीप्रवर्ज्या पाली॥ प्रवर्ज्या लीधापछि। बार वरसे केवलज्ञान उपनुं। साधु
साधवी। श्रावक श्रावीकारूप चतुर्विध संघतिर्थ थापीने। द्वादसांगी गणी

नी पेटी । आपीने ॥ एक हजार साधुसंघाते स्वामी निरवाण मोक्षनेविषे प
होंता॥१॥हवेबीजा अजितनाथ तिर्थंकर मोक्ष पहोंतापछि॥त्रीस लाष क्रोडि साग
रने आंतरे।त्रीजासंभवनाथ तिर्थंकर थया॥सावर्थीनगरीनेविषे ॥ जीतार्थ राजा
पीता ॥ सेन्यादेवी राणी माता ॥ हेमवर्णे ॥ अस्व कहेतां घोडानुंलंछन । चारसें
धनुषनुं देहमान । साठ लाष पुर्वनुं आयूष॥ पनर लाष पुर्व तो कुंवरपणे रह्या ।
चुमालीस लाष पूर्वनुं राज पाल्युं ॥ एक लाष पूर्वनी प्रवर्ज्या पाली॥प्रवर्ज्या
लीधापछि। चउद वर्से केवलज्ञान उपनुं । साधु साधवी। श्रावक श्रावीकारूप।
चतुर्विध संघतिर्थ थापीने ॥ द्वादसांगी गणीनी पेटी आपीने । एक हजार
साधुसंघाते स्वामी निर्वाण मोक्ष पधार्या ॥ ३ ॥ त्रीजा संभवनाथ तिर्थंकर मोक्ष
पोहोंता पछि । दस लाष क्रोडि सागरोपमने आंतरे । चोथा अभीनंदन ति
र्थंकर थया । विनीता नगरीनेविषे । संवर राजा पीता । सीधार्था राणी माता ।

वरसे। वै वानरनुं लंछन। साढा त्रणसें धनुषनुं देहमान। पंचास लाख पूर्वनुं
घतिर्थ थतेमां साढा बारलाष पूर्व तो कुंवरपणे रह्या। साढा छत्रीस लाष पूर्वनुं
रसने साधु। एक लाष पूर्वनी प्रवर्ज्या पाली॥ प्रवर्ज्या लीधापछि॥ अढार व
दहाडे। ज्ञान उपनुं। साधु साधवी। श्रावक श्रावीकारूप चतुर्विध संघ तिर्थ
थापी॥ द्वादसांगी गणीनी पेटी आपीने॥ एक हजार साधुसंघाते स्वामी निरवाण
मोक्षनेविषे पोहोंता॥४॥ हवे चोथा अभीनंदन तिर्थंकर मोक्षपोहोंतापछि। नव
लाष कोडि सागरने आंतरे। पांचमा सुमत्तिनाथ तिर्थंकर थया। कुसलपुरी
नगरीने विषे। मेघरथ राजा पिता। सुमंगला देवी राणी माता। हेमवर्णे।
क्रोंच पंषीनुं लंछन॥ त्रणसें धनुषनुं देहमान। चालीस लाष पूर्वनुं आयुष।
तेमां दश लाष पूर्वतो कुंवरपणे रह्या॥ उगणत्रीस लाष पूर्वनुं राज पाल्युं। एक
लाष पूर्वनी प्रवर्ज्या पाली। प्रवर्ज्या लीधा पछि। वीस वर्से केवलज्ञान उपनुं।

साधुसाधवी । श्रावकश्रावीकारूप ॥ चतुर्विध संघतिर्थ थापीने । द्वादशांगी ग
णीनि पेटि आपिने एकहजार साधुसंघाते स्वामी नीर्वाण मोक्ष पधार्या ॥ ५॥
पांचमा सुमतिनाथतिर्थंकर निरवाण मोक्ष पोहोंतापछि । नेवुं हजार कोडिसाग
रने आंतरे । छठा पद्मप्रभ्र तिर्थंकर थया । कोसंबी नगरीनेविषे । धर राजा पिता
सुसिमा देवीराणी माता । राते वर्णे । पद्म कमलनुं लंछन । अढीसो धनुषनुं
देहमान । त्रिशलाष पूर्वनुं आयुष ॥ साढासात लाष पूर्व तो कुंवरपणे रह्या ।
साढीएकविस लाष पूर्वनुं राज पाल्युं ॥ एक लाष पूर्वनी प्रवर्ज्या पाली । प्रव
र्ज्या लीधापछि । छठे महीने केवलज्ञान उपनुं । साधु साधवी । श्रावक । श्रावी
कारूप चतुर्विध संघतिर्थ थापीने द्वादसांगीगणीनी पेटी आपीने । त्रिहुंतेर
साधु संघाते स्वामी नीवार्ण मोक्ष पधार्या ॥ ३ ॥ छठा पद्मप्रभ्र तिर्थंकर नि
र्वाण मोक्ष पोहोंतापछि ॥ नव हजार कोडि सागरने आंतरे । सातमा सुपार्श्व

मोक्ष पोहोंतापछि॥ नव क्रोडिसागरने आंतरे॥ दशमा श्रीसितलनाथ तिर्थंकर थया। भद्दलपुर नगरीने विषे॥ द्रढरथ राजा पिता। नंदादेवी राणी माता॥ हेम वर्णे॥ श्रीवछ साथीयानुं लंछन॥ नेवुं धनुष्यनुं देहमान। एक लाष पूर्वनुं आउषुं। तेमां पालाखपूर्वतो कुंवरपणे रह्या। अर्ध लाष पूर्वनुं राज पाल्युं॥ पालाखपूर्वनी प्रवर्ज्या पाली प्रवर्ज्या लीधा पछे।त्रण मासे केवलज्ञान उपनुं। साधु साधवी। श्रावक श्रावीकारूप चतुर्विध संघतिर्थ थापी द्वादसांगीगणीनी पेटी आपीने। एक हजार साधु संघाते स्वामी निर्वाण मोक्ष पधार्या॥ १० ॥ हवे दशमा सितलनाथ तिर्थंकर। निर्वाणमोक्ष पोहोंतापछि॥ एक क्रोडिसागर तेमां॥१००॥ सागर॥ छासठ लाष छविस हजार वरसने उणे आंतरे॥ इग्यारमा श्रेयांसनाथ तिर्थंकर थया। सिंहपुरी नगरीनेविषे। विश्नु राजा पिता॥ विश्नुदेवी राणी माता। हेम वर्णे गेंडानुं लंछन॥ एंसी धनुष्यनुं देहमान।

चोरासी लाप वरसनुं आयूप ॥ तेमां ॥२१॥ लाप । वरस कुंवरपणे रह्या ॥४२॥ लाप वरसनुं राज पाल्युं ॥ २१ ॥ लाष वरसनी प्रवर्ज्या पाली ॥ प्रवर्ज्या लीधा पछि बे मासे केवलज्ञान उपनुं । साधु साधवी । श्रावक श्रावीका रूप चतुर्विध संघ तिर्थ थापीने॥ द्वादसांगीगणीनि पेटी आपीने । एक हजार साधु संघाते निर्वाण मोक्षने विषे पोहोंता ॥११॥ हवे इग्यारमां श्रेयांसनाथ तिर्थंकर मोक्ष पोहोंता पछी ॥५४॥ सागरने आंतरे ॥ बारमां श्रीवासुपूज्य तिर्थंकर थया चंपापुरी नगरीने विषे । वसुपुज्य राजा पिता । जयादेवी राणी माता । राते वर्णे । भेंसानुं लंछन । सितेर धनुष्यनुं देहमान । बोहोतेर लाष वर्सनुं आउपुं ॥ तेमां अढार लाप वरस तो ॥ कुंवरपणे रह्या । चोपन लाष वरसनी प्रवर्ज्या पाली प्रवर्ज्या लीधा पछि ॥ एक मासे केवलज्ञान उपनुं । साधु साधवी। श्रावक श्रावीका रूप चतुर्विध संघ तिर्थ थापी ॥ द्वादसांगीगणीनी पेटी आ

पीने । छसें साधु संघाते स्वामीनीर्वाण मोक्ष पधाऱ्या ॥ १२ ॥ हवेबारमा वा
सुपूज्य तिर्थंकर निर्वाण मोक्ष पोहोंता पछि । त्रीस सागरने आंतरे ॥ तेरमा
श्रीवीमलनाथ तिर्थंकर थया । कंपीलपूर नगरने विषे ॥ कृतवर्म राजा पिता ॥
सामादेवि राणी माता ॥ हेम वर्णे वराहके० सुवरनुं लंछन ॥ साठधनुष्यनुं देहमान ॥
पनर लाष वरस तो कुंवरपणें रह्या ६० लाख वर्षनु आउखुं तेमां त्रीस लाष वरसनुं
राज्य पाल्युं ॥ १५ ॥ लाष वरसनी प्रवर्ज्या पाली । प्रवर्ज्या लीधा पछि ॥ बे महीने केव
लज्ञान उपनुं । साधु साधवी । श्रावक श्रावीकारूप । चतुर्विध संघतिर्थ थापीने ।
धादसांगी गणीनी पेटी आपीने ॥ ६०० ॥ साधु संघाते स्वामी निर्वाण मोक्ष
पोहोंता ॥ १३ ॥ हवे तेरमां विमलनाथ तिर्थंकर मोक्षपोहोंतापछी ए सागरने आंत
रे ॥ चउदमां अनंतनाथ तिर्थंकर थया ॥ अयोध्या नगरीनें विषे ॥ संघसेन राजा
पिता । सुजसादेवी राणी माता । हेम वर्णे ॥ सकरानुं लंछन । अने पंचास धनुष्यनुं

देहमान ॥३०॥ लाप वरसनुं आयुप। तेमां साढासात लाष वरस तो कुंवरपणें रह्या। पन्नर लाप वरसनुं राज पाळ्युं। साढासात लाप वरसनी प्रवर्ज्या पाळी। प्रवर्ज्या लीधा पछि॥३॥ महीने केवलज्ञान उपनुं॥ साधु साधवी। श्रावक श्राविकारूप चतुर्विध संघ तिर्थ थापी द्वादसांगी गणीनी पेटी आपीने। सातसें साधुसंघाते स्वामी नीर्वाण मोक्ष पधार्या ॥ १४ ॥ हवे जगदमा अनंतनाथ तिर्थंकर निर्वाण मोक्ष पोहोंतापछि ॥ चार सागरने आंतरे ॥ पनरमा धर्मनाथ तिर्थंकर थया ॥ रत्नपुरी नगरीनेवीषे ॥ भानु राजा पीता ॥ सुव्रतादेवी राणीमाता। हेम वर्ण ॥ वज्रनुं लंछन। पिस्तालिस धनुष्यनुंदेहमान दस लाप वर्सनुं आउखुं ॥ तेमां अढी लाष वर्स तो कुंवरपणे रह्या ॥ साढापांच लाप वरसनुं राज पाळ्युं ॥ एक लाष वर्सनी प्रवर्ज्या पाळी ॥ प्रवर्ज्या लीधा पछी बे महिने केवलज्ञान पाम्यां। साधु साधवी ॥ श्रावक श्रावीकारूप ॥ च

तुर्विध संघतिर्थ थापीने ॥ द्वादसांगी गणीनि पेटी आपिने॥ आठसें साधु संघाते स्वामी नीर्वाण मोक्षनेविषे पधार्‍या ॥१५॥ हवे पन्नरमां धर्मनाथ तिर्थंकर। निर्वाण मोक्ष पोहोंतापछी ॥ त्रण सागर। तेमां पोणापल्यने ऊणे आंतरे॥सोळमा श्री शांतिनाथ तिर्थंकर थया॥हस्तीनागपरनगरनेविषे ॥ विश्वसेन राजा पीता ॥ अचिरादेवी राणी माता ॥ हेम वर्णे ॥ मृगनुं लंछन ॥ चालीस धनुष्यनुं देहमान। एक लाप वर्सनुं आउषुं ॥ तेमां पा लाष वर्स तो कुंवरपणे रह्या ॥ पा लाष वरसनुं राज पाल्युं ॥ पा लाख वर्षनि चक्रव्रतीनि पदवी भोगवी॥पा लाष वरसनी प्रवर्ज्यापाळी॥ प्रवर्ज्या लीधा पछी ॥ एकमहीने केवलज्ञान ऊपनुं। साधु साधवी श्रावक श्रावीकारूप चतुर्विध संघतिर्थ थापीने ॥ द्वादसांगी गणीनी पेटी आपीने ॥ नवसेंसाधुसंघाते स्वामी नीर्वाण मोक्षनेविषे पधार्‍या ॥१६॥ हवे सोलमां शांतिनाथ तिर्थंकर निर्वाण मोक्ष पोहोंतापछी॥ अर्ध पल्यने आंतरे ॥ सतरमां श्रीकुंथु

नाथ तिर्थंकर थया ॥ गजपुर नगरीनेवीपे ॥ सुर राजा पीता ॥ सुरादेवी राणी मा
ता ॥ हेम वर्ण ॥ छगल कहेता बोकडानुं लंछन॥ पांत्रीस धनुषनुं देहमान ॥ पंचा
णुं हजार वरसनुं आउखुं ॥ तेमां पोणी चोवीस हजार वरस तो कुंवरपणे रह्या ॥
पोणीचोवीस हजार वरसनुं राज पाल्युं ॥ पोणीचोवीस हजार वरस चक्रवर्त्तिनी
पदवी भोगवी ॥ पोणीचोवीस हजार वरसनी प्रवर्ज्या पाली॥ प्रवर्ज्या लिधापछि
सोल महीने केवलज्ञान उपनुं ॥ साधु साधवी । श्रावक श्रावीकारूप चतुर्विध सं
घतिर्थ थापिने ॥ द्वादसांगीगणीनी पेटी आपिने ॥ एक हजार साधुसंघाते । स्वा
मी निर्वाण मोक्ष पधार्या ॥ १७॥ हवे सतरमा कुंथुनाथ तिर्थंकर निर्वाण मोक्ष
पोहोंतापछी ॥ पापल्यमांथी । एक कोड ने १ हजार वर्सने उणे आंतरे ॥ १८॥ मा
श्रीअरनाथ तिर्थंकर थया ॥ नागपुर नगरीने विपे ॥ सुदर्सण राजा पिता ॥ दे
वकीदेवी राणी माता ॥ हेम वर्णे॥ नंदाव्रत साथीयानुं लंछन ॥ त्रीस धनुषनुं

देहमान ॥ चोरासी हजार वरसनुं आउषूं ॥ तेमां २१ हजार वरस तो कुंवर
पणे रह्या ॥२१॥ हजार वर्सनुं राज पाल्युं ॥ २१ ॥ हजार वर्सनी चक्रवृत्तीनी
पदवी पाली ॥ २१ ॥ हजार वर्सनी प्रवर्ज्या पाली ॥ प्रवर्ज्या लीधापछी ॥ त्रण
वर्षे केवलज्ञान उपनुं ॥ साधु साधवी । श्रावक श्राविकारूप चतुर्विध संघतिर्थ
थापीने । द्वादसांगीगणीनि पेटी आपिने ॥ एक हजार साधुसंघाते स्वामी ॥
नीर्वाण मोक्ष पधार्या ॥१८॥ हवे अढारमा अरनाथ तिर्थंकर निर्वाण मोक्ष
पोहोंतापछी । एक कोम्नने एक हजार वरसने आंतरे॥ १९ मा मल्लीनाथ तिर्थंकर
थया ॥ मिथिला नगरिनेविषे ॥ कुंभ राजा पिता ॥ प्रभावति राणी माता ॥
निले वर्णे ॥ कलसानुं लंछन ॥ पंचविस धनुषनुं देहमान ॥ पंचावन हजार वर्सनुं
आउषूं तेमां सो वरस तो कुंवरीपणे रह्या॥बाकी प्रवर्ज्या पालि ॥ प्रवर्ज्या लि
धापछि॥त्रीजे पोहोरे केवल ज्ञानउपनुं॥साधु साधवी । श्रावक श्रावीकारूप चतु

विध संघतिर्थ थापिने द्वादसांगी गणीनी पेटी आपिने ॥ पांचसें साधु ॥ अने पांचसें साधवी संघाते ॥ स्वामी निर्वाण मोक्ष पधार्या ॥ १९ ॥ हवे ओगणीसमां मल्लि नाथ तिर्थंकर मोक्ष पोहोंतापछी ॥ ५४ ॥ चोपन लाष वरसने आंतरे ॥ २० ॥ मां मु निसुव्रत तिर्थंकर थया ॥ राजग्रही नगरीनेविषे ॥ सुमीत्र राजा पीता ॥ पद्मा वति राणी माता ॥ साम वर्णं ॥ काछवानुं लंछन ॥ विस धनुषनुं देहमान ॥ त्रीस हजार वर्सनुं आउषुं ॥ तेमां साढासात हजार वरस तो कुंवरपणें रह्या । प नर हजार वर्सनुं राजपाळ्युं । साढासात हजार वर्सनी प्रवर्ज्या पालि ॥ प्रवर्ज्या लिधा पछि ॥ इग्यार महीने केवलज्ञान उपनुं । साधु साधवी । श्रावक श्रावि कारूप चतुर्विध ॥ संघतिर्थ थापीने । द्वादसांगीगणीनी पेटी आपिने ॥ एक हजा र साधुसंघाते ॥ स्वामी निर्वाण मोक्ष पधार्या ॥ २० ॥ हवे वीसमा मुनिसुव्रत तिर्थं कर मोक्ष पोतापछी छ लाष वर्सने आंतरे २१ मां नमिनाथ तर्थंकर थया ॥

मथुरा नगरीनेविषे । विजय राजा पिता ॥ विपुलादेवी राणी माता ॥ हेम
वर्ण ॥ निलोत्पलकमलनुं लंछन । पनर धनुषनुं देहमान ॥ दस हजार वर्सनुं
आउषूं ॥ अढि हजार वर्स तो कुंवरपणे रह्या ॥ साढाछ हजार वर्सनुं राज
पाल्युं ॥ एक हजार वर्सनी प्रवर्ज्या पालि ॥ प्रवर्ज्या लिधापछि ॥ नव महीने
केवलज्ञान उपनुं ॥ साधु साधवी० । एक हजार साधुसंघाते ॥ स्वामी निर्वाण मो
क्षनेविषे पधार्या ॥२१॥ हवे एकवीसमां नमीनाथ तिर्थंकर मोक्ष पोहोंतापछी । पां
च लाष वर्सने आंतरे ॥२२॥ मां नेमनाथ तिर्थंकर थया । सोरीपुर नगरीनेविषे ।
समुद्रविजय राजा पीता ॥ सीवा देवी राणी माता ॥ साम वर्ण । संषनुं लंछन ॥
दसधनुषनुं देहमान ॥ एक हजार वर्सनुं आउषूं ॥ तेमां त्रणसें वर्स तो कुंव
रपणे रह्या ॥ सातसें वर्सनी प्रवर्ज्या पालि ॥ प्रवर्ज्या लिधापछी । चोपन द
हाडे केवलज्ञान उपनुं ॥ साधु० ॥ पांचसें ने छत्रीस साधुसंघाते ॥ स्वामी नि

र्वाण मोक्ष पधार्या॥२२॥ हवे बावीसमां नेमनाथ तिर्थंकर मोक्ष पोहोंतापछी ॥
पांणीचोर्यासीहजार वर्सने आंतरे ॥ २३ ॥ मां पार्श्वनाथ तिर्थंकर थया ॥
वाणारसी नगरीने विषे ॥ अश्वसेन राजा पिता ॥ वामादेवी राणी माता ॥
निले वर्ण ॥ सर्पनुं लंछन ॥ नव हाथनुं देहमान ॥ सो वर्सनुं आउषूं ॥ तेमां
३० वर्स तो कुंवरपणे रह्या सितेर वर्सनी प्रवर्ज्या पाली ॥ प्रवर्ज्या लिधापछि
चोर्यासी दाहाडे केवलज्ञान उपनुं साधु० एक हजार साधुसंघाते ॥ स्वामी
निर्वाण मोक्ष पधार्या ॥ २३ ॥ हवे त्रेवीसमा श्रीपार्श्वनाथ तिर्थंकर मोक्ष पो
होंतापछी ॥ अढिसें वर्सने आंतरे ॥ चोविसमा श्रीमहावीर तिर्थंकर थया ॥
पत्रीकुंडग्राम नगरनेविषे ॥ सिद्धार्थ राजा पिता ॥ त्रिसलादेवी राणी माता ॥
हेम वर्ण ॥ सिंहनुं लंछन ॥ सात हाथनुं देहमान ॥ बोहोतेर वर्सनुं आउषूं ॥
तेमां ॥३०॥ वर्स तो कुंवरपणे रह्या ॥ ४२ ॥ बेतालिस वर्षनी प्रवर्जा पाली ॥

प्रवर्जा लिधापछी ॥ साढाबार वर्स ने एक पपवाडे केवलज्ञान उपनुं । साधु साधवी । श्रावक श्रावीका रूप चतुर्विध संघतिर्थ थापिने ॥ द्वादसांगीगणीनी पेटी आपिने ॥ आसो वद अमावास्यानी रात्रे । पावापुरी नगरीनेविषे । चोथा आराना त्रणवर्स ने साढाआठ महीना बाकी रह्या ॥ त्यारे स्वामीनाथ एकाकि पणे ॥ बे दीवसनुं अणसण करी ॥ स्वामी निर्वाण मोक्षनेविषे पहोंता ॥ २४ ॥ ७ः ॥ ए प्रथम पेहला तिर्थंकर श्रीऋषभदेवस्वामी ॥ अने चोविसमां तिर्थंकर श्रीमहाविरस्वामी ॥ ए बेहू विचे । एक कोडाकोड सागरो पम जाझेरुं ॥ तेहमां ४२ बेंतालिस हजार वर्स उणानुं आंतरुं जाणवूं ॥ इति श्रीचोविस तिर्थंकरनां आंतरा संपूर्णं ॥

ॐ नमः अथ श्रीकर्मप्रकृतिना बोल लिख्यते ॥ पहिलुं ज्ञानावरणीय कर्म ते आंखना पाटासमान ॥१॥ बिजुं दर्शनावरणीय कर्म ते राजाना पोलिया समान

॥२॥ त्रिजुं वेदनीय कर्म ते मध तथा अफिणे खरड्या खड्गसमान ॥ ३ ॥ चउथुं मोहनीय कर्म ते मदिरापान समान ॥ ४ ॥ पांचमुं आयूष कर्म ते हेड समान ॥ ५ ॥ छठुं नाम कर्म ते चितारासमान ॥ ६ ॥ सातमुं गोत्र कर्म ते कुंभारना चाकडा समान ॥ ७ ॥ आठमुं अंतराय कर्म ते राजाना भंडारीसमान ॥ ८ ॥ ज्ञानावरणीय कर्मे अनंत ज्ञानगुण ढांक्योछे ॥ १ ॥ दर्शनावरणीय कर्मे अनंत दर्शनगुण ढांक्योछे ॥ २ ॥ वेदनीय कर्मे अनंत अव्याबाध आत्मिक सुख रोक्युंछे ॥ ३ ॥ मोहनीय कर्मे क्षायक समकित गुण रोक्योछे ॥ ४ ॥ आयुष कर्मे अक्षय स्थिति गुण रोक्योछे ॥ ५ ॥ नाम कर्मे अमूर्तिगुण रोक्योछे ॥६॥ गोत्र कर्मे अगुरु लघुगुण रोक्योछे ॥ ७ ॥ अंतराय कर्मे अनंत आत्मिकशक्ति गुण रोक्योछे ॥८॥ ज्ञानावरणीय कर्म ते ६ प्रकारे बांधे ॥ पहिले बोले नाणपडिणीयाए ते ज्ञानीना भुंडा बोले ॥ १ ॥ बिजे बोले नाणनिन्हवणयाए ते

ज्ञानिनो उपकार उलवे ॥ २ ॥ त्रिजे बोले नाणआसायणाए ते ज्ञानिनि आ
शातना करे ॥ ३ ॥ चउथे बोले नाणअंतराएणं ते । ज्ञाननि अंतराय पाफवे
॥ ४ ॥ पांचमे बोले नाणपउसेणं ते । ज्ञानिउपर द्वेषकरे ॥ ५ ॥ छठे बोले ना
णविसंवायणाजोगेणं ते । ते ज्ञानिसाथे खोटाऊघमा विखवादकरे ॥ ६ ॥ एछ
प्रकारे बांधे ते ॥ पांच तथा १० प्रकारे जोगवे । ते पांच किया ते कहेछे । मति
ज्ञानावरणीय ॥ १ ॥ श्रुतज्ञानावरणीय ॥ २ ॥ अवधिज्ञानावरणीय ॥ ३ ॥
मनपर्यवज्ञाना वरणीय ॥४॥ केवलज्ञानावरणीय ॥५॥ ए ॥ ५ ॥ ज्ञान प्रगट
थावा द्ये नहि तथा १० प्रकारे जोगवे ते कहेछे सोयावरणे ॥ १ ॥ सोयविन्ना
णावरणे ॥ २ ॥ नेत्तावरणे ॥ ३ ॥ नेत्तविनाणावरणे ॥ ४ ॥ घाणावरणे ॥ ५ ॥
घाणविन्नाणावरणे ॥ ६ ॥ रसावरणे ॥ ७ ॥ रसविन्नाणावरणे ॥ ८ ॥ फासावर
णे ॥ ए ॥ फासविन्नाणावरणे १० ए ॥ १० ॥ प्रकारे जोगवे । हवे ज्ञानावरणी

खाटोरस ॥ ५० ॥ मिठोरस ॥ ५१ ॥ खरखरोस्पर्श ॥ ५२ ॥ सुंहालो फरस ॥ ५३ ॥ न्नारि फरस ॥ ५४ ॥ हलुवो फरस ॥५५॥ टाढो फरस ॥५६॥ उन्हो फरस ॥ ५७ ॥ चोपम्रो फरस ॥ ५८ ॥ लुखो फरस ॥ ५९ ॥ नरकानुपूर्वी ॥ ॥ ६० ॥ तिर्यंचानुपूर्वी ॥ ६१ ॥ मनुष्यानुपूर्वी ॥ ६२ ॥ देवतानुपूर्वी ॥ ६३ ॥ शुन्नविहायगति ॥ ६४ ॥ अशुन्नविहायगति ॥ ६५ ॥ ए ॥ ६५ ॥ पिंरूप्रकृति थइ । पराघातनाम ॥ ६६ ॥ उस्वासनाम ॥ ६७ ॥ अगुरुलघुनाम ॥ ६८ ॥ आतापनाम ॥ ६९ ॥ उद्योतनाम ॥ ७० ॥ उपघातनाम ॥ ७१ ॥ तिर्थंकरनाम ॥ ७२ ॥ निर्माणनाम ॥ ७३ ॥ त्रशनाम ॥ ७४ ॥ बादरनाम ॥ ७५ ॥ प्रत्येक नाम ॥ ७६ ॥ पर्याप्तनाम ॥ ७७ ॥ स्थिरनाम ॥ ७८ ॥ शुन्ननाम ॥ ७९ ॥ सौ न्नाग्यनाम ॥ ८० ॥ सुस्वरनाम ॥ ८१ ॥ आदेयनाम ॥ ८२ ॥ जशोकिर्तिनाम ॥ ८३ ॥ स्थावरनाम ॥ ८४ ॥ सुक्ष्मनाम ॥ ८५ ॥ साधारणनाम ॥ ८६ ॥

यनि ॥ ९ ॥ वेदनीयनि ॥ १६ ॥ मोहनीयनि ॥ ५ ॥ तेसम्मत्तवेयणिज्जे ॥ १ ॥ मिछत्तवेयणिज्जे ॥ २ ॥ सम्मामिछत्तवेयणिज्जे ॥३॥ कसायवेयणिज्जे ॥ ४ ॥ नोकसायवेयणिज्जे ॥ ५ ॥ ए ॥५॥ आयुषनि ॥ ४ ॥ नामनि ॥ २८ ॥ गोत्रनि ॥ ॥ १६ ॥ अंतरायनि ॥ ५ ॥ ए सर्व मिली ॥ ९३ ॥ प्रकृति भोगव्यानि जाणवी ॥ अथवा ॥ १४८ ॥ प्रकारे पण भोगवे ते पांच ज्ञानावरणीयनि ॥ ५ ॥ दर्शनावरणीयनि ॥ ९ ॥ वेदनीयनि ॥ २ ॥ मोहनीयनि ॥ २८ ॥ आयुषनि ॥४॥ नामकर्मनि ॥ ९३ ॥ गोत्रकर्मनि ॥२॥ अंतरायनि ॥ ५ ॥ एवं सर्व मिलिने ॥ ॥१४८॥ प्रकृति जाणवि। तथा बंधन नामकर्मनि ॥ १० प्रकृति ग्रंथांतरे कहिछे ते भेलवतां ॥१५८॥ प्रकृति पण थाय॥ अथवा मुलप्रकृति ॥८॥ तेहनि उत्तर प्रकृति ॥ ३१ ॥ ज्ञानवरणीयनि ॥ ५ ॥ दर्शनावरणीयनि ॥ ९॥ वेदनीयनि ॥ ॥ २ ॥ मोहनीयनि ॥२॥ आयुषनि ॥ ४ ॥ नामनि ॥ २ ॥ गोत्रनि ॥ २ अंत

रायनि ॥ ५ ॥ एवं ॥ ३१ ॥ प्रकृति थाय तेहनो विस्तार ॥ १४८ ॥ कर्मप्रकृति
जाणवि । ए बोल सिध्धांतप्रमाणे छे ॥ इति कर्मप्रकृतिना बोल समाप्तं ॥
ॐनमः सिध्धं ॥ सेकिंतं धम्मेझाणे २ चउविहेचउपडयारेपन्नते ॥ तंजहा ॥ आ
णाविजए ॥१॥ अवायविजए ॥ २ ॥ विवागविजए ॥ ३ ॥ संठाणविजए ॥४॥
धम्मस्सणंझाणस्स चत्तारिलरकणा ॥ पन्नत्ता ॥ तंजहा ॥ आणारुइ ॥ १ ॥ नि
सग्गरूइ ॥ २ ॥ सूतरूइ । उवएसरुइ ॥ ४ ॥ धम्मस्सणंझाणस्सचत्तारि ॥
आलंबणापन्नत्ता ॥ तंजहा ॥ वयणा ॥ १ ॥ पुछणा ॥ २ ॥ परियट्टणा ॥ ३ ॥
धम्म कहा ॥ ४ ॥ धम्मस्सणंझाणस्स ॥ चत्तारिअणुप्पेहा ॥ पन्नत्ता ॥ तंजहा
एगत्ताणुप्पेहा ॥ १ ॥ अणिच्चाणुप्पेहा ॥ २ ॥ असरणाणुप्पेहा ॥ ३ ॥ संसारा
णुप्पेहा ॥ ४ ॥ ए सूत्र पाठ कह्यो ॥ हवे सूत्रनो अर्थ कहेछे ॥ धर्म्मध्यानना
च्यार भेद तेमांहि पहिलो भेद तेहनो अर्थ कहीएछे ॥ आणाविजए आणा

विज्ञए कहेता वीतरागनी आज्ञानो विचार चींतववो ॥ ते। ए वीतरागनी आज्ञा जे समकित सहित बार व्रत ॥ श्रावकनी इग्यार पडिमा ॥ पंच महाव्रत । भी खुनीबार पडिमा शुभध्यान । शुभयोग ॥ ज्ञानदर्सणचारित्र तप ॥ छकायनी रक्षा । ए । वीतरागनी आज्ञा ॥ आराधवी ॥ तिहां समय मात्रनो प्रमाद न करवो ॥ चतुर्विध तीर्थनां गुणकीर्त्तन करवां ॥ ए धर्मध्याननो पेहेलो भेद कह्यो ॥ १ ॥ हवे धर्मध्याननो बीजो भेद कहीयेछे ॥ अवायविजए ॥ अवायविजए कहेता संसारमांहि जीव जेहथकि दुष पामेछे ॥ तेहनो विचार चींतववो ॥ तेहनो । ए विचार ॥ मिथ्यात्व ॥ अविरति ॥ प्रमाद ॥ कषाय ॥ असुभयोग ॥ तथा अढार पापस्थानक ॥ छकायनी हिंसा । एह दुषना कारण जाणी ॥ एहवो आश्रवमार्ग ॥ छांडीने ॥ संवरमार्ग आदरवो ॥ जेहथी जीव दुःख न पामे ॥ ए धर्मध्याननो बीजो भेद कह्यो ॥ २ ॥ हवे धर्मध्याननो त्रीजो भेद कहेछे ॥ विवागविज्ञए ॥

विवागविजए कहेतां जीव जे सुष दुःख भोगवेछे ॥ ते स्याथकी तेहनो विचार चिं
तववो ॥ तेहनो एह विचार ॥ जीवे जेहवेरसेकरि पूर्वे ॥ जेहवा शुभाशुभ ज्ञा
नावरणीयादिक कर्म उपार्ज्याछे ॥ ते शुभाशुभ कर्मना उदयथी जीव तेहवां
सुख दुःख अनुभवेछे ॥ ते अनुभवताथका ॥ कोइ उपर राग द्वेष नाणीये ॥ स
मताभाव आणीए ॥ मन वचन कायाना शुभ योगसहित ॥ श्री जिनधर्मने
विषे प्रवर्तिये ॥ जिमनिराबाध परम सुष पामीए ॥ ए धर्मध्याननो त्रीजो भेद
कह्यो ॥ ३ ॥ हवे धर्मध्याननो चोथो भेद कहीये छीये ॥ संठाणविजए ॥ संठा
णविजए कहेता ॥ त्रण लोकना आकारनुं स्वरुप चिंतवीए ॥ तेनुं ए स्वरुप ॥ ए
लोक सुपइठकनेआकारे छे ॥ जीव अजीवे संपूर्ण लोक भर्योछे ॥ असं
ष्यात जोयणनी कोडाकोडप्रमाणे त्रीछो लोक छे ॥ तिहां असंष्याता द्वीप
समुद्र छे ॥ तथा असंष्याता वाणव्यंतरना नगर छे ॥ तथा असंष्याता ज्योत

पीना विमान छे । तथा असंख्याती ज्योतिषीनी राजधानी छे ॥ तीहां अढी द्वीपमांहि तिर्थंकर जघन्य २० ॥ उत्कृष्टा एकसो सितेर होय ॥ तथा केवलि जघन्य पृथक् कोडि ॥ उत्कृष्टा पृथक् कोडि तथा साधु जघन्य पृथक् सहस्र कोडि ॥ उत्कृष्टा पृथक् सहस्र कोडि ॥ तेहने वंदामि ॥ नमंसामि ॥ सक्कारेमि ॥ समाणेमि ॥ कल्लाणं ॥ मंगलं ॥ देवयं ॥ चेइयं ॥ पज्जुवासामि ॥ तथा त्रिछ लोकमांहि ॥ असंख्याता श्रावक श्राविका छे ॥ तेहना गुणग्राम करिये ॥ ते त्रिछ लोकथकी असंख्यात गुणो अधिको उर्ध्वलोक छे ॥ तिहां बार देवलोक ॥ नव ग्रैवेयक पांच अनुत्तरविमान सर्व थइने ॥ चोरासी लाख सत्ताणु हजार त्रेवीस विमान छे ॥ तथा तेउपर सिद्धसिला छे ॥ तिहां सिद्धभगवंत बिराजेछे ॥ तेहने वंदामि ॥ जावपज्जुवासामि ॥ तेउर्ध्वलोकथी कांइक विशेषेअधिक अधो लोक छे ॥ तिहां चोरासी लाख नरकावासा छे ॥ सात कोडि बहुतेर लाख भवनपतिना भवन

छे ॥ एहवा त्रिण लोकनां सर्व थानक समकित सहित करणी॥विना सर्व जीवे॥ अनंतीवार जन्म मरणेकरी फरसी मूक्याछे ॥ एम जाणी समकितसहित श्रुत अने चारित्रधर्मनी आराधना करीये॥ जिम अजरामर पद पामीये ॥ ए धर्मध्याननो चोथो भेद कह्यो ॥ ४ ॥ हवे धर्मध्यानना ४ लक्षण ॥ तेमां धर्मध्याननुं पहिलुं लक्षण कहियेछे ॥ आणारुइ ॥ आणारुइ कहेतां वीत रागनी आज्ञा अंगीकार करवानी रुचि उपजे तेहने आणारुइ कहिये॥ ए धर्मध्याननुं पहेलुं लक्षण कह्युं ॥ १ ॥ हवे धर्मध्याननुं बीजुं लक्षण कहियेछे॥ निसग्गरुइ॥ निसर्गरुइ कहेतां ॥ जीवने सभावेज ॥ तथा जाति स्मरणादिक ज्ञानेकरी श्रुतसहित चारित्रधर्म करवानी रुचि उपजे ॥ तेहने निसर्ग रुचि कहिये ॥ ए धर्मध्याननुं बीजूं लक्षण कह्युं ॥ हवे धर्मध्याननुं त्रीजूं लक्षण कहिएछीये ॥ सुत्तरुइ ॥ सुत्तरुइ कहेतां ॥ सूत्रना बे भेद ॥ अंगपविठ ॥ १ ॥ अने अंगबा

रुप्याछे ॥ ते भाव पोते तेहवा लहीने ग्रहीने विसेषे निश्चय करीने संका कं रवा ॥ वितिगिछारहितपणे पोतानी निर्जराने अर्थे परना उपगारने अर्थे सभा मध्ये ते भाव तेहवा परुपीए तेहने धर्मकथा कहीए ॥ एहवी धर्मकथा कहेता थका अने सांभलीने सद्दहताथकां ॥ ते बेहु वीतरागनी आज्ञाना आराधक होय ॥ ते धर्मकथा ॥ संवररूपीउवृक्ष सेवीए ॥ जिम मनवंछित सुषपामीइं ॥ ते संवररूपीउवृक्ष वषाणी एछे ॥ ते संवररूपीउवृक्ष केहवोछे ॥ विशुद्ध समकितरूपी मूल छे जेहनुं ॥ १ ॥ धीर्यरूप कंद छे जेहनो २ विनयरूप वेदिका छे जेहनी ॥ ३ ॥ तीर्थंकर तथा च्यार तीर्थना गुण कीर्त्तनरूप खंध छे जेहनो ॥४॥ पांच महाव्रतरूप मोटी शाखाछे जेहनी ॥ ५ ॥ पंचवीस भावनारूप त्वचा छे जेहनी ॥ ६ ॥ शुभध्यानने शुभयोगरूप प्रधानपल्लवपत्र छे जेहनां ॥ ७ ॥ गुणरूप फूल छे जेहनां ॥ ८ ॥ सीयलरूप सुगंध वासना छे जेहनी ॥ ए ॥ आ

अवरहीत फल छे जेहनां ॥ १० ॥ मोक्षरूप प्रधानबीज छे जेहनुं ॥ ११ ॥ मंदरगिरीना शिखरउपरे जिम चूलिका बिराजेछे तिम समकितीना हृदयमां संवररूपिउवृक्ष बीराजेछे ॥ १२ ॥ एहवा संवररूप वृक्षनी शीतल छाया जेहनें परिणमे तेहना ज्नवोज्नवना पाप टले ॥ अने ते परम अतुल सुख पामे इत्यादिक ४ प्रकारनी कथा अखेवणी ॥ १ ॥ विखेवणी ॥ २ ॥ संवेगणी ॥ ३ ॥ निर्वेगणी ॥ ४ ॥ ए च्यार कथा विस्तारपणे कहिए तेहने धर्मकथा कहीए ॥ ए धर्मध्याननुं चोथुं आलंबन कह्युं ॥ ४ ॥ अखेवणी प्रमुष ४ कथानो ए विस्तार ॥ चोथे ठाणे उद्देसे २ बीजे सूत्र ५० मां मध्येछे ॥ हवे धर्मध्याननी च्यार अणुप्पेहा कहिएछे ॥ अणुप्पेहा ते केहने कहिए ॥ जीवद्रव्य अने अजीवद्रव्य तेहनो स्वज्नावसरूप जाणवाने अर्थे सूत्रना अर्थ विस्तारे चींतवीए ॥ तेहने अणुप्पेहा कहिए ॥ हवे धर्मध्याननी पहिली अणुप्पेहा कहेछे ॥ एकत्वाणुप्पेहा ते

अरुपीसदासउपयोगी ते चैतन्यरूप
केहने कहिए ॥ जीवअसंख्यात प्रदेसी अरुपीसदासउपयोगी ते चैतन्यरूप
एहवो एकसरखो आत्मा निश्चय नयेछे ॥ तिम सर्व आत्मा निश्चय नये एह
वा छे ॥ अने व्यवहार नये एहवो आत्मा अनादि कालनो ते अचैतन ॥ जरू
वर्णादि २० रूपसहित पुद्गलनो संयोगीथको ॥ त्रस ॥ १ ॥ अने थावर २
ए २ रूप लेइने अनेक नृत्यकार नटुयानीपरे ॥ अनेक रूप अनेक गंदे प्रवर्ते
छे ॥ ते त्रसनोत्रसरूपे प्रवर्त्ततो जघन्य अंतर्मुहुर्त उत्कृष्टो बे हजार सागर
झाझेरासूधी रहे ॥ अने थावरनो थावरपणे प्रवर्त्ततो जघन्य अंतर्मुहुर्त्त उत्कृष्टो
अनंतीउत्सर्पणी ॥ अवसर्पणी कालथी ॥ षेत्रथी अनंता लोक प्रमाणे ॥ अलो
कना आकास प्रदेस तेतला काल चक्र उत्सर्पणी अवसर्पणी जाणवी ॥ तेहना
असंख्याता पुग्गल परावर्त्तनथाय ॥ अंगुलने असंख्यातमे भागे आकास प्र
देस आवे तेतला असंख्याता पुग्गल परावर्त्तन ॥ थावरमध्ये पुग्गल लेइ खे

ल्यो ॥ एवं व्यवहार नयथी जीव जाणीइं ॥ १ ॥ वलीत्रस ॥ थावरमध्ये रह्यो
थको स्त्री १ पुरुष २ नपुंसक ॥३॥ ए वेदे पुद्गलने संयोग खेल्यो ॥ प्रवर्त्यो ॥
अनेक रूप नवा लाव्यो ॥ तिहां स्त्रीपुरुषना रूप कोण कोण रीतना लाव्यो ते
कहेछे कोइक प्रस्तावइं देव देवीपणे ॥ तत्र देवीपणे भवनपत्यादिक इसान दे
वलोकसूधी देवी इंद्रनी इंद्राणी सुरूपवंती अपछरा थई ॥ जघन्य १० हजार
वरस उत्कृष्टा ५५ पल्योपम देवांगनानेरूपे अनंतिवार ए जीव खेल्यो ॥ पुरु
षमध्ये देवतापणे भवनपत्यादिकजावनवमानवग्रैवेयकसूधी महर्धिक देव ॥ म
हाशक्तिवंत इंद्रादिक लोकपाल प्रमुखपणे रूपवंत देदीपमान वंछित भोग
संयोग पणे प्रवर्त्यो ॥ जघन्य ॥ १० ॥ हजार वर्ष उत्कृष्टा ३१ सागरोपम एम
अनंतीवार भोगीहूउ ॥ शक्रेंद्र एकभवमांहि ७ पल्योपमनी बाविस कोडाकोड
पंचासी लाष कोड एकोत्तर हजार कोड च्यारसे अठावीस कोड सतावन लाष

मनोज्ञ सुख। वंछित भोग॥ दीर्घपूर्व कोडादिकनां आउषा स्त्रीपुरुषपणे प्रवर्त्त्यों॥
वळि तेहिज॥ जीव मनुष्यमध्ये दुर्भागीकुल॥ दरीद्री भर्त्तार स्त्री पण अल
छरूप दुर्भागिणी पण ए जीव नटवापणे प्रवर्त्त्यों॥ तोहि मनुष्यपति स्त्री पुरु
षनो अवतार पूरो नथयो॥ वळी तीर्यंच पंचेंद्रीयमध्ये जलचरादि ५ मध्ये स्त्री
वेदे पुरुषवेदे प्रवर्त्त्यों वळी ते जीव सात नरक॥ पांच एकेंद्रीय त्रिण विगलेंद्रीय
तथा असंज्ञी तिर्यंच मनुष्य ए नियमांनपुंसकवेद अने संज्ञीतिर्यंच मनुष्य
मध्ये पण नपुंसक होए ते सर्वे नपुंसकवेद ए जीव स्त्रीवेदे प्रवर्त्यों ते उत्कृष्टा
एकसो दस पल्य अनइं प्रथक पूर्व कोडसूधी स्त्रीवेदे खेल्यो॥ जघन्य आउखा
भोगव्या आश्री अंतमुहुर्त्त॥ पुरुषवेदे उत्कृष्टो पृथक् सो सागर झाझेरासूधी
पुरुषवेदमध्ये खेल्यो जघन्य आउषा भोगव्या आश्री अंतर्मुहुर्त्त॥ नपुंसक
वेद उत्कृष्टो अनंता काळचक्र असंष्याता पुद्गल परावर्त्तनसूधी नपुसकवेदे

खेल्यो ॥ जघन्य आउषा जोगव्या आश्री अंतर्मुहुर्त्त ॥ ए जिहां गया तहां
एकलो पुग्गलने संयोगे अनेकरूप परावर्त्तन कीधा ए सर्व व्यवहारनय जी
वने विषे जाणवो ॥ एवा प्रवर्त्तननो मिटावणहार तेथी जिनधर्मने विषे सुधस
हहणासहित सुद्धउद्दम पराक्रमनुं फोरववुं ॥ एहविशुद्ध ॥ जिनमते करी आ
त्मानुं साधन थाय ॥ तिवारे सिद्धपणुं पामें ॥ तत्रज एकलो निश्चय नय आत्मा
जाणवो तेमाटे शुद्ध व्यवहार प्रवर्त्तवे ॥ अशुद्ध व्यवहार मिटे तिवारे सिद्ध होय
एहवो माहरो एक आत्मा छे जेमणी अपरपरिवार ते सवार्थ रूपी अने पुग्
गल १ मीसला २ वीसला ३ पुग्गल ते वर्ण पर्जवे करी जे जेहवे सभावे छे ॥
ते तेहवे सभावे नरहे ते पण असास्वता तेमाटे एक माहरो पोतानो आत्मा
पोताना कारजनो साधक सास्वतो जाणीने पोताना आत्मानुं साधन करीये ॥
ए धर्मध्याननी पेहेली अणुप्पेहा कही ॥ हवे धर्मध्याननी बीजी अणुप्पेहा

कहेछे ॥ अणी त्राणुप्पेहा ॥ १ ॥ ते केहने कहिये रूपीपुद्गलने अनेकप्रकारे
यतना करिइं ॥ तोहि पण अनित्य ॥ नित्य एक श्रीजिनधर्म परम सुखदायक
पोताना आत्माने ॥ तेमाटे आत्मा नित्य जाणीने समकितादिक संवरेकरि
पुष्टो करीये ॥ ए धर्म ध्याननी बीजी अणुप्पेहा कही ॥ २ ॥ हवे धर्मध्याननी
त्रीजी अणुप्पेहा कहीयेछे ॥ असरणाणुप्पेहा ॥ असरणाणुप्पेहा ते केहने क
हिये आ नवनेविषे अने परनव पहोंचता ॥ जीवने एक समकितपूर्वक जिन
धर्मविना जन्म जरा ॥ मरणना ॥ दुख निवारवा बीजो कोइ सरण समर्थ
नथी ॥ इस जाणी श्रीजिनधर्मनुं सरण करीये ॥ जिम परम सुख उपजे ॥ ए
धर्मध्याननी त्रीजी अणुप्पेहा कही ॥ हवे धर्मध्याननी चोथी अणुप्पेहा कहि
येछे ॥ संसाराणुप्पेहा संसाराणुप्पेहा ते केहने कहिये ॥ सवार्थरूप संसार
समुद्रमांहे ॥ जनम जरा मरण ॥ संयोग वियोग ॥ सारीरी मानसी दुख कषा

य मिथ्यात त्रसनादिक बहुत ॥ जल कल्लोलादिकनी लहिरे करी ॥ चार गात
चोवीस दंडकनेविषे परिभ्रमण करतां जगत जीवने श्रीजिनधर्मरूप द्विपानो
आधार छे ॥ तथा संजमरूप नावा तिहां सुधसमकितरूप निर्जामक नावानो
षेवणहार छे ॥ एहवीनावायेकरी जीव सिद्धिरूप महा नगरनेविषे पहुचें ॥ तिहां
अनंत अतुल ॥ विमल ॥ सिद्धना सुख जीव पामे ॥ ए धर्मध्याननी चोथी अ
णुप्पेहा कही ॥ ४ ॥ एहवा धर्मध्यानना गुण जाणीने सदा धर्मध्यान ध्याइये
जिमपरम सुखपामीये ॥ इति धर्मध्यान संपूर्ण ॥

ॐ नमः अथ श्रीपांचबोल लिख्यते ॥ पहिलो नारकिनो द्वार ॥१॥ बिजो भवनप
तिनो द्वार ॥ २ ॥ त्रिजो वाणव्यंतरनो द्वार ॥ ३ ॥ चउथोज्योतिषीनो द्वार ॥४॥
पांचमो वैमानिकनो द्वार ॥ ५ ॥ हवे पहिलो नरकनो द्वार कहेछे पहिले नाम
॥१॥ बिजे गोत्र ॥२॥ त्रिजे अर्थ ॥ ३ ॥ चोथे पिंड ॥ ४ ॥ पांचमे पोलार ॥ ५ ॥

छठे अलोक ॥ ६ ॥ सातमे आधार ॥७॥ आठमे आंतरा ॥ ८ ॥ नवमे पुप्फा
विकीर्ण ने आवलिकाबंध ॥ ९ ॥ दशमे अंधकार ॥ १० ॥ इग्यारमे नारकि ने
उपजवाना स्थानक ॥ ११ ॥ बारमे क्षेत्रवेदना ॥ १२ ॥ तेरमे पनर परमाधा
मिना नाम ॥ १३ ॥ चउदमे जीवअजीवना परिणाम ॥ १४ ॥ पनरमे नार
किने अवधिनुं देखवुं ॥ १५ ॥ सोलमे संघयण ॥ १६ ॥ सतरमे कुंणजीव केइ
नरके उपजे ॥१७॥ अढारमे ॥४॥ बोल कहेवाशे ॥ पहिले नाम । घमा ॥१॥
वंशा ॥२॥ शिला ॥३॥ अंजणा ॥४॥ रिठा ॥ ५ ॥ मघा ॥६॥ माघवइ ॥ ७ ॥
ए साते उंधाछत्रने आकारेछे ॥ १ ॥ बिजे गोत्र कहियेछे ॥ रत्नप्रभा ॥ १ ॥ शा
र्करप्रभा ॥ २ ॥ वालुप्रभा ॥ ३ ॥ पंकप्रभा ॥ ४ ॥ धूमप्रभा ॥ ५ ॥ तमप्रभा
॥ ६ ॥ तमतमाप्रभा ॥७॥ रत्नप्रभा ते स्यामाटे ते सोलहजार जोजननो खर
कांडछे । सोलजातिना रत्नमयछे । एकेकुं रत्न हजार हजार जोजननुं जाडपणे

छे ॥ बल्या कोयलाशरिखा छे । तेमांहि ८० हजार जोजननो आउबल छे ॥ अने ॥८४॥ हजार जोजननो पंकबल छे ॥ इम त्रणेकांड थइने ॥ एकलाख ने एंशी हजार जोजननो पृथ्वीनो पिंड जाणवो ॥ २ ॥ त्रिजे अर्थ कहेछे ॥ रत्नप्रभा ते रत्ननो पिंड ने रत्ननि पिठिका । ते रत्न केहवाछे । श्यामवर्णा बल्या कोयला सरिखां छे ॥१॥ शर्करप्रभा ते कांकरानो पिंड ने कांकरानि पिठिका ते कांकरा केहवाछे । लुखा निरसगोखरुना फरससरिखो फरसछे ॥ २ ॥ वालुप्रभा ते वेलुनो पिंड ने वेलुनि पिठिका ते वेलु केहविछे । उन्हि धगधगति । अग्निनिपरे जाज्वल्यमान छे ॥ ३ ॥ पंकप्रभा ते कादवनो पिंड ने कादवनि पिठिका ते कादव केहवोछे । लोहिमय परुमय ने वज्रमय कांटाछे ॥ ४ ॥ धूमप्रभा ते धुमाडानो पिंड ने धूमाडानि पिठिका ॥ ते धूमाडो केहवोछे तिखो तमतमो ने दरदरोछे॥५॥ तमप्रभा ते अंधकारनो पिंड ने अंधकारनी पिठिका ॥ ६ ॥ तमतमा प्रभा ते

विशेषे अंधकारनो पिंड ने अंधकारनि पिठिका ॥७॥३॥ चोथो पिंडने पांचमो
पोलार ए बे द्वार भेला कहेछे । पहिलि नरके । एक लाख ने एंशीहजार जोज
ननो प्रथवीनो पिंडछे । तेहमांथि । एकहजार जोजन ऊंचुं मुकिये एकहजार जो
जन निचुं मुकिये विचे १ लाख ने अठोत्तेर हजार जोजननी पोलारछे ॥ ते
मांहिं १३ पाथडा नें ३० लाख नरकावासा छे ॥ १ ॥ बीजी नरके एक लाख
नेबत्रिश हजार जोजननो प्रथवीनो पिंडछे । तेहमांथि एकहजार जोजन ऊंचु
मुकिये ॥ एकहजार जोजन निचुं मुकिये विचे एकलाख ने ३० हजार जोजननि
पोलारछे ॥ तेमांहि ११ पाथडा ने ॥ २५ ॥ लाख नरकावासाछे ॥ २ ॥ त्रिजी
नरके एकलाख ने अठ्याविशहजार जोजनो प्रथवी पिंडछे। तेहमांहि ॥ १ ॥
हजारजोजन ऊंचु मुकिये ॥ १ ॥ हजारजोजन निचुं मुकिये विचे एकलाख ने
छविशहजार जोजननो प्रथविनो पिंडछे । तेमांहि ॥ ए ॥ पाथडाने ॥ १५ ॥

लाख नरकावासाछे ॥३॥ चोथि नरके एकलाख ने ॥ २० ॥ हजार जोजननो
प्रथवीनो पिंडछे तेहमांथि ॥१॥ हजार जोजन उंचुं मुकिये ॥ १ ॥ हजार जोज
न निचुं मुकिये विचे एकलाख ने १८ हजार जोजननि पोलार छे । तेमांहि
॥ ७ ॥ पाथडा ने ॥१०॥ लाख नरका वासा छे ॥४॥ पांचमि नरके एकलाख
ने अढारहजार जोजननो प्रथवीनो पिंडछे । तेहमांथि एकहजार जोजन उंचुं
मुकिये एकहजार जोजन निचुं मुकिये । विचे एकलाख ने १६ हजार जोज
ननि पोलार छे । तेहमांहि ॥ ५ ॥ पाथडाने ॥ ३ ॥ लाख नरकावासा छे ॥५॥
छठी नरके एकलाख ने ॥ १६ ॥ हजार जोजननो प्रथवीनो पिंडछे तेहमांथि ।
एकहजार जोजन उंचुं मुकिये एकहजार जोजन निचुं मुकिये विचे ॥१॥ लाख
ने ॥ १४ ॥ हजार जोजननि पोलार छे तेहमांहि ॥ ३ ॥ पाथडा ने १ लाखमां
॥ ५ ॥ उणां नरकावासा छे ॥ ६ ॥ सातमी नरके ॥१॥ लाख ने ॥ ८ ॥ हजार

जोजननो प्रथवीनो पिंड छे तेहमांथि । साढाबावनहजार जोजन उंचुं मुकिये
साढाबावनहजार जोजन निचुं मुकिये विचे ३ हजार जोजननो जाडो एक पा
थडो छे तेहमांहि ॥ ५ ॥ नरकावासा छे ॥ ७ ॥ ५ ॥ छठे अलोक कहेछे॥पहि
ली नरकथि ॥१२॥ ॥ जोजन जइये तिवारे त्रिछे अलोक आवे ॥ १ ॥ बिजी
नरकथि ॥ १२ ॥ जोजनने ॥२॥ त्रियाभागे त्रिछे अलोक आवे॥ २ ॥त्रिजी
नरकथि ॥१३॥ जोजनने ॥ १ ॥ त्रियाभागे त्रिछे आलोक आवे ॥३॥ चोथि
नरकथि ॥ १४ ॥ जोजने त्रिछे अलोक आवे ॥ ४ ॥ पांचामिथी ॥ १४ ॥ जो
जनने २ त्रियाभागे त्रिछे अलोक आवे ॥ ५ ॥ छठीथि ॥ १५ ॥ जोजनने १
त्रिया भागे त्रिछे अलोक आवे ॥ ६ ॥ सातमी नरके ॥ १६ ॥ जोजने त्रिछे
अलोक आवे ॥ ७ ॥ ६ ॥ सातमे आधार कहेछे । साते नरक स्याने आधारे
रहिछे २० हजार जोजननो घनोदधि जाडपणे छे असंख्याता जोजननो लांब

पणे पहोलपणे छे ॥ असंख्याता जोजननि परिधि छे ॥ ते थिणा घीसरिखो जा
णवो ॥ असंख्याता जोजननो घनवाय छे ॥ ते विघस्या घीसरिखो जाणवो ॥ अ
संख्याता जोजननो तनुवाय छे ॥ ते तपाव्या घीसरिखो जाणवो ॥ तेहने आधारे
७ नर्क रहिछे ॥ एकेकि नरके त्रणत्रण वलाका छे असंख्याता जोजननो आका
शास्तिकाय छे । विश हजार जोजननो घनोदधि जाडपणे छे । ते छेहडे जाता
छजोजननो रह्यो ॥ पेहली नरके छजोजननो घनोदधि ॥ १ ॥ बिजी नरके छजो
जनने ॥ १ ॥त्रियोभाग ॥ २ ॥ त्रिजी नरके छजोजननो ॥ २॥त्रियाभाग॥३॥
चउथी नरके ॥ ७ ॥ जोजननो घनोदधि ॥ ४ ॥ पांचमी नरके ७ जोजनने ॥१॥
त्रियोभाग ॥ ५ ॥ छठी नरके ॥ ७ ॥ जोजनने ॥ २ ॥ त्रियाभाग ॥ ६ ॥ सा
तमी नरके ॥ ७ ॥ जोजननो घनोदधि ॥ ७ ॥ असंख्याता जोजननो घनवाय
छे ते छेहडेजाता साढाच्यार जोजननो रह्यो ॥ पहिलीनरके साढाच्यार जोज

जोजननो प्रथवीनो पिंम्ड छे तेहमांथि । साढाबावनहजार जोजन उंचुं मुकिये साढाबावनहजार जोजन निचुं मुकिये विचे ३ हजार जोजननो जाम्डो एक पाथम्डो छे तेहमांहि ॥ ५ ॥ नरकावासा छे ॥ ७ ॥ ५ ॥ छठे अलोक कहेछे॥पहिली नरकथि ॥१२॥ ॥ जोजन जइये तिवारे त्रिछे अलोक आवे ॥ १ ॥ बिजी नरकथि ॥ १२ ॥ जोजनने ॥२॥ त्रियाभ्नागे त्रिछे अलोक आवे॥ २ ॥त्रिजी नरकथि ॥१३॥ जोजनने ॥ १ ॥ त्रियाभ्नागे त्रिछे आलोक आवे ॥३॥ चोथि नरकथि ॥ १४ ॥ जोजने त्रिछे अलोक आवे ॥ ४ ॥ पांचमिथी ॥ १४ ॥ जोजनने २ त्रियाभ्नागे त्रिछे अलोक आवे ॥ ५ ॥ छठीथि ॥ १५ ॥ जोजनने १ त्रिया भ्नागे त्रिछो अलोक आवे ॥ ६ ॥ सातमी नरके ॥ १६ ॥ जोजने त्रिछो अलोक आवे ॥ ७ ॥ ६ ॥ सातमे आधार कहेछे। साते नरक स्याने आधारे रहिछे २० हजार जोजननो घनोदधि जाम्डपणे छे असंख्याता जोजननो लांब

पणे पहोलपणे छे ॥ असंख्याता जोजननि परिधि छे ॥ ते थिणा घीसरिखो जा
णवो ॥ असंख्याता जोजननो घनवाय छे ॥ ते विघल्या घीसरिखो जाणवो ॥ अ
संख्याता जोजननो तनुवाय छे ॥ ते तपाव्या घीसरिखो जाणवो ॥ तेहने आधारे
७ नर्क रहिछे ॥ एकेकि नरके त्रणत्रण वलाका छे असंख्याता जोजननो आका
शास्तिकाय छे । विश हजार जोजननो घनोदधि जाम्रपणे छे । ते छेहमे जाता
छजोजननो रह्यो ॥ पेहली नरके छजोजननो घनोदधि ॥ १ ॥ बिजी नरके छजो
जनने ॥ १ ॥त्रियोभाग ॥ २ ॥ त्रिजी नरके छजोजननो ॥ २॥ त्रियाभाग॥३॥
चउथी नरके ॥ ७ ॥ जोजननो घनोदधि ॥ ४ ॥ पांचमी नरके ७ जोजनने ॥१॥
त्रियोभाग ॥ ५ ॥ छठी नरके ॥ ७ ॥ जोजनने ॥ २ ॥ त्रियाभाग ॥ ६ ॥ सा
तमी नरके ॥ ८ ॥ जोजननो घनोदधि ॥ ७ ॥ असंख्याता जोजननो घनवाय
छे ते छेहमेजाता साढाच्यार जोजननो रह्यो ॥ पहिलीनरके साढाच्यार जोज

ननो घनवाय छे ॥ १ ॥ बिजी नरके पोणापांच जोजननो घनवायछे ॥ २ ॥
त्रिजी नरके ॥ ५ ॥ जोजननो घनवाय छे ॥ ३ ॥ चउथी नरके सवापांच जोजननो
घनवाय छे ॥ ४ ॥ पांचमी नरके साढापांच जोजननो घनवाय छे ॥ ५ ॥ छठी
नरके पोणाछो जोजननो घनवायछे ॥ ६ ॥ सातमी नरके ६ जोजननो घन
वायछे ॥ ७ ॥ असंख्याता जोजननो तनुवायछे ते छेहडे जाता दोढ जोजननो
रह्यो ॥ पहिलीनरके दोढजोजननो तनुवाय ॥ १ ॥ बिजी नरके दोढ जोज
नने १ बारियो भाग ॥ २ ॥ त्रिजीनरके दोढ जोजनने बारिया २ भाग ॥
॥ ३ ॥ चउथी नरके दोढ जोजन ने बारिया ॥ ३ ॥ भाग ॥ ४ ॥ पांचमी नर
के दोढ जोजनने बारिया ॥ ४ ॥ भाग ॥ ५ ॥ छठी नरके दोढ जोजन ने
बारिया ॥ ५ ॥ भाग ॥ ६ ॥ सातमी नरके २ जोजननो तनुवाय छे ॥ ७ ॥
तेहने आधारे ७ नरक रहिछे ॥ ७ ॥ आठमे आंतरा कहेछे ॥ पहिली नरके ॥

॥ १३ ॥ पाथडा ने ॥ १२ ॥ आंतरा छे ॥ एकेका पाथडाने ॥ ११५८३ ॥
इग्यार हजार पांचसें त्र्यासी जोजन ने ॥ १ ॥ त्रिया भागनुं आंतरुं ॥ १ ॥
बिजी नरके ॥ ११ ॥ पाथडा ने ॥ १० ॥ आंतरा छे । एकेका पाथडाने ९७००
सताणुंसें जोजननुं आंतरुं ॥ २ ॥ त्रिजी नरके ९ पाथडा ने ॥ ८ ॥ आंतरा
छे । एकेका पाथडाने ॥ १२३७५ ॥ बारहजार त्रणसें पंचोतेर जोजननुं आंत
रुं ॥ ३ ॥ चउथी नरके ॥ ७ ॥ पाथडा ने ६ आंतरा छे । एकेका पाथडा ने ॥
१६१६६ ॥ सोलहजार एकसो छासठ जोजन ने ॥ २ ॥ त्रिया भागनुं आंतरुं
॥४॥ पांचमी नरके ॥५॥ पाथडा ने ॥४॥ आंतरा एकेका पाथडाने ॥२५२५०॥
सवापंचविशहजार जोजननुं आंतरुं ॥ ५ ॥ छठी नरके ॥ ३ ॥ पाथडा ने ॥२॥
आंतरा ॥ एकेका पाथडाने ॥ ५२५०० ॥ साढाबावन हजार जोजननुं आंत
रुं ॥६॥ सातमी नरके १ पाथडो छे ॥ आतरुं नथि ७ ॥ ८ हवे नवमे पुष्पाविकी

एने आवलिकाबंध नरका वासा कहेछे ॥ पहिली नरके ॥ २९९५५६७ ॥ उ
गणत्रीशलाख पंचाणुहजार पांचसें सडसठ पुष्फाविकीर्ण नरकावासा छे ॥
अने ४४३३ चुमालिससें तेत्रीस पंक्तिबंध नरका वासा छे ॥ एवं सर्व मिलि
ने ३० लाख ॥ १ ॥ बिजी नरके ॥ २४९७३०५ ॥ चोविसलाख सताणु
हजार त्रणसें पांच पुष्फाविकीर्ण नरकावासा छे । अने २६९५ छविससें पं
चाणु पंक्तिबंध नरकावासा छे । एवं सर्व मिलिने ॥ २५ ॥ लाख ॥२॥ त्रिजी
नरके ॥ १४९८५१५ ॥ चउदलाख अठाणुं हजार पांचसें पंदर पुष्फाविकी
र्ण नरकावासा छे। अने १४८५ चउदससें पंच्यासी पंक्तिबंध नरकावासा
छे ॥ एवं सर्व मिलिने ॥ १५ ॥ लाख ॥ ३ ॥ चउथी नरके ॥९९९२९३॥
नवलाख नवाणुंहजार बसेत्राणु पुष्फाविकीर्ण नरकावासा छे । अने ७०७
सातसें सात पंक्तिबंध नरकावासा छे ॥ एवं सर्व मिलिनें ॥ १० ॥ लाख

॥ ४ ॥ पांचमी नरके ॥ २९९७३५ ॥ बे लाख नवाणु हजार सातसें पांत्रीस पुष्पाविकीर्ण नरकावासा छे ॥ अने ॥ २६५ ॥ बसें पांसठ पंक्तिबंध नरकावासा छे ॥ एवं सर्व मिलिनें ॥ ३ ॥ लाख ॥ ५ ॥ छठि नरके ॥ ९९९३२ ॥ नवाणुं हजार नवसें बत्रीस पुष्पाविकीर्ण नरकावासा छे अने ६३ पंक्तिबंध नरकावासा छे ॥ ६ ॥ सातमी नरके ॥ ५ ॥ पंक्तिबंध छे ॥ ७ ॥ साते नरकना ॥ ८३९०३४७ ॥ त्र्यासी लाख नेवुंहजार त्रणसें सम्तालीस पुष्पाविकीर्ण नरकावासा छे ॥ अने साते नरकना ॥ ९६५३ ॥ नवहजार छसें त्रेपन पंक्तिबंध नरकावासा छे ॥ सर्व मिलि ८४ लाख नरकावासा जाणवा ॥ ९ ॥ दशमे अंधकार कहेछे ॥ नरकनो अंधकार ॥ १ ॥ अशुभ पुजलनो अंधकार ॥ २ ॥ १० ॥ इग्यारमे नारकिने उपजवाना स्थानक कहेछे ॥ कुंभिने आकारे ॥ १ ॥ घम्नाने आकारे ॥ २ ॥ पेटिने

एने आवलिकाबंध नरका वासा कहेछे ॥ पहिली नरके ॥ २९९५५६७ ॥ उगणत्रीशलाख पंचाणुहजार पांचसें सडसठ पुष्पाविकीर्ण नरकावासा छे ॥ अने ४४३३ चुमालिससें तेत्रीस पंक्तिबंध नरका वासा छे ॥ एवं सर्व मिलिने ३० लाख ॥ १ ॥ बिजी नरके ॥ २४९७३०५ ॥ चोविसलाख सताणु हजार त्रणसें पांच पुष्पाविकीर्ण नरकावासा छे । अने २६९५ छविससें पंचाणु पंक्तिबंध नरकावासा छे । एवं सर्व मिलिने ॥ २५ ॥ लाख ॥२॥ त्रिजी नरके ॥ १४९८५१५ ॥ चउदलाख अठाणुं हजार पांचसें पंदर पुष्पाविकीर्ण नरकावासा छे । अने १४८५ चउदससें पंच्यासी पंक्तिबंध नरकावासा छे ॥ एवं सर्व मिलिने ॥ १५ ॥ लाख ॥ ३ ॥ चउथी नरके ॥९९९२९३॥ नवलाख नवाणुंहजार बसेत्राणु पुष्पाविकीर्ण नरकावासा छे । अने ७०७ सातसें सात पंक्तिबंध नरकावासा छे ॥ एवं सर्व मिलिनें ॥ १० ॥ लाख

॥ ४ ॥ पांचमी नरके ॥ २९९७३५ ॥ बे लाख नवाणु हजार सातसें पा
त्रीस पुष्पाविकीर्ण नरकावासा छे ॥ अने ॥ २६५ ॥ बसें पांसठ पंक्तिबंध
नरकावासा छे ॥ एवं सर्व मिलिनें ॥ ३ ॥ लाख ॥ ५ ॥ छठि नरके ॥
९९९३२ ॥ नवाणुं हजार नवसें बत्रीस पुष्पाविकीर्ण नरकावासा छे अने
६३ पंक्तिबंध नरकावासा छे ॥ ६ ॥ सातमी नरके ॥ ५ ॥ पंक्तिबंध छे
॥ ७ ॥ सातें नरकना ॥ ८३९०३४७ ॥ त्र्यासी लाख नेवुंहजार त्रणसें
सप्तालीस पुष्पाविकीर्ण नरकावासा छे ॥ अने सातें नरकना ॥ ९६५३ ॥
नवहजार छसें त्रेपन पंक्तिबंध नरकावासा छे ॥ सर्व मिलि ८४ लाख नर
कावासा जाणवा ॥ ९ ॥ दशमे अंधकार कहेछे ॥ नरकनो अंधकार ॥ १ ॥
अशुभ पुद्गलनो अंधकार ॥ २ ॥ १० ॥ इग्यारमे नारकिने उपजवाना
स्थानक कहेछे ॥ कुंभिने आकारे ॥ १ ॥ घमाने आकारे ॥ २ ॥ पेटिने

आकारे ॥ ३ ॥ कुम्भने आकारे । एवं नाना विध विषमस्थानके उपजे ॥ ११ ॥ बारमे क्षेत्रवेदना कहेछे ॥ क्षुधा ॥ १ ॥ तृषा ॥ २ ॥ शित ॥ ३ ॥ उष्ण ॥ ४ ॥ दाह ॥ ५ ॥ ज्वर ॥ ६ ॥ भय ॥ ७ ॥ शोक ॥ ८ ॥ खरज ॥९॥ परवश ॥१०॥ ए १० प्रकारनि अनंति वेदना छे ॥१२॥ तेरमे ॥१५॥ परमाधामिना नाम कहेछे ॥ अंब ॥ १ ॥ अंबरिस ॥ २ ॥ श्याम ॥ ३ ॥ सबल ॥ ४ ॥ रुद्र ॥ ५ ॥ वैरुद्र ॥ ६ ॥ काल ॥ ७ ॥ महाकाल ॥ ८ ॥ असिपत्र ॥ ९ ॥ धनूष ॥ १० ॥ कुंभ ॥ ११ ॥ वालु ॥ १२ ॥ वेतरणी ॥ १३ ॥ खरस्वर ॥ १४ ॥ महा घोष ॥ १५ ॥ १३ ॥ हवे चउदमे जीव अजीवना परिणाम कहेछे । जीव परिणामना ॥ १० ॥ भेद ते । गतिपरिणाम ॥ १ ॥ इंदियपरिणाम ॥ २ ॥ कसायपरिणाम ॥ ३ ॥ लेसापरिणाम ॥ ४ ॥ जोगपरिणाम ॥ ५ ॥ उपयोगपरिणाम ॥ ६ ॥ नाणपरिणाम ॥ ७ ॥ दंसण

परिणाम ॥ ८ ॥ चरित्तपरिणाम ॥ ए ॥ वेदपरिणाम ॥ १० ॥ हवे अजी
वपरिणामना १० भेद ते कहेछे ॥ बंधनपरिणाम ॥ १ ॥ गतिपरिणाम
॥ २ ॥ संठाणपरिणाम ॥ ३ ॥ भेदपरिणाम ॥ ४ ॥ वर्णपरिणाम ॥ ५ ॥ गं
धपरिणाम ॥ ६ ॥ रसपरिणाम ॥ ७ ॥ फासपरिणाम ॥ ८ ॥ अगुरुलघुप
रिणाम ॥ ए ॥ शब्दपरिणाम ॥ १० ॥ १४ ॥ पनरमे अवधिज्ञाने देखवुं
कहेछे ॥ पहिली नरकना नारकि । जघ० । साढात्रण गाउ देखे । उत्० ।
च्यार गाउ देखे ॥ १ ॥ बिजीना । जघ० ॥ ३ ॥ गाउ । उत्० । साढात्रण गाउ
देखे ॥ २ ॥ त्रिजीना जघ० अढिगाउ । उत्० त्रण गाउ देखे ॥ ३ ॥ चोथिना ।
जघ० । बे गाउ । उत्० । अढिगाउ देखे ॥ ४ ॥ पांचमीना जघ० दोढ गाउ ।
उत्० ॥ २ ॥ गाउ देखे ॥ ५ ॥ छठिना जघ० ॥१॥ गाउ । उत्० दोढ गाउ देखे
॥ ६ ॥ सातमीना जघ० । अर्द्ध गाउ ॥ उत्० ॥ १ ॥ गाउ देखे ॥ ७ ॥ १५ ॥

सोलमे संघयण कहेछे ॥ पहिली बिजी नरके छ संघयणनो धणि जाय ॥ त्रिजी नरके छेवटु वर्जिने पांच संघयणनो धणि जाय ॥ चोथिये किलकु ॥ १ ॥ ने छेवटु ॥ २ ॥ ए ॥ २ ॥ वर्जिने ॥४॥ संघयणनो धणि जाय ॥ पांचमी नरके ॥३॥ संघयणनो धणि जाय ते । किलकु ॥ १ ॥ छेवटु ॥ २ ॥ अर्द्धनाराच । ए ३ वर्जिने ॥ छठी नरके । वज्रऋषभनाराच संघयण ॥१॥ ने ऋषभनाराच संघयण ॥ २ ॥ ए ॥२॥ नो धणि जाय । सातमीये ॥ १ ॥ वज्रऋषभनाराच संघयणनो धणिजाय ॥ १६ ॥ सत्तरमे कोण जीव केइ नरके उपजे ते कहेछे ॥ असंजीतिर्यंच पहिली नरक सुधि उपजे ॥ १ ॥ भुजपरसर्प बीजी सुधि उपजे ॥ २ ॥ खेचरतिर्यंच त्रिजी नरकसुधि उपजे ॥३॥ थलचरतिर्यंच चउथि नरकसुधि उपजे ॥ ४ ॥ उरपरतिर्यंच पांचमी नरकमुधि उपजे ॥ ५ ॥ स्त्री छठी नरकसुधि उपजे ॥ ६ ॥ सातमी नरके जलचर मछ ने संज्ञिमनुष्यनो आवि उपजे

॥ ७ ॥ १७ ॥ अढारमे अशुभ । वर्ण ॥ १ ॥ गंध ॥ २ ॥ रस ॥ ३ ॥ फ
रस भोगवताथका नारकि विचरे छे ॥ १८ ॥ इति नारकिनो बोल समाप्तं
॥ १ ॥ हवे बिजो भवनपतिनो द्वार कहेछे ॥ पहिले नाम ॥ १ ॥ बिजे
चिन्ह ॥ २ ॥ त्रिजे वर्ण ॥ ३ ॥ चउथे वस्त्र ॥ ४ ॥ पांचमे सामानिक ॥
५ ॥ छठे आत्मरक्षक ॥ ६ ॥ सातमे देवांगना ॥ ७ ॥ आठमे अणिका ॥
८ ॥ नवमे अणिकाना अधिपति ॥ ९ ॥ दशमे उद्योत ॥ १० ॥ इग्यारमे
परिषदा ॥ ११ ॥ बारमे लोकपाल ॥ १२ ॥ तेरमे त्रायत्रिंशक ॥ १३ ॥
चउदमे ॥ ४ ॥ बोल ॥ १४ ॥ पहिले नाम कहेछे ॥ असुरकुमार ॥ १ ॥
नागकुमार ॥ २ ॥ सुवर्णकुमार ॥ ३ ॥ विज्जुकुमार ॥ ४ ॥ अग्निकुमार ॥
॥ ५ ॥ द्विपकुमार ॥ ६ ॥ उदधिकुमार ॥ ७ ॥ दिशाकुमार ॥ ८ ॥ पवनकु
मार ॥ ९ ॥ थणितकुमार ॥ १० ॥ १ ॥ बिजे चिन्ह कहेछे असुरकुमारने

सोलमे संघयण कहेछे ॥ पहिली बिजी नरके छ संघयणनो धणि जाय ॥ त्रिजी नरके छेवटु वर्जिने पांच संघयणनो धणि जाय ॥ चोथिये किलकु ॥ १ ॥ ने छेवटु ॥ २ ॥ ए ॥ २ ॥ वर्जिने ॥४॥ संघयणनो धणि जाय ॥ पांचमी नरके ॥३॥ संघयणनो धणि जाय ते । किलकु ॥ १ ॥ छेवटु ॥ २ ॥ अर्द्धनाराच । ए ३ वर्जिने ॥ छठी नरके । वज्रऋषभनाराच संघयण ॥१॥ ने ऋषभनाराच संघयण ॥ २ ॥ ए ॥२॥ नो धणि जाय । सातमीये ॥ १ ॥ वज्रऋषभनाराच संघयणनो धणिजाय ॥ १६ ॥ सत्तरमे कोण जीव केइ नरके उपजे ते कहेछे ॥ असंजीतिर्यंच पहिली नरक सुधि उपजे ॥ १ ॥ भुजपरसर्प बीजी सुधि उपजे ॥ २ ॥ खेचरतिर्यंच त्रिजी नरकसुधि उपजे ॥३॥ थलचरतिर्यंच चउथि नरकसुधि उपजे ॥ ४ ॥ उरपरतिर्यंच पांचमी नरकसुधि उपजे ॥ ५ ॥ स्त्री छठी नरकसुधि उपजे ॥ ६ ॥ सातमी नरके जलचर मछ ने संज्ञिमनुष्यनो आवि उपजे

गंध ॥ २ ॥ रस ॥ ३ ॥ फ
॥ ७ ॥ १७ ॥ अढारमे अशुभ । वर्ण ॥ १ ॥ इति नारकिनो बोल समाप्तं
रस भोगवताथका नारकि विचरे छे ॥ १८ ॥ पहिले नाम ॥ १ ॥ बिजे
॥ १ ॥ हवे बिजो भवनपतिनो द्वार कहेछे ॥ पांचमे सामानिक ॥
चिन्ह ॥ २ ॥ त्रिजे वर्ण ॥ ३ ॥ चउथे वस्त्र ॥ ४ ॥ आठमे अणिका ॥
५ ॥ छठे आत्मरक्षक ॥ ६ ॥ सातमे देवांगना ॥ ७ ॥ इग्यारमे
८ ॥ नवमे अणिकाना अधिपति ॥ ९ ॥ दशमे उद्योत ॥ १० ॥ १३ ॥
परिषदा ॥ ११ ॥ बारमे लोकपाल ॥ १२ ॥ तेरमे त्रायत्रिंशक ॥ १ ॥
चउदमे ॥ ४ ॥ बोल ॥ १४ ॥ पहिले नाम कहेछे ॥ असुरकुमार ॥
नागकुमार ॥ २ ॥ सुवर्णकुमार ॥ ३ ॥ विज्जुकुमार ॥ ४ ॥ अग्निकुमार ॥
॥ ५ ॥ द्विपकुमार ॥ ६ ॥ उदधिकुमार ॥ ७ ॥ दिशाकुमार ॥ ८ ॥ पवनकु
मार ॥ ९ ॥ थणितकुमार ॥ १० ॥ १ ॥ बिजे चिन्ह कहेछे असुरकुमारने

सामानिक छे ॥१॥ उत्तरदिशाना बलेंडने ॥६००००॥ सामानिक छे॥२॥ धरणें
द्रादिक ॥ १८ ॥ इंडने छगो हजार सामानिकछे ॥ २० ॥५॥ छठे आत्मरक्षक
ते सामानिकथि चउगुणा जाणवा ॥ ६ ॥ सातमे देवांगना कहेछे ॥ चमरेंड
तथा बलेंडने पांच पांच देवीओ जाणवी॥एकेकि देवि आठ आठ हजाररूप
वैक्रेय करे ॥ धणिन्नोगववाने अर्थे धणि पण एकलो एटला रूप वैक्रेय करे॥
॥२॥ धरणेंद्रादिक १८ इंडने छगो देविओ जाणवि ॥ एकेकी देवी छगो हजार
रूप वैक्रेय करे धणि न्नोगववाने अर्थे धणिपण एकलो एटला रूप वैक्रेय करे
॥ ७ ॥ हवे आठमे अणिका ॥ ७ ॥ कहेछे ॥ गंधर्व ॥ १ ॥ नट ॥ २ ॥ हय ॥
॥ ३ ॥ गय ॥ ४ ॥ रथ ॥ ५ ॥ सुन्नट ॥ ६ महीष ॥ ७ ॥८॥ नवमे बोले अणि
काना अधिपति एमज जाणवा ॥९॥ हवे १० मे उद्योत कहेछे ॥ देवतानो उ
द्योत ॥१॥ देवीओनो उद्योत ॥ २ ॥ आन्नरणनो उद्योत ॥३॥ शुन्न पुद्गलनो

उद्योत ॥ ४ ॥ ॥१०॥ हवे ११ मे त्रण परिपदा कहेछे ॥ दक्षिणदिशाना चम
रेंडनी ३ परिपदा । समीया ॥ १ ॥ चंम्रा ॥ २ ॥ जाया ॥ ३ ॥ समीयानो ॥
॥ २४ ॥ हजारनो परिवार ॥ १ ॥ चंम्रानो ॥ २८ ॥ हजारनो परिवार ॥ २ ॥
जायानो ॥ ३२ ॥ हजारनो परिवार ॥ ३ ॥ समीया तेड्याआवे ने मोकल्या
जाय तेसाथे गुझ करे ॥ १ ॥ चंम्रा तेड्या आवे ने अणमोकल्याजाय तेसाथे
गुझ न करे अने करणकरावण करे ॥ २ ॥ जायाअण तेड्या आवेने अणमो
कल्या जाय एहने कामकाज दिये ॥ ३ ॥ हवे एहना नवनीकायना देवतानि
॥ ३ ॥ परिषदा तेमांहि अभ्यंतरनि परिषदाना ॥ ६०००० ॥ हजार ॥१॥ म
झमपरिषदाना ॥ ७०००० ॥ हजार ॥२॥ बाहिरलि परिषदाना ॥ ८०००० ॥
हजार ॥ ३ ॥ दक्षिणदिशना चमरेंद्रनि देवी ओनी ॥३॥ परिषदा तेमांहि अ
भ्यंतरनि ॥ ३५० ॥ देवीओ १ मझमपरिषदानी ॥ ३०० ॥ देवीओ ॥ २ ॥

बोल.

॥१२

बाहिरली परिषदानी ॥ २५० ॥ देवीउ ॥ ३ ॥ हवे एहना नवनीकायना देव
तानि देवीओनि ॥ ३ ॥ परिषदा तेमांहि अभ्यंतरनि ॥ १७५ ॥ देवीउ ॥ १ ॥
मझमनि ॥ १५० ॥ देवीउ ॥ २ ॥ बाहिरलीनि ॥ १२५ ॥ देवीउ ॥ ३ ॥ ए सर्व
परिवार दक्षिणदिशना चमरेंद्रनो जाणवो ॥ इमज उत्तरदिशना बलेंद्रनि ३
परिषदा जाणवी पण एटलो फेर ॥ पहिलीना ॥ २० ॥ हजार देवता ॥ १ ॥
बिजीना ॥ २४ ॥ हजार देवता ॥ २ ॥ त्रिजीना ॥ २८ हजार देवता ॥३॥ हवे
एहना नवनीकायना देवतानि ॥३॥ परिषदा ते पहिलीना ॥५०॥ हजार ॥१॥
बिजीना ॥ ६० ॥ हजार ॥ २ ॥ त्रिजीना ॥ ७० ॥ हजार ॥ ३ ॥ बलेंद्रनि देवी
उनी ॥ ३ ॥ परिषदा ॥ पहिलीनि ॥ ४५० ॥ देवीउ ॥ १ ॥ बिजीनि ४०० दे
वीउ ॥२॥ त्रिजीनि ॥ ३५० ॥ देवीउ ॥३॥ हवे एहना नवनीकायना देवतानि
देवीउनि ॥ ३ ॥ परिषदा ॥ पहिलीनि ॥२२५॥ देवीउ ॥१॥ बिजीनि ॥२००॥

देवीउ ॥ २ ॥ त्रिजीनि ॥१७५॥ देवीउ ॥ ३ ॥ ११ ॥ बारमे लोकपाल कहेछे । सोम ॥ १ ॥ जम ॥ २ ॥ वरुण ॥ ३ ॥ वेसमण ॥ ४ ॥ सोमनो वारो पूर्वदिशे ॥ १ ॥ जमनो वारो दक्षिणदिशे ॥ २ ॥ वरुणनो वारो पश्चिमदिशे ॥ ३ ॥ वेसमणनो वारो उत्तरदिशे ॥४॥ सोमने वारे सुख शाता होय ॥१॥ जमने वारे मार मरकि ने भेद घणा होय ॥२॥ वरुणने वारे गरुगुंबरुनेरोग घणा होय॥३॥ वेसमणने वारे सुगाल सुभिक्ष ने लाभ घणा होय ॥ ४ ॥ १२ तेरमे त्रायत्रिंशक ते ॥३३॥ ते गुरुसमान ॥१॥ प्रोहितसमान ॥२॥ पुज्यसमान ॥३॥ मित्रसमान ॥४॥ पितासमान ॥५॥ आज्ञा आराधक छे ॥ १३ ॥ चउदमे शुभ वर्ण गंध । रस । स्पर्श । भोगवताथका भवनपति विचरेछे॥१४॥२॥ हवे त्रिजो वाणव्यंतरनो घार कहेछे । पहिले नाम ॥१॥ बिजे चिन्ह ॥२॥ त्रिजे वर्ण ॥३॥ चोथे वस्त्र ॥४॥ पांचमे सामानिक ॥५॥ छठे आतमरक्षक ॥६॥ सातमे देवांगना ॥७॥ आठमे

अणिका ॥८॥ नवमे अणिकाना अधिपति ॥९॥ दशमे उद्योत ॥१०॥ इग्यारमे
परिषदा ॥११॥ बारमे ॥४॥ बोल ॥१२॥ पहिले नाम । कहेछे । पिशाच ॥ १ ॥
भूत ॥२॥ जक्ष ॥३॥ राक्षस ॥४॥ किंनर ॥५॥ किंपुरुष ॥६॥ महोरग ॥७॥ गंध
र्व ॥ ८ ॥ आणपन्नी ॥ ९ ॥ पाणपन्नी ॥ १० ॥ इसीवाइ ॥ ११ ॥ भुइवाइ ॥ १२
॥ कंदीय ॥ १३ ॥ महाकंदीय ॥ १४ ॥ कोहंड ॥ १५ ॥ पयंगदेव ॥ १६ ॥ बिजे
चिन्ह कहेछे ॥ पहिलाने कलंबवृक्षनुं चिन्ह ॥ १ ॥ बिजाने शालिवृक्षनु चिन्ह
॥ २ ॥ त्रिजाने वडवृक्षनुं चिन्ह ॥ ३ ॥ चउथाने पाडलिवृक्षनु चिन्ह ॥ ४ ॥
पांचमाने अशोकवृक्षनुं चिन्ह ॥ ५ ॥ छठाने चंपकवृक्षनुं चिन्ह ॥ ६ ॥ सात
माने नागवृक्षनुं चिन्ह ॥ ७ ॥ आठमाने टिंबरुवृक्षनुं चिन्ह ॥ ८ ॥ ए ८ दक्षि
णदिशाना क । मज ॥ ८ ॥ उत्तरदिशाना जाणवा ॥ २ ॥ हवे त्रीजे वर्ण ते
तमा ने आठमा ए ॥ ४ ॥ नोश्यामवर्ण ॥ बिजानो का

अणिका ॥ [illegible] वमे अणिकाना अधिपति ॥९॥ दशमे उद्योत ॥१०॥ इग्यारमे
परिषदा ॥ [illegible] ॥ बारमे ॥४॥ बोल ॥१२॥ पहिले नाम । कहेछे । पिशाच ॥ १ ॥
भुत ॥२॥ [illegible]क्ष ॥३॥ राक्षस ॥४॥ किंनर ॥५॥ किंपुरुष ॥६॥ महोरग ॥७॥ गंध
र्व ॥ ८ [illegible] आणपन्नी ॥ ९ ॥ पाणपन्नी ॥ १० ॥ इसीवाइ ॥ ११ ॥ भुइवाइ ॥ १२
॥ कंदीय ॥ १३ ॥ महाकंदीय ॥ १४ ॥ कोहंड ॥ १५ ॥ पयंगदेव ॥ १६ ॥ बिजे
चिन्ह कहेछे ॥ पहिलाने कलंबवृक्षनुं चिन्ह ॥ १ ॥ बिजाने शालिवृक्षनुं चिन्ह
॥ २ ॥ त्रिजाने वडवृक्षनुं चिन्ह ॥ ३ ॥ चउथाने पाडलिवृक्षनुं चिन्ह ॥ ४ ॥
पांचमांने अशोकवृक्षनुं चिन्ह ॥ ५ ॥ छठाने चंपकवृक्षनुं चिन्ह ॥ ६ ॥ सात
माने नागवृक्षनुं चिन्ह ॥ ७ ॥ आठमाने टिंबरुवृक्षनुं चिन्ह ॥ ८ ॥ ए ८ दक्षि
णदिशाना कह्या । एमज ॥ ८ ॥ उत्तरदिशाना जाणवा ॥ २ ॥ हवे त्रीजे वर्ण ते
॥ पहिला । त्रिजा सातमा ने आठमा ए ॥ ४ ॥ नोश्यामवर्ण ॥ बिजानो का

हवे चउथे लोवर्ण ॥ पांचमानो निलोवर्ण ॥ चोथा ने छठानो धोलोवर्ण ॥ ३ ॥ हवे चउथे
लोवर्ण ॥ पांचमानो निलोवर्ण ॥ चोथा ने छठानो धोलोवर्ण ॥ ३ ॥ विविध प्रकारना ते पण संध्याना रा
वस्त्र कहेछे ॥ निला राता पीला ने धोला विविध प्रकारना ते पण संध्याना रा
गसरिखा जाणवा ॥ ४ ॥ पांचमे सामानिक ते एकेकाने च्यार च्यार हजार
सामानिक देवता छे ॥ ५ ॥ छठे आत्मरक्षक ते सामानिकथी चउगुणा जाणवा
॥ ६ ॥ सातमे देवांगना ते एकेकाने च्यार च्यार देवीओ छे। एकेकी देवी ॥१॥
हजार ॥ १ ॥ हजार रूप वैक्रेय करे धणि भोगववाने अर्थेधणि पण एटला
रूप वैक्रेय करे ॥ ७ ॥ हवे ॥ ८ ॥ मे ॥ ७ ॥ अणिका कहेछे। गंधर्व ॥१॥ नट
॥ २ ॥ हय ॥ ३ गय ॥ ४ ॥ रथ ॥ ५ ॥ पायक ॥ ६ ॥ महीष ॥ ७ ॥ ८ ॥ नवमे
अणिकाना अधिपति इमज जाणवा ॥ ए ॥ हवे ॥ १० ॥ मे उद्योत कहेछे ॥
देवतानो ॥ १ ॥ देवीनो ॥ २ ॥ आभरणनो ॥ ३ ॥ शुभ पुद्गलनो ॥ ४ ॥ १० ॥
हवे ११ मे परिषदा ॥ ३ ॥ समीयाना ॥ ८ ॥ हजार देवता ॥ १ ॥ चंमाना ॥

॥ १० ॥ हजारदेवता ॥ २ ॥ जायाना ॥ १२ ॥ हजार देवता ॥ ३ ॥ आवडु जावुं प्रथमनि रिते जाणवुं ॥३॥ परिषदानुं ॥११॥ बारमे शुभ वर्ण ॥ गंध ॥ रस स्पर्श भोगवताथका वाणव्यंतर विचरेछे ॥१२॥ इति वाणव्यंतरनो द्वार समाप्तं ॥ ३ ॥ हवे चउथो ज्योतिषीनो द्वार कहेछे । पहिले नाम ॥ १ ॥ बिजे वाहक ॥ २ ॥ त्रिजे वर्ण ॥ ३ ॥ चउथे वस्त्र ॥ ४ ॥ पांचमे सामानिक ॥५॥ छठे आत्म रक्षक ॥ ६ ॥ सातमे लांबपणुं ने पहोलपणुं ॥७॥ आठमे उंचपणुं ने जाडपणुं ॥ ८ ॥ नवमे पंक्ति ॥ ९ ॥ दशमे परिषदा ॥ १० ॥ इग्यारमे उद्योत ॥११॥ बारमे देवीउ ॥ १२ ॥ तेरमे नित्यराहु ने पर्वराहु ॥१३॥ चउदमे परिवार ॥१४॥ पनरमे आणिका ॥ १५ ॥ सोलमे आणिकाना अधिपति ॥ १६ ॥ सतरमे संघयण ॥ १७ ॥ अढारमे व्याघात ॥ १८ ॥ उगणिसमे निर्व्याघात ॥ १९ ॥ विशमे देखवुं ॥२०॥ एकविशमे चाल ॥ २१ ॥ बाविशमे तपवुं ॥ २२ ॥ त्रेविशमे

यशे उगतो सूर्य ॥ ३१८३१ ॥ जोजनने एकसठिया ॥३०॥ नाग वेगलेथि उ
गतो सूर्य दिशे ॥ २० ॥ एकविशमे चाल कहेछे ॥ आषाढमासे कर्कसंक्रांतिने
दहाडे। एकेक मुहूर्ते सूर्य पांच हजार त्रणसें पांच जोजनने साठिया उगण
त्रिश नाग चाले। आखे दिवशे थइ ने ॥९४५२६ ॥ जोजन ने साठिया ४२
नाग चाले। अने पोषमासे मकरसंक्रांतिने दहाडे। एकेक मुहुर्ते सूर्य ॥५३०५
॥ जोजनने साठिया ॥ १५ ॥ नाग चाले। आखे दिवसे थइने ॥६३६६३॥ जो
जन चाले ॥ २१ ॥ बाविशमे तपवो कहेछे ॥ सूर्य उंचो ॥१००॥ जोजन तपेछे
॥ हेठो १८०० जोजन तपेछे। अने त्रिछो ॥ ४७२६३ ॥ जोजननेसाठिया ॥
२१ ॥ नाग तपेछे ॥२२॥ त्रेविशमे उंचपणुं कहेछे। समभुतलथकि ॥ ७९० ॥
जोजन उंचा जइये तिवारे तारामंडल आवे। तिहांथि १० जोजन उंचपणे सू
र्यनुं विमान छे। तिहांथि ॥ ८० ॥ जोजन उंचपणे चंद्रमानुं विमान छे। तिहांथि

॥ ४ ॥ जोजन ऊंचपणे नक्षत्रना विमानछे ॥ तिहांथि ॥ ४ ॥ जोजन ऊंचपणे बुधनो तारो छे तिहांथि ॥ ३ ॥ जोजन ऊंचपणे शुक्रनो तारो छे ॥ तिहांथि ॥ ३ ॥ जोजन ऊंचपणे बृहस्पतिनो तारो छे । तिहांथि ॥ ३ ॥ जोजन ऊंचपणे मंगलनो तारो छे । तिहांथि ॥३॥ जोजन ऊंचपणे छेहलो शनिश्चरनो तारो आवे । ए ११० जोजनमां ज्योतिष चक्र छे ॥२३॥ चउविशमे आंतरुं कहेछे । चंद्रमा चंद्रमाने ॥ सूर्य सूर्यने ॥१॥ लाख जोजननुं आंतरुं छे ॥ अने चंद्रमा सूर्यने अर्द्ध लाख जोजननुं आंतरुं छे ॥ २४ ॥ पंचवीशमे बोले शुन्न वर्ण गंध रस फरस नोगवताथका ज्योतिषि विचरेछे ॥ २५ ॥ ४ ॥ हवे पांचमो वैमानिकनो द्वार कहेछे ॥ पहिले नाम ॥ १ ॥ बिजे आधार ॥ २ ॥ त्रिजे वर्ण ॥ ३ ॥ चउथे वस्त्र ॥ ४ ॥ पांचमे सामानिक ॥ ५ ॥ छठे आत्मरक्षक ॥६॥ सातमे जारूपणुं ॥ ७ ॥ आठमे ऊंचपणुं ॥ ८ ॥ नवमे पुष्पाविकीर्ण विमान ॥ ए ॥ दशमे

आवलिकावंध विमान ॥ १० ॥ इग्यारमे परिषदा ॥११॥ बारमे उद्योत ॥१२॥ तेरमे द्वीप ॥ १३ ॥ चउदमे लोकपाल ॥ १४ ॥ पनरमे त्रायत्रिंशक ॥ १५ ॥ सोलमे ॥ ७ ॥ आणिका ॥ १६ ॥ सतरमे आणिकाना अधिपति ॥ १७ ॥ अढारमे संघयण ॥ १८ ॥ ओगणीशमे अवधि देखवुं ॥१९॥ विशमे ॥४॥ बोल ॥ २० ॥ पहिले नाम कहेछे । सुधर्म ॥ १ ॥ इशान ॥ २ ॥ सनंतकुमार ॥ ३ ॥ माहेंद्र ॥ ४ ॥ ब्रह्मलोक ॥ ५ ॥ लंतक ॥ ६ ॥ महाशुक्र ॥ ७ ॥ सहस्रार ॥८॥ आणत ॥९॥ प्राणत ॥ १० ॥ आरण ॥ ११ ॥ अच्युत ॥ १२ ॥ नवग्रैवेयकना नाम । भद्दे ॥ १ ॥ सुभद्दे ॥ २ ॥ सुजाए ॥३॥ सुमाणसे ॥४॥ पीयदंसणे ॥५॥ सुदंसणे ॥ ६ ॥ आ मोहे ॥ ७ ॥ सुपम्बिद्धे ॥ ८ ॥ जसोधरे ॥ ९ ॥ पांच अनुत्तर विमानना नाम । विजय ॥ १ ॥ विजयंत ॥ २ ॥ जयंत ॥ ३ ॥ अपराजित ॥ ४ ॥ सर्वार्थसिद्ध ॥ ५ ॥ मुक्तिशिलाना नाम ॥ इसीतीवा ॥ १ ॥ इसिपन्ना

रातीवा ॥ २ ॥ तणुतीवा ॥३॥ तणुतणुतीवा ॥ ४ ॥ सिद्धितीवा ॥ ५ ॥ सिद्धाल
एतिवा ॥६॥ मुत्तितिवा ॥७॥ मुत्तालएतिवा ॥८॥ लोयग्गेतिवा ॥९॥ लोगथुभि
एतिवा ॥१०॥ लोगपडिबोहएतिवा ॥११॥ सवपाणभुयजीवसत्तसुहावहेतिवा
॥ १२ ॥ १ ॥ बिजे आधार कहेछे । पहिला बे देवलोक घनोदधिने आधारे र
ह्याछे । त्रिजुं चोथुं ने पाचमुं ए ॥ ३ ॥ देवलोक घनवायने आधारे रह्या छे ।
छठुं सातमुं ने आठमुं । ए ३ देवलोक घनोदधि घनवाय बेने आधारे रह्याछे ॥
नवमांथि ते सर्वार्थसिद्धसुधि एक आकाशने आधारे प्रतिष्ठित छे ॥ २ ॥ त्रिजे
वर्ण कहेछे । पहिले बिजे देवलोके ॥ ५ ॥ वर्ण लाभे ॥ त्रिजे चउथे देवलोके ॥
॥ १ ॥ कालो वर्जिने ॥ ४ ॥ वर्ण लाभे ॥ पांचमे छठे देवलोके ॥ ३ ॥ वर्ण
लाभे ते कालो ॥ १ ॥ निलोए २ वर्ज्या । सातमे आठमे ॥ २ ॥ वर्ण लाभे
पीलो ॥ १ ॥ ने धोलो ॥ २ ॥ ए ॥ २ ॥ नवमांथि ते सर्वार्थसिद्धलगे ॥ १ ॥

धोलो वर्ण जाणे ॥ ३ ॥ चउथे वस्त्र कहेछे ॥ वार देवलोकना देवताना वस्त्र विविध प्रकारना ॥ ते पण संध्याना रागसरिखा जाणवा ॥ उपरे वस्त्रनुं कारण नथि ॥ ४ ॥ पांचमे सामानिक कहेछे ॥ पहिला देवलोकना देवताने ॥ ८४००० ॥ हजार सामानिकदेवता ॥ १ ॥ बिजाने ८० हजारसामानिक ॥२॥ त्रिजाने ॥ ७२ ॥ हजार सामानिक ॥ ३ ॥ चउथाने ॥ ७० ॥ हजारसामानिक ॥ ४ ॥ पांचमां ने ॥ ६० ॥ हजार सामानिक ॥ ५ ॥ छठाने ॥ ५० ॥ हजार सामानिक ॥ ६ ॥ सातमाने ॥ ४० ॥ हजार सामानिक ॥ ७ ॥ आठमाने ॥ ३० ॥ हजार सामानिक ॥ ८ ॥ नवमा दशमा ने ॥ २० ॥ हजार सामानिक ॥ ९ ॥ १० ॥ इग्यारमां बारमाने ॥ १० ॥ हजार सामानिक ॥ ११ ॥ १२ ॥ ५ ॥ छठे बोले आत्मरक्षक कहेछे । सामानिकथि चउगुणा जाणवा ॥ ६ ॥ सातमे विमानना भोंयतलियानुं जाडपणुं कहेछे । पहिला बिजा देवलोकनुं तलुं ॥२७००॥ जो

जननुं जाडुं ॥ त्रिजा चउथा देवलोकनुं तलुं ॥२६००॥ जोजननुं जाडुं ॥ पांचमा छठा देवलोकनुं तलुं ॥ २५००॥ जोजननुं जाडुं ॥ सातमा आठमा देवलोकनुं तलुं ॥२४००॥ जोजननुं जाडुं ॥ नवमा दशमा इग्यारमा बारमा देवलोकनुं तलुं ॥ २३०० ॥ जोजननुं जाडुं ॥ नवग्रैवेयकनुं तलुं ॥ २२०० ॥ जोजननुं जाडुं छे ॥ पांच अनुत्तर विमाननुं तलुं ॥ २१०० ॥ जोजननुं जाडुं छे ॥७॥ आठमे महोलनुं उंचपणुं कहेछे ॥ पहिला बिजा देवलोकना ॥ ५००॥ जोजनना उंचा महोल ॥ त्रिजा चउथा देवलोकना॥६००॥ जोजनना उंचा महोल॥ पांचमा छठा देवलोकना ॥७००॥ जोजनना उंचा महोल ॥ सातमा आठमा देवलोकना ॥८००॥ जोजनना उंचा महोल ॥ नवमा दशमा इग्यारमा ने बारमा देवलोकना ॥९००॥ जोजनना उंचा महोल ॥ नवग्रैवेयकना ॥ १००० ॥ जोजनना उंचा महोल ॥ पांच अनुत्तर विमानना ॥ ११०० ॥ जोजनना उंचा

मदोल ॥ पहिले बिजे देवलोके ॥१३॥ प्रतर छे ॥ त्रिजे चउथे देवलोके ॥१२॥ प्रतर छे ॥ पांचमे देवलोके ॥ ६ ॥ प्रतर ॥ छठे देवलोके ॥ ५ ॥ प्रतर ॥ सातमे ॥ आठमे नवमे दशमे इग्यारमे ने बारमे ए ६ देवलोके च्यार च्यार प्रतर छे ॥ नवग्रैवेयकमां ९ प्रतर । पांच अनुत्तर विमाननो ॥ १ ॥ प्रतर ॥ ए सर्व मिलि ॥६२॥ प्रतर जाणवा ॥८॥ नवमे पुष्पाविकीर्ण विमान कहेछे ॥ ॥ ८४८९१४९ ॥ चोर्यासीलाख नेव्यासीहजार एकसो उगण पंचास पुष्पाविकीर्ण विमान जाणवा ॥९॥ दशमे आवलिकाबंध विमान ॥७८७४॥ अठोतेरसोने चुमोतेर जाणवा ॥१०॥ हवे ११ मे परिषदा कहेछे पहिला देव लोकना इंद्रने ॥३॥ परिषदा । पहिलीना १२ हजार देवता ॥ बिजीना ॥१४ हजार देवता ॥ त्रिजीना ॥ १६ हजार देवता ॥१॥ बिजा देवलोकना इंद्रने ॥ ३ परिषदा ॥ १० सहस्र ॥ १२ सहस्र ॥ १४ सहस्र ॥२॥ त्रीजा देवलोकना इंद्रने ॥३

परिषदा ॥ ८ सहस्त्र ॥ १० सहस्त्र ॥१२॥३॥ चउथे देवलोके ॥ ६ सहस्त्र ८ सहस्त्र ॥ १० सहस्त्र ॥४॥ पांचमे देवलोके ॥४॥ सहस्त्र ॥ ६ सहस्त्र । ने ॥ ८ ॥ सहस्त्र ॥५॥ छठे देवलोके ॥२॥ सहस्त्र ॥४॥ सहस्त्र । ने ॥६॥ सहस्त्र ॥६॥ सातमे देवलोके १ सहस्त्र ॥२॥ सहस्त्र ने ॥४॥ सहस्त्र ॥७॥ आठमे देवलोके ॥५००॥ १ सहस्त्र ने ॥ २ सहस्त्र ॥८॥ नवमे दशमे देवलोके॥२५०॥५००॥१०००॥ ॥९॥ १० ॥ इग्यारमे बारमे देवलोके ॥१२५॥ २५० ॥ ५०० ॥ ११ ॥ १२ ॥११॥ बारमे उद्योत कहेछे॥देवतानो॥१॥देवीनो॥२॥आभरणनो॥३॥ शुभपुद्गलनो ॥४॥ ने विमाननो ॥१२॥ तेरमे देवीउ कहेछे एकेका इंद्रने आठ आठ देवीउ छे एकेकि देवी सोल सोल हजार रूप वैक्रेय करे धणि भोगववाने अर्थे धणि पण एटला रूप वैक्रेय करे ॥ १३ ॥ चउदमे लोकपाल कहेछे ॥ एकेका इंद्रने च्यार च्यार लोकपाल छे ॥ वारा पूर्वनिपरे जाणवा ॥ सोमने जमनुं ॥ १ ॥ प

ल्यने १ पल्यना त्रिजा नागनुं आयुष अधिक जाणवुं ॥ वरुणनुं देशोउणा ॥
॥ २ ॥ पल्यनुं आयुष जाणवुं ॥ वेशमणनुं पुरा बे पल्यनुं आयुष जाणवुं ॥
॥ १४ ॥ पनरमे त्रायत्रिंशक ते पूर्वनिपरे जाणवा ॥ १५ ॥ सोलमे अणिका
७ ते। गंधर्व ॥१॥ नट ॥२॥ हय ॥३॥ गय ॥४॥ रथ ॥ ५ ॥ पाला ॥६॥ वृषभ ॥ ७
१६॥सत्तरमे अणिकाना अधिपति इमज जाणवा॥१७॥ आढारमे संघयण कहेछे
पहिलाथि ते चउथा देवलोकसुधि ॥ ६ ॥ संघयणनो धणी जाय ॥ पांचमे ने
छठे देवलोके ॥१॥ छेवटु वर्जिने पांच संघयणनो धणि उपजे ॥ सातमे आठमे
देवलोके ॥ ४ ॥ संघयणनो धणि जाय ते किलकु १ ने छेवटु ए २ वर्जिने ॥ न
वमे दशमे इग्यारमे ने बारमे देवलोके ॥ ३ ॥ संघयणनो धणि जाय ॥ नवग्रे
वैयकमां ॥ २ ॥ संघयणनो धणि जाय ॥ पांच अनुत्तरविमानमां ॥ १ वज्र ऋ
षभ नाराचसंघयणनो धणी उपजे ॥१८॥ उगणिशमे अवधिदेखवुं कहेछे ॥ प

हिला बिजा देवलोकना देवता निचुं पहिली नरकना तलासुधि देखे ॥ उंचुं पोताना विमाननी ध्वजालगे देखे । त्रिछुं असंख्याता द्विप समुद्रलगे देखे ॥ त्रिजा । चोथा देवलोकनां। देवता । निचुं बिजीनरकना तलासुधि देखे उंचुं त्रिछुं तेटलुंज देखे ॥ पांचमां छठा देवलोकना देवता निचुं । त्रिजीनरकना तलासुधि देखे । उंचुं त्रिछुं तेटलुं ज देखे । सातमा आठमां देवलोकना । देवता । निचुं च उथि नरकना तलासुधि देखे उंचुं त्रिछुं तेटलुंज देखे । नवमां दशमा इग्यारमां ने बारमा देवलोकना देवता । निचुं पांचमी नरकना तलासुधि देखे। उंचुं त्रिछुं तेटलुंज देखे । नवग्रैवेयकना देवता । निचुं छठि नरकना तलासुधि देखे उंचुं त्रिछुं तेटलुंज देखे॥ च्यार अनुत्तर विमानना देवता निचुं सातमि नरकना तलियासु धि देखे । उंचुं त्रिछुं तेटलुंज देखे॥सर्वार्थसिद्ध महाविमानना देवता किंचित् उणि लोक नालि देखे ॥ नारकि त्रापाने आकारे देखे॥१॥ भवनपति पालाने आकारे

देखे ॥ २ ॥ व्यंतर झाल्लरने आकारे देखे ॥ ३ ॥ ज्योतिषी पम्हाने आकारे
देखे ॥ ४ ॥ वैमानिक ॥ १२ ॥ देवलोकना देवता मादलने आकारे देखे ॥ नव
ग्रैवेयकनादेवता विखर्या फुलने आकारे देखे ॥ च्यार अनुत्तर विमानना देव
ता कुमारीना कंचुवाने आकारे देखे ॥ सर्वार्थसिद्धना देवता जवनालिने आकारे
देखे ॥ १९ ॥ विशमे बोले शुभ वर्ण गंध रस स्पर्श भोगवताथका वैमानिक
विचरेछे ॥ २० ॥ इति पांचमो वैमानिकनो द्वार समाप्तं ॥ ५ ॥ इति पांच बोल
समाप्तं ॥ अथ श्री २३ पदवीना बोल लिख्यते ॥ तेना नाम कहेछे ॥ प्रथम
॥ ७ ॥ एकेंद्रिय रत्न ॥ ७ ॥ पंचेंद्रिय रत्न ने ॥ ९ ॥ महोटि पदवी । तेहमां
॥ ७ ॥ एकेंद्रिय रत्नना नाम । चक्ररत्न ॥ १ ॥ छत्ररत्न ॥ २ ॥ चर्मरत्न ॥ ३ ॥
दंडरत्न ॥ ४ ॥ असिरत्न ॥ ५ ॥ मणिरत्न ॥ ६ ॥ कांगणिरत्न ॥ ७ ॥ ए ॥ ७ ॥
एकेंद्रिय रत्नना नाम कह्या ॥ हवे ॥ ७ ॥ पंचेंद्रिय रत्नना नाम कहेछे ॥ से

नापति ॥ १ ॥ गाथापति ॥ २ ॥ वार्द्धिक ॥ ३ ॥ पुरोहित ॥ ४ ॥ स्त्री ॥ ५ ॥ अश्व ॥ ६ ॥ गज ॥ ७ ए ॥ ७ ॥ पंचेंद्रिय रत्नना नाम कह्यां ॥ हवे ॥ए॥ महोटि पदवीना नाम कहेछे ॥ अरिहंतनि ॥ १ ॥ चक्रवर्त्तिनि ॥ २ ॥ बलदेवनि ॥ ३ ॥ वासुदेवनि ॥ ४ ॥ केवलिनि ॥ ५ ॥ साधुनि ॥ ६ ॥ श्रावकनि ॥ ७ ॥ सम्यक्दृष्टिनि ॥ ८ ॥ मंम्डलिक राजानि ॥ ए ॥ ए ॥ए॥ महोटि पदवी कही ॥ एवं सर्वमिलि २३ पदवी ॥ हवे ॥ १४ रत्न स्युं स्युं काम करे ॥ चक्ररत्न षट्खंडसाधतामार्ग बतावे ॥ १ ॥ छत्ररत्नते ॥ ४८ ॥ कोशप्रमाणे छाया करे ॥२॥ चर्मरत्न ते नदी आदे पार उतारे ॥ ३ ॥ दंडरत्न ते तमस गुफाना बार उघाडे ॥ ४ ॥ असिरत्न ते शत्रुने हणे ॥ ५ ॥ मणिरत्न ते उद्योतकरे ॥ ६ ॥ कांगणि रत्न ते ॥ ४ए ॥ मांडला आलेखे । तथा तोला माप वधारे ॥ ७ ॥ सेनापति ते देश साधे ॥८॥ गाथापति ते । धान रसवती निपजावे ॥ ए ॥ वार्द्धिक ते ।

॥ १ ॥ तिर्थंकर वर्ज्या ॥ ४ ॥ पांचमी नरकना निकल्या । इग्यार पदवी पामे । ते ॥ १७ ॥ मांहिथि ॥ १ केवलि वर्ज्या ॥ ५ ॥ छठि नरकना निकल्या दश प दवी पामे । ते । साधुजी वर्ज्या ॥ ६ ॥ सातमी नरकना निकल्या ॥ ३ ॥ पदवी पामे ॥ अश्व ॥ १ ॥ गज ॥ २ ॥ सम्यक्त्वदृष्टि ॥३॥ ए ॥३॥ पदवी पामे ॥७॥ भवनपति । वाणव्यंतर । ज्योतषी । ए ॥ ३ ॥ ना निकल्या । एकविश पदवी पामे । ते । वासुदेव ने ॥ १ ॥ तिर्थंकर ॥ ए ॥ २ ॥ वर्ज्या ॥ प्रथवी । पाणी । वनस्पति । गर्भजमनुष्य । ने गर्भजतिर्यंच । एटलाना निकल्या ॥१९॥ पदवी पामे । ते ॥२३॥ मांथि ॥ तिर्थंकर ॥१॥ चक्रवर्त्ति ॥२॥ बलदेव ॥ ३ ॥ वासुदेव ॥ ४ ॥ ए ॥ ४ ॥ वर्ज्या ॥ वेइंद्रिय । तेइंद्रिय । चउरिंद्रिय । समुर्छिमतिर्यंच ने स मुर्छिममनुष्य ॥ ए ॥ ५ ॥ नानिकल्या ॥ २० ॥ पदवी पामे । ते ॥ १९ ॥ मांथि ॥ १ ॥ केवलि वर्ज्या ॥ तेउवाउ । ना निकल्या ॥९॥ पदवी पामे ते ॥ ७ ॥ एकें

द्रियरत्न ॥ अने हाथि १ । घोमो २ ॥ ए ॥ए॥ पदवी पामे ॥ पनरपरमाधामि ने। पहिला किल्विषीना निकळ्या ॥१८॥ पदवी पामे । ते ॥२३॥ मांथि ॥४॥ उत्तम पुरुष ने ॥ १ ॥ केवलि वर्ज्या ॥ उपला ॥ २ ॥ किल्विषीना निकळ्या ॥ ११ ॥ पदवी पामे । ते ॥ १८ ॥ मांथि ॥ ७ ॥ एकेंद्रिय वर्ज्या शेष ॥ ११ ॥ पामे ॥ सुधर्म १ इशान ॥ २ ॥ ए ॥ २ ॥ देवलोकना निकळ्या ॥२३॥ पदवी पामे ॥ त्रिजाथि ते आठमां देवलोकसुधिना तथा नव लोकांतिकना निकळ्या ॥ १६ ॥ पदवीपामे । ते ॥ २३ मांथि ॥ ७ ॥ एकेंद्रियरत्न वर्ज्या । शेष ॥ १६ ॥ पामे ॥ नवमांथि नवग्रैवेयकसुधिना निकळ्या चउद पदवी पामे ते ॥ १६ ॥ मांथि अश्व ॥ १ ॥ ने गज ॥ २ ॥ ए ॥२॥ वर्ज्या शेष ॥ १४ पामे ॥ पांच अनुत्तर विमानना निकळ्या ॥८॥ पदवी पामे । ते ॥ २३ ॥ मांथि ॥ १४ ॥ रत्न ने ॥ १ ॥ वासुदेव वर्ज्या । शेष ॥ ८ ॥ पामे ॥ संज्ञिमाहि ॥ १५ ॥ पदवी लाभे ते ॥ २३ ॥ मांथि

॥ १ ॥ तिर्थंकर वर्ज्या ॥ ४ ॥ पांचमी नरकना निकल्या । इग्यार पदवी पामे । ते ॥ १७ ॥ मांहिथि ॥ १ केवलि वर्ज्या ॥ ५ ॥ छठि नरकना निकल्या दश पदवी पामे । ते । साधुजी वर्ज्या ॥ ६ ॥ सातमी नरकना निकल्या ॥ ३ ॥ पदवी पामे ॥ अश्व ॥ १ ॥ गज ॥ ७ ॥ सम्यक्त्वदृष्टि ॥३॥ ए ॥३॥ पदवी पामे ॥८॥ भवनपति । वाणव्यंतर । ज्योतषी । ए ॥ ३ ॥ ना निकल्या । एकविश पदवी पामे । ते । वासुदेव ने ॥ १ ॥ तिर्थंकर ॥ ए ॥ ७ ॥ वर्ज्या ॥ प्रथवी । पाणी । वनस्पति । गर्भजमनुष्य । ने गर्भजतिर्यंच । एटलाना निकल्या ॥१ए॥ पदवी पामे । ते ॥७३॥ मांथि ॥ तिर्थंकर ॥१॥ चक्रवर्त्ति ॥२॥ बलदेव ॥ ३ ॥ वासुदेव ॥ ४ ॥ ए ॥ ४ ॥ वर्ज्या ॥ बेइंद्रिय । तेइंद्रिय । चउरिंद्रिय । समुर्छिमतिर्यंच ने समुर्छिममनुष्य ॥ ए ॥ ५ ॥ नानिकल्या ॥ १८ ॥ पदवी पामे । ते ॥ १ए॥ मांथि ॥ १ ॥ केवलि वर्ज्या ॥ तेउवाउ । ना निकल्या ॥ए॥ पदवी पामे ते ॥ ८ ॥ एकें

न्द्रियरत्न ॥ अने हाथि १ । घोडो २ ॥ ए ॥ए॥ पदवी पामे ॥ पनरपरमाधामि ने। पहिला किल्विषीना निकल्या ॥१८॥ पदवी पामे । ते ॥२३॥ मांथि ॥४॥ उत्तम पुरुष ने ॥ १ ॥ केवलि वर्ज्या ॥ उपला ॥ २ ॥ किल्विषीना निकल्या ॥ ११ ॥ पदवी पामे । ते ॥ १८ ॥ मांथि ॥ ७ ॥ एकेंद्रिय वर्ज्या शेष ॥ ११ ॥ पामे ॥ सुधर्म १ इशान ॥ २ ॥ ए ॥ २ ॥ देवलोकना निकल्या ॥२३॥ पदवी पामे ॥ त्रिजाथि ते आठमां देवलोकसुधिना तथा नव लोकांतिकना निकल्या ॥ १६ ॥ पदवीपामे । ते ॥ २३ मांथि ॥ ७ ॥ एकेंद्रियरत्न वर्ज्या । शेष ॥ १६ ॥ पामे ॥ नवमांथि नवग्रैवेयकसुधिना निकल्या चउद पदवी पामे ते ॥ १६ ॥ मांथि अश्व ॥ १ ॥ ने गज ॥ २ ॥ ए ॥२॥ वर्ज्या शेष ॥ १४ पामे ॥ पांच अनुत्तर विमानना निकल्या ॥ ८ ॥ पदवी पामे । ते ॥ २३ ॥ मांथि ॥ १४ ॥ रत्न ने ॥ १ ॥ वासुदेव वर्ज्या । शेष ॥ ८ ॥ पामे ॥ संज्ञिमाहि ॥ १५ ॥ पदवी लाभे ते ॥ २३ ॥ मांथि

॥ १ ॥ तिर्थंकर वर्ज्या ॥ ४ ॥ पांचमी नरकना निकल्या । इग्यार पदवी पामे । ते ॥ १७ ॥ मांहिथि ॥ १ केवलि वर्ज्या ॥ ५ ॥ छठि नरकना निकल्या दश पदवी पामे । ते । साधुजी वर्ज्या ॥ ६ ॥ सातमी नरकना निकल्या ॥ ३ ॥ पदवी पामे ॥ अश्व ॥ १ ॥ गज ॥ २ ॥ सम्यक्त्वदृष्टि ॥३॥ ए ॥३॥ पदवी पामे ॥७॥ भवनपति । वाणव्यंतर । ज्योतषी । ए ॥ ३ ॥ ना निकल्या । एकविश पदवी पामे । ते । वासुदेव ने ॥ १ ॥ तिर्थंकर ॥ ए ॥ २ ॥ वर्ज्या ॥ प्रथवी । पाणी । वनस्पति । गर्भजमनुष्य । ने गर्भजतिर्यंच । एटलाना निकल्या ॥१९॥ पदवी पामे । ते ॥२३॥ मांथि ॥ तिर्थंकर ॥१॥ चक्रव्रत्ति ॥२॥ बलदेव ॥ ३ ॥ वासुदेव ॥ ४ ॥ ए ॥ ४ ॥ वर्ज्या ॥ बेइंद्रिय । तेइंद्रिय । चउरिंद्रिय । समुर्छिमतिर्यंच ने समुर्छिममनुष्य ॥ ए ॥ ५ ॥ नानिकल्या ॥ १८ ॥ पदवी पामे । ते ॥ १९॥ मांथि ॥ १ ॥ केवलि वर्ज्या ॥ तेउवाउ । ना निकल्या ॥९॥ पदवी पामे ते ॥ ७ ॥ एकें

ंडियरत्न ॥ अने हाथि १ । घोमो २ ॥ ए ॥ए॥ पदवी पामे ॥ पनरपरमाधामि ने।
पहिला किल्विषीना निकल्या ॥१७॥ पदवी पामे । ते ॥२३॥ मांथि ॥४॥ उत्तम
पुरुष ने ॥ १ ॥ केवलि वर्ज्या ॥ उपला ॥ २ ॥ किल्विषीना निकल्या ॥ ११ ॥
पदवी पामे । ते ॥ १७ ॥ मांथि ॥ ७ ॥ एकेंडिय वर्ज्या शेष ॥ ११ ॥ पामे ॥ सु
धर्म १ इशान ॥ २ ॥ ए ॥ २ ॥ देवलोकना निकल्या ॥२३॥ पदवी पामे ॥ त्रि
जाथि ते आठमां देवलोकसुधिना तथा नव लोकांतिकना निकल्या ॥ १६ ॥ प
दवीपामे । ते ॥ २३ मांथि ॥ ७ ॥ एकेंडियरत्न वर्ज्या । शेष ॥ १६ ॥ पामे ॥
नवमांथि नवग्रैवेयकसुधिना निकल्या चउद पदवी पामे ते ॥ १६ ॥ मांथि अश्व
॥ १ ॥ ने गज ॥ २ ॥ ए ॥२॥ वर्ज्या शेष ॥ १४ पामे ॥ पांच अनुत्तर विमानना नि
कल्या ॥७॥ पदवी पामे । ते ॥ २३ ॥ मांथि ॥ १४ ॥ रत्न ने ॥ १ ॥ वासुदेव
वर्ज्या । शेष ॥ ७ ॥ पामे ॥ संज्ञिमाहि ॥ १५ ॥ पदवी लान्ने ते ॥ २३ ॥ मांथि

॥ ७ ॥ एकेंद्रिय ने ॥ १ ॥ केवलिनी । ए ॥ ८ ॥ वर्जी ॥ शेष १५ लाभे । असं
ज्ञिमांहि ॥ ८ ॥ पदवी लाभे ते ॥ ७ ॥ एकेंद्रिय ने ॥ १ ॥ समकीतनी ॥ ८ ॥
लाभे ॥ तिर्थंकर । तथा चक्रव्रतिमां ॥ ६ ॥ पदवी लाभे ॥ तिर्थंकरनि ॥ १ ॥ च
क्रव्रतिनि ॥ २ ॥ मंडलिकनि ॥ ३ ॥ समकितनि ॥ ४ ॥ साधुनि ॥ ५ ॥ केव
लिनि । ए ॥ ६ ॥ लाभे ॥ वासुदेवमां ॥ ३ ॥ पदवीलाभे । वासुदेवनी ॥ १ ॥ स
मकितनि ॥ २ ॥ मंडलिकनि ॥ ३ ॥ ए ॥ ३ ॥ लाभे ॥ बलदेवमां पांच पदवी
लाभे । बलदेवनि ॥ १ ॥ मंडलिकनि ॥ २ ॥ साधुनि ॥ ३ ॥ केवलिनि ॥ ४ ॥
समकितदृष्टिनि ॥ ५ ॥ ए ॥ ५ ॥ लाभे ॥ मनुष्यमांहि । पदवी ॥ १३ ॥ लाभे ॥
नव महोटि पदवी ने । सेनापति ॥ १ ॥ गाथापति ॥ २ ॥ वार्द्धिक ॥ ३ ॥ पुरो
हित ॥ ४ ॥ एवं । सर्व मिलि ॥ १३ ॥ पदवीलाभे ॥ मनुष्यणीमांहि पदवी ॥
॥ ५ ॥ लाभे ॥ समकितनि ॥ १ ॥ श्राविकानि ॥ २ ॥ साधवीनि ॥ ३ ॥ केव

लिनि ॥ ४ ॥ स्त्रीरत्ननि ॥ ५ ॥ ए ॥ ५ ॥ इति २३ पदवीना बोल समाप्तं ॥

अथ श्रीसिझणाद्वार लिख्यते

१ पहिली नर्कना निकल्या एक समये १०. सिझे
२ बिजी नर्कना निकल्या एक० १०.
३ त्रिजि नर्कना निकल्या एक० १०.
४ चउथी नर्कना निकल्या एक० ४.
५ भवनपतिना निकल्या एक० १०.
६ भवनपतिनि देवीना निकल्याए. ५
७ पृथ्वीना निकल्या ४ एक० सिझे
८ पाणिना निकल्या एक० ४ सिझे
९ वनस्पतिना निकल्या एक० ६.
१० पंचेंद्रिय तिर्यंच गर्भजना निकल्या एक० १० सिझे
११ तिर्यंचणीना निकल्या एक० १०.
१२ मनुष्यना निकल्या एक० १०.
१३ मनुष्यणीना निकल्या एक० २०.
१४ वाणव्यंतरना निकल्या एक० १० सिझे
१५ वाणव्यंतरनि देवीना निकल्या एक० ५ सिझे

१६ ज्योतिषीना निकल्या एक० १०.
१७ ज्योतिषीनी देवीना निकल्या एक० २० सिझे
१८ वैमानिकना निकल्या एक० १०८ सिझे
१९ वैमानिकनि देवीना निकल्या एक० २० सिझे
२० स्वलिंगी सिझे तो १०८ सिझे
२१ अन्यलिंगी सिझे तो १० सिझे
२२ गृहस्थलिंगे सिझे तो ४ सिझे
२३ स्त्रीलिंगे २० सिझे
२४ पुरुषलिंगे १०८ सिझे
२५ नपुंसकलिंगे १० सिझे
२६ उर्ध्वलोके ४ सिझे
२७ अधोलोके २० सिझे
२८ त्रिगलोके १०८ सिझे
२९ उत्कृष्टि अवगाहनावाला एक० २ सिझे
३० जघन्य अवगाहनावाला ए० ४.
३१ मझम अवगाहनावाला एक० १०८ सिझे
३२ समुद्रमां २ सिझे

३३ नदीप्रमुख शेषजलमां ३ सिझे
३४ तिर्थमां १०८ सिझे
३५ अतिर्थमा १० सिझे
३६ तिर्थंकर २० सिझे
३७ अतिर्थंकर १०८ सिझे
३८ स्वयंबुद्ध ४ सिझे
३९ प्रत्येक बुद्ध १० सिझे
४० बुद्धबोहि १०८ सिझे
४१ एक सिद्धाते एक समये १ सिझे
४२ अनेक सिद्धा ते एक समये उत्० १०८ सिझे

४३ विजय विजय प्रते एक समये विश विश सिझे
४६ भद्रशालवन १ नंदनवन २ सोमनसवन ३ ए ३ मा च्यार च्यार सि.
४७ पंडगवनमां २ सिझे
४८ अकर्मभूमिमां १० सिझे
४९ कर्मभूमिमां १०८ सिझे
५३ पहिले १ बिजे २ पांचमे ३ छठे ४ ए ४ आरे १० दश सिझे
५५ त्रिजे १ चउथे २ ए २ आरे १०८ एकसो आठ सिझे

अथ श्रीविरहद्वार लिख्यते ॥ समुचय चार गतिना विरहकाल ॥ जघन्य ॥
॥ १ ॥ समयनो उत्कृष्टो ॥ १२ ॥ मुहुर्त्तनो ॥ हवे पहिली नरकेज० ॥ १ ॥ समय०
॥ उ० २४ मुहुर्त्तनो ॥ १ ॥ बिजी नरके ज० १ समयनो उ० ७ दिननो विरह
काल ॥ २ ॥ त्रीजी नरके ज० १ समयनो उ० १५ दिननो विरहकाल ॥ ३ ॥
चोथी नरके ज० १ समयनो उ० १ मासनो विरहकाल ॥ ४ ॥ पाचमी नरके ॥
ज० १ समयनो उ० २ मासनो विरहकाल ॥ ५ ॥ छठी नरके ज० १ समयनो
उ० ४ मासनो विरहकाल ॥ ६ ॥ सातमी नरके ज० १ समयनो उ० ६ मासनो
विरहकाल ॥ ७ ॥ उपजवानो तथा चववानो विरह पडे ॥ हवे दस जवनपती
नो ज० १ समयनो उ० २४ मुहुर्त्तनो विरहकाल ॥ पांच एकेंडीय अविरहिया
संख्याताने ठामे संख्याताउपजे ॥ असंख्याताने ठामे असंख्याताउपजे ॥ अ
नंतानेठामे अनंताउपजे ॥ समय समयउपजे ॥ समय समयचवे ॥ त्रण विग

नवमे दशमे देवलोके ॥ ज० १ समयनो
यनो उ १०० दिननो विरहकाल ॥ इग्यारमे बारमे देवलोके ज०
ज० संख्याता मासनो ॥ ज्यांलगे वरसन होय ॥ ज्यांलगें सो वरस न होय ॥ पहिली
१ समयनो ॥ उ० संख्याता वरसनो ॥ ज्यांलगे हजार वरस न
त्रिके ज० १ समयनो उ० संख्याता वर्षना सैंकमा ॥ ज्यांलगे हजार ॥ ज्यां
होय ॥ बीजी त्रिके ज० १ समयनो ॥ उ० संख्याता वरसनाहजार ॥ ज्यां
लगे लाख वरस न होय ॥ त्रीजी त्रीके ज० १ समयनो ॥ उ० संख्याता लाख
वरस नो ज्यांलगे क्रोम वरस न होय ॥ च्यार अनुत्तर विमानमां ॥ ज० १
समयनो उ० ॥ पल्यना असंख्यातमा भागनो विरहकाल ॥ सर्वार्थसिद्धमां ज०
१ समयनो उ० पल्यना संख्यातमा भागनो विरहकाल ॥ सिद्धनो विरह ज०
१ समयनो उ० ६ मासनो विरहकाल ॥ च्यार गतिमां पंचेंद्रीय आश्री विरह
काल ज० १ समयनो उ० १२ मुहुर्त्तनो विरहकाल ॥ सर्व इंद्रस्थानकनो वि

रह ज० १ समयनो उ० ६ मासनो विरहकाल ॥ इतिश्री विरहद्वार समाप्तं ॥
अथश्री पांच देवना बोल लिख्यते ॥ पहिलुं नामद्वार ॥ १ ॥ बिजुं गुणद्वार
॥ २ ॥ त्रिजुं उववायद्वार ॥ ३ ॥ चोथुं स्थितिद्वार ॥ ४ ॥ पांचमुं ऋद्धि तथा
विकुर्वणाद्वार ॥ ५ ॥ छठुं चवणद्वार ॥ ६ ॥ सातमुं संचिठणाद्वार ॥ ७ ॥ आ
ठमुं अंतरद्वार ॥ ८ ॥ नवमुं अल्पबहुत्वद्वार ॥ ए ॥ ए ए द्वार ॥ पांच देव ॥
उपर उतारेछे ॥ हवे पहिलुं नाम द्वार कहेछे ॥ नवियद्रव्यदेव ॥ १ ॥ नरदेव
॥ २ ॥ धर्मदेव ॥ ३ ॥ देवाधिदेव ॥ ४ ॥ नावदेव ॥ ५ ॥ १ ॥ हवे बिजुं गुणद्वार
कहेछे ॥ मनुष्य तथा तिर्यंच पंचेंद्रिय जेहने देवतामां उपजवुं छे तेहने नविय
द्रव्यदेव कहिये ॥ १ ॥ चउद रत्न ॥ नव निधान ॥ जेहने होय तेहने ॥ नर
देव कहिये ॥ २ ॥ साधुना सत्यावित्र गुणेकरीसहित होय तेहने धर्मदेव क
हिये ॥ ३ ॥ अढार दोषरहित ने बार गुणेकरिसहित होय तेहने देवाधिदेव

कहिये ॥ अढार दोष ते कहेछे ॥ अज्ञान १ क्रोध २ मद ३ मान ४ माया ५
लोभ ६ रति ७ अरति ८ निद्रा ९ शोक १० असत्य ११ चोरी १२ मछर १३
भय १४ प्राणिवध १५ प्रेम १६ क्रीडाप्रसंग १७ हास्य १८ ए १८ दोषरहित
ने १२ गुणेकरिसहित ॥ ते १२ गुण कहेछे ॥ जिहां जिहां भगवंत ऊभा रहे बेसे
समोसरे तिहां तिहां दश बोलसहित ते भगवंतथि बार गुणो ऊंचो तत्काल
अशोक वृक्ष थइ आवे स्वामिने छांयडो करे ॥ १ ॥ भगवंत जिहां जिहां स
मोसरे तिहां तिहां पांच वर्णा अचेत फुलनि वृष्टि थाय ढिंचणप्रमाणे ढगला
थाय ॥ २ ॥ भगवंतनि जोजनप्रमाणे वाणी विस्तरे सहुना मननो ॥ संशय
हरे ॥ ३ ॥ भगवंतने चोविश जोड चामर विंजाय ॥ ४ ॥ स्फटिक रत्नमय ॥
पादपीठसहित सिंहासन स्वामिने आगले थाय ॥ ५ ॥ भामंडल अंबोडाने
ठेकाणे तेजमंडल बिराजे दिशोदिशना अंधकार टाले ॥ ६ ॥ आकाशे साढा

बार क्रोड गेबि वाजां वागे ॥ ७ ॥ भगवंतनि उपरे त्रण छत्र उपराउपरि वि
राजे ॥८॥ अनंत ज्ञान अतिशय ए अनंत अर्चाअतिशय परम पूज्यपणुं १०
अनंत वचन अतिशय ११ अनंत अपायापगम अतिशयते सर्व दोषरहित
पणुं ॥१२॥ ए १२ गुणे करिसहित तथा चोत्रिश अतिशय ॥ पांत्रिश वचना
तिशय आदि देइने अनंतगुणेकरिसहित होय तेहने देवाधिदेव कहिये ॥४॥
भावदेव ते ॥ भवनपति ॥ १ ॥ वाणव्यंतर ॥ २ ॥ ज्योतिषी ॥ ३ ॥ वैमानिक
॥ ४ ॥ए ४ जातिना देवताने भावे प्रवर्ते छे तेहने भावदेव कहिये ॥ ५ ॥ २ ॥
हवे त्रिजुं उववायद्वार कहेछे ॥ भवियद्रव्यदेवमां मनुष्य १ तिर्यंच २ जुग
लीया ॥ सर्वार्थसिद्ध ३ ए ३ ठाम वर्जिने बाकि सर्व ठामना आवि उपजे॥१॥
नरदेवमां ४ जातिना देवता ने पहिली नर्क ॥ ए ५ ठामना आवि उपजे ॥२॥
धर्मदेवमां छठी सातमी नर्क। तेउ। वाउ मनुष्यतिर्यंचजुगलीया ए ६ ठाम वर्जिने

शेष सर्व ठामना आवि उपजे ॥ ३ ॥ देवाधिदेवमां । पहिली । बिजी । त्रिजी
नर्क । किल्बिषी वर्जिने वैमानिक देवनाआवि उपजे ४॥ भावदेवमां तिर्यंच पंचें
द्रिय १ ने॥ संज्ञिमनुष्य ए २ ठामना आवि उपजे ॥५॥३॥ हवे चोथुं स्थिति
द्वार कहेछे भवियद्रव्यदेवनि जघ० अंत० ॥ उत्० ३ पल्यनि ॥ १ ॥ नरदेवनि
जघ० सातसें वर्षनि उत्० ॥ चोरयासी लाख पूर्वनि ॥ २॥ धर्मदेवनि जघ० अं
त०।उत्० देशे उणी पूर्वक्रोडिनि ॥ ३ ॥ देवाधिदेवनि जघ० बहुतेर वर्षनि ॥
उत्० ८४ लाख पूर्वनि॥४॥ भावदेवनि जघ० दश हजार वर्षनि ॥उत्० ३३ सा
गरनि ॥ ५ ॥ ॥ ४ ॥ हवे पांचमुं ऋद्धि तथा विकुवणाद्वार कहेछे ॥ भवियद्रव्य
देवमां जेहने वैक्रेय लब्धि उपनि होय तेहने॥नरदेवने तो होयज॥धर्मदेवमां
जेहने होय तेहने॥भावदेवने तो होयज॥ए ४ वैक्रेय रूप करे तो ज० ॥१॥२
॥ ३ उ० संख्याता करे शक्तितो असंख्याता रूपकरवानि छे पण करे नहि॥ दे

वाधिदेवनिशक्ति घणि छे पण करे नहि ॥ ५ ॥ हवे छठुं चवणद्वार कहेछे नवि
यद्रव्यदेव चविदेवता थाय १ नरदेव चवि नर्कजाय ॥ २ ॥ धर्मदेव चवी वैमा
निक तथा मोक्षमां जाय ॥ ३ ॥ देवाधिदेव तो मुक्ति जाय ॥ ४ ॥ भावदेव च
विने ॥ प्रथ्वी ॥ पाणी वनस्पति बादरमां ने गर्भजमनुष्य तिर्यंचमां जाय ६
हवे सातमुं संचिठणाद्वार कहेछे॥संचिठणा ते स्युं ते देवनो देवपणे रहे तो के
टलो काल रहे ते ॥ नविय द्रव्यदेवनि संचिठणा जघ० अंत० उत्० ३ पल्यो
पमनि १ नरदेवनि जघ० सातसें वर्षनि उत्० ८४ लाख पूर्वनि २ धर्मदेवनि
जघ० १ समयनि॥उत्० देशो उणी पूर्व क्रोडिनि ॥ ३॥ देवाधिदेवनि जघ० ब
हुतेर वर्षनि उत्० ८४ लाख पूर्वनि ४ भावदेवनि जघ० दश हजार वर्षनि॥
उत्० ३३ सागरोपमनि ५॥७॥ हवे आठमुं अंतरद्वार कहेछे नवियद्रव्यदेवनुं
आंतरुं पडे तो जघ० दश हजार वर्षने अंतर्मुहूर्त्त अधिक ॥ उत्० अनंता का

लनुं आंतरुं पमे। १॥ नरदेवनुं जघ० १ सागरझाझेरुं। उत्० अर्द्ध पुज्ञल परावर्त्तन देशे उणुं २॥ धर्मदेवनुं जघ० २ पल्यझाझेरुं॥ उत्० अर्द्ध पुज्ञल परावर्त्तन देशे उणुं ३॥ देवाधिदेवनुं आंतरुं नथि॥ ४॥ जावदेवनुं जघ० अंत०॥ उत्० अनंता कालनुं॥ ८॥ हवे नवमुं अल्पबहुत्व द्वार कहेछे॥ सर्वथि थोमा नरदेव १ तेहथि देवाधिदेव संख्यात गुणा २ तेहथि धर्म देव संख्यात गुणा॥ ३॥ तेहथि जवियद्रव्यदेव॥ असंख्यातगुणा॥ ४॥ तेहथि जावदेव असंख्यात गुणा॥ ५॥ ए॥ इति पांच देवना बोल संपूर्ण॥

अथ दिसाणुवाइ लिख्यते॥ समुचय जीव॥ सर्वथि थोमा पश्चिम दिशे जेजणि पश्चिम दिशे गौतमद्विप छे तथा चंद्रमा सूर्यना द्विपछे तेथि पाणि थोमुंछे। तेमाटे निलफुल पण थोमिछे। तणे कारि जीव थोमा छे॥ १॥ तेहथि पूर्व दिशे विशेषाहिया जेमाटे गौतमद्विप नथी॥ २॥ तेहथि दक्षिण दिशे विशेषाहिया जेमाटे चंद्रमा सूर्यना

द्विप पण नथि ॥ ३ ॥ तेहथि उत्तर दिशे विशेषाहिया जेहभणि उत्तर दिशे संख्या
तमे द्विपे संख्याति जोजन कोडा कोडिनुं मानसरोवर छे तीहां पाणी घणुं छे
तेहथी निलफुलना जीव घणा छे तेमाटे ॥ ४ ॥ १ ॥ पृथवीकायना जीव सर्वथि
थोडा दक्षिण दिशे जेभणि दक्षिणदिशे ॥४॥ क्रोडिने ६ लाख भवनपतिना भवन
छे। तिहां पोलार घणि छे तेथि पृथवी थोडि छे॥ १ ॥ तेहथि उत्तर दिशे विशेषाहिया
जे भणि भवनपतिना भवन थोडा छे ॥ ३ ॥ क्रोडि बाशठ लाख भवन छे तेथि
पोलार थोडि छे ते भणि पृथ्वी घणि छे ॥ २ ॥ तेहथि पूर्व दिशे विशेषाहिया
जेभणिभवन तो नथि पण चंद्रमा सूर्यना द्विप छे तेभणि पृथवी घणि छे॥ ३ ॥
तेहथि पश्चिम दिशे विशेषाहिया जेभणि गौतमद्विप छे ते माटे पृथवी घणि छे
॥ ४ ॥ २ ॥ इमज अपकाय ॥ १ वनस्पतिकाय ॥ २ ॥ त्रशकाय ॥ ३ ॥ बेइं
द्रिय ॥ ४ ॥ तेइंद्रिय ॥ ५ ॥ चउरिंद्रिय ॥ ६ ॥ तिर्यंच पंचेंद्रिय ॥ ७ ॥ ए ॥ ७ ॥

समुच्चय जीवनिपरे जाणवा ॥ ए ॥ तेउकाय ॥ १ ॥ मनुष्य २ सिद्ध ॥ ३ ॥ ए ॥ ३ ॥ सर्वथि थोम्रा दक्षिण उत्तर दिशे॥जेम्नणि दक्षिण उत्तरे क्षेत्र नाहना छे तेथि । ए ॥ ३ ॥ थोम्रा ॥ २ ॥ तेहथि पूर्व दिशे संख्यात गुणा । जेम्नणि क्षेत्र महोटा छे तेमाटे ॥ ३ ॥ तेहथि पश्चिम दिशे विशेषाहिया । जेम्नणि पश्चिम दिशे अधो गाम विजय छे तिहां जीव घणा छे तेमाटे ॥ ४ ॥ १२ ॥ वाउकाया जीव सर्वथि थोम्रा । पूर्व दिशे जेम्नणि नुमि घणि नकोर छे तेमाटे वाउकाया थोम्रा छे ॥ १ ॥ तेहथि पश्चिम दिशे विशेषाहिया जेम्नणि विजय उंमी छे तेमाटे ॥ २ ॥ तेहथि उत्तर दिशे विशेषाहिया जेम्नणि नवननि पोलार छे तेमाटे ॥३॥ तेहथि दक्षिण दिशे विशेषाहिया जेम्नणि नवन ने नरकावासा घणा छे तेम्नणि पोलार घणि छे तेमाटे वाउकाया घणा छे ॥ ४ ॥ १३ ॥ नारकि सर्वथि थोम्रा । पूर्व १ पश्चिम २ ने उत्तर दिशे । जेम्नणि तिहां पुष्पाविकीर्ण नरका

वासा थोमा छे। अने वलि संख्याति जोजनना छे॥तेमाटे नारकि थोमा छे॥३॥ तेहथि दक्षिण दिशे असंख्यात गुणा जेभणि कृष्णपखी नारकि दक्षिण दिशाना उपजण हार घणा छे तेमाटे॥४॥ ए समुच्चय नारकि आश्रि कह्युं।इम प्रत्येक प्रत्येक नरके त्रिण दिशाना नारकि थोमा ते पूर्व १ पश्चिम २ ने उत्तरना ॥ तेहथकि दक्षिण दिशाना असंख्यात गुणा अधिक छे ॥ सातमी नरकना ३ दिशाना नारकि थकि दक्षिण दिशाना नारकि असंख्यात गुणा । सातमी नरकना दक्षिण दिशाना नारकिथकि छठि नरकना ३ दिशाना नारकि असंख्यात गुणा।तेथकि छठी नरकना दक्षिण दिशाना नारकि असंख्यात गुणा । एणि परे पहिलि नरकसुधि जाणवुं ॥ १४ ॥ भवनपति देवता सर्वथि थोमा पूर्व । पश्चिम दिशे २ तेहथि उत्तर दिशे असंख्यात गुणा अधिक जेभणि भवन घणा छे तेमाटे ॥ ३ ॥ तेहथि दक्षिण दिशे असंख्यात गुणा । भवन बहुलाछे तेमाटे ॥ ४ ॥

॥ १५ ॥ वाणव्यंतर देवता सर्वथि थोमा पूर्वदिशे जेमाणि भुमि घणि कठिन छे तेमाटे ॥ १ ॥ तेहथि पश्चिम दिशे विशेषादिया । व्यंतरना नगर घणा छे तेमाटे ॥ २ ॥ तेहथि उत्तर दिशे विशेषादिया ॥ ३ ॥ तेहथि दक्षिण दिशे विशेषादिया तिहां कृष्णपक्षि घणा छे तेमाटे ॥ ४ ॥ १६ ॥ ज्योतिषी देवता सर्वथि थोमा । पूर्व पश्चिम दिशे जेमाणि पूर्व पश्चिम दिशे चंद्रमा सूर्यना छिपा छे तिहां ज्योतिपी थोडा रहेछे तेमाटे ॥ २ ॥ तेहथि दक्षिण दिशे विशेषादिया जेमाणि दक्षिण दिशे कृष्णपक्षी घणा छे ॥ ३ ॥ तेहथि उत्तर दिशे विशेषादिया जेमाणि उत्तर दिशे मानसरोवर छे ॥ तिहां मछादिक घणाछे ॥ ते मछ ज्योतिपिना विमान ढुंकडा देखिने जातिस्मरणज्ञान उपजे तेहथि व्रतादि पमि वर्जे । ते नियाणुं करिने ज्योतिषीमां उपजे तेमाटे ज्योतिषी उत्तर दिशे घणा ॥ ४ ॥
॥ १७ ॥ सुधर्म ॥ १ इशान ॥ २ ॥ सनंतकुमार ॥ ३ ॥ माहेंद्र ॥ ४ ॥ ए ॥ ४ ॥

देवलोकना देवता सर्वथि थोडा । पूर्व । पश्चिम दिशे । जेन्नाणि पूर्व पश्चिम दिशे । आवलिकाबंध विमान अल्प छे तेमाटे ॥ २॥ तेहथि उत्तर दिशे । असंख्यात गुणा जे न्नाणि उत्तर दिशे पुष्पाविकीर्ण विमान घणा छे तेमाटे ॥३॥ तेहथि दक्षिण दिशे विशेषाहिया जेन्नाणि दक्षिण दिशे कृष्णपक्षी देवता घणा छे तेमाटे ॥ ४ ॥ १८ ॥ पांचमां देवलोकथि मांम्डिने ८ मां देवलोकसुधिना देवता सर्वथि थोम्डा ॥ पूर्व १ पश्चिम २ ने उत्तर ३ ए ३ दिशाना ॥३॥ तेहथि दक्षिण दिशाना असंख्यात गुणा जेन्नाणि तिर्यंच पंचेंद्रिय प्रमुख घणा उपजे छे तेमाटे ॥ ४ ॥ १९ ॥ नवमां देवलोकथि मांडिने सर्वार्थसिद्ध विमान लगे ४ दिशेस रिखा जाणवा जेन्नाणि सर्व ठेकाणे मनुष्य उपजे छे तेमाटे ॥ २० ॥ इति दिशाणुवाइ समाप्तं ॥

अथ श्रीखंडाजोयणाना बोल लिख्यते ॥ खंडाजोयणादि १० बोलनो विचार

विचारिये छिये ॥ जंबुद्विप ॥ १ लाख जोजननो लांबो ने पहोलो छे । ते वा
टलो तेलना पुडलाने आकारे छे १ वाटलोरथनापइडानेआकारेछे २ वाटलो
कमलनीकर्णिकानेआकारेछे ३ वाटलोपूर्णचंद्रमानेआकारेछे ४ ॥ तेहनि परिधि
॥ ३ लाख १६ हजार २२७ जोजन ३ कोश १२८ धनूष ने साडातेर अंगुल
झाझेरानि छे ॥ हवे जंबुद्विप १० द्वारेकरि वखाणेछे ॥ गाथा । खंडा १ जोयण
२ वासा ३ ॥ पव्वय ४ कुडाय ५ तिच्छ ६ सेढिउ ७ ॥ विजय ८ द्दह ९ सलि
लाउ १० ॥ पिंडएहोइसंघहणी ॥ १ ॥ ए दश द्वार छे॥तेहमां प्रथम खंमाद्वार
कहेछे । जंबुद्विपना भरतसारिखा ॥१९०॥ खांमुवा छे ॥ ते किम ॥ भरतक्षेत्रनुं
॥१ खांडवुं ॥ चुलहिमवंत पर्वतना २ खांडवा ॥ हेमवय क्षेत्रना ॥४॥ खांमवा
महाहिमवंत पर्वतना ८ खांडवा ॥ हरिवास क्षेत्रना १६ खांडवा ॥ निषढ पर्व
तना ३२ खांडवा ॥ महाविदेह क्षेत्रना ६४ खांडवा ॥ निलवंत पर्वतना ३२

खांडवा ॥ रमकवास क्षेत्रना १६ खांडवा ॥ रूपि पर्वतना ८ खांडवा ॥ एरण
वय क्षेत्रना ४ खांडवा ॥ शिखरि पर्वतना २ खांडवा ॥ इरवत क्षेत्रनुं १ खांडवुं
एवं सर्व मिलिने विखंभ पहोलपणे ॥ दक्षिण उत्तरे थइने । भरत जेवडा पहो
लपणे १९० खांडवा थाय ॥ इति पहिलो खंडाद्वार समाप्तं ॥ १ ॥ हवे बिजो
जोयणद्वार कहेछे ॥ जोयण कहेता जंबुद्विपना । च्यारे हांशे जोजन जोजनना
खंड करिये तिवारे सातसें नेवुं कोडि छपनलाख चोराणुं हजार एकसो ने पं
चास चउरंसा थाय । उपरे १ कोश पनरसें पनर धनूष वधे।उपर ६० अंगुल
वधे ॥ २ ॥ इति बिजो जोयणद्वार समाप्तं ॥ हवे त्रिजो वासाद्वार कहेछे।वासा
कहेता जंबुद्विपनेविषे ॥ ७ ॥ क्षेत्र ते ॥ भरत ॥ १ ॥ हेमवय ॥ २ ॥ हरिवास
॥ ३ ॥ महाविदेह ॥ ४ ॥ रमकवास ॥ ५ ॥ एरणवय ॥ ६ ॥ इरवत ॥ ७ ॥ ए
॥ ७ क्षेत्र ॥ तथा एक महाविदेहना ४ भाग गणिये तो पूर्व महाविदेह ॥ ७ ॥

पश्चिममहाविदेह ॥ ८ ॥ देवकुरु ॥ ९ ॥ उत्तरकुरु ॥१०॥ एवं ॥ ६ ॥ ने ॥ ४ ॥ भेलता ॥ १० ॥ क्षेत्र थाय ॥ तेहनुं विखंभपणुं ॥ १ ॥ बाहा ॥२॥ जीवा ॥३॥ धनुषपिठ ॥ ४ ॥ ए ॥ ४ ॥ कहेछे ॥ भरतक्षेत्रना २ भेद ॥ दक्षिणभरत ॥१॥ उत्तरभरत ॥ २ ॥ दक्षिणभरततनुं विखंभपणुं ॥ २३८ ॥ जोजन ने ॥ ३ ॥ कलानुं । एहनि बाहा नथि । तेहनि जीवा ॥ ९७४८ ॥ जोजन ने ॥ १२ ॥ कला तेहनि धनुषपिठ ॥ ९७६६ ॥ जोजन ने १ कला झाझेरि ॥ १ ॥ हवे उत्तरभरततनुं विखंभपणुं ॥ २३८ ॥ जोजन ने ३ कलानुं । तेहनि बाहा ॥१८९२॥ जोजन ने साढिसात कलानि । तेहनि जीवा ॥ १४४७१ ॥ जोजन ने ॥६॥ कला माठेरि । तेहनि धनूषपिठ ॥ १४५२८ ॥ जोजन ने ॥ ११ ॥ कलानि एवं इरवत क्षेत्रजाणवुं ॥ २ ॥ १ ॥ हिमवय १ हिरणवय २ ए २ क्षेत्रनुं पहोलपणुं २१०५ जोजन ने ॥ ५ कलानुं ॥ तेहनि बाहा ॥ ६७५५ ॥ जोजन ने ३ कला

तेहनि जीवा ॥ ३७६७४ ॥ जोजन ने १६ कला॥तेहनि धनूषपिठ ॥३८७४०
जोजन ने ॥ १० ॥ कला ४ हरिवास ॥ १ रमकवास ॥ २ ॥ ९ ॥ २ ॥ क्षे
त्रनुं विखंभपणुं ॥ ८४२१ ॥ जोजन ने ॥ १ ॥ कला ॥ तेहनि बाहा ॥१३३६१
जोजन ने ॥ ६ ॥ कला ॥ तेहनि जीवा ॥ ७३९०१ ॥ जोजन ने ॥ १७ ॥ कला
तेहनि धनूषपिठ ॥ ८४०१६ ॥ जोजन ने ॥ ४ ॥ कला ॥ ६ ॥ महाविदेह क्षे
त्रनुं विखंभपणुं ॥ ३३६८४ ॥ जोजन ने ॥ ४ ॥ कला ॥ तेहनि बाहा ॥
॥ ३३७६७ ॥ जोजन ने ॥ ७ ॥ कला ॥ तेहनि जीवा ॥ १ ॥ लाख जोजननि॥
तेहनि धनूषपिठ ॥ १५८११३ ॥ जोजन ने ॥ १६ ॥ कला झाझेरि ॥ ७ ॥ देव
कुरु उत्तरकुरु ए २ क्षेत्रनुं विखंभपणुं ॥११८४२॥ जोजन ने २ कलानुं ॥तेहनि
बाहा नथि । तेहनि जीवा ॥ ५३००० ॥ जोजननि ॥ तेहनि ॥ धनूषपिठ ॥
॥ ६०४१८ ॥ जोजन ने १२ कला ॥ ९ ॥ इति त्रिजो वासाधार समाप्तं ॥ ३ ॥

हवे ॥ ४ ॥ चोथो पव्वयद्वार कहेछे ॥ पव्वय क० जंबुद्विपनेविषे ॥ २६ए ॥ पर्वत छे । तेकिम ॥ ६ ॥ वर्षधर पर्वत ॥ १ मेरु ॥ चित्त १ ने विचित्त ॥ २ ॥ जमक ॥ २ ॥ २०० ॥ कंचनगिरि ॥ ४ ॥ गजदंता ॥ १६ ॥ वखारा ॥ ३४ ॥ लांबा वैताढ ॥ ४ ॥ वाटला वैताढ ॥ एवं सर्व मिलिने ॥ २६ए ॥ पर्वत छे। तेहनुं उंचपणुं । उंडपणुं । विखंभपणुं बाहा । जीवा धनूषपिठ । कहेछे । चुलहिम वंत १ ने शिखरि २ ए ॥ २ ॥ पर्वत सो सो जोजनना उंचा छे ॥ अने पंचवीस पंच वीश जोजनना धरतीमां उंडाछे । तेमनुं पहोलपणुं ॥ १०५२ ॥ जोजन ने १२ कलानुं ॥ तेमनि बाहा ॥५३५०॥ जोजन ने ॥ १५ ॥ कला ॥ तेमनि जीवा ॥ २४ए३२ ॥ जोजन ने अर्द्ध कला माछेरि ॥ तेमनि धनूषपिठ ॥ २५२३० ॥ जोजन ने ॥ ४ ॥ कला ॥ २ ॥ महाहिमवंत नेरुपि । ए ॥ २ ॥ पर्वत बसे बसे जोजनना उंचा ॥ अने । पंचाश पंचाश जोजनना धरतीमां उंडा छे । तेमनुं वि

खंभपणुं ॥ ४२१० ॥ जोजन ने १० कलानुं ॥ तेमनि बाहा ॥ ९२७६ ॥ जोजन ने ॥ ९ ॥ कला ॥ तेमनि जीवा ॥ ५३९३१ ॥ जोजन ने ६ कला ऊझेरि तेमनि धनूषपिठ ॥ ५७२९३ ॥ जोजन ने १० कला ॥ ४ ॥ निषढ ॥ १ ॥ निलवंत ॥ २ ॥ ए ॥ २ ॥ पर्वत च्यारसो च्यारसो ॥ जोजनना ऊंचा छे । अने सो सो जोजनना धरतीमां ऊंम्हा छे ॥ तेमनुं विखंभपणुं ॥ १६८४२॥ जोजन ने ॥ २ ॥ कलानुं । तेमनि बाहा ॥ २०१६५ ॥ जोजन ने ॥ २ ॥ कला तेमनि जीवा ॥ ९४१५६ ॥ जोजन ने ॥ २ ॥ कला । तेमनि धनूषपिठ ॥ ॥ १२४३४६ ॥ जोजन ने ९ कला ॥ ए ॥ ६ ॥ पर्वत थया ॥ ६ ॥ मेरुपर्वत ॥ १ ॥ लाख जोजननो छे तेमांहि ॥१॥ हजार जोजननो धरतीमांहि ऊंम्हो छे। तेहमांहि प्रथम २५० जोजन पृथ्वीमय छे ॥ २५० ॥ जोजन पाषाणमय छे ॥२५०॥ जोजन वज्र हीरामय छे ॥२५०॥ जोजन शर्कर पृथ्वीमय छे ॥ एवं

॥ १ ॥ हजार जोजननो उंडो छे । ए प्रथम कांम ॥ ते उपरे नवाणुं हजार जो
जननो मेरु उंचो छे । तेहमांहि । पोणा सोल हजार जोजन अंकरत्नमय छे ॥
पोणा सोल हजार जोजन स्फटिकरत्नमय छे । पोणा सोल हजार जोजन
पिला सुवर्णमय छे ॥ पोणा सोल हजार जोजन रूपामय छे।ए ६३ हजार जो
जननो बिजो कांम ॥ तेउपरे त्रिजो कांम । छत्रिश हजार जोजननो जांबुनंद
राता सुवर्णमय छे ॥ एवं सर्व मिलिने ॥ १ ॥ लाख जोजननो मेरु पर्वत छे ॥ ते
मूले १००९० जोजन ने एक जोजनना ११ भाग करिये तेहवा १० भाग ।
एटलो धरतीने मूले पहोलो छे ॥ दश हजार जोजननो । धरतीने समभूतले
लांबो पहोलो छे ॥ धरतीथकि इग्यार हजार जोजन उंचा जाइये ॥ तिहां नव
हजार जोजननो लांबोने पहोलो छे । इम इग्यार इग्यार हजारे १ हजार घ
टाम्ता शिखरे १ हजार जोजननो लांबो पहोलो छे तेहनी त्रिगुणि झाझेरि प

रिधि छे। मेरुने ॥ ४ ॥ वन छे ॥ भद्रशाल वन ॥ १ ॥ नंदनवन ॥ २ ॥ सोम
नसवन ॥ ३ ॥ पंडगवन ॥ ४ ॥ भद्रशालवन ते। मेरुने चउपखेर धरतीउपरे
छे। ते पूर्व पश्चिमे बाविश बाविश हजार जोजननुं लांबु छे। अने अढिसो अ
ढिसो जोजननुं उत्तर दक्षिणे पहोलुं छे। तेहने एक पद्मवरवेदिका छे॥एक वन
खंडे सघले चउपखेर विंटिछे ॥ मेरु पर्वतथकि पूर्व दिशे ॥५०॥ जोजन वनमां
जाय। तिहां ॥१॥ सिद्धायतन छे।ते ५० जोजननुं लांबु ने ॥ २५ ॥ जोजननुं
पहोलुं छे। अने ॥ ३६ ॥ जोजननुं उंचु छे। अनेक स्तंभ छे। ते सिद्धायतनने
३ बारणा छे ॥ पूर्वे ॥ १ ॥ दक्षिणे ॥ २ ॥ उत्तरे ॥३॥ तेहना दरवाजा ॥ आठ
आठ जोजनना उंचा छे। ने ॥ ४ ॥ जोजनना पहोला छे ॥ ते सिद्धायतनना
घणुं मध्य दिश विभागनेविषे एक मणिमय पिठिका छे । ते ॥ ८ ॥ जोजननि
लांबिने पहोली छे ॥४॥ जोजननि जाडपणे छे। सर्व रत्नमय छे। ते उपरे ॥१॥

देवछंदो कह्यो ॥ ते ॥ ८ ॥ जोजननो लांबोने पहोलो छे । अने ॥ ८ ॥ जोज
ननो झाझेरो ऊंचो छे । तिहां जीनप्रतिमा छे तेहनो वर्णव देवछंदो जाव धूपना
कडुछा छे । एक कह्युं तिम च्यारे दिशे ॥४॥ सिद्धायतन छे ॥ एमज जाणवा ॥
च्यारे दिशे । मेरुपर्वतसुं ॥५०॥ जोजन इशान कुणे वनमे जाय तिहां ॥४॥ वा
वडिउ छे॥मेरुपर्वतसुं ॥५०॥ जोजन अग्नि कुणे वनमे जाय तिहां॥४॥वावडिउ
छे ॥ मेरुपर्वतसुं ॥ ५० ॥ जोजन नैऋत कुणे वनमे जाय तिहां ॥ ४ ॥ वावडिउ
छे मेरुपर्वतसुं ५० जोजन वायव्य कुणे वनमां जाय तिहां ॥ ४ ॥ वावडिउ छे ॥
ते एकेकि वावडि ॥ ५० ॥ जोजननि लांबि । अने २५ जोजननि पहोलि छे ।
अने दश दश जोजननि ऊंडियो छे ॥ तेमांहि च्यारे । दिशे तोरणसहित छे ।
ते वावडियोना नाम ॥ पद्मा ॥ १ ॥ पद्मप्रभा ॥ २ ॥ कुमुदा ॥ ३ ॥ कुमुदप्रभा
॥ ४ ॥ ए ॥ ४ ॥ वावडियो मध्ये ॥ २ ॥ शक्रेंद्रनाने ॥ २ ॥ इशानेंद्रना महोल

छे ॥ ते च्यारे पांचसो पांचसो जोजनना उंचा छे । अने । अढिसो अढिसो जोजनना लांबा ने पहोला छे । उंचाशिखरबंध जाणवा । नद्रशाल वनमां ॥८॥ कुट छे॥नद्रशालवनथकि पांचसें जोजन मेरुउपरे जइये । तिहां नंदनवन आवे। ते नंदनवन ॥ ५०० ॥ जोजन चक्रवाल विखंन्नपणे फिरतो वाटलो वलयाने आकारे छे ॥ ते मेरुपर्वतने ढुंकमुं छे ॥ जिहां घणा देवता देवांगना हाश्यरति खेलेछे ॥ तिहां पण ॥ ४ ॥ सिद्धायतन छे ॥ १६ ॥ वावमिउ छे ॥ ४ ॥ महोल छे । पूर्वनिपरे ॥ए॥ कुट छे ॥ वलि नंदनवनथकि । साढाबासठ हजार जोजन उंचा जइये । तिहां सोमनसवन आवे॥ ते॥ ५०० ॥ जोजन चक्रवाल विखंन्न पणे फिरतो वाटलो वलयाने आकारे छे ॥ मेरुने विंटि रह्युंछे ॥ ४ ॥ सिद्धाय तन छे ॥ १६ ॥ वावमिउ छे ॥ ४ ॥ महोल छे ॥ तिहांथकि ॥ ३६ ॥ हजार जोजन मेरुने शिखरे जइये तिहां पंमगवन आवे ते ॥ ४ए४ ॥ जोजन चक्रवाल

विखंभपणे फिरतो वाटलो वलयाने आकारे छे ॥ मेरुनि चुलिकाने विंटि र ह्युंछे ॥ पंडगवननेविषे ॥ १ ॥ चुलिकाछे ॥ ते ४० जोजननि उंचि छे ॥ १२ ॥ जोजननि मूले पहोलि छे । अने ४ जोजननि मथाले पहोलि छे । आठ जोज ननि विचमें पहोलि छे। गायना पुंछने आकारे छे॥सर्व वैरुलि रत्नमयछे॥तेहने एक पद्मवर वेदिका छे॥ उपर घणि समोरमणिक भूमिका छे । ते चुलिका उपरे १ सिध्धायतन छे ॥ ते १ कोशनुं लांबु ने । अर्ध कोशनुं पहोलुं छे अने देशो उणुं कोश उंचुं छे । अनेकस्तंभा छे जावधुपना कडुछा छे ॥ ते पंडगवनमां ॥४॥ सिध्धायतन छे ॥ १६ ॥ वावमित छे ॥ ४ ॥ महोल छे । पूर्वनिपरे जाणवुं।पंडग वनमां ॥ ४ ॥ अभिषेकशिला छे । तेहना नाम ॥ पंडु शिला ॥ १ ॥ पंडु कंब लशिला ॥ २ ॥ रक्त शिला ॥ ३ ॥ रक्तकंबलशिला ॥ ४ ॥ ए ॥ ४ ॥ शिला कहि ते । अर्ध चंद्रमा ने आकारे छे ॥ पूर्व पश्चिमनि शिला। उत्तर दक्षिणपां

चसो पाचसो जोजननी लांबि ठे ॥ अने पूर्व पश्चिमे अढिसो अढिसो जोजननि पहोलि ठे ॥ उत्तर दक्षिणनि शिला ते पूर्व पश्चिमे पांचसो पांचसो जोजननि लांबि ठे ॥ अने उत्तर दक्षिणे अढिसो जोजननि पहोलि ठे ॥ ४ ॥ जोजननि जाम्पणे ठे । सर्व कनकमय ठे । ए ४ ने त्रिण दिशो पावम्यिा ठे ॥ पूर्व पश्चिमनि शिलाउपरे बे बे सिंहासन ठे । अने उत्तर दक्षिणनि शिलाउपरे एकेकुं सिंहासन ठे ॥ ते पांचसो पांचसो धनूषना लांबा ने पहोला ठे ॥ अने २५० धनूषना उंचा ठे । तिहां तिर्थंकर देवनो जन्म महोठव करेठे । जंबुद्विपमध्ये जघन्य २ तिर्थंकरनो । ने उत्० ४ तिर्थंकरनो जन्ममहोठव करेठे ॥ मेरुना १६ नाम कहेठे ॥ मंदर ॥ १ ॥ मेरु ॥ २ ॥ मनोरम ॥ ३ ॥ सुदर्शन ॥ ४ ॥ स्वयंप्रभ ॥ ५ ॥ गिरिराज ॥ ६ ॥ रत्नोच्चय ॥ ७ ॥ तिलकोपम ॥ ८ ॥ लोकमध्य ॥ ए ॥ लोकनाभि ॥ १० ॥ रत्न ॥ ११ ॥ सूर्यावर्त ॥ १२ ॥ सूर्यावरण

॥ १३ ॥ उत्तम ॥ १४ ॥ दिशादि ॥ १५ ॥ अवतंश ॥ १६ ॥ ए १६ नाम कह्या ॥ ७ चित्त ॥ १ विचित्त ॥ २ ॥ ए ॥ २ ॥ पर्वत देवकुरु क्षेत्रमां छे ॥ निषढपर्वतथकि उत्तरे ॥ ८३४ ॥ जोजन ने एक जोजनना ॥ ७ ॥ भाग करिये तेहवा ४ भाग जइये तिहां सीतोदा नदीने पूर्व पश्चिमने कांठे छे ॥ २॥ जमक ॥ २ ॥ पर्वत उत्तरकुरु क्षेत्रमां छे ॥ निलवंतपर्वतथकि दक्षिणे ॥ ॥ ८३४ ॥ जोजन ने १ जोजनना ७ भाग करिये तेहवा ॥ ४ ॥ भाग जइये । तिहां सिता नदीने पूर्व पश्चिमने कांठे छे ॥ चित्त १ विचित्त ॥ २ ॥ जमक ॥ ३ ॥ ए ४ ॥ पर्वत १ हजार जोजनना उंचा छे ॥ अने अढिसो जोजनना धरती मांहि उंडा छे ॥ एक हजार जोजनना मूले लांबा पहोला छे ॥ साढासातसें जोजनना विचमां लांबा पहोला छे । उपरे पांचसो जोजनना लांबा पहोला छे । तेहनी त्रिगुणी जाजेरि परिधि छे ॥ ११ ॥ बसे कंचन गिरि

पर्वत ते सिता सितोदा नदीनि विचे। पांच पांच द्रह छे। एवं १०॥ एकेक द्रह पांसे एकेकि कोरे दश दश पर्वत छे॥ इम बिजी पांसे पण दश दश पर्वत छे। एवं ॥१०॥ द्रहने बेहुकांठे मिलिने। विश विश पर्वत छे दशने कांठे। बसे कंचन गिरि पर्वत थाय॥ते सो सो जोजनना ऊंचा छे।पंचविश पंचविश जोजनना धरती मांहि ऊंडाछे ॥ मूले सो जोजनना लांबा ने पहोला छे ॥ विचे पोणोसो जोजनना लांबा ने पहोला छे। उपरे पंचाश जोजनना लांबा ने पहोला छे। तेमनि त्रिगुणी झाझेरि परिधि छे ॥ २११ ॥ हवे ॥ ४ ॥ गजदंता कहेछे। गंधमादन ॥ १ ॥ मालवंत ॥ २ ॥ विज्जुप्रभ ॥ ३ ॥ सोमनसप्रभ ॥ ४ ॥ निषढथकि बे निलवंतथकि बे गजदंता निकलिने मेरु पासे च्यारे आविने अडकि रह्याछे। ते ३०२०९ जोजन ने ६ कलाना लांबा छे ॥ निषढ ने निलवंत ने अडतां च्यारसो च्यारसो जोजनना ऊंचा छे । अने सो सो जोजनना धरतीमां ऊंडाछे।

अने पांचसो पांचसो जोजनना पहोला ळे ॥ मेरु पांसे जइये तिहां पांचसो पांचसो जोजनना उंचा ळे। अने सवासो सवासो जोजनना धरतीमांहि उंडा ळे। घटता अंगुलने असंख्यातमे भागे पहोला ळे । ए हस्तिना दांतने आकारे ळे ॥ २१५ ॥ सोल वखारापर्वत ॥ चित्त ॥ १ ॥ विचित्त ॥ २ ॥ नलीन ॥ ३ ॥ एकसेल ॥ ४ ॥ त्रिकुट ॥ ५ ॥ वेसमण ॥ ६ ॥ अंजण ॥ ७ ॥ मायंजण ॥ ८ ॥ अंकावइ ॥ ९ ॥ पह्मावइ ॥ १० ॥ आशिविष ॥ ११ ॥ सुहावह ॥ १२ ॥ चंदे ॥ १३ ॥ सूरे ॥ १४ ॥ नागे ॥ १५ ॥ देवे ॥ १६ ॥ एवं ॥ १६ ॥ ते ॥१६५९२॥ जोजन ने २ कलाना लांबा ळे। पांचसो पांचसो जोजनना पहोला ळे। निषढ निलवंतथकि निकलतां च्यारसो च्यारसो जोजनना उंचा ळे। अने सो सो जोजनना धरतीमां उंडा ळे॥ सिता सितोदा पांसे पांचसो पांचसो जोजनना उंचा ळे। अने सवासो सवासो जोजनना धरतीमांहि उंडा ळे। पांचसो पांचसो जो

जनना पहोला छे। वखारापर्वत घोडाना खंधने आकारे छे ॥ २३१ ॥ चउत्रिश लांबा वैताढ छे ॥ तेमांहि ॥ १ ॥ भरतनो वैताढ ॥ १ ऐरवतनो वैताढ। अने ३२ विजयना॥३२॥एवं॥३४॥वैताढ।ते पंचविश पंचविश जोजनना उंचा छे। अने सवाछे जोजनना धरतीमांहि उंडा छे। पंचाश पंचाश जोजनना पहोला छे। तेमनि बाहा ४८८ जोजन ने १६ कला ऊऊरि छे। तेमनि जीवा १०७२० जोजन ने १२ कलानि। तेमनि धनूषपिठ १०७४३ जोजन ने १५ कला। एकेके वैताढे बे बे गुफा छे। तिमिसगुफा १ खंडप्रपातगुफा ॥ २ ॥ ए ॥ २ ॥ गुफाउ। पंचाश पंचाश जोजननि लांबिउ छे। अने १२ जोजननी पहोलिउ छे। अने आठ जोजननि उंचिउ छे। तेमांहि बे बे नदी छे। तेहना नाम उमगजला ॥ १ ॥ निमगजला ॥ २ ॥ एकविंश जोजन जइये तिहां उमगजला नदी आवे। ते त्रिण जोजनना पहोटमां छे। तेहमांहि हाथि घोडा बलद मनुष्यनुं

कलेवर कचरो पडे तेहने त्रिणवार उमाडि उछालि नांखे ते कारणे उमगजला कहिये । तिहांथि २ जोजन आघा जइये तिहां निमगजला नदी छे । ते ३ जोजनना पहोटमां छे तेहमांहि हाथि घोडा मनुष्य बलदनुं कलेवर अनेरुं पुद्गल पडे तेने त्रिणवार उमाडिने हेठे बेसाडे तेकारणे निमगजला कहिये ॥ शेष ॥ ३२ ॥दिर्घ वैताढ महाविदेह क्षेत्रमांहि छे। ते पण ए सरिखा छे । पण बाहा जीवा धनुषपिठ नथि । पल्यंगने आकारे छे ॥ ॥ ॥ हवे ॥ ४ ॥ वाटला वैताढ कहेछे । खडावइ ॥ १ ॥ वियडावइ ॥ २ ॥ गंधावइ ॥ ३ ॥ मालवंत । ए ॥ ४ ॥ वाटला वैताढ जुगलियाना क्षेत्रमां छे । ते ॥ १ ॥ हजार जोजनना ऊंचा छे ॥ २५० ॥ जोजनना धरतीमांहि ऊंडा छे । मूले ॥ १ ॥ हजार जोजनना लांबा ने पहोला छे । धानना कोठारने आकारे छे ॥ तेमनि ॥३१६२॥ जोजन झाझेरानि परिधि छे स्वेत वर्णं छे ॥ एवं सर्वं मिलिने ॥ २६९ ॥ पर्वत

थया ॥ इति ॥ ४ ॥ चोथो पर्वतद्वार समाप्तं ॥ ४ ॥ हवे ५ मो कुटद्वार ॥ कहेछे। कुम्रायक० । जंबुद्विपमांहि ॥ ५२५ ॥ कुट छे ॥ तेमांहि ॥ ४६७ ॥ कुट पर्वत उपरे छे । तेहनो विवरो कहेछे ॥ ३४ ॥ दिर्घ वैताढ । निषढ ॥ १ ॥ निलवंत ॥ २ ॥ मेरु ॥ ३ ॥ एवं ॥ ३७ ॥ पर्वत ॥ अने । विद्युत्प्रभ ॥ १ ॥ ने मालवंत ॥ २ ॥ ए ॥ ॥ २ ॥ गजदंता । ए ३९ पर्वत उपरे नव नव कुट छे ॥ ३९ ॥ ने नवे गुणता ॥ ॥ ३५१ ॥ कुट थाय । चुलहिमवंत ने शिखरि ए २ पर्वतउपरे इग्यार इग्यार कुट छे ॥ एवं ॥ २२ ॥ महाहिमवंत ने रूपि । ए ॥ २ ॥ पर्वतउपरे आठ आठ कुट छे । एवं १६ कुट । सोल वखारा पर्वत उपरे च्यार च्यार कुट छे । एवं ॥ ॥ ६४ ॥ कुट । सोमनस ॥ १ ॥ ने गंधमादन ॥ २ ॥ ए ॥ २ ॥ गजदंताउपरे सात सात कुट छे । एवं ॥ १४ ॥ कुट ॥ एवं सर्व मलिने ॥ ४६७ ॥ कुट पर्वतउपरना थया । अने शेष ५८ कुट भूमि उपरना छे ते कहेछे ॥ ३४ ॥ ऋषभकुट

ते ॥ १ ॥ भरतनो ॥ १ ऐरवतनो । अने ॥ ३२॥ विजयना ॥ ३२॥ एवं ॥३४॥
अने भद्रशाल वनना ॥ ८ ॥ देवकुरुना ॥८॥ उत्तरकुरुना ॥ ८ ॥ एवं सर्व
मिळिने ॥ ५८ ॥ कुट भूमीउपरना थया ॥ एवं सर्व मिळिने ॥ ५३५ ॥ कुट
थया। इति ५ मो कुटद्वार समाप्तं ॥ ५॥ हवे ६ ठो तिर्थद्वार कहेछे ॥ तित्थक० ।
जंबुद्विपमध्ये ॥ १०२ ॥ तिर्थ छे। ते किम ॥ ३२ ॥ विजय ॥ १ ॥ भरत ॥१॥
ऐरवत। एवं ॥ ३४ ॥ ठेकाणा छे । एकेकामे त्रिण त्रिण तिर्थ छे। मागध ॥१॥
वरदाम ॥ २ ॥ प्रभास ॥ ३ ॥ ए ॥ ३ ॥ ते अग्निकुणे ॥ १ ॥ नैरुत कुणे ॥२॥
वायव्यकुणे ॥ ३ ॥ एवं ॥ ३४ ॥ त्रि १०२ तिर्थ थाय ॥ इति छठो तिर्थद्वार स
माप्तं ॥ ६ ॥ हवे ७ मो श्रेणिद्वार कहेछे ॥ सेढिउ क० । जंबुद्विप मांहि १३६
श्रेणियो छे । ते वैताढ्य पर्वतउपरे दश दश जोजन उंचा चढिये । तिहां १ द
क्षिणे ने ॥ १ ॥ उत्तरे बे विद्याधरनि श्रेणियो छे तेमांहि भरतना वैताढउपरे

गगन वल्लभादिक ॥ ५० ॥ नगर दक्षिणनि श्रेणिये छे । अने रथ चक्रवाला दिक ६० नगर उत्तरनि श्रेणिये छे । इमज इरवतना वैताढउपरे ६० नगर दक्षिणनि श्रेणिये छे । अने ५० नगर उत्तरनि श्रेणिये छे । महाविदेहना ३२ वैताढ उपरे दक्षिण उत्तरनि श्रेणिये पंचावन पंचावन नगर छे । सर्व मिलिने ३७४० नगर विद्याधरनि श्रेणिये छे। एवं ३४ ऊ ६८ विद्याधरनि श्रेणि। वलि विद्याधरनि श्रेणिथी १० जोजन उंचा चढिये तिहां आभियोगिया देवतानि ॥ २ ॥ श्रेणि आवे । दक्षिणे १ ने १ उत्तरे । एवं ३४ ऊ ६८ श्रेणि आभियोगिया देवतानि छे॥ एवं सर्व मिलिने ॥ ६८ ॥ विद्याधरनि ने ॥ ६८ ॥ देवतानि। एवं ॥ १३६ ॥ श्रेणियो छे। इति ७ मो श्रेणिद्वार समाप्तं ॥ ७ ॥ हवे ८ मो विजयद्वार कहेछे। विजय क० जंबुद्विपमांहि ॥ ३४ ॥ विजयरूप स्थानक छे। तेहना नाम। कछे ॥ १ ॥ सुकछे ॥ २ ॥ महाकछे ॥ ३ ॥ कछगावइ ॥४ ॥ आवर्त्ता

॥ ५ ॥ मंगला ॥ ६ ॥ पुखला ॥ ७ ॥ पुखलावती ॥ ८ ॥ ए ॥ ८ ॥ विज
यसिता महानदी ने उत्तर दिशे पूर्व महाविदेहने विषे श्रीमेरुपर्वतथि मां
ण्डिने सितामूखवनसुधिप्रथमखांडवुंजाणवुं ॥ १ ॥ वछे ॥ ए ॥ सुवछे १० महा
वछे ॥ ११ ॥ वछगावइ ॥ १२ ॥ रमे ॥ १३ ॥ रमक ॥ १४ ॥ रमणिक ॥ १५ ॥
मंगलावइ ॥ १६ ॥ ए ॥ ८ ॥ विजयासितानदीने दक्षिण पांसे सितामूखवनथि
मांडिने मेरुसुधि मायंजण वखारापर्वतसुधि विजुं खांडवुं जाणवुं ॥ २ ॥ पद्मे
॥ १७ ॥ सुपद्मे ॥ १८ ॥ महापद्मे ॥ १ए ॥ पद्मगवाइ ॥ २० ॥ संखे ॥ २१ ॥
कुसुदे ॥ २२ ॥ नलीणे ॥२३॥ नलीणावती ॥२४॥ ए ८ विजयसितोदानदीने
दक्षिणने कांठे विज्जुप्रन्न गजदंता पछि। अंकावति वखारापर्वतथि ते सितोदामू
खवनसुधि त्रिजुं खांडवुं जाणवुं ॥ ३ ॥ वप्पे ॥ २५ ॥ सुवप्पे ॥ २६ ॥ महावप्पे
॥ २७ ॥ वप्पगाइ ॥ २८ ॥ वग्गु ॥ २ए ॥ सुवग्गु ॥ ३० ॥ गंधिले ॥ ३१ ॥ गं

थिलावइ ॥ ३२ ॥ ए ८ विजय ते सितोदामुखवनथि मांमिने । सितोदा नदीने
कांठे देव वखारा पर्वतसुधि चोथुं खांम्वुं जाणवुं ॥४॥ ए ॥ ३२ ॥ विजयमहा
विदेह क्षेत्रमां छे ते सघलि विजय ॥ १६५०२ ॥ जोजन ने २ कलानि उत्तर
दक्षिणे लांबि छे। अने २२१३ जोजन माठेरानि पूर्वपश्चिमे पहोलियो छे
॥ १ ॥ भरत ॥ १ ॥ इरवत । एवं ॥ ३४ ॥ तिहां ॥ ३२ ॥ विजयनि । एक भर
तनि । एक इरवतनि । ए ॥ ३४ ॥ राजधानी छे ॥ ३४ ॥ तिमिसगुफा ॥ ३४ ॥
खंडप्रपातगुफा ॥ ३४ ॥ कृतमालदेवता ॥ ३४ ॥ नटमालदेवता ३४ ऋषभकुट
एटला वाना शास्वता छे । इति ८ मो विजयद्वार समाप्तं ॥ ८ ॥ हवे ए मो द्रह
द्वार कहेछे ॥ दह क० । जंबुद्विपमां ॥१६॥ द्रह छे । तेहना नाम । पद्मद्रह॥१॥
महापद्मद्रह ॥२॥ पुंडरिक द्रह ॥ ३ ॥ महापुंडरिकद्रह ॥४॥ तिगिछ द्रह ॥५॥
केशरिद्रह ॥६॥ ए ॥६॥ द्रह वृषधर पर्वतना ॥ हवे ५ द्रह देवकुरुने विषे छे ।

निषढद्रह ॥ १ ॥ देवकुरुद्रह ॥ २ ॥ सूर्यद्रह ॥ ३ ॥ सुलसद्रह ॥ ४ ॥ विद्युत्प्र
भद्रह ॥ ५ ॥ ए ॥ ५ ॥ द्रह देवकुरु क्षेत्रमां सितोदा नदीनि विचे छे । इमज
उत्तरकुरु क्षेत्रने विषे सितानदीने मध्य भागे ॥ ५ ॥ द्रह छे तेहना नाम । नि
लवंतद्रह ॥ १ ॥ उत्तरकुरुद्रह ॥ २ ॥ चंद्रद्रह ॥ ३ ॥ एरावतद्रह ॥४॥ माल
वंतद्रह ॥५॥ एवं १० ने ॥ ६ उपरला एवं १६ द्रह थया ॥ हवे १पद्म अने पुं
डरिकद्रह २ ए द्रह ॥ १ ॥ हजार जोजनना लांबा ॥ अने ५०० जोजनना
पहोला छे ॥ १० ॥ जोजनना धरतीमांहि उंडा छे । ए प्रमाणेज देवकुरु उत्तर
कुरुना १० द्रह जाणवा ॥ एकेका द्रहमांहि ॥ १२०५०१२० ॥ कमल छे । स
घला रत्नमय छे । पद्मद्रह मध्ये १ महोटुं कमल छे ते श्रीदेवीनुं छे ॥ अने
१०८ कमल श्रीदेवीना भंडारना छे ॥ ४ कमल महत्तारिकाना छे ॥ ७ ॥ कमल
अणिकाना छे ॥१६॥ हजार कमल आत्मरक्षक देवना छे ॥४॥ हजार कमल

सामानिक देवना छे ॥ ८ ॥ हजार कमल मांहिलीपरिषदाना छे ॥ १० ॥ हजार
कमल विचलि परिषदाना छे ॥ १२ ॥ हजार कमल बाहिरली परिषदाना छे।
हवे ३ कोट कमलना छे ॥ ३२ ॥ लाख कमल पहिला कोटना छे ॥ ४० ॥ लाख
कमल विचला कोटना छे ॥ ४८ ॥ लाख कमल बाहिरला कोटना छे। एवं सर्व
मिलिने १२०५०१२० कमल थया ॥ तेहमांहि महोटुं कमल ॥ १ ॥ जोजननु
लाबुं ने पहोलुं छे। अर्द्ध जोजननुं जाडुं छे ॥१०॥ जोजननुं पाणिमांहि उंडुं छे
॥ २ कोश पाणिथकि उंचुं छे ॥ १० जोजन झाझेरुं सर्वांगे परुप्युं। ते कमलनुं
वज्र रत्नमय मूल छे। रिष्ट रत्नमय कंद छे। वैरुलि रत्नमय निलवरणा बाहिर
ला पानडा छे। जंबुनंद राता रत्नसुवर्णमयमांहिला पानडा छे॥तपाव्या सोनामय
केशरा छे। नाना प्रकारना मणिमय जे उपरे पांखडियो छे। सोनानि कर्णिका छे।
बे कोशनि कर्णिका लांबि ने पहोली छे॥ एक कोशनो जाडपणे झोझो छे तेउपर

घणुं रमणिक छे। घणुंज मध्य देश नागे श्रीदेवीनुं घर छे। ते १ कोशनुं लांबु ने अर्ध कोशनुं पहोलुं छे॥ अने देशे ऊणुं कोश ऊंचुं छे अनेक स्तंभा छे घणाथोसुव र्णकरि ते जोवा योग्य छे॥ ते भुवनने ३ बारणा छे॥ पूर्वे ॥ १ ॥ दक्षिणे ॥ २ ॥ उत्तरे ॥३॥ ते बारणा ॥ ५०० धनुषना ऊंचाछे। अढिसे धनुषना पहोला छे। ते भुवनमे एक मणिपिठिका छे। ते ५०० धनूषनि लांबि ने पहोलि छे॥ २५० ॥ धनूषनी ऊंची छे। ते मणिपिठिका उपरे १ देवसेजा रहेवानो पल्यंग छे॥ हवे महापद्मद्रह ॥ १ ॥ महापुंडरिकद्रह। ए ॥ २ ॥ द्रह ॥ एकेको ॥ २ ॥ हजार जोजनो लांबो ने १ हजार जोजननो पहोलो छे। अने १० जोजननो धरती मांहि ऊंडो छे॥ महापद्मद्रहमां ह्रीदेवी रहेछे॥ महापुंडरिकद्रहमां बुद्धि देवी रहेछे॥ एहना कमल श्रीदेवीनिपरे जाणवा। पण कमलनुं मान बमणुं जाणवुं। ते मांहि महोटुं कमल ॥२॥ जोजननुं लाबुं ने पहोलुं छे॥ अने १ जोजननुं जाडुं

छे ॥ हवेतिगिछद्रह ॥ १ ॥ केशरिद्रह ॥ २ ॥ ए ॥ २ ॥ द्रह एकेको ॥ ४ ॥ ह
जार जोजननो लांबोने ॥ २ ॥ हजार जोजननो पहोलो छे ॥ १० ॥ जोजननो
धरतीमांहि उंमो छे ॥ तिगिछद्रहमां धृतिदेवी रहेछे । केशरिद्रहमां कीर्त्तिदेवी
रहेछे । एहनुं महोटुं कमल ॥ ४ ॥ जोजननुं लांबुं ने पहोलुं छे । अने २ जोजननुं
जाडुं छे । कमल श्रीदेविनिपरे जाणवा । इम सोले द्रहना ॥१२०५०१२० कमल
ने १६ गुणा करतां शाश्वता कमल ॥ १९२८०१९२० ॥ कमल थाय अने
५ द्रह देव कुरुमे ॥५॥ उत्तर कुरुमे ए १० द्रह धरती उपरे छे तेहने नामे देवता
नानाम छे । एक पल्यनुं आयुष छे । अने चुलहिमवंत पर्वत उपरे पद्मद्रह छे
तिहां श्रीदेवीनो वास छे । शिखरिपर्वत उपरे पुंडरिकद्रह छे ॥ तिहां लक्ष्मी
देवीनो वास छे महाहिमवंत पर्वत उपरे महापद्मद्रह छे ॥ तिहां ह्रिदेवीनो
वास छे । रूपिपर्वत उपरे । महापुंडरिक द्रह छे तिहां बुद्धिदेवीनो वास

छे । निषढपर्वत उपरे तिगिछ द्रह छे तिहां धृतिदेवीनो वास छे निलवंतपर्वत उपरे केशरि द्रह छे । तिहां कीर्त्तिदेवीनो वास छे ए ६ देवीयो भवन पतिनी जातिनि जाणवि । तेहनुं आयुष १ पल्यनुं छे इति ए मो द्रहद्वार समाप्तं ॥ ए ॥ हवे दशमे सलिला द्वार कहेछे ॥ सलिलाउ क० जंबुद्विप मध्ये ॥ १४५६०ए०॥ नदियो छे तेमांहि पद्मद्रहने पूर्वदिशिने तोरणेथि गंगा निकलि ॥ ५००॥ जोजन पूर्व साहमि गइ । तिहां गंगा वर्तन कुट छे तिहां अफलाणी । तिहांथि दक्षिण दिशे चालि ते ॥ ५२३ जोजन ने ३ कला दक्षिण दिशे पर्वतउपरे गइ । तिहां महोटा घडाना मूखमाथि पांणि पडे तिम मोतिना हारसरिखुं महामगरमछना मुखने आकारे परनालि जीभीकामांथि कांइक । अधिक १०० जोजन उंचेथि पाणि पडेछे । ते जीभीका अर्द्ध जोजननि लांबि छे । अने सवाछ जोजननि पहोलि छे ॥ प्रनालि मगरमछना मुख विकस्या तेहने संठाणेछे सर्व वज्र

मय छे । आछो तेजवंत छे ॥ तेमांहिथि पाणि पमे छे ॥ तिहां १ महोटो गंगाप्र
पात नामा कुंम छे । ते कुंम ॥ ६० ॥ जोजननो लांबो ने पहोलो छे ॥ १० ॥ जो
जननो ऊंमो छे । ते कुंमनि रूपामय उपकंठपालि छे । वज्र पाषाणमय तलो छे ।
सुखे मांहि उत्तरिये । नाना मणि रत्नेकरि बांध्योछे कांठो जेहनो ॥ वज्रमय
तलो छे । सुवर्णनो मध्य नाग छे । रूपानि वेलु छे । गंभिर शितल जल छे । अने
कमलने पानमे छायुं छे । घणा उत्पल कमल छे । कुमुद नलीन पुंमरिक शतपत्र
सहस्रपत्र कमलघणा छे । गंगा कुंडने ३ बारणा छे । त्रिण दिशे पावडिया छे।
पूर्व दिशे ॥ १ ॥ दक्षिण दिशे ॥ २ ॥ पश्चिम दिशे ॥ ३ ॥ पावमियानो वर्णव
जिम पाषाण तेहनो उपरलो नाग रिष्ट रत्नमय छे । वैरुलिरत्नमय स्तंना छे ।
सोना रुपाना पाटिया छे । लोहिताक्ष रत्नमय खिला छे । वज्रमयसांधो जडि
छे । मणिना आलंबन पकडवाने ॥ पावडिया आगले प्रत्येक प्रत्येक तोरण छे।

तेमणि सुवर्ण मुक्ताफल हारे करि शोभेछे। ते गंगाप्रपातकुंडनिविचे ॥ १ ॥ गंगा द्विपनामा द्विपो कह्यो ते ८ जोजननो लांबो ने पहोलो छे ॥ २ ॥ कोश पाणिथकि उंचो छे। सर्व वज्र रत्नमय छे। गंगाद्विपने उपरे घणुं रमणिक छे। ते उपर १ गंगादेवीनुं भवन कह्युं। ते १ कोशनुं लांबु ने। अर्द्ध कोशनुं पहोलुं छे अने देशे उणुं कोश उंचुं छे। अनेक स्तंभा छे तेहनो वर्णव श्रीदेवीनि परे जाणवो। गंगानो शास्वतो नाम छे। ते गंगाप्रपातकुंडना दक्षिण दिशना बारणाथि गंगा नदी निकलिने। उत्तर भरतमध्ये वहेतिथकि ७ हजार नदीसाथे खंडप्रपात गुफाने। वैताढ पर्वतने हेठे थइने ॥ दक्षिणार्द्ध भरतमांहि वहेति बिजी ७ हजार नदी भलतिथकि सर्व ॥ १४ ॥ हजार नदीने परिवारे जगतीने भेदिने पूर्वना लवणसमुद्रमांहि भलि इमज सिंधु पण पश्चिम दिशे जाणवि। सलिलाउ क०। जंबुद्विपमांहि १४५६०९० नदियो छे। तेहनो विवरो कहेछे ॥

गंगा ॥ १ ॥सिंधु ॥ २ ॥ रत्ता ॥ ३ ॥ रतवइ ॥ ४ ॥ ए ॥ ४ ॥ नदीयो मूल
थकि निकलता सवाछो जोजननि पहोलिउ। अने। अर्द्धगाउनि उंम्डियो छे। छे
हमे समुद्रमां जलता साढाबासठ जोजननि पहोलि अने अढि जोजननि उं
म्डियो छे। एकेकिनो चउद चउद हजार नदियोनो परिवार जाणवो ॥ सर्व मि
लिने ॥ १४ ॥ चोकुं ॥ ५६००० ॥ हजार नदियो थइ ॥ हवे रोहिया १ रोहि
तंसा २ ए २ नदि हेमवय क्षेत्रमां छे। अने सुवर्णकुला १ ने रूपकुला ॥ ए॥
॥ २ ॥ नदीयो हिरणवय क्षेत्रमां छे एवं ४ नदी निकलतां साढाबार जोजननि
पहोलि अने १ गाउनि उंम्डियो छे॥ छेहडे समुद्रमां जलतां ॥ सवासो जोज
नानि पहोलि अने अढि जोजननी उंम्डियो छे। एकेकिनो अठाविश अठाविश
हजार नदीयोनो परिवार जाणवो सर्व मिलिने। एक लाख ने १२ हजार न
दीयो थइ ॥ हवे हरिकंता ॥ १ ॥ हरिसलिला ॥ २ ॥ ए ॥ २ ॥ नदीयो हरि

वास क्षेत्रमां छे। अने नरकंता ॥१॥ नारिकंता२ ए॥२ नदीयो रम्यकवास क्षेत्रमां छे ॥ ए ४नदीयो मूले निकलतां पंचविश पंचविश जोजनिनि पहोलियो छे।अने ॥ २ गाउनि उंम्हियो छे । छेहमे समुद्रमां मलतां। अढिसो अढिसो जोजननि पहोलियो छे। अने पांच पांच जोजननि उंम्हियो छे ॥ एकेकि नदीनो परिवार छपन हजार छपन हजार नदीयोनो जाणवो । एवं ४ थइने ॥२॥ लाख ने २४ हजार नदीयो थइ ॥ सिता ॥ १ ॥ सीतोदा ॥ २ ॥ ए ॥ २ ॥ नदीयो महाविदेह क्षेत्रमां छे.। ते मूले ॥५०॥ पंचास पंचास जोजननि पहोलियो छे। च्यार च्यार गाउनि उंडियो छे ॥ छेहमे समुद्रमां मलतां। पांचसो पांचसो जोजननि पहोलियो छे। दश दश जोजननि उंम्हियो छे ॥ एकेकिनो पांच लाख ने बत्रिश हजारनो परिवार छे ॥एवं२नो परिवार १० लाख ने ६४ हजार नदियोनो जाणवो ॥ महाविदेह क्षेत्रनि १६ विजयमां । गंगा ॥ १ सिंधु ॥ २ ॥ छे । ते ॥

॥ १६ ॥ ळ बत्रिश थइ। अने १६ विजयमां। रत्ता ॥१॥ रत्तवइ ॥ २ ॥ छे ते पण
॥ १६॥ ळ ॥ ३२ ॥ थइ एवं महाविदेह क्षेत्रमां ६४ नदीयो छे ॥ ६४ ॥ नुं प
होळपणुं भरतनि गंगानि परे जाणवुं । ते एकेकिनो चउद चउद हजार नदी
योनो परिवार जाणवो चोसठ ने १४ हजारे गुणतां ८ लाख ने ए६ हजार न
दीयो थाय। अने देवकुरुनि ८४ हजार अने उत्तर कुरुनि ८४ हजार। एवं १
लाख ने ६८ हजार अने ८ लाख ने ए६ हजार मांहि भेळविये एटले ॥ १०
लाख ने ६४ हजार थाय एटलो परिवार सीता सीतोदानो जाणवो अने शेष
१२ नदीयोनो परिवार ३ लाख ने ए२ हजार एवं सर्वमिळिने १४ लाख ५६
हजार नदीयो थाय। अने ए० महोटी नदीयो जाणवी हवे ॥ १२ ॥ अंतर न
दीयो महाविदेहक्षेत्रमां छे ते ॥८॥ विजयनुं ॥ १ ॥ खांभवुं तेमांहि ॥३॥ नदीयो॥
पूर्व महाविदेहने उत्तर ने खांभवे ॥ ३॥ अने दक्षिणने खांडवे ॥३ ए ६॥ इमज

पश्चिममहाविदेहने उत्तर खांडवे ॥ ३ अने दक्षिणने खांडवे ॥ ३ एवं १२ अंतर नदीयो छे ते एकेकि सवासो सवासो जोजननि पहोलियो छे। अने अढि अढि जोजननि उंडियो छे ॥ १६५९२ ॥ जोजन ने २ कलानि लांबियो छे ॥ ते १२ अंतर नदीना नाम कहेछे ॥ गाहावइ ॥ १ ॥ दहावइ ॥ २ ॥ पंकावइ ॥ ३ ॥ ततजला ॥ ४ ॥ मतजला ॥ ५ ॥ उमतजला ॥ ६ ॥ खिरोदा ॥ ७ ॥ सिंहसोया ॥ ८ ॥ अंतोवाहिणी ॥ ९ ॥ उमिमालिनी ॥ १० ॥ फेणमालीनी ॥ ॥ ११ ॥ गंभीरमालिनी ॥ १२ ॥ एवं सर्व थइ महोटि नदीयो ॥ १४ ॥ ६४ ॥ ॥१२॥ थइने ९० नदीयो थइ। एहनो परिवार सर्व नदीयो थइने ॥१४५६०९० नदीयो थाय ॥ इति १० मो सलिलाद्वार संक्षेपथि समाप्तं ॥ १०॥ इति खंडा जोयण समाप्तं ॥

ॐनमः सिद्धं श्री अथ संजयाोत्ते
स्यते ॥ गाथा पन्नवणा १ वेय २
रागे३ ॥ कप्प ४ चरित ५ पडिसे
वणा ६ नाणे ७ ॥ तिथ्थेय ८ लिंगे
९ शरीरे १०॥ खेत ११ काल १२
गइ १३ ठिइ १४ संजम १५ नि
कासे १६ ॥ १ ॥ जोग १७ वउगे
१८ कसाए १९ ॥ लेशा २० प
रिणाम २१ बंध २२ वेदेय २३ ॥
कम्मोदीरणा २४ उव संपजहणा
२५ ॥ सन्नाय २६ आहारे २७
॥ २ ॥ नव २८ आगरिसे २९
कालं ३० तरेय ३१ ॥ समुघाय
३२ खेत ३३ फुसणाय ३४ ॥ भा
वेय ३५ परिमाणे ३६ खलु ॥ अ
पाबहुत्त ३७ संजयाणं ॥ ३ ॥ इति
गाथा त्रण संपूर्ण ॥

१ पन्न० ॥ सामायक चारित्रना बे
भेद । एक थोडा कालनुं ते प्रथम
जिनेश्वरने तथा चर्मजिनेश्वरने
वारे ॥१॥ अने बीजुं घणाकालनुं
ते बावीस जिनने वारे । तथा महा

विदेह षेत्रे २ ॥ १ ॥ छेदोपस्थापनी
यना बे प्रकार । एक अतीचार
सहित ने पंच महाव्रत आ
रोपीए । बीजुं अतीचाररहित ने
पंच महाव्रत आरोपीए २ । परि
हार विसुधचारित्रना बे प्रकार ।
एक तप करवा पेठो ॥ १ ॥ अने
बीजो परिहार विसुधचारित्र सेवी
ने नीकल्यो ते २ ॥ ३ ॥ सूक्ष्म संप
राय चारित्रना बे प्रकार । एक उप

क श्रेणीए चडतो ॥२॥ ४ ॥ यथा
ख्यातचारित्रना बे प्रकार । एक छद
मस्थ ॥ १ ॥ बीजो केवलीनो ॥२॥
२ सामायक ॥२॥ छेदोपस्थापनीय २
सवेदी ॥ ने अवेदी जो अवेदी हायेतो ।
उपसमवेदीनेषीणवेदहुवे । अने स
वेदी होय तो । त्रिणेवेदमां हुवे । अने
परिहार विसुधसवेदी होय पण
अवेदीन होय । सवेदी होय तो ।
पुरुष ॥ १ ॥ पुरुषनपुंसक । ए बे
वेदमेहुवे । सूक्ष्मसंपराय १ अने

जथाख्यात ए ॥२॥ अवेदी होय उपसमनेषीणवेदीहोय
३ आगला ॥ ४ ॥ चारित्रसरागी । अने जथाख्यातवीतरागी ते उप समनेपीणरागी होय ॥
४ स्थीतीकल्प ॥१॥ अस्थीतीकल्प ॥ २ ॥ जिनकल्प ॥ ३ ॥ थिवर कल्प ॥ ४ ॥ कल्पातीत ॥५॥ तेमां स्थीतीकल्पमां ॥५॥ चारीत्र लाभे अने अस्थीतीकल्पमां ३ चारीत्र लाभे सामायक ॥ १ ॥ सूक्ष्मसं

पराय ॥ २ ॥ जथाख्यात । ए ॥३॥ लाभे ॥ जिनकल्प अने थिवरकल्प ए ॥२॥ मां आगल्या ॥३॥ चा० लाभे ॥ कल्पातीतमां ॥ ३ ॥ चारीत्रलाभे सा० ॥ सु० जथाख्यात । ए । ३ लाभे ॥
५ पुलाक ॥ १ ॥ बकुस ॥ २ ॥ प्रतिसेवणा ॥ ३ ॥ कषायकुसील ॥४॥ निर्ग्रंथ ॥ ५ ॥ स्नातक ॥६॥ तेमां । पुलाक ॥ १ ॥ बकुस ॥ २ ॥ प्रतिसेवणा ॥ ३ ॥ ए ॥ ३ ॥ मा बे चा

रित्र लाभे । सामा ॥ १ ॥ छेदो० ।
ए २ चारीत्र लाभे । कषायकुषी
लमां आगला ॥ ४ ॥ चारीत्र
लाभे । निर्ग्रंथमांने स्नातकमा ।
एकजथाख्यात चारीत्र लाभे ॥
६ हवे प्रतिसेवणाद्वार कहेछे । प्रति
सेवीमां आगला ॥ २ ॥ चारित्र
लाभे तेमा पण मूल गुण ॥ उत्तर
गुण प्रतिसेवीमां बे आगल्या चा
रित्र लाभे । अने अप्रतिसेवी
मां तो ॥ ५ ॥ चारित्र लाभे ॥

७ हवे ज्ञानद्वार कहेछे । आगला
॥ ४ ॥ चारित्रमां ॥ २ ॥ ज्ञान
॥ ३ ॥ ज्ञान । तथा ॥ ४ ॥ ज्ञान
लाभे । जथाख्यातमां ज्ञान ॥५॥
भजना । अज्ञान एके चारित्रमां
लाभे नही । हवे केटलुं भणे ।
सामा० ॥ १ ॥ छेदो० २ । सूक्ष्म०
३ । जथाख्यात ४ । ए ॥ ४ ॥ चा
रित्रजघन्य ॥ ८ ॥ प्रवचनमाता ।
भणे । उत् ॥१४॥ पूर्व पुराभणे ।
परिहारवीसुधनवमा पूर्वनी । त्रि

जिआचारवछुन्नणे । ज० । देशे
जणा ॥ १० ॥ पुर्वन्नणे ॥
८ हवे तीर्थद्वार कहेछे ॥ तीर्थमां पांच
चारित्र लाभे । अने अतीर्थमां
॥ ३ ॥ चारित्र लाभे । ते सामा०
॥ १ ॥ सुक्ष्मसंपराय ॥ ७ ॥ जथा
ख्यात । ए ॥ ३ ॥ चारित्र लाभे ।
तिर्थंकर प्रत्येकबूधमा ॥ ३ ॥ चा
रीत्र लाभे । सामा० । सुक्ष्म० ।
जथाख्यात । ए ॥ ३ ॥ चारीत्र

९ हवे लिंगद्वार कहेछे । द्रव्यलिंग
आश्रीसलिंगमां ॥ ५ ॥ चारित्र
लाभे । अन्यलिंग ग्रहलिंगमां ।
परिहारवीसुध वरजीने ॥ ४ ॥ चा
रित्र लाभे । अने भावलिंग
आश्री । सलिंगमां ॥ ५ ॥ चारित्र
लाभे । अन्यलिंग ग्रहलिंगमां
एके चारित्र लाभे नही ॥
१० हवे सरीरद्वार कहेछे । सामा० ।
छेदो० । ए ७ मां ॥ ३ ॥ सरीर
॥ ४ ॥ सरीर तथा ॥ ५ ॥ सरीर

लाभे । पाछला ॥ ३ ॥ चारीत्रमां
॥३॥ सरीर लाभे । उदारीक ॥१॥
तेजस ॥ २ ॥ कार्मण ॥ ३ ॥

११ हवे खेत्रद्वार कहेछे । कर्मभूमीमां
जनम आश्रीछतआश्री ॥५॥ चा
रित्र लाभे । अकर्मभूमीमां एके
चारित्र न लाभे ॥ साहारण आ
श्रीकर्मभूमीमां अकर्मभूमीमां परी
हारवीसुधवरजीने ॥ ४ ॥ चारीत्र
लाभे ॥

१२ हवे कालद्वार कहेछे । अवसर्पि
णी उत्सर्पिणी ए २ मा ॥ ५ ॥
चारित्रलाभे । नोअवसर्पिणीनो
उत्सर्पिणीमां । छेदोप० । परि
हार० । ए ॥ २ ॥ वरजीने ॥ ३ ॥
चारित्र लाभे ॥

तेमां अवसर्पिणीमां जनम आश्री
॥ १ ॥ २ ॥ आरामां एके चारित्र
न लाभे ॥ ३ ॥ ४ ॥ आरामां
॥ ५ ॥ चारित्र लाभे । पांचमां आ
रामां ॥६॥ चारित्र लाभे । सामा०
॥ १ ॥ छेदो० ॥ २ ॥ ए ॥६॥ चा

रित्र लाभे । छठेआरे एके नलाभे ॥ हवे छतआश्री ॥ १ ॥ २ ॥ आरामां एके चारित्र न लाभे ॥ ३ ॥ ॥ ४ ॥ ५ ॥ आरामां ॥ ५॥ चारित्र लाभे ॥ छठा आरामा । एके चारित्र लाभे नही । संहारण आश्रीपरिहारवीसुध वरजीने ॥ ४ ॥ चारित्र लाभे । हवे चढता कालमां । जनमआश्री ॥ १ ॥ आरे एके चारित्र न लाभे ॥ २ ॥ ॥ ३ ॥ ४॥ आरामां ॥५॥ चारित्र

लाभे ॥ ५ ॥६॥ आरामां एके चारित्र लाभे नही । हवे छतआश्री ॥ १ ॥ २ ॥ आरामां एके चारित्र न लाभे ॥ ३ ॥४॥ आरामां ॥५॥ चारित्र लाभे ॥५॥ ६ ॥ आरामां एके चारित्र न लाभे । हवे साहारण आश्री परिहारवीसुधवरजीने ॥४॥ चारित्र लाभे । नोउत्सर्पिणी नोअवसर्पिणीमां॥जनमछतआश्री ॥ ६ ॥ जुगलीयाना खेत्रमां एके चारित्र न लाभे पंच महाविदेह

खेत्रमां । छेदो० । परिहारविसुध
वरजीने ॥३॥ चारित्र लाभे । हवे
साहारण आश्री परिहार वीसुध
वरजीने६अकर्मभूमि १महाविदेह
एवं७क्षेत्रमां ॥४॥ चारित्र लाभे ॥
१३ हवे गतिद्वार कहेछे । नरक ॥ १ ॥
तिर्यंच ॥२॥ मनुष्य । ए ॥३॥ ग
तिमां न जाय।१ देवगतिमां जाय।
तेमां । सामा० । छेदो० । ए २ आ
राधिकआश्री । जघन्य । पहेले
देवलोके उत्० । अनुत्तरविमाने

जाय । परिहारवीसुध । जघन्य०
॥१॥ देवलोकेजाय। अने। उत्०।
आठमे देवलोके जाय । सूक्ष्मसं
पराय ॥ १ ॥ जथाख्यात ॥ २ ॥
ए ॥ २ ॥ ज० । उ० । अनुत्तर वि
माने जाय। अने जथाख्यातवालो
मोक्ष पण जाय । हवे आराधिक
पांच पदवी पामे । ईंद्रनी ॥ १ ॥
सामानीकनी ॥२॥ त्रायत्रिंसकनी
॥ ३ ॥ लोकपालनी ॥ ४॥ अहमें
द्रनी ॥ ५ ॥ ए ॥५॥ पदवी पामे।

तेमा । सामा० नेछेदो० । ए ॥२॥
पांच पदवी पामे । परिहारविसुध
१ अहमेंद्रनी वरजीने ॥४॥ पदवी
पामे। सूक्ष्मसंपरायने जथाख्यात।
ए ॥२॥ १ अहमेंद्रनीपदवी पामे।
हवे विराधिक आश्री पांचे चारि
त्रवाळा। ज०। भवनपतीमां जाय।
उ० । पहीले देवलोके । जाय ।
पदवी पांचमांहेली एके न पामे ॥
१४ हवे स्थितिद्वार कहेछे । आवता
भवआश्री। आगळा ॥ २ ॥ चा
रित्रनी । ज० बे पल्यनी । उ० ॥
॥ ३३ ॥ सागरनी । अने परि
हारवीसुधनी । ज० बे पल्यनी
उ० ॥ १८ ॥ सागरनी ॥ सूक्ष्म
संपराय । जथाख्यात । ए २ चा
रित्रनी । जघन्य० उत्कृष्टी ॥३३
सागरनी ॥
१५ हवे संजमठाणद्वार कहेछे । आग
ळा॥३॥ चारित्रना असंख्याता था
नक। सूक्ष्मसंपरायना असंख्याता
थानक एक अंतर्मु० मांहि अने

जथाख्यातनुं एकज स्थानक ॥
हवे अल्पबहुत्व । सर्वथी थोडा ।
जथाख्यातना ॥ १ ॥ तेथी सूक्ष्म
संपरायना असंख्यातगुणा ॥ २ ॥
तेथी परिहारवीसुधना असंख्या
तगुणा ॥ ३ ॥ तेथी । सामा० ।
नेछेदोप० । मांहोमांहि तुल्य ने
असंख्यातगुणा ॥ ४ ॥
१६ हवे निकासद्वार कहेछे । पांचे
चारित्रना अनंतापर्यव जाणवा।
सामायक । सामायक । छेदो

प० । परिहारवीसुध साथे छग
णवध्यिा । उपला ॥ २ ॥ थी
अनंतगुणहीण ॥ १ ॥ छेदोप
स्था० । सामायक० छेदो० ।
परिहारवीसुधसाथे छगण वध्यि
या । उपला ॥ २ ॥ थी अनं
तगुणहीण ॥ २ ॥ हवे परिहारवी
सुध । सामा० छेदोप० । परिहार
वीसुधसाथे छगणवडिया । उपला
२ थी अनंतगुणहीण ॥ ३ ॥ हवे
सुक्ष्मसंपराय । सामायक । छेदो

ह्रुत्व । सर्वथी थोरुा । सामायक ।
ठेदोपस्थापनीकना ज० । पर्यव मां
होमांहि तुल्य । तेथी परिहारवीसु
धना । ज० पर्यव । अनंतगुणा ।
तेथी परिहारवीसुधना । उ० । पर्यव
अनंतगुणा तेथी सामायक० ठेदो
पस्थापनियना उत्० । पर्यव अनं
तगुणा अने मांहोमांहितुल्य । तेथि
सूक्ष्मसंपरायना । ज० पर्यव अनं
तगुणा । तेथी सूक्ष्मसंपरायना
उ० । पर्यव । अनंतगुणा । तेथी

प० । परिहारवीसुधथि अनंतगुण
अधिक । पणनो तुल्य० । सूक्ष्मसं
पराय । सूक्ष्मसंपरायसाथे ठठाण
वमीयो । जो हीणो होय तो । अ
नंतगुणहीणो । जो अधिको होय
तो अनंतगुण अधिक । अने
तुल्य पण होय । अने जथाख्या
तथि अनंतगुणहीण । अने जथा
ष्यात आगला ॥ ४ ॥ थी अनं
तगुण अधिक ॥ जथाष्यात जथा
ष्यातसाथे तुल्य ॥ हवे अल्पव

जथाख्यातना । ज० । उ० । पर्यव
अनंतगुणा ने मांहोमांहितुल्य
१७ हवे जोगद्वार कहेछे । पांचे चारित्र
सजोगीमां तेमन जोग ॥१॥ वचन
जोग ॥२॥ कायजोग ॥३॥ मां आ
गल्या चारित्र ॥ ४ ॥ लाभे अने
अजोगीमां एक जथाख्यात लाभे॥
१८ हवे उपयोगद्वार कहेछे । सागार
उपयोगमां पांचे चारित्र लाभे ।
अणागार उपयोगमां । सूक्ष्मसंप
राय वरजीने ॥४॥ चारित्र लाभे॥

१९ हवे कसायद्वार कहेछे । आगला
॥ ४ ॥ चारित्र सकसाई । एक छे
हलो अकसाई । आगला ॥ ३ ॥
चारित्रमां । संजलनो । क्रोध ॥१॥
मान ॥ २ ॥ माया ॥ ३ ॥ लोभ
॥ ४ ॥ ए ॥ ४ ॥ लाभे । अने सू
क्ष्मसंपरायमां । १ संजलनोलोभ
लाभे । अने जथाख्यात । उपस
मने ॥ १ ॥ क्षिणकसाई होय
२० हवे लेशाद्वार कहेछे । सलेसीमां
पांचे चारित्र लाभे । अलेसीमां

एक छेदलो । सामा० ॥ छेदोप
स्थापनीयमां लेसा ॥ ६ ॥ लाभे।
परिहारवीसुक्ष्ममां पाछली ॥ ३ ॥
लेसा लाभे उपला ॥ २ ॥ मां १
सुकल लेसालाभे
२१ हवे परिणामद्वार कहेछे। वर्द्धमान
परिणाममां पांचे चारित्र लाभे। हा
यमान परिणाममां आगला ॥४॥
चारित्र लाभे अवस्थित परिणाम
मां ॥ १ ॥ सूक्ष्मसंपराय वरजीने
॥४॥ चारित्र लाभे तेमां आगला
॥४॥ नी जघन्य वृद्धी ॥१॥ समो॥
उत्०॥ अंतर्मुहू०। अने जथाख्या
तनी ॥ ज० उ० वृद्धि। अंतर्मु०।
हवे हायमानमां आगला ॥ ४ ॥
नी ज० ॥१॥ समो। उ० अंतर्मु०।
हवे अवस्थितमां आगला ॥ ३ ॥
नी। ज० ॥१॥ समो। उ० ॥ ७ ॥
सम०॥ जथाख्यातनी। ज० ॥ १ ॥
समो। उत्कृष्टी। देशे उणी। पूर्व
कोडनी ॥
२२ हवे बंधद्वार कहेछे। आगला॥३॥

चारित्र ॥ ७ ॥ कर्म । तथा ॥ ८ ॥
कर्म बांधे ॥ ७ ॥ बांधे तो आउषू
वरजीने । सूक्ष्मसंपराय ॥६॥ कर्म
बांधे । आउषू मोहनी वरजीने।ज
थाख्यात एक सातावेदनीय बांधे।
अथवा अबंधपण होय ॥

२३ वेदद्वार कहेछे आगला ॥ ४ ॥ चा
रित्र आठे कर्मवेदे ॥ अने जथा
ख्यात सात कर्मवेदे। मोहनीयवर
जीने । तथा ॥ ४ ॥ वेदे तो । वेद
नी ॥१॥ आयु ॥ २ ॥ नाम ॥३॥
गोत्र० ए ४ वेदे

२४ हवे उदीरणाद्वार कहेछे । आग
ला ॥ ३ ॥ चारित्र आठ कर्मनी
उदीरणा करे ॥ ७ ॥ नी करे तो
आउषूं वरजीने ॥ ६ ॥ नी करे तो
वेदनी वरजीने । सूक्ष्मसंपराय
॥६॥ कर्मनी उदीरणा करे । आ
उषूं ॥ १ ॥ मोहनी वरजीने ।
॥५॥ नी करे तो । आउषूं मोह
नी । वेदनी वरजीने । जथाख्यात

॥ ५ ॥ नी उदीरणा करे । तथा
॥ २ ॥ नी करे तो । नाम ॥ १ ॥
गोत्र । ए ॥२॥ नी उदीरणा करे ॥
२५ हवे उवसंपजहणाद्वार कहेछे । सा
मायक चारित्रवालो चढे तो ।
छेदो० । सूक्ष्मसंपरायपणुं पामे ।
अने पडेतो असंजति० ने श्रावक
पणुं पामे ॥ १ ॥ छेदो० । चढे तो ।
परिहा । ० । सूक्ष्म० पणुं पामे ।
पडे तो सामा० । असंजती० ने
श्रावकपणुं पामे । परिहा० चढे
नही । ने पडे तो । छेदो० । असं
जतीपणुं पामे । सूक्ष्मसंप० चढे
तो जथाख्यातपणुं पामे । पडेतो ।
सामा० । छेदो० । असंजमपणुं
पामे ॥जथाख्यात चढे तो मोक्षमा
जाय । पडे तो । सूक्ष्म० । असंज
मपणुं पामे ॥
२६ हवे सन्नाद्वार कहेछे । सनावउता
मां । आगल्या ॥ ३ ॥ चारित्र
लाभे । अने नोसनावउतामां ।
पांचे चारित्र लाभे ॥

२७ हवे आहारद्वार कहेछे । पांचे चारित्र आहारकमां लाभे । एक जथाख्यात अणाहारकमां पण होय

२८ हवे भवद्वार कहेछे । सामा० । छेदो० । ज० ॥ १ ॥ भव ॥ उत्कृष्टा ॥ ८ ॥ भवकरे । बाकी ॥ ३ ॥ चारित्रवाला ज० १ भव । उ० ॥ ३ ॥ भव करे ॥

२९ हवे आकर्षद्वार कहेछे । एक भव आश्री सामायक ॥ जघन्य ॥ १ ॥ वारआवे उत्० प्रत्येकसें॥९००॥ वारआवे ॥ १ ॥ छेदो ॥ ० ॥ ज० ॥ १ ॥ उत्० वीसपहुत्तं ॥१२०॥ ॥ २ ॥ परिहार० । ज० ॥ १ ॥ उत्० ॥ ३ ॥ ३ ॥ सूक्ष्म० । ज० १ उ० ॥ ४ ॥ ४ ॥ जथाख्यात । ज० ॥ १ ॥ उ० ॥ २ ॥ ५ ॥ हवे घणा भवआश्री सामा० । ज० ॥ २ ॥ वारआवे उ० प्रत्येक हजारवार आवे ॥ १ ॥ छेदो० ज० ॥ २ ॥ उत्० ॥९६०॥२॥ परिहा० ज०२ उ० ॥ ७ ॥३॥ सूक्ष्म० । ज०॥२॥

उ० ॥ ए ॥ ४ ॥ जथाख्यात । ज०
॥ २ ॥ उ० ॥ ५ ॥ ५ ॥

३० हवे स्थितीद्वार कहेछे । एक वचन
आश्री । सामा० छेदो० । ज० ॥ १ ॥
समय । उ० । देशे उणी पूर्व कोम
नी । परिहा० । ज० ॥ १ ॥ समो
उ० ॥ २ए ॥ वरस उणी पूर्व कोम
सूक्ष्म० । ज० ॥ १ ॥ समो । उ० ।
अंतर्मु० जथाख्यातज० ॥ १ ॥
समो । उ० । देशे उणी पूर्व कोम ।
घणा जवआश्री । सामायकनि ।

ज० उ० । सवधाकाल । छेदोप० ।
ज० ॥ २५० ॥ वरस । उ० ५०
लाष कोम सागर । परिहा० । ज०
॥ २०० ॥ वरस । उ० देशे उणी
॥ २ ॥ पूर्व कोम । सूक्ष्म० । ज०
१ समो । उ० । अंतर्मु० । जथा
ख्यातज० । उ० । सवद्धाकाल ॥

३१ हवे अंतरद्वार कहेछे । एक वचन
आश्री । पांचे चारित्रनुं । ज० ॥
अंतर्मु० । उ० । अर्द्ध पुदगल देशे
उणुंआंतरुं पमे । बहुवचनआ

सामा० ज० । उ० । अंतर नथि
॥ १ ॥ छेदो० । ज० ॥ ६३००० ॥
वर्षउ० ॥ १८ कोडा कोड सागर
नुं । २॥ परिहा० । ज० ॥ ८४०००॥
वर्ष । उ० ॥ १८ ॥ कोडाकोड सा
गरनुं ॥ ३ ॥ सूक्ष्म जघन्य सम१
उ० । ६ मासनुं ॥ ४ ॥ जथाख्या
तनुं । ज० । उ० । आंतरु नथी ॥५॥
३२ हवे समुद्घातद्वार कहेछे । सा
मा । ० । छेदो० । ए ॥ २॥ मा ६ स
मुद्घातलाभे । परिहार० ॥ ३ ॥

समुद्घात पहेली । लाभे । सूक्ष्म० ।
समुद्घात नथी । जथाख्यातमां
॥ १ ॥ केवल समुद्घात लाभे ॥
३३ हवे खेत्रद्वार कहेछे । लोकने सं
ख्यातमे भागे । के असंख्यातमे
भागे । के घणे संख्यातमे भागे ।
ते घणे असंख्यातमे भागे के सर्व
लोकने विषे । उत्तर । लोकना अ
संख्यातमां भागमां तो । पांचे चा
रित्र लाभे । अने एक थजाख्यात
असंख्यातमे भागे । घणे असंख्या

उ० ॥ ए ॥ ४ ॥ जथाख्यात । ज०
॥ २ ॥ उ० ॥ ५ ॥ ५ ॥

३० हवे स्थितीद्वार कहेछे । एकवचन
आश्री । सामा० छेदो० । ज० ॥ १ ॥
समय । उ० । देशे उणी पूर्व कोरु
नी । परिहा० । ज० ॥ १ ॥ समो
उ० ॥ २ए ॥ वरस उणी पूर्व कोरु
सूक्ष्म० । ज० ॥ १ ॥ समो । उ० ।
अंतर्मु० जथाख्यातज० ॥ १ ॥
समो । उ० । देशे उणी पूर्व कोरु ।
घणा उत्कृआश्री । सामायकनि ।

ज० उ० । सवधाकाल । छेदोप० ।
ज० ॥ २५० ॥ वरस । उ० ५०
लाष कोरु सागर । परिहा० । ज०
॥ २०० ॥ वरस । उ० देशे उणी
॥ २ ॥ पूर्व कोरु । सूक्ष्म० । ज०
१ समो । उ० । अंतर्मु० । जथा
ख्यातज० । उ० । सवद्धाकाल ॥

३१ हवे अंतरद्वार कहेछे । एक वचन
आश्री । पांचे चारित्रनुं । ज० ॥
अंतर्मु० । उ० । अर्द्ध पुदगल देशे
उणांआंतरुं परुे । बहुवचनआश्री

सामा० ज० । उ० । अंतर नथि
॥ १ ॥ छेदो० । ज० ॥ ६३००० ॥
वर्सउ० ॥ १८ कोमा कोम सागर
नुं । २॥परिहा० । ज० ॥८४०००॥
वर्स । उ० ॥ १८ ॥कोमा कोम सा
गरनुं ॥ ३ ॥ सूक्ष्म जघन्य सम१
उ० । ६ मासनुं ॥ ४ ॥ जथाख्या
तनुं । ज० । उ० । आंतरु नथी॥५॥
३२ हवे समुद्घातद्वार कहेछे । सा
मा । ० । छेदो० । ए॥२॥ मा ६ स
मुद्घातलाने । परिहार० ॥ ३ ॥

समुद्घातपहेली । लाने । सूक्ष्म० ।
समुद्घात नथी । जथाख्यातमां
॥ १ ॥ केवल समुद्घात लाने ॥
३३ हवे खेत्रद्वार कहेछे । लोकने सं
ख्यातमे नागे । के असंख्यातमे
नागे । के घणे संख्यातमे नागे ।
ते घणे असंख्यातमे नागे के सर्व
लोकने विषे । उत्तर । लोकना अ
संख्यातमां नागमां तो । पांचे चा
रित्र लाने । अने एक थजाख्यात
असंख्यातमे नागे। घणे असंख्या

तमे भागे । ने सर्व लोकने विषे
लाभे ॥
३४ हवे फरसनाद्वार खेत्रद्वारनीपरे
जाणवो ॥
३५ हवे भावद्वार कहेछे । सामा० ।
छेदो० । परिहा० । सूक्ष्म० ए ॥४॥
मां । भाव १ षउपसम लाभे ।
जथाख्यातमां ॥ २ ॥ भाव लाभे ।
उपसम । ने षायक ए ॥२॥ लाभे ॥
३६ हवे परिमाणद्वार कहेछे । हवे पडि
वजमाणआश्री जो होय तो । सा

मा० ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ उ० प्रत्येक
हजार । छेदो० । परीहार० । ज०
॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ उत्० । प्रत्येकसें ।
सूक्ष्मसंपराय । ज० ॥ १ ॥ २॥३॥
उ० ॥ १६२ ॥ ते ॥१०८॥ षपक॥
॥ ५४ ॥ उपस । ० । जथाख्यात ।
ज० ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ उ० ॥१६२॥
ते ॥ १०८ ॥ षपक० ॥ ५४ ॥ उप
स० । पूर्वपडिवजमाणआश्री जो
होयतो । सामा । ज० । प्रत्येक ह
जार कोड । उत्० । प्रत्येक हजार

कोरू। छेदो० । प्रत्येकसे कोरू । उ० प्रत्येकसे कोरू ॥ परिहारवी सुध । ज० ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ उत्० । प्रथक हजार । सूक्ष्म० ज० ॥ १ ॥ ॥ २ ॥ ३ ॥ उ० । प्रत्येकसें ॥ ज थाख्यात । ज० । प्रत्येक कोरू । उ० प्रत्येक कोरू

३७ अल्पबहुत्वद्वार कहेछे । सर्वथी थोमा सूक्ष्मसंपराय ॥ १ ॥ तेथी परिहा० संषेजगुणा तेथी जथा ख्यात० संषेजगुणा ॥ ३ ॥ तेथी छेदो० संषेजगुणा ॥ ४ ॥ तेथी सामा० । संषेजगुणा लाभे ॥ ५ ॥ इति संजयाना बोल संपूर्ण ॥

॥ ॐ नमः ॥ अथ नियंठा लिख्यते

॥ गाथा ॥ पन्नवणा १ वेय २ रागे ३ ॥ कप्प ४ चरित्त ५ पमिसेवणा ६ नाणे ७ ॥ तीछिय ८ ॥ लिंगे ए सरीरे १० ॥ खेत्त ११ काल १२ गइ १३ ठीइ १४ संजम १५ नि कासे १६ ॥ १ ॥ जोगु १७ वउगे १८ कसाए १९ । लेसा २० परी

णाम २१ बंध २२ वेदेय २३ । क
म्मोदीरणा२४उवसंपजहणा २५।
सन्नाय २६ आहारे २७ ॥ २ ॥
भव २८ आगरीसे २९ कालं ३०
तरेय ३१ ॥ समुग्घाय ३२ खेत
३३ फुसणाय ३४ ॥ भावेय ३५ प
रीमाणे ३६ खलु । अप्पाबहुच्च
३७ नीयंठाणं ३ ॥ ए ३ गाथा
१ हवे १ पन्नवणा द्वार । पुलाक
॥ १ ॥ बकुस ॥ २ ॥ प्रति सेवणा
॥ ३ ॥ कषायकुसील ॥ ४ ॥ नी

यंठो ५ सनातक ६ ॥ पुलाक ते
सढुंसा धाननापुलानीपरे ॥ १ ॥
बकुस ते सढुंसा धाननीपरे ॥ २ ॥
प्रतीसेवना ते मसल्याधाननीपरे
३ कषायकुसील ते । उपण्याधान
नीपरे ॥ ४ ॥ नीयंठो ते कणकीस
हितचोषानीपरे ॥ ५ ॥ सनातकते
अणीसुध चोषानीपरे ॥ ६ ॥ पु
लाकना बे भेद । लबधीपुलाक ते
चक्रवर्तिनी सेन्याचूरण करण स
क्ती संपन्न ते लबधीपुलाक ॥ १ ॥

प्रतिसेवणापुलाक ते। मुलगुण उ
तरगुणमां दोप लगाडे। मुल गुण
ते पांच आश्रवमांहेलो अनेरो
दोप लगाडे ते। उतर गुण दोष ते
दश पचखाणमां दोष लगाडे ते पु
लाकना पांचभेद ज्ञान पु० ॥१॥
दर्शनपुलाक ॥२॥ चारित्रपुलाक
३ लिंगपु० ॥४॥ यथासूक्ष्मपुला
क ॥ ५ ॥ ते पुलाक ज्ञानादि अ
तीचार सेववेकरी संजमसाररहि
त करे तेने पुलाक कहीये ॥ १ ॥

बकुस ते सरीर बकुस ते सरीरनी
सुश्रूषा विभूषा करे ते ॥ १ ॥ उप
करण बकुस ते झलहलतां उपक
रण करे। उपकरणादि अधिक सं
ग्रहे वस्त्रपात्रादि प्रक्षालनादि
॥ २ ॥ बकुस ते आभोगबकुस
॥ १ ॥ अणाभोगबकुस ॥ २ ॥
संवुडबकुस ॥ ३ ॥ असंवुडबकुस
॥ ४ ॥ जथासूक्ष्मबकुस ॥ ५ ॥
जाणीने दोष लगाडे ते आभो
गबकुस ॥ १ ॥ अणजाणे दोष ल

गाझे ते । अणाभोग बकुस ॥ २॥
बानो दोष लगाझे ते संवूझबकुस
॥ ३ ॥ प्रगट दोष लगाझे ते असं
बुझबकुस ४ यथा सुषमतेकिंचित्
दोष लगाझे ते अहासुहुम बकु
स ॥ ५ ॥ सातिचार नीरतीचार
बेहु भेला सहुसा धाननीपरे । सं
जमनेकाबरुंकरे ते बकुस ॥ २ ॥
प्रतिसेवनाकुसीलना ५ भेद॥ ज्ञा
नप्रतिसेवना ॥ १ ॥ दर्शणप्रतिसे
वना ॥२॥ चारित्रप्रतिसेवना ॥३॥

लिंगप्रतिसेवना ४जथासूक्ष्मप्रति
सेवना ॥५॥ इंडियादि वस्य अने
पिंझविसुध्यादि । सुमतीभावना त
पपझीमा। अभीग्रहदित॥उतरगुण।
एटले मुलगुण उतर गुण विराध
ता सर्वज्ञनी आज्ञाथी । न्यूनाधि
क प्रवर्त्ते । तेप्रतिसेवना ज्ञानादि
५ जाणवा ॥ ३ ॥ कषायकुसील
ते। संजल ना कषायने उदये करी
कुबित जेहने सीलस्वभाव कषाय
उदय थाय। अप्रशास्तपणुं थाय।

तेमाटे कपायकुसील । दोष लगा
ड्वासरीषा॥ निमित्तवासी परिणा
म थाय । पण प्रवर्त्तनबाह्यमां
दोष न लगाडे ते कषायकुसील
ना ५ भेद । ज्ञानकषायकुसील
१ दर्सनकषायकुसील ॥ २ ॥ चा
रित्रकषायकुसील ३ लिंगकषाय
कुसील ॥ ४ ॥ यथासूक्ष्मकषायकु
सील ॥ ५ ॥ हवे नियंठो ते मोह
नी कर्मथी नीकल्यो संपूर्ण ग्रंथर
हित ॥ उपसमीत ॥ १ ॥ यथानि

र्मलत्त्वायकज्ञाविक २ कषायवर
जित वीतरागावस्थायेवर्त्ते ते॥मु
नीनो प्रथम समय ते पढमसमय
नियंठो ॥ १ ॥ अपढमसमय ते
बीजासमयादिके वर्त्ते। ने अपढम
समय नियंठो ॥ २ ॥ ते गुणस्था
नकने पर्यंतवर्तिसमयनो ते चरम
समय नीयंठो ॥ ३ ॥ ते गुणठाणा
ना छेहला समयथी पूर्वलासमय
वर्ति ते अचरमसमय नीयंठो॥४॥
यथासुक्ष्म ते गुणठाणाना सर्वसम

यवर्ती ते । अदासुद्दूमनीयंठो॥५॥
अने स्नातक ते घातिकर्ममलपषा
लवाथी टालवाथी परमपवित्र ना
ह्यानीपरे उज्वल परीणामी रूपा
तीत ध्यानी॥ते स्नातक पंचनामवि
ष्यात॥अछवीते जोगनीरुंध्यामाटे
अछवी ॥ १ ॥ असवल ते निरती
चार काबरासरहित तेमाटे अस
बल ॥ २ ॥ घनघातिकर्म क्षय
कर्या ते माटे अकर्मांस ॥ ३ ॥ सं
सुद्धनाणदंसणधरे । अरहाजीण

केवली ते । सम्यक् सुद्ध निर्दोष
ज्ञानदर्सनना धरणहार ॥ अरहा
जीणे ते रहस्यछानीवात नही ते
राग द्वेषना जीतनार माटे केवली
कहीये ॥ ४ ॥ अपरीसावी ते नवा
कर्म आवे नही तेमाटे अपरीसावी
सर्व योगना रुंधवाथी ५ ॥ ६ ॥
ए नामनी प्रज्ञापनापरुपणाद्वार
किंचित् निरुपणं
२ वेदद्वार । आगला ४ सवेदी ने उ
परला २ अवेदी ॥ तेमां पुलाक।

स्त्रिवेदमां नही । पुरुष ॥१॥ पुरुष नपुंसक ॥२॥ ए २ मां होय । बकुस ने प्रतिसेवना । ए ३ वेदमां होय। कषायकुसील सवेदी होयतो त्रिणे वेदमां होय । अने अवेदी होयतो उपसमने षीणवेदमां होय । निग्रंथ उपसमने षीणवेदमां होय स्नातक षीणवेदमां होय । ए द्वा०॥२॥

३ रागद्वार आगला ४ नीयंठा । सरागी अने नीग्रंथ ने स्नातक षीणरागी होय ॥ एद्वार ॥ ३ ॥

४ कल्पद्वार ॥ स्थितिकल्प ॥१॥ अस्थितिकल्प ॥२॥ जिनकल्प ॥३॥ थिवरकल्प॥४॥ कल्पातीत ५ तेमां थितिकल्प अथितिकल्पमां छए नीयंठा । लाभे ॥ जिनकल्पमांही बीजो॥त्रिजो चोथो ए३ नियंठा लाभे थिवरकल्पमां आगला ४ नीयंठा लाभे । कल्पातीतमां उपरला ३ नीयंठा लाभे ॥ ए द्वार ॥ ४ ॥

५ चारित्रद्वार । सामायक ॥ १ ॥ छेदोपस्थापनीय ॥२॥ ए २ मां आ

गल्या ४ नियंठा लाभे । परीहार
विसुद्ध ॥ १ ॥ सुक्ष्मसंपराय ॥२॥
ए २ मां कषायकुसिलनीयंठो ला
भे । जथाख्यात चारीत्रमां उपर
ला २ नीयंठा लाभे । ए द्वार॥५॥

६ प्रतिसेवीद्वार । आगला ३ नीयंठा
प्रतिसेवी॥उपरला ३ नियंठा । अ
प्रतिसेवी । तेमा पुलाक मूलगुण
उत्तरगुणमां दोष लगाडे । बकुस
उत्तरगुणमां दोष लगाडे । प्रतिसे
मूलगुण उत्तरगुणमां दोष
लगाडे । उपरला ३ नीयंठा दोष
न लगाडे ए द्वार ॥ ६ ॥

७ नाणद्वार आगला ३ नीयंठामां
ज्ञान २ तथा ३ अने चोथा पांच
मां नीयंठामां । २ ॥ ज्ञान ॥३॥
तथा ४ ॥ स्नातकमां १ केवल
ज्ञान । हवे पुलाक भणे तो जघ
न्य नवमां पूर्वनी त्रीजी आचार
वस्तु सुधी । उत्त० नव पूर्व पूरा
भणे ॥ १ ॥ बकुस ने प्रतिसेवना
भणे तो ज० ८ प्रवचनमाता

उत्० १० पूर्व पुरा जणे ॥ कषायकु
सीलने नीयंठो ज० ८ प्रव० उ०
१४ पूर्व पूरा जणे ॥ स्नातक तो
श्रुतथी अधिक छे । सर्वज्ञ छे
८ तिर्थद्वार । तिर्थ ॥१॥ अतिर्थ ॥२॥
तिर्थंकर ॥ ३ ॥ प्रत्येकबुध्द ॥ ४ ॥
तिहां तिर्थें छए नीयंठा लाजे । बा
कि ३ मां उपला ३ नीयंठा लाजे ।
ए द्वार ८ मो ॥
९ लिंगद्वार द्रव्यथी । सलिंग । अन्य
लिंग ॥ ग्रह लिंग । ए ३ लिंगमा
छ ए नीयंठा लाजे ॥ अने ज्ञावथी
अन्यलिंग ग्रहलिंगभा एके न
लाजे ने सलिंगमां छए लाजे ॥
ए द्वार ए मो ॥
१० सरीरद्वार ॥ पुलाकमां ३ शरीर
लाजे ॥ बकूस ने प्रतिसेवना । ए २
मां ३ सरीर लाजे ॥ उदारीक ॥ १ ॥
तेजस ॥ २ ॥ कार्मण ए ३ लाजे ।
तथा ४ लाजे तो वैक्रेय वध्युं ॥ अने
कषाय कुसीलमां सरीर ॥ ३ ॥ ४ ॥
॥ ५ ॥ लाजे । अने निग्रंथ ने स्ना

तकमां सरीर ३ लाभे उदारीक ते
जसकार्मण ॥ एद्वार १० ॥
११ षेत्रद्वार । जन्मआश्री कर्मभूमि
मां छए नीयंठ लाभे । अकर्मभू
मीमां एके न लाभे । छतआश्री
पण छए लाभे । साहारणआश्री
पुलाक वरजीने ५ नीयंठ लाभे ।
कर्मभूमी अकर्मभूमी बेहुमां लाभे
ए द्वार ११ मो ॥
१२ कालद्वार समुचेअवसर्प्पिणी ॥
उत्सर्प्पिणीनोअवसर्प्पिणीनोउत्स
र्प्पिणीमां ६ नीयंठ लाभे । तेमां
अवसर्प्पिणी उत्तरतो काल तेमा
६ आरा तिहां जन्मआश्री पही
ला ने बीजा आरामां एके न ला
भे । त्रीजा ने चोथा आरामां ६
नीयंठ लाभे ॥ पांचमां आरामां ६
नीयंठ लाभे । बीजो । त्रीजो ।
चोथो ए नीयंठ ३ लाभे । छग आ
रामां एके नही । हवे छतआश्री
पहिला । बीजा आरामां एके नही
त्रीजा चोथा पांचमा आरामां छए

नीयंठा लाभे। छठा आरामां एके
न लाभे। हवे साहारणआश्री पु
लाक वरजीने ५ नीयंठा छए आ
रामां लाभे। हवे चमता कालमां
जन्मआश्री पहिले आरे एके
नही बीजे त्रीजे चोथे आरे ६ नी
यंठा लाभे। पांचमे छठे आरे एके
नही। हवे छतआश्री पहिले बी
जे आरे एके नही। त्रीजे चोथे
आरे ६ नीयंठा लाभे। पांचमे छठे
आरे एके नही। हवे साहारणआ

श्री। पुलाक वरजीने छए आरा
मां ५ नियंठा लाभे। हवे नोउत्स
र्प्पिणीनोअवशर्प्पिणी काल । ते
हेमवय ॥ १ ॥ एरणवय ॥ २ ॥ ह
रीवास ॥ ३ ॥ रमकवास ॥ ४ ॥
देवकुरु ५ उत्तरकुरु ॥ ६ ॥ ए ६
षेत्रमां जन्मछतआश्री एके नही।
अने साहारणआश्री पुलाक वर
जीने ५ नीयंठालाभे पांच महावी
देह षेत्रमां ॥ जन्मछतआश्री छए
नीयंठा लाभे । साहारणआश्री

पुलाक वरजीने ५ नीयंठा लाभे ॥
ए द्वार १२ मो ॥ ॥
१३ गतिद्वार । आगला ५ नीयंठा आराधिक एक वीमानीकदेवनी गतिमां जाय । स्नातक मोक्ष जाए । तेमां पुलाक ज० पहिले देवलोके जाए उ० । आठमे देवलोके जाय । बकुस ने प्रतिसेवना ज० पहिले देवलोके जाय । उ० । बारमे देवलोके जाए । कषायकुसील ज० पहेले देवलोके जाए । उ० अनुत्तर विमानमां जाय ॥ नियंठो ज उ० अनुत्तरविमानमां जाय ॥ स्नातकमोक्षमां जाय। आराधिकपदवी पांचपामे ॥ इंद्रनी ॥ १ ॥ सामानीकनी २ त्रायत्रिंसकनी ॥ ३ ॥ लोकपालनी ॥ ४ ॥ अहमेंद्रनी ॥ ५ ॥ ए ५ मांहेली । आगला ३ नीयंठा पदवी ४ पामे । एक अहमेंद्रनी नही । कषायकुसील पदवी ५ पामे । नीग्रंथ एकपदवी अहमेंद्रनी पामे । स्नातकमोक्ष जाय। हवे

वीराधक आगला ५ नीयंठा ज०
भवनपतिमां जाय उ० पहीले दे
वलोके जाय। पदवी ५ मांहेली
एके न पामे। ए १३
१४ थितिद्वार देवतामां जाए तिहां
थितिकेतलीपामे॥पुलाकज० प्रत्ये
क पल्यनी॥उ०।१८ सागरनी पामे।
वकुस ने प्रतिसेवना ज० प्रत्येक
पल्यनी उ० २२ सागरनी पामे।
कषायकुसील ज० प्रत्येक पल्यनी
उ० ३३ सागरनी पामे॥ निग्रंथ
ज० उ० ३३ सागरनी पामे। स्ना
तक मोक्ष जाय ए द्वार १४
१५ संजमस्थानद्वार। आगला ४ नी
यंठाना असंख्याता संजमस्थान
केतेपरिणामना थानक छे।अने नि
ग्रंथ ने स्नातकनुं एकेकुं थानक छे।
हवे अल्प बहुत्व ॥पहिले बोले स
र्वथी थोडा निग्रंथ ने स्नातकना था
नक बेहू मांहोमांही तुल्य ॥१॥तेथी
बीजे बोले पुलाकना थानक। असं
ख्यातगुणा ॥२॥ तेथी त्रीजे बोले ब

कुसना थानक असंख्यातगुणा
॥ ३ ॥ तेथी चोथे बोले प्रतिसेव
नाना थानक । असंख्यातगुणा
॥ ४ ॥ तेथी पांचमे बोले । कषाय
कुसीलना थानक असंख्यातगुणा
॥ ५ ॥ ए द्वार १५ मो ॥
१६ निकासद्वार ते पर्यवद्वार एकेका नि
यंठाना अनंतापर्यव छे पुलाक । पु
लाकसाथे छठाणवडियो । पुलाक
बकुसप्रति सेवनाथी ॥ अनंतगुण
हीणो कषायकुसीलसाथे छठाणव
डीयोउपरलाबेथी अनंत गुण
हीणो ॥ १ ॥ हवे बकुसपुलाकथी अ
नंतगुण अधिक बकुसप्रतिसेवना॥
कषायकुसीलसाथे छठाणवडीयोउ
परलाबेथी अनंतगुण हीणो २ हवे
प्रतिसेवना । पुलाकथी अनंतगुण
अधिक बकुसप्रतिसेवना कषायकु
सीलसाथे छठाणवडियो । ऊपर
लाबेथी अनंतगुण हीणो ॥ ३ ॥
हवे कषायकुसील आगला ४ सा
थे छठाणवडियो ऊपरलाबेथी अ

नंतगुणहीणो ॥ ४ ॥ हवे निग्रंथ ने स्नातक। आगला च्यारथी अनंतगुण अधिक। ने मांहोमांही तुल्य ॥ ६ ॥ हवे अल्प बहूत्वद्वार पहिले बोले। सर्वथी थोमा पुलाक ने कषायकुसीलना जघन्य पर्जव मांहोमांही तुल्य १ तेथी बीजे बोले पुलाकना उत्कृष्टा पर्जव अनंतगुणा ॥ २ ॥ तेथी त्रीजे बोले बकुस ने प्रतिसेवनाना। जघन्य पर्जव मांहोमांही तुल्य ने अनंत

गुणा ॥ ३ ॥ तेथी चोथे बोले बकुसना ॥ उत्कृष्टा पर्जव अनंतगुणा ॥ ४ ॥ तेथी पांचमे बोले प्रतिसेवनाना उ० पर्जव अनंतगुणा॥५॥ तेथी छठे बोले कषायकुसीलना पर्जव उ० अनंतगुणा ६ तेथी निग्रंथ ने स्नातकना मांहोमांही तुल्य पर्यव ने अनंतगुणा ॥ ७ ॥ हवे छठाणवडियातेसुं हीणो होयके अधिको होय। जो हीणो होय तो अनंतभाग ॥१॥ असंख्यातभाग

॥ २ ॥ संख्यातभाग ३ संख्यात गुण ॥ ४ ॥ असंख्यातगुण ॥५॥ अनंतगुणहीण ॥ ६ ॥ हवे अधिक होय तो । अनंतभाग ॥ १ ॥ असंख्यातभाग ॥ २ ॥ संख्यातभाग ॥ ३ ॥ संख्यातगुण ॥ ४ ॥ असंख्यातगुण ॥ ५ ॥ अनंतगुण अधिक ॥ ६ ॥ ए षटगुण हानी वृद्धि जाणवी । ए द्वार १६ मो ।

१७ जोगद्वार आगला ५ नीयंठा । सयोगी होय तो ३ जोग होय । ने ठठो स्नातक सयोगी होय तो ३ जोग होय ॥ अजोगी होय तो जोग एके नही । ए १७ मो

१८ उपयोगद्वार । ठए नीयंठामां साकार उपयोग ने अणाकार उपयोग बेहू लाभे । ए द्वार १८ मो

१९ कषायद्वार । आगली ३ चोकडीमां एके नीयंठो न लाभे । हवे संज्वलनी १ चोकडीआगला त्रण नीयंठामां होय । अने कषायकुसीलमां संज्वलना च्यारे होय ।

अने जो ३ होय। तो क्रोध वरजी
ने बे होयतो मान वरजीने। ने
एक होयतो माया वरजीने तेमां
क्रोध मान मायानी भजना लोभ
नी नीयमा होय ॥ ४ ॥ निग्रंथ
उपसम तथा पीणकषाइ होय।
स्नातकपीणकषाइ होय ॥ ए द्वार
१ए मो थयो
२० लेस्याद्वार। आगला ३ नियंठा
मा उपरली ३ लेस्या होय। कषा
यकुसीलमां ६ लेसा होय ने नि
ग्रंथने सुक्कलेस्या। स्नातकमां परम
सुक्कलेस्या अने अलेसी पण हो
य ॥ ए द्वार २० मो थयो ॥
२१ परिणामद्वार। छए नीयंठामां वर्द्ध
मान परिणाम होय तो। आगला
४ मां ॥ जघन्य १ समो उ० अंतर
मुहूर्त्त। उपला २ ना जघन्य उत्कृ
ष्ट अंतरमुहूर्त्त। हवे हायमान प
रिणाम। आगला ४ ना। ज०
एक समो। उ०। अंत० उपला २
ना हायमान परीणाम होय नही।

॥ २ ॥ संख्यातभाग ३ संख्यात
गुण ॥ ४ ॥ असंख्यातगुण ॥५॥
अनंतगुणहीण ॥ ६ ॥ हवे अधि
क होय तो । अनंतभाग ॥ १ ॥
असंख्यातभाग ॥ २ ॥ संख्यात
भाग ॥ ३ ॥ संख्यातगुण ॥ ४ ॥
असंख्यातगुण ॥ ५ ॥ अनंतगुण
अधिक ॥ ६ ॥ ए षटगुण हानी
वृद्धि जाणवी । ए द्वार १६ मो ।
१७ जोगद्वार आगला ५ नीयंठा ।
सयोगी होय तो ३ जोग होय । ने
छठो स्नातक सयोगी होय तो ३
जोग होय ॥ अजोगी होय तो
जोग एके नही । ए १७ मो
१८ उपयोगद्वार । छए नीयंठामां सा
कार उपयोग ने अणाकार उपयो
ग बेहूं लाभे । ए द्वार १८ मो
१९ कषायद्वार । आगली ३ चोकडी
मां एके नीयंठे न लाभे । हवे सं
ज्वलनी १ चोकडीआगला त्रण
नीयंठामां होय । अने कषायकु
सीलमां संज्वलना च्यारे होय ।

अने जो ३ होय । तो क्रोध वरजी
ने बे होयतो मान वरजीने । ने
एक होयतो माया वरजीने तेमां
क्रोध मान मायानी भजना लोभ
नी नीयमा होय ॥ ४ ॥ निग्रंथ
उपसम तथा पीणकषाइ होय ।
स्नातकषीणकषाइ होय ॥ ए द्वार
१ए मो थयो
२० लेस्याद्वार । आगला ३ नियंठा
मा उपरली ३ लेस्या होय । कषा
यकुसीलमां ६ लेसा होय ने नि

ग्रंथने सुक्कलेस्या । स्नातकमां परम
सुक्कलेस्या अने अलेसी पण हो
य ॥ ए द्वार २० मो थयो ॥
२१ परिणामद्वार । छए नीयंठामां वर्द्ध
मान परिणाम होय तो । आगला
४ मां ॥ जघन्य १ समोउ० अंतर
मुहूर्त्त । उपला २ ना जघन्य उत्कृ
ष्ट अंतरमुहूर्त्त । हवे हायमान प
रिणाम । आगला ४ ना । ज०
एक समो । उ० । अंत० उपला २
ना हायमान परीणाम होय नहीं ।

हवे अवस्थितपरिणाम आगला ४ ना ज० १ समो उ० ७ समा। निग्रंथ ज० १ समो उ० अंत० स्नातकना ज० अंतरमु० उ० देसे उणी पूर्वकोम्र ए द्वार ॥ २१ ॥

२२ बंधद्वार। पुलाक ७ कर्म बांधे। आउषूं वरजीने॥ बकुस ने प्रतिसेवना ७। ८ कर्म बांधे ७ बांधे तो आउषूं वरजीने कषायकुसील ६ ॥ ७ ॥ ८ कर्म बांधे। ७ कर्म बांधे तो आउषूं वरजीने ६ कर्म बांधे तो आयुष तथा मोहनी वरजीने॥ निग्रंथ १ साता वेदनी कर्म बांधे। स्नातक १ सातावेदनी बांधे ने स्नातक अबंधक पण होय ॥ ए द्वार २२ मो।

२३ वेदद्वार ॥ आगला ४ आठे कर्म वेदे॥ निग्रंथ मोहनीकर्म वरजीने ७ कर्मवेदे। स्नातक ४ कर्मवेदे। वे० आ० ना० गो० ए ४ वेदे॥ ए द्वार २३ मो

२४ उदीरणाद्वार। पुलाक ६ कर्मनी

उदीरणा करे आउपूं १ वेदनी २ वरजीने। वकुस ने प्रतिसेवना आ ८ कर्मनी उदीरणा करे। अने जो ७ नी करे तो आउपूं वरजीने ६ नीकरे तो। आउपूं वेदनी वरजीने। कषायकुसील ८ कर्मनी उदीरणाकरे ७ नी करे तो। आउपूं वरजीने ६ नी करे तो आयुप वेदनी वरजीने ५ नी करे तो मोहनी आउपूं वेदनी वरजीने। अने नीग्रंथ आउपूं वेदनी मोहनी ए ३ वरजीने। पांच कर्मनी उदीरणा करे। तथा नाम गोत्र २ नी उदीरणा करे। स्नातक नाम गोत्रनी उदीरणा करे। तथा न करे पण एके कर्मनी उदीरणा २४

२५ उवसंपजहणाद्वार। पुलाक चढे तो। कपायकुशीलपणुं पामे। अने जो पडे तो असंजतिपणुं पामे ॥ १ ॥ वकुस चढे तो प्रतिसेवना ने कपायकुसीलपणुं पामे ॥ अने जो पडे तो असंजति ने श्रावकप

णुं पामे ॥ २ ॥ प्रतिसेवना चढे तो
कषायकुसीलपणुं पामे अने जो
पडे तो बकुस० ॥१॥ असंजति०
॥ २ ॥ श्रावक पणुं ३ ॥ पामे ३
कषायकुशील चढे तो नीग्रंथपणुं
पामे । अने जो पडे तो । पुलाक
॥ १ ॥ बकुस २ प्रतिसेवना ॥३॥
असंजति ४ श्रावक ५ ए ५ थाय
॥ ४ ॥ निग्रंथ चढे तो स्नातकपणुं
पामे । अने जो पडे तो कषायकु
सीलपणुं पामे । असंजति पण था

य ॥ ५ ॥ स्नातक मोक्ष जाय । प
ण पडवुं नथी ए २५ ॥
२६ संज्ञाद्वार । बीजो १ त्रीजो २ ॥
चोथो ३ ॥ ए ३ नीयंठा सनावउ
तामां होय । नोसनाउतामां ६ नी
यंठा लाभे । ए द्वार २६ मो ॥
२७ आहारद्वार । आगला ५ नियंठा
आहारक होय । छठो नीयंठो स्ना
तक आहारक ने अणाहारक पण
होय ॥ ए द्वार २७ मो थयो ॥
२८ भवद्वार । पुलाक ज १ भवकरे ॥

उ० ३ भवकरे ॥ वकुस ॥ १ ॥ प्र
तिसेवना ॥ २ ॥ कषायकुशील ॥
॥ ३ ॥ ए ॥ ३ ॥ ज० ॥ १ ॥ भव
उ० ८ भव । निग्रंथज० ॥ १ ॥
भव ॥ उ० ३ भव करे॥ स्नातक
मोक्षमां जाय । ए द्वार २८ मो ॥
२९ आकर्षद्वार । आकर्ष १ भवे
पुलाकज० १ वार ॥ उ० ३ वार
आवे । वकुस प्रतिसेवना ॥ कषा
यकुशील ॥ ज० ॥१॥ उ० प्रत्येक
सो९००वार आवे॥निग्रंथ०ज०१

उ० २ वार आवे । स्नातक० ज०
उ १ वार आवे । हवे घणा भव
आश्री ॥ पुलाक० ज० २ वार
उ० ७ वार आवे । वकुस० ॥ १ ॥
प्रतिसेवना ॥ २ ॥ कषायकुशील०
॥३॥ज० २ उ० प्रत्येक ७२०० ह
जार वार आवे॥निग्रंथ०ज०२उ०
५ वार आवे । स्नातकने पुनर्भव
छे नहीं । ए द्वार २९ मो ॥
३० स्थितिद्वार । स्थिति १ भवआ
श्री । पुलाकनीज० अंत० । उ

तू० अं० । वकुस प्रतिसेवना कषा
यकुसीलनी ज० १ समोउ० देसे
उणी पूर्व कोम निग्रंथनी । ज० १
समो । उ० १ अंतमु० । स्नातक
नी ज० १ अंत । उ० देशे उणी
पूर्व कोम । हवे घणा नवआश्री ।
पुलाक ने निग्रंथनी । ज० १ समो
उ० १ अंत० बाकीने सवद्धाकाल
ए द्वार ३० मो ॥
३१ अंतरद्वार । अंतर एक जीवआश्री
आगलाप नियंठाने । ज० अंत० ।
उ० । अर्द्धपुजल देसे उणुं आंतरुं
पडे । स्नातकने आंतरुं नथी । हवे
घणा जीवआश्री । पुलाकने ज०
१ समो ॥ उ० संख्याता वरसनु ।
निग्रंथने ज० १ समो । उ० ६ मा
सनु शेष बाकिने आंतरु नथी ।
ए द्वार ३१ मो थयो
३२ समुद्घातद्वार । समुद्घात पुला
कमां त्रण वेदनी कषाय मारणां
तिक ए ॥ ३ लाभे ॥ बकुस ने प्र
तिसेवनामां पांच समुदघात । वे

दनी १ कषाय २ मारणांतिकमां
॥ ३ ॥वैक्रेय ॥ ४ ॥ तैजस ॥ ५ ॥
ए ५ कषायकुशीलमां ६ समुद्घा
त । केवल वरजीने । निग्रंथमां स
मुद्घात नथी । स्नातकमां ॥ १ ॥
केवलसमुद्घात लाभे । ए द्वार
३२ मो ॥

३३ षेत्रद्वार । ते लोकने संख्यातमे
भागे होय के असंख्यातमे भागे
के घणे संख्यातमे भागे के घणे
असंख्यातमे भागे के सर्व लोक
मां होय तेहनो उत्तर ॥ आगला
५ नियंठा लोकने असंख्यातमे
भागे होय शेष ४ बोले न होय॥स्ना
तक लोकने असंख्यातमे भागे
घणे असंख्यातमे भागे ने सर्व
लोकमां होय ए द्वार ३३ मो ॥

३४ फरसनाद्वार । ते फरसनाद्वार प
ण षेत्रद्वारनीपरे कहेवो इमज फ
रसे ॥ ए द्वार ३४ मो ॥

३५ भावद्वार ॥ आगला ४ नियंठा ।
क्षयोपसमभावे होय । निग्रंथ उ

पशमने १ क्षायक ९ भावे होय। स्नातक १ क्षायकभावे होय ए द्वार
२६ पडिवज्जमाण ते परिमाण द्वार। पडिवज्जमाण तेनवीनथाताहोय ते वर्तमान आश्री एक समे जो होय तो। पुलाक बकुस प्रतिसेवना ज० होय तो ॥ १ ॥ ९ ॥ ३ ॥ उ० प्रत्येक सो। कषायकुशील। ज० होय तो ॥ १ ॥ ९ ॥ ३ ॥ उ० प्रत्येक हजार ॥ निग्रंथ ज० होय तो ॥ १ ॥ ९ ॥ ३ ॥ उ० ॥१६९॥

तेमां ॥ १०८ ॥ क्षपकश्रेणीना अने ५४ उपसम श्रेणीना स्नातक ज० ॥ १ ॥ ९ ॥ ३ ॥ उ० १०८ हवे पुव्वपडिवज्जमानआश्रीपुलाक होय तो। ज० ॥ १ ॥ ९ ॥३॥ उ०। प्रत्येक हजार ॥ बकुस ने प्रतिसेवना होय तो ज० प्रत्येकसें कोड ॥ उ० प्रत्येकसें कोड। कषायकुसील होय तो। ज० प्रत्येक हजार कोड। उ० प्रत्येक हजार कोड। निग्रंथ ज० ॥ १ ॥ ९ ॥३॥

उ० प्रत्येकसें ॥ स्नातक । ज० प्र
त्येक कोड उत्कृष्टा प्रत्येक कोड
होय ए द्वार ३६ मो
३७ हवे अल्प बहूत्वद्वार । सर्वथी
थोडा निर्ग्रंथ १ तेथी पुलाक सं
ख्यातगुणा ॥ २ ॥ तेथी स्नातक
संख्यातगुणा ॥ ३ ॥ तेथी बकुस
संख्यातगुणा ॥ ४ ॥ तेथी प्रतिसे
वना संख्यातगुणा ॥ ५ ॥ तेथी
कषायकुसील संख्यातगुणा ॥६॥
ए ७ नियंठानो अधिकार । सूत्र
श्रीभगवतिशतक २५ मे उद्देशे ७
छे ॥
॥ इति श्रीनियंठा बोल समाप्त. ॥

अथ श्रीषट्द्रव्यनो विचार संक्षेप मात्र लिख्यते ॥ परिणाम जीवमुत्तं ॥ सप
एसाएगंखेत्तकिरियाय ॥ निच्चंकारणकत्ता ॥ सव्वगयमियरेहिंअप्पवेसा ॥ १ ॥
ए गाथा । हवे एहनो अर्थ कहेछे । शिष्य आत्मार्थी पंचांग नम्रता करि पुछे

छे जे । स्वामिन् । षट्द्रव्यमां परिणामि द्रव्य केटला । अने अपरिणामि द्रव्य केटलां । गुरु कहेछे ॥ हे आयुष्मन् शिष्य निश्चय नये षट्द्रव्य । पोत पोताने स्वभावे स्वरूपे पोत पोताना गुणपर्यायनि परिणतिरूपे छस्वभावपरिणामि । अने व्यवहार नये ॥ एक जीव ॥ १ ॥ ने पुद्गल ॥ २ ॥ ए ॥ २ ॥ विभावपरिणामि । शेष ॥ ४ ॥ द्रव्य । अपरिणामि ॥ १ ॥ हवे छ द्रव्यमे ॥ एक जीवास्तिकाय । जीवद्रव्य चैतन्य । शेष ॥ ५ ॥ जड । अजीवद्रव्य ॥२॥ हवे छ द्रव्यमें मूर्तिरूपी । एक पुद्गलद्रव्य ॥ शेष ॥ ५ ॥ अमूर्ति अरूपीद्रव्य ॥ ३ ॥ छ द्रव्यमें एक काल द्रव्य । अप्रदेशी । एक समयिकज द्रव्यमाटे ॥ शेष ॥ ५ ॥ सप्रदेशी ॥ धर्म । अधर्म । असंख्यातप्रदेशी ॥ आकाश लोकालोकप्रमाणे छे माटे अनंतप्रदेशी ॥ पुद्गलद्रव्य । एकपरमाणुं यावत् अनंताणुक खंधमाटे । अनंतप्रदेशी । एक जीवात्मा असंख्यातप्रदेशी ॥ ४ ॥ छ द्रव्य निश्चय नये

एक। त्रये द्रव्य अनेक। धर्म० अधर्म०। द्रव्यथि एक। गुणपर्याय प्रदेशथि अनेक। गुण अनंता। पर्याय अनंता। प्रदेश असंख्याता॥ आकाशना प्रदेश पण अनंता। कालद्रव्य। वर्त्तना लक्षणे एक॥ गुण पर्याय समयथि अनेक। गुण अनंता। पर्याय अनंता। समय अनंता। ते किम॥ एक आवलिकाना चोथा असंख्यातप्रमाणे समय थाय। एम यावत् दश कोडाकोडि सागरोपमे॥ एक उत्सर्प्पिणी॥ दश कोडा कोडि सागरोपमे॥ एक अवसर्प्पिणी। विश कोडा कोडि सागरोपमनो। एक कालचक्र थाय॥ ते एक कालचक्रना असंख्याता असंख्यातभेदे समय थाय॥ एहवे अनंता भेद कालचक्रे एक पुद्गल परावर्त्तन थाय॥ एहवो अनंता पुद्गलपरावर्त्तननो अतीतकाल गयो। वर्त्तमानकाल एक समयज॥ अनंत पुद्गलपरावर्त्तननो। आगमियोकाल आवस्ये। एम त्रिणकालना समय अनंता॥ हवे पुद्गलद्रव्य॥ पुरणगलन स्व

ावे एक ॥ गुणपर्याय प्रदेशथि अनेक ॥ गुणअनंता ॥ पर्याय अनंता ॥ प्रदे
श अनंता ॥ अनंता परमाणुया । अनंता द्विप्रदेशीया ॥ अनंता त्रिप्रदेशीया।
अनंता चउप्रदेशीया । अनंता पंचप्रदेशीया । इमयावत् । अनंता संख्यातप्र
देशीया ॥ अनंता असंख्यात प्रदेशीया अनंता अनंत प्रदेशीया खंधछे ते मा
टे । एक अनंत प्रदेशीया खंधमां । अनंता अनंत प्रदेशीया प्रदेश छे माटे पु
द्गल अनंत प्रदेशी छे । जीवास्तिकाय चैतन्य लक्षण । द्रव्यथि एक छे । गुणप
र्याय प्रदेशथि अनेक ॥ गुण अनंता ॥ पर्याय अनंता ॥ प्रदेश एक जीवना॥
असंख्याता एहवा आत्मद्रव्य छे ॥ अने व्यवहार नये ॥ धर्म० । अधर्म० ।
आकाश० । ए त्रिणे । एक । अने । काल । पुद्गल ॥ जीव । ए ॥ ३ ॥ द्रव्यअ
नेक छे । सकलनु भिन्नभिन्न प्रवर्त्तन अवस्थापणुछे माटे अनंत ॥ ५ ॥ छद्रव्य
मे क्षेत्र आधार पात्रसमान ते एक आकाशद्रव्य ॥ क्षेत्र । शेष ॥ ५ ॥ द्रव्य

क्षेत्री । आध्येय रहेवायोग्य वस्तुमाटे ॥ ६ ॥ छ द्रव्य निश्चय स्वरूपे पोत पो
तानि क्रियारूपे तो षट् द्रव्य सक्रिय चलणसहायरूप क्रिया ॥ स्थिरसहाय ॥
अवकाश । आश्रयरूप । वर्त्तना प्रावर्त्तना रूप पुरणगलन हानि वृद्धि रूप
उपयोग चैतन्य रूप क्रिया ए सक्रिय ॥ अने व्यवहार नये गमनागमन परस्
प चलणक्रिया आश्रि पुद्गल जीव । ए ॥ २ ॥ सक्रिय । शेष ॥४॥ द्रव्य । अ
क्रिय ॥ ७ ॥ छ द्रव्यमें निश्चय नये छए नित्य । छए । अनित्य ॥ ते किम । धर्म
ना । अधर्मना । च्यार गुण । पर्यायमां । खंधलोकप्रमाणे नित्य छे । अने देश
प्रदेश ॥ अगुरु लघु । ए ॥ ३ ॥ पर्याय अनित्य छे ॥ आकाशमां ॥ ४ ॥ गुण
लोकालोकप्रमाणे ॥ खंध । नित्य । देश प्रदेश अगरु लघु अनित्य । कालद्र
व्यना ॥ ४ ॥ गुण नित्य ॥ ४ ॥ पर्याय । अनित्य । पुद्गलद्रव्यना ॥ ४ ॥ गुण
नित्य ॥ ४ ॥ पर्यायअनित्य ॥ जीवद्रव्यना ॥ ४ ॥ गुण ॥ ३ ॥ पर्याय । नित्य ।

अगुरु लघुपर्याय अनित्य ॥ ८ ॥ छ द्रव्यमां एक जीव कारण छे । एटले जीव
ने पंचेद्रव्य कारणरूप छे ॥ जीव तो कारणी छे ॥ पांच द्रव्य अकारणी छे ॥९॥
छ द्रव्यमा । स्वरूप । चलणस्वभाव । स्थिरस्वभाव । अवकाशदान । नवीन ।
पुराणस्वभाव । पुरणगलनस्वभाव ॥ उपयोग लक्षण । चैतन्य स्वभाव छए
स्वभावना कर्ता छे ॥ अने व्यवहार नये । एक जीवद्रव्य परभावरूपनो कर्ता
छे । शेष ॥ ५ ॥ द्रव्यअकर्ता ॥१०॥ छए । द्रव्यमें सर्वव्यापी एक आकाशद्र
व्य । शेष ॥ ५ ॥ द्रव्य । असर्वगत लोक मात्र व्यापी माटे॥ ११ ॥ हवे इयर
अप्पवेशाके० । यद्यपि छए द्रव्य । एक क्षेत्रमें खिर निरनिपेरे । एकठा मिलि
रह्याछे । तोहि पण एक बिजामे कोइ कोइमे भले नहि ए द्रव्यनो विचार ॥
हवे धर्मास्ति काय ते केहने कहिये ॥ धर्म ते चलणस्वभावरूप ॥ गतिमान्
पुरुषवत् ॥ अस्तिके० त्रणकालमां छे ॥ कायके० असंख्य प्रदेशनो समुह ॥

तेने धर्मास्ति कायद्रव्य कहिये ॥ तेना ४ गुण ॥ अरूपि ॥ १ ॥ अचेतन्य ॥२॥ अक्रिय ॥ ३ ॥ चलणसहाय ॥४॥ तेना पर्याय पण ४ ॥ स्कंध ॥१॥ देश ॥२॥ प्रदेश ॥३॥ अगुरुलघु ॥ ४ ॥१॥ इम अ कहेता नहि धर्मके० चलणस्वभाव एतावता प्रतिपक्ष ते स्थिरस्वभाव ॥ स्थितिमान् पुरुषवत् ॥ अस्तिके० । त्र णकालमां छे ॥ कायके० असंख्य प्रदेशनो समूह ॥ तेने अधर्मास्ति कायद्रव्य कहिये ॥ तेना ४ गुण ॥ अरूपि ॥१॥ अचेतन्य ॥२॥ अक्रिय ॥३॥ स्थिरसहाय ॥ ४ ॥ तेना पर्यायपण ४ ॥ ते पूर्ववत् ॥ २ ॥ आके० सर्व दिशे ॥ काशके० प्र काश अवगाह आश्रय दानरूप ॥ भित्तिमां क्षितिकावत् ॥ अस्तिके० त्रण कालमां छे ॥ कायके० अनंत प्रदेशनो समूह ॥ तेने आकाशास्तिकाय द्रव्य क हिये ॥ तेना ४ गुण ॥ अरूपि ॥१॥ अचेतन्य ॥२॥ अक्रिय ॥३॥ अवकाशदान ॥ ४ ॥ तेना पर्याय ४ ॥ पूर्ववत् ॥ ३ ॥ जीवने पुद्गल निकलनाकर तेने काल

कहिये ॥ तेना ४ गुण ॥ अरूपि ॥ १ ॥ अचैतन्य ॥ २ ॥ अक्रिय ॥ ३ ॥ वर्त्त नालक्षण ॥ ४ ॥ तेना पर्याय ४ ॥ अतित ॥ १ ॥ अनागत ॥ २ ॥ वर्तमान ॥ ३ ॥ अगुरुलघु ॥४॥४॥ समये समये पुरायगलायहानि वृद्धिरूप स्वभाव॥ अस्तिके० त्रण कालमां छे ॥ कायके० बेथिमांडि अनंत प्रदेशनो समूह ॥ तेने पुद्गलास्तिकाय द्रव्य कहिये ॥ तेना ४ गुण ॥ रूपि ॥१॥ अचैतन्य ॥२॥ सक्रिय ॥३॥ पुरण गलण ॥४॥ तेना पर्याय ४ ॥ स्कंध ॥१॥ देश ॥२॥ प्रदेश ॥ ३ ॥ अगुरु लघु ॥४॥ तथा बिजापण पर्याय ४ ॥ वर्ण ॥१॥ गंध ॥२॥ रस ॥३॥स्प र्श ॥ ४ ॥ ५ ॥ द्रव्य प्राणभाव प्राणेकरि जीवेते जीव ॥ अस्तिके० त्रण काल मां छे ॥ कायके० असंख्य प्रदेशनो समूह ॥ तेने जीवास्तिकायद्रव्य कहिये ॥ तेना ४ गुण ॥ केवल ज्ञान ॥१॥ केवल दर्शन ॥२॥ स्वरूप रमण। स्थिरता च रण ॥३॥ क्षायक अनंतशक्ति ॥४॥ तेना पर्याय ४ ॥ अव्याबाध ॥ १ ॥ अना

वगाह ॥ २ ॥ अमूर्ति ॥ ३ ॥ अगुरुलघु ॥ ४ ॥ ६ ॥ एम पुद्गलनो विचार ॥
एक परमाणुमां ५ वर्णमांहिलो १ वर्ण ॥ बे गंधमांहिलो १ गंध ॥ पांच रस
मांहिलो १ रस ॥ ८ स्पर्शमांहिला २ स्पर्श ॥ बे परमाणुमिले त्यारे द्विप्रदेशी
खंध थाय ॥ तेमां २ वर्ण ॥ २ गंध ॥ २ रस ॥ ४ स्पर्श ॥ त्रण परमाणुमिले
त्यारे त्रिप्रदेशी खंध थाय ॥ तेमां त्रण वर्ण ॥ २ गंध ॥ ३ रस ॥ ४ स्पर्श ते ॥
शित ॥ १ ॥ उष्ण । निध ॥ ३ ॥ लुख ॥ ४ ॥ च्यार परमाणु मिले त्यारे चतुः
प्रदेशी खंध थाय ॥ तेमां ४ वर्ण ॥ २ गंध ॥ ४ रस ॥ ४ स्पर्श ॥ पंचपरमाणु
मिले त्यारे पंचप्रदेशी खंध थाय ॥ तेमां ५ वर्ण ॥ २ गंध ॥५ रस ॥४ स्पर्श ॥
एम छ सात आठ यावत् संख्यात असंख्यात अनंतप्रदेशी खंधमां यावत् च
उथे अनंते ॥ अभव्यजीवथि अनंतगुण अधिक ॥ सिद्ध ने अनंतमेभागे छ
छपरमाणुमिले त्यारे उदारिकग्रहणयोग्यवर्गणाथाय लेवायोग्य ॥ इम अनंत

गुण अधिकवर्गणामिले अग्रहणयोग्य वैक्रेयनिवर्गणाथाय ॥ एम अनंतगुणे वैक्रेयग्रहणयोग्य वर्गणाथाय ॥ एम आहारकवर्गणा ॥ तैजसवर्गणा ॥ नाषाव र्गणा ॥५॥ श्वासोश्वासवर्गणा॥६॥मनोवर्गणा ॥७॥ न कार्मण वर्गणा॥८॥ ए ८ व र्गणा मांहि ॥ पहिलीथी बिजी वर्गणाअनंतगुणी ॥ बीजीथि त्रिजी अनंतगुणी॥ एम आठे वर्गणाजाणवी ॥ तेमां उदारिक ॥ १ ॥ वैक्रेय ॥२॥ आहारक ॥३॥ तैजस ॥ ४ ॥ ए ४ मां ५ वर्ण ॥ २ गंध ॥ ५ रस ॥ ८ स्पर्श ॥ अने नाषा ॥ ॥ १ उश्वास॥२॥मनो ॥३॥ कार्मण ॥ ४ ए ४ वर्गणामां ५ वर्ण २ गंध ॥५ रस ॥ ४ स्पर्श ए ४ वर्गणा अगुरुलघुजाणवी ॥ हवे षट्द्रव्यमां आठ २ पक्षक ह्याठे ॥ नित्य ॥१॥ अनित्य ॥२॥ एक ॥३॥ अनेक ॥४॥ सत् ॥५॥ असत्॥६॥ वक्तव्य ॥ ७ ॥ अवक्तव्य ॥८॥ धर्म अधर्मादि षट्द्रव्यमां॥ नित्य॥ अनित्य॥ एक॥ अनेक ॥ ए ४ पक्षतो पूर्वेकह्या ॥ तिमज सत् ते ७ द्रव्य पोतपोताना

द्रव्य ॥ क्षेत्र ॥ काल ॥ भावरूपे छताछे ॥ तेमां धर्मास्तिकायनो स्वद्रव्य ॥ च
लणसहायगुण ॥ १ ॥ अधर्मास्तिकायनो स्वद्रव्यस्थिरसहायगुण ॥ आका
श० स्वद्रव्यअवकाशदानगुण ॥ ३ काल० स्वद्रव्यवर्तनालक्षणगुण ॥ ४ ॥
पुद्गल० स्वद्रव्यपूरणगलनगुण ॥ ५ ॥ जीवास्तिकायस्वद्रव्य उपयोग लक्षण
गुण ॥ ६ ॥ एम छ द्रव्यनोस्वक्षेत्र ॥ धर्म० अधर्म० स्वक्षेत्र असंख्यातप्रदेशी
॥ २ ॥ आकाश० स्वक्षेत्र अनंतप्रदेशी ॥ ३ ॥ कालनो स्वक्षेत्र एकसमय॥४॥
पुद्गलनो स्वक्षेत्र एकपरमाणु एहवाअनंता ॥ ५ ॥ जीवनो स्वक्षेत्र असंख्यप्र
देशी ॥ ६ ॥ एम छ द्रव्यनोकाल ॥ पोतपोतानाअगुरुलघुनि समयसमयनि
प्रणतिफिरेछे ॥ ते छ द्रव्यनो स्वकाल ॥ छ द्रव्यनोस्वभाव ते छए द्रव्यमां पो
तपोताना ४ बोल पोतपोतामांजछे अनेबिजाद्रव्यना ४ बोल तेमांनथि ॥ जि
मधर्मास्ति कायमां पोताना द्रव्यक्षेत्र काल भाव ४ बोलछे ॥ बीजा ५ द्रव्य

नानथि ॥ एम ७ एद्रव्यमां पोतपोताना ४ बोलछे ॥ बिजा ५ नानथि ॥ एम
स्वभाव एसत्पक्षकह्यो ॥ अने असत् ते अछताद्रव्य क्षेत्रकालभाव परद्रव्य
ना अछतारूपे तो असत्छे ॥ जिमधर्म० द्रव्य अधर्मादि ५ परद्रव्यना द्रव्यक्षे
त्रकाल भावे असतके० अछतोछे ॥ एम ७ एद्रव्यमां जाणवुं ॥ हवे ७ द्रव्यमां
वक्तव्यते वचनसुं कहिवायोग्य एहवा अनंतास्वभाव एक एकद्रव्यमां छे ॥ अने
अवक्तव्यके० वचनसुं कह्याजायनहि केवलज्ञानेजणाय एहवाअनंताधर्मस्वभा
व एकएकद्रव्यमां रह्याछे ॥ एम अनंतागुणपर्याय पण कहेवा ॥ हवे सर्वपदार्थ
केवलियेदिठा तेने अनंतमेभागे अभिलाप्यवाक वर्गणायोग्य ॥ अनभिला
प्यने अनंतमे भागे ते अभिलाप्य ॥ ते वलिअभिलाप्यने अनंतमे भागे व
क्तव्य कह्या ॥ तेने अनंतमेभागे गणधरमहाराजे सूत्रगुंथ्याछे ॥ तेहथि असं
ख्यातमे भागे हमणा आगमरह्याछे ॥ ए ८ पक्ष ॥ वलिनित्य अनित्य पक्षथि

उपनि चउभंगीकहेछे ॥ अनादि अनंत ते जेनिआदिनेअंतनथि ते प्रथमभां
गो ॥ १ ॥ जेनि आदिनथि ने अंतछे ते अनादिसांत विजोभांगो ॥ २ ॥ जेनि
आदिछे ने अंतपणछे ते सादिसांतत्रिजोभांगो ॥ ३ ॥ जेनि आदिछे पण अंत
नथि ते सादिअनंतचउथोभांगो ॥ ४ ॥ हवे धर्मास्तिकायमां ४ गुण अनादि
सांतभांगोनथिज ॥ पर्याय ४ खंध ॥ १ ॥ देश ॥ २ ॥ प्रदेश ॥३॥ अगुरुलघु
॥ ४ ॥ ए ४ सादिसांतत्रिजेभांगेछे सिद्धनाजीवमां धर्मास्तिकाय ना प्रदेशसा
दि अनंत चउथेभांगेछे ॥ एमज अधर्म द्रव्यमां ॥ आकाशमां पण एरिते जा
णवुं पणएटलो विशेष खंध अनादि अनंत पहिले भांगे जाणवो ॥ कालद्रव्य
मां गुण ४ अनादि अनादि अनंतछे पहिलेभांगे ॥ अने पर्यायमां अतीतका
ल अनादिसांत विजेभांगेछे ॥ वर्तमानकाल सादिसांतत्रिजे भांगेछे ॥ अनागत
काल सादिअनंत चउथे भांगेछे ॥ पुद्गल द्रव्यमां ४ गुण अनादि अनंत प्रथम

नांगेछे ॥ जीव पुद्गलनो संबंध अभव्य जीवने अनादि अनंत प्रथम भांगेछे ॥ अने पुद्गल खंधथि ते सादिसांतत्रिजेभांगेछे ॥ जघन्य १ समय उत्कृष्टो असंख्यकाल ते माटेसादिसांतभांगो ॥ सादि अनंत भांगो पुद्गलमां नथि ॥ अने भव्यजीवने पुद्गलनो संबंध अनादि सांतचउथेभांगेछे ॥ जीवद्रव्यमां गुण ४ अनादि अनंत प्रथमभांगेछे ॥ जीवने कर्मनो संजोग ॥ भव्यजीवने अनादि सांतजेकारणे किवारेककर्मथि छुटसे ॥ नरकतिर्यंचना भवकरवा ते सादिसांत त्रीजेभांगेजाणवा ॥ अने जिवमां सिद्धपणु प्रकटे ते सादिअनंत चउथेभांगे जाणवुं ॥ इम षट्द्रव्यनो विचार लेशमात्र लिख्योछे ॥ अथ आत्मद्रव्यनो विचार ॥ आत्मा ३ ॥ एकबहिरात्मा ॥ १ ॥ बीजोअंतरात्मा ॥ २ ॥ त्रिजोपरमात्मा ॥ ३ ॥ तेमां बहिरात्माते ॥ धन ॥ स्वजन ॥ शरिर ॥ कर्म ॥ सर्व परवस्तु पुद्गलिक माहरि अनेहुंपण एहनो एहवी परिणामनि लोल्यतापणे ॥ अज्ञा

न मोह मिथ्यात्वे परिणम्यो ॥ तेने बहिरात्मा कहिये ॥ दुहा ॥ पुग्गलसुरातोर
हे ॥ जाणेएहनिधान ॥ तसलाभेलोभ्योरहे ॥ सोबहिरात्मअभिधान ॥ १ ॥
पुग्गल विषय विलासद्रव्य कुटुंबादिमां रातो ने रातो तल्लीनपरिणामे ॥ म
ग्नरहे एहपुग्गलमनोज्ञ मिलेथके जाणेजे एहउपरांत बिजुंकोइ निधाननथि ॥
ते पुग्गलना लाभमांज लोभिरहे ॥ तेनुं नाम बहिरात्मा ॥ तेपहिला गुणठा
णाथि त्रिजागुणठाणा सुधिजाणवो ॥ १ ॥ हवे बीजा अंतरात्मानुं लक्षणकहे
छे ॥ दुहा ॥ पुग्गल खलसंगीपरे ॥ सेवे अवसर देख ॥ तनुंअशक्तज्युं लकरी ॥
ज्ञान भेद पदविलेख ॥ १ ॥ पुग्गलनो संबंध खल निच दुर्जन मनुष्यनि संग
ति सरिखो जाणे ॥ पण अणचाल्ये पुग्गलनो संगकरे ॥ जीम शरिरे असमर्थ
लाकडिराखे ते लाजतोथको ॥ पण समर्थाइ ये राखेनहि ॥ तिम परिणामथि
ज्ञानसम्यक्त्वेकरि पुग्गलीकवस्तुजीववस्तुनो भेदकरि ॥ अंतरंगपरिणामथि ॥

उदासी परिणामे ॥ आत्मीकवस्तु न्यारि उलखिने ॥ तेनुं ध्यान करणरुचिवा
लाने ॥ अंतरात्मपदप्रकटे ॥ ते चउथे गुणठाणेथि मांम्डिने १२ मांगुणठाणा
सुधि जाणवो ॥ २ ॥ हवे त्रीजा परमात्मानु लक्षण कहेछे ॥ दुहो ॥ न्यारो आ
पस्वरूपमे ॥ न्यारो पुग्गल खेल ॥ सो परमात्मा जाणिये ॥ नहि जसन्नव को
मेल ॥१॥ आत्मस्वरूपने विषेमग्न॥ दुहो ॥ समता रमता उर्ध्वता ॥ ज्ञायकता
सुख न्नास ॥ बेदकता चैतन्यता ॥ ए सब जीवविलास ॥ १ ॥ एटला बोल प्र
गटथयाछे ॥ शुद्धप्रणातिये अने पुग्गलना खेलथि न्यारो ॥ दुहो ॥ तनता मन
ता वचनता ॥ जम्ता जम्समेल ॥ लघुता गुरुता गमनता ॥ ए अजीव के खे
ल ॥ १ ॥ ए सर्व परवस्तु मात्र कर्म चेतनाथि न्यारो रहे जेहने पुनरपि न्नवा
दि सर्वमेलरहित ते परमात्मा तेरमे चउदमे गुणठाणे तथा सिद्धने परमात्मा
कहिये ॥ ३ ॥ तेमां जव्यात्मा असंख्यात प्रदेशी ॥ बहिरात्मानि प्रणतिये परि

णम्योते बहिरात्मा ॥ एमज अंतरात्मा परमात्म पण कहिये १ एमज कपा
यात्माते निश्चयव्यवहारे सर्वरिते बहिरात्माज कहिये ॥ २ ॥ योगात्मा नि
श्चयनये तो बहिरात्मा ॥ व्यवहारनये शुद्ध योगते अंतरात्मा ॥ अशुद्ध
योगतेबहिरात्मा ॥ ३ ॥ उपयोगआत्मातेमां ज्ञानात्मानां उपयोगमां ४
ज्ञानअंतरात्मा ॥ केवलज्ञानपरमात्मा ॥ दर्शनआत्मामां ३ दर्शननो उ
पयोग शुद्ध प्रणतिये अंतरात्मा ॥ अशुद्धप्रणतिये बहिरात्मा ॥ केवलद
र्शननो उपयोग ते परमात्मा ॥ ३ ॥ अज्ञाननो उपयोग ते बहिरात्मा ॥ ४ ॥
ज्ञानात्मामां ४ ज्ञान अंतरात्मा ॥ केवल ज्ञान परमात्मा ॥ ५ दर्शन आत्मा
मां ३ दर्शन शुद्धप्रणतिये अंतरात्मा ॥ अशुद्ध प्रणतिये बहिरात्मा ॥ केवल द
र्शन ते परमात्मा ॥ ६ ॥ चारित्र आत्मामां ॥ ५ चारित्र क्षयोपशमनि परिण
तिये अंतरात्मा ॥ अने जथाख्यातचारित्र क्षायक केवली चारित्रनि परिणति

उदासी परिणामे ॥ आत्मीकवस्तु न्यारि उलखिने ॥ तेनुं ध्यान करणरुचिवा
लाने ॥ अंतरात्मपदप्रकटे ॥ ते चउथे गुणठाणेथि मांफिने १२ मांगुणठाणा
सुधि जाणवो ॥ २ ॥ हवे त्रीजा परमात्मानु लक्षण कहेछे ॥ दुहो ॥ न्यारो आ
पस्वरूपमे ॥ न्यारो पुद्गल खेल ॥ सो परमात्मा जाणिये ॥ नहि जसत्रव को
मेल ॥१॥ आत्मस्वरूपने विषेमग्न॥ दुहो ॥ समता रमता उर्ध्वता ॥ ज्ञायकता
सुख त्रास ॥ बेदकता चैतन्यता ॥ ए सब जीवविलास ॥ १ ॥ एटला बोल प्र
गटथयाछे ॥ शुद्धप्रणातिये अने पुद्गलना खेलथि न्यारो ॥ दुहो ॥ तनता मन
ता वचनता ॥ जफता जफसमेल ॥ लघुता गुरुता गमनता ॥ ए अजीव के खे
ल ॥ १ ॥ ए सर्व परवस्तु मात्र कर्म चेतनाथि न्यारो रहे जेहने पुनरपि त्रवा
दि सर्वमेलरहित ते परमात्मा तेरमे चउदमे गुणठाणे तथा सिद्धने परमात्मा
कहिये ॥ ३ ॥ तेमां द्रव्यात्मा असंख्यात प्रदेशी ॥ बहिरात्मानि प्रणतिये परि

एम्योते बहिरात्मा ॥ एमज अंतरात्मा परमात्म पण कहिये १ एमज कषा
यात्माते निश्चयव्यवहारे सर्वरिते बहिरात्माज कहिये ॥ २ ॥ योगात्मा नि
श्चयनये तो बहिरात्मा ॥ व्यवहारनये शुद्ध योगते अंतरात्मा ॥ अशुद्ध
योगतेबहिरात्मा ॥ ३ ॥ उपयोगआत्मातेमां ज्ञानात्मानां उपयोगमां ४
ज्ञानअंतरात्मा ॥ केवलज्ञानपरमात्मा ॥ दर्शनआत्मामां ३ दर्शननो उ
पयोग शुद्ध प्रणतिये अंतरात्मा ॥ अशुद्धप्रणतिये बहिरात्मा ॥ केवलद
र्शननो उपयोग ते परमात्मा ॥ ३ ॥ अज्ञाननो उपयोग ते बहिरात्मा ॥ ४ ॥
ज्ञानात्मामां ४ ज्ञान अंतरात्मा ॥ केवल ज्ञान परमात्मा ॥ ५ दर्शन आत्मा
मां ३ दर्शन शुद्धप्रणतिये अंतरात्मा ॥ अशुद्ध प्रणतिये बहिरात्मा ॥ केवल द
र्शन ते परमात्मा ॥ ६ ॥ चारित्र आत्मामां ॥ ५ चारित्र क्षयोपशमनि परिण
तिये अंतरात्मा ॥ अने जथाख्यातचारित्र क्षायक केवली चारित्रनि परिणति

लुंणविना रसवति न सोभे ॥ तिम सत्ताये केवलज्ञान न माने ॥
ते जीवपूर्वे तेटली क्रीया करे ॥ ञ्न्यज्ञाननो अभ्यासकरे ॥ पण जो
केवलज्ञानज सत्ताएनथी ॥ ने बीजाञ्न्यतो जरूछे । तिवारे सुंप्रगट
थसे ते माटे शुध्द सत्ताप्रगटकरवी ॥ तेज कारज विनातो करणी सर्वेशुभाश्रव
पुन्यफलनी दाताछे ॥ तेतो परभावछे अनंत वारजीवेपाम्या ॥ तेपाम्यानुं सुं
आश्चर्यछे ॥ ते माटे आचारांग नंदीमोक्ष मार्गाध्ययन भगवति पन्नवणा अ
नुयोगद्वारादि दशवैकालिक आठमाध्ययनादि ॥ सकल आगमनीशाखे ॥
आत्मार्थि मोक्षार्थि निर्जरार्थिनेतो ॥ एकांतहित ॥ पार्श्वमणीचिंतामणी रस
कुंपि अमृत रस कुंभ ॥ चित्रावेली कल्पवेली तथातरु ॥ सीध्दमंत्रथी अधिक
अनोपम ॥ सारसर्वज्ञानतुं तत्वएजे केवलज्ञान सत्ताए मानिने ॥ शक्तिप्रमाणे
शुध्द व्यवहार क्रियाकरीने शुध्द सत्ता प्रगटकरवि ॥ ए सर्वे सद्दहणाथी ॥ को

पणनचलवुं ॥ फरीफरीने
झिगमेयुक्तिवालामीले ॥ सद्दहणासत्तानाप्रतिपत्ती ॥ पणनचलवुं ॥ फरीफरीने
जीवने आत्मद्रव्यनी शुद्ध केवलसत्तानी श्रद्धाथावी महादुर्लभछे ॥ ते माटे ज्ञा
नामृतमाझीली ॥ सकलजंतुनीरक्षाकरी गुणीनागुणग्रामकरी ॥ आत्मानी निं
दाकरी ॥ सकलजीवने उपगारबुद्धिचिंतवी ॥ सर्व इर्ष्या कोइजीवना अवर्ण वा
दमात्रनो निषेधकरी ॥ सकल उपगारी पुरुषनो क्षणक्षण उपगारस्मरी ॥ स
रल स्वभावी उदासी भावेरहिने ॥ पूर्वे अनंतजीव सत्तानेवर्या वरेछे ॥ आगमी
येकालेवरस्ये ॥ घणुंसुंकहिइं ॥ ए विचारणातो पोताना जीवने हाथछे॥ ए सिखा
मण प्रमाणकरे ॥ तेहनासकल कार्य सिद्धथाय ॥ इति षट्द्रव्य वीचार संपूर्ण॥
अथ रूपि अरूपीना बोल लिख्यते ॥ गाथा ॥ कम्मठ पावठाणाय ॥ मनवय
जोगाय कम्मदेहा॥एसाचउफासा ॥ घनतनवाय घनोदही ॥ १ ॥ उरालाय
चउदेहा ॥ पुग्गलथिकाय दवलेसा ॥ तह्काय जोगोय ॥ नावद्या अठ

फासा ॥ २ ॥ धम्मा धम्मागासा ॥ जीव अठ्ठापावठाणा वत्तिय ॥ दिठिपच्चुग
णा ॥ उवउगन्नावलेसाय ॥ ३ ॥ उग्गहासन्नाबुध्धि ॥ चउच्चउ एगेगसठीय ॥
एए सव्वन्नणीया ॥ अरु वितथ्थनायव्वा ॥ ४ ॥ अर्थ ॥ कर्म ॥ ८ ॥ पाप ॥१८॥
मनजोग ॥ १ ॥ वचनजोग ॥ १ ॥ कार्मणशरिर ॥ १ ॥ ए ॥ २ए ॥ बोलमां ४
स्पर्श लाभे ॥ १ ॥ घनवाय ॥ १ ॥ तनवाय ॥ १ ॥ घनोदधि ॥ १ ॥ उदारिक
॥ १ ॥ वैक्रेय ॥ १ ॥ आहारक ॥ १ ॥ तेजस । ए ॥ ४ ॥ सरिर ॥ पुद्गलास्ति
काय ॥ १ ॥ द्रव्यलेशा ॥ ६ ॥ कायजोग ॥ १ ॥ ए ॥ १५ ॥ बोलमां ॥ ८ ॥
स्पर्श लाभे ॥ २ ॥ ए ४४ बोलरूपिना जाणवा ॥ धर्मास्तिकाय ॥ १ ॥ अधर्मा
स्तिकाय ॥ १ ॥ आकाशास्तिकाय ॥ १ ॥ जीव ॥ १ ॥ काल ॥ १ ॥ अढार
पापनि निवृत्ति ॥ १८ ॥ द्दष्टि ॥ ३ ॥ उठाण ॥ १ ॥ कर्म ॥ १ ॥ बल ॥ १ ॥
वीर्य ॥ १ ॥ पुरुषाकारप्राक्रम ॥ १ ॥ उपयोग ॥ १२ ॥ भावलेश्या ॥ ६ ॥ अ

॥ २ ॥ धारणा ॥ १ ॥ संज्ञा ॥ ४ ॥ उत्पातकि
वग्रह ॥ १ ॥ इहा ॥ १ अवाय ॥ १ ॥ पारिणामिकि॥ ए ॥४॥ बुध्दि । ए ॥ द १॥
॥ १ ॥ विणयकि ॥ १ ॥ कर्मकि ॥ १ ॥ इति रूपी अरूपीना बोल समाप्तं ॥ ॥ ॥
बोल अरूपीना जाणवा ॥ अथ भव्य जीवना सुख बोधने अर्थे ३ प्रकारना अंगुल तथा २ प्र
॥ॐनमः॥ अथ भव्य जीवना सुख बोधने अर्थे ३ प्रकारना अंगुल तथा ३ प्रकारना
कारना प्रव्योपमनुमान सूत्र अनुयोगद्वारथि लीखियेछे॥तेमां प्रथम ३ प्रकारना
अंगुलना नाम ॥ आत्मअंगुल ॥ १ ॥ उत्सेधांगुल ॥ २ ॥ प्रमाणांगुल ॥ ३ ॥
हवे आत्मअंगुलनुं मान कहेछे ॥ भरतादि १५ क्षेत्रछे॥तिहां जे काले जे आरे
जे मनुष्य होय ॥ ते मनुष्यनुं ते काले ते आराने विषे पोतपोताने १२ अंगु
ले १ मुखथाय ॥ अने ए मुखे एक पुरुषनुं उंचपणानुं मान थाय ॥ एटले
१२ नवा अठोत्तरसो १०८ आत्मअंगुलनो पुरुष उंचो होय ॥ ते पुरुषने
प्रमाणोपेत कहिये ॥ १ ॥ हवे मान युक्त पुरुष ते केहने कहिये ॥ पुरुष प्र

माणे ऊंभिजलनिकुंभि होय ॥ तेने जलेकरि परिपूर्ण भरिये ॥ तेमांहि पुरुष
बेशे ॥ तिवारे एक द्रोण प्रमाणे जल कुंभिमांहिथि बाहिर निकले ॥ तथा
एक द्रोण प्रमाण जले करि कुंभिऊंणि होय ते कुंभिमांहि ते पुरुष बेशे तिवारे
परिपूर्ण जलेभराय ॥ तिवारे ते मानोपेत पुरुष कहिये ॥ हवे द्रोण ते केवडो
होय ते कहेछे ॥ बेअसलीये १ पसली थाय ॥ बेपसलीये १ सइथाय ॥
च्यारसइये १ कुडवथाय ॥ च्यारकुडवे १ पाथोथाय ॥ च्यारपाथे १ आढो
थाय ॥ च्यारआढे १ द्रोण थाय ॥ ए द्रोणनुं मान कह्युं ॥ ए रीते मानो पेत
पुरुष कहिये ॥ २ ॥ हवे उन्मान युक्त पुरुषकेहने कहिये ॥ जे पुरुष तोल्यो
थको अर्द्ध भार थाय तेने उन्मानयुक्त पुरुष कहिये ॥ अर्द्धभारनुं मान
कहेछे ॥ एक हजारने पंचाशपले अर्द्धभार थाय ॥ ए अर्द्धभारनुं मान कह्युं
॥ ३ ॥ हवे ए ॥ ३ ॥ प्रमाण मान उन्मान युक्त लक्षणसाथियादिक ॥ व्यंज

गुण ते क्षमा दानादिक सहित जे पुरुष होय ते उत्तम
न मसतिलादिक ॥ गुण ते क्षमा दानादिक सहित जे पुरुष होय ते उत्तम ॥ १ ॥
पुरुष जाणवो ॥ हवे उत्तम पुरुष १०८ आत्मअंगुलनो उंचो होय ॥ १ ॥
मध्यम पुरुष १०४ आत्म अंगुलनो उंचो होय ॥ २ ॥ अधम पुरुष ९६
आत्म अंगुलनो उंचो होय ॥ ३ ॥ हवे जे पुरुष १०८ आत्म अंगुलथि न्यु
नाधिक होय ॥ स्वरआदेयवचन १ सत्वधीर्य ॥ २ ॥ सारतेरूपादि ॥ ए ३
गुणे वर्जित होयते परनोदास किंकर थाय ॥ एहवा ६ आत्मअंगुले १ पगना
मध्यभागनुं पहोल पणुं थाय ॥ वेपगे १ विहथि।वेंत थाय ॥ वेविहथि। वेंत। ए
१ हाथ थाय ॥ बेहाथे १ कुक्षिथाय ॥ वेकुक्षिये अथवा ४ हाथे १ धनुष
थाय ॥ बेहजार धनूषे १ गाउथाय ॥ च्यारगाउ ए १ जोजन थाय ॥ जे काले
जे आरे जे मनुष्यनुं आत्मअंगुल होय ते आत्मअंगुले ते ते वखतना ॥ न
गर ॥ गाम ॥ वन ॥ कुवा ॥ तलाव ॥ वाव ॥ गढ ॥ पोल ॥ कोठा ॥

यान ॥ रथ ॥ गाडादिक ७३ बोलनामानमळ्याछे ॥ १ ॥ हवे उत्सेधांगुलनुं मान कहेछे ॥ अनंता सुक्ष्मपरमाणुआभेलाकरिये ॥ तिवारे १ व्यवहारिपरमाणु थाय ॥ तथा जालीनेविषे रह्या सूर्यना किरण तेमां रहिजे रजउम्ती देखायछे ॥ ते रजनो अनंतमो भाग तेने व्यवहारिपरमाणु कहिये ॥ अन्यमति रजनातेत्रिशमाभागने परमाणु कहेछे ॥ ते व्यवहारि परमाणु ॥ शस्त्रे करि तरवारनी तथा छरपलानिधारायेकरि पण छेदाय भेदाय नहि ॥ अग्निमांहि सोंसरो निकलिजाय पण बलेनहि ॥ दाझेनहि ॥ तथा पुष्कर संवर्त्त महामेहमांहि चाल्योजाय पण पलडेभिंजाय नहि ॥ तथा गंगामहानदीनो प्रवाह उंचोचुलहिमवंत पर्वतथिपडेछे ते प्रवाहसाहमो चाल्योजाय पण खलायनहि ॥ घातपामेनहि ॥ तथा पाणिना आवर्त्तन तथा बिंदुयामांहि रहे पण तिहांसम्मिगलिने पाणि नथइजाय ॥ ते अतितिखे शस्त्रे करिने देवतानी

शक्तिये छेदता भेदता एकखंभनो बिजोखंडन थाय ॥ तेने तत्वज्ञाता पर
माणु कहेछे ॥ एहवा अनंता व्यवहारि परमाणु एकठा मिलेतिवारे १ उष्ण
सन्नियो थाय ॥ आठ उष्णसन्निये १ सणसन्नियो थाय ॥ आठ सणसन्निये १
उर्ध्वरेणुथाय ॥ आठउर्ध्वरेणुये १ त्रशरेणुते बेंद्रीयादिक त्रशजीवने चालता रज
उडतेथाय ॥ आठत्रशरेणुये १ रथरेणुते रथादिकहिंडता रजउडतेथाय ॥ आठ
रथरेणुए १ देवकुरु उत्तरकुरुना जुगलीयामनुष्यना वालाग्रनुं जाडपणुं
थाय ॥ आठदेव कुरु उत्तर कुरुनावालाग्रे १ हरिवास रमकवासक्षेत्रना जुग
लियाना वालाग्रनुं जाडपणुंथाय ॥ आठहरिवास रमकवासना वालाग्रे १ हे
मवय एरणवयक्षेत्रनाजुगलियाना वालाग्रनुं जाडपणुंथाय ॥ आठहेमवयएर
णवयना वालाग्रे १ पूर्वपश्चिम महाविदेहना मनुष्यनावालाग्रनुं जाडपणुंथाय ॥
आठ पूर्वपश्चिम महाविदेहनावालाग्रे १ भरत इरवतना मनुष्यनावालाग्रनुं

जाडपणुंथाय ॥ एहवा ८ वालाग्रे १ लिखथाय ॥ आठलिखे १ जुथाय ॥ आठजुये १ जवमध्यथाय ॥ आठजवमधे १ अंगुलथाय ॥ छअंगुले १ पगथाय ॥ १२ अंगुले १ वेंतथाय ॥ २४ अंगुले १ हाथथाय ॥ ४८ अंगुले १ कुक्षिथाय ॥ ९६ अंगुले १ धनूषथाय ॥ २ हजारधनूषे १ गाउथाय ॥ ४ गाउए १ जोजनथाय ॥ एउत्सेधांगुले २४ दंडकनी अवघेणामवीछे ॥ हवे प्रमाणांगुलनुमानकहेछे॥भरतादिक चक्रवर्तीनुं कांगणिरत्नहोय॥ ते ८ सोनइयाभारनेतोलेछे ॥ सोनइयानुं तोलकहेछे ॥ ४ मधुरत्रिफले ॥ १ स्वेतसरसवथाय ॥ १६ सरसवे १ अड्दथाय ॥ २ अड्दे १ गुंजाथाय ॥ ५ गुंजाये १ मासोथाय ॥ १६ मासे १ सोनइयोथाय ॥ एहवा ८ सोनइयाभारनुं कांगणिरत्नहोय ॥ तेनेछ तला ॥ ८ खुणा ॥ १२ हांशछे ॥ सोनीनी अहिरणने संठाणेछे ॥ ते कांगणिरत्ननी एकेकीहांश उत्सेधांगुलनि पहोलिछे ॥ अने जे उत्सेधांगुल

ते समण भगवंत महावीरनुं अर्द्धअंगुलथाय ॥ तेने हजारगुणुंकरिये॥तिवारे
१ प्रमाणांगुलथाय ॥ एटले महावीरस्वामीना पांचसे आत्मअंगुले १ प्रमा
णांगुलथाय ॥ एहवा ६ प्रमाणांगुले १ पगथाय ॥ १२ अंगुले १ वेतथाय ॥
२४ अंगुले १ हाथथाय ॥ ४८ अंगुले १ कुक्षिथाय ॥ ९६ अंगुले १ धनूप
थाय ॥ २ हजारधनूपे १ गाउथाय ॥ ४ गाउये १ जोजनथाय ॥ ए प्रमाणां
गुले । पृथ्वी ॥ पर्वत ॥ विमान ॥ नरकावासा ॥ द्विप ॥ समुद्र ॥ नरक ॥ देव
लोक ॥ लोक ॥ अलोक ॥ शास्वती जमीनरत्न प्रभादिक २८ बोलनुं तथा
द्विपसमुद्रादि ॥ २८ बोलनुं ॥ लांबपणुं ॥ पहोलपणुं ॥ ऊंचपणुं ॥ ऊंडपणुं ॥
परिधिप्रमुखनामानमव्याछे ॥३॥ए३ प्रकारना अंगुलकह्याते प्रत्येक२ना त्रण
भेद ॥ श्रेणिअंगुल ॥ १ ॥ प्रतरांगुल ॥ २ ॥ घनांगुल ॥ ३ ॥ तीहां असत्क
ल्पनाये श्रेणिते असंख्याता जोजनकोडाकोडि प्रमाणेलांबी ॥ अने एक आ

काश प्रदेशनि पहोली ॥ जाम्पणे लोकांत सुधि तेने श्रेणिकहिये ॥ १ ॥ ते श्रेणिने श्रेणिगुणोकरिये तेने प्रतरकहिये ॥ २ ॥ ते प्रतरने श्रेणिगुणोकरिये तेने घनकहिये ॥ ३ ॥ ते घनीकृतलोकने संख्यातगुणोकरिये ॥ तिवारे संख्याताल़ोक अलोकमांथाय ॥ ते संख्याताल़ोकने असंख्यात गुणाकरिये त्यारे असंख्याताल़ोक अलोकमांथाय ॥ ते असंख्याता लोकने अनंतगुणा करिये ॥ तिवारे अनंताल़ोक अलोकमांथाय॥अने ते अनंताल़ोकना जेटला आकाश प्रदेशछे ॥ तेटलानिगोदना एक शरिरमांहिनिगोदिया जीवछे ॥ असंख्याता सुक्ष्मनिगोदे १ बादरनिगोदथाय ॥ एक निगोदमां अनंताजीवजाणवा॥धन्य तिर्थंकरदेवनुं ज्ञान ॥ ए ३ प्रकारना अंगुलकह्या ॥ हवे ३ प्रकारना पल्योपमनुं मान कहेछे ॥ तेमां पल्योपमना ३ नेद ॥ उध्धारपल्योपम ॥ १ ॥ अध्धापल्योपम ॥ २ ॥ क्षेत्रपल्योपम ॥ ३ ॥ एकएकना बेबेनेद ॥ सुक्ष्म ॥ १ ॥

बादर ॥ २ ॥ हवे प्रथम बादर उधारपल्योपमनुं स्वरूप कहेछे ॥ एक जोज
ननो उत्सेधांगुले लांबोपहोलोने उंमोएहवो १ पालोकल्पिये ॥ तेनि त्रिगुणी
ऊझेरी परिधिहोय ॥ ते पालोदेवकुरु उत्तरकुरुना जुगलीयानामस्तकना
केश ते एक दिनथिमांडिने ७ दिननाउग्यावालाग्रेकरि भरिये ॥ ते एहवोठांसी
भरियेके ॥ अग्निमांहि बलेनहि ॥ वायरेकरीतेमांथी १ रजउमेनहि ॥ समेनहि
पोलारना अभावथि ॥ विध्वंशेनहि ॥ डुर्गंधथायनहि ॥ चक्रवर्तीनुं सैन्यउपर
चाले तो पण नमेभोलेनहि ॥ गंगानदीनो प्रवाह उपरचाले तो पण पाणि
मांहि भेदायनहि ॥ एहवोठांसीने पालोभरिये ॥ पछिते पालामांथि समये स
मये एक एक वालाग्रकाढिये ॥ इमकाढता जेटलेकालेपालोठालोथाय ॥ बाकी
एक रजरहेनहि ॥ तेटला कालने बादर उद्धार पल्योपमकहिये ॥ ते पल्यो
पम संख्यात समयनो जाणवो ॥ एहवा दशकोडाकोडि पल्योपमे १ बादर

उध्धार सागरोपमथाय ॥ ए सागरोपमनुं कांइ प्रयोजनथि ॥ केवल प्ररूपणा
मात्रछे ॥ ए बादर उध्धार पल्योपम ॥ २ हवे सुक्ष्म उध्धार पल्योपमनुं मान
कहेछे ॥ जीम एक जोजननो पालो कल्पिये ते पूर्ववत् ॥ ते पालामांहि देव
कुरु उत्तर कुरुना जुगलीयानामाथाना केश ते एकदीनना जावसात दीनना
उग्यावालाग्रलेइये ॥ ते एकेका वालाग्रना असंख्याता खंडकरिये ॥ ते खंड
केवडानाहनाथाय ॥ चक्षु इंद्रियनि अवघेणाथि असंख्यातमे जागे अने ना
हना सुक्ष्म वनस्पतिना जीवना शरिरनी अवघेणाथि असंख्यात गुणामहोटा॥
अने जेवडुं एक बादर पृथ्वी कायना जीवनुं शरिर तेवडा ते वालाग्रना खंड
नाहनाथाय ॥ ते वालाग्रनाखंड अग्नियें बलेनहि ॥ वायरेउडेनहि पूर्ववत् ॥
पछिते वालाग्रनेखंडे करिने ते पालोठांसी जरिये पूर्ववत् पछी ते पालामां
हिथि ॥ समये समये एकेकोवालाग्रनोखंड काढिये ॥ इम काढता जेटले काले

ण ४॥

यकाढिये ॥ इम काढता जेटले काले ते पालोगलोथाय ॥ तेटला कालने बादर अद्धापल्योपम कहिये ॥ ए पल्यसंख्याताकोडिवर्षेथाय ॥ एहवा दश कोडाकोडि बादर अद्धापल्योपमे १ बादर अद्धासागरोपमथाय ॥ ए सागरोपमनुं कांइ प्रयोजननथि ॥ केवलप्ररूपणामात्रछे ॥ ९ ॥ १ ॥ हवे सुक्ष्म अद्धापल्योपमनुं स्वरूप कहेछे ॥ एक जोजननो लांबो पहोलोने उंडोपालो पूर्ववत् कलपिये ॥ तेहमां पूर्ववत् देवकुरु उत्तरकुरु क्षेत्रना जुगलीयानावालाग्रना असंख्याता खंडकरिभरिये ॥ पछी ते पालामांथि सोसोवर्षे एकेकिरज काढिये ॥ जेटले काले ते पालोखालिथाय ॥ तेटला कालने सुक्ष्म अद्धापल्योपम कहिये ॥ एहवा दश कोडाकोडि पल्योपमे १ सुक्ष्म अद्धासागरोपमथाय ए सागरोपमे ॥ नारकी ॥ तिर्यंच ॥ मनुष्य ॥ देवता ॥ ए ४ गतिना आयुष मव्याछे ॥ ९ ॥ २ ॥ हवे क्षेत्रपल्योपम कहेछे ॥ क्षेत्रपल्योपमना २ भेद ॥

बो ॥न

बादर ॥ १ ॥ सुक्ष्म ॥ २ ॥ तेमां बादर क्षेत्रपल्योपम केहने कहिये ॥ एक जो
जननो लांबोपहोलोने ऊंडो पूर्ववत् पालोकल्पिये ॥ तेमां पूर्ववत देवकुरु
उत्तरकुरु क्षेत्रना जुगलीयाना माथाना वालाग्रेभरिये ॥ पछी ते पालामांहिला
वालाग्रनें फरस्या आकाश प्रदेशने समये समये अपहरता जेटले काले
ते पालोखालिथाय ॥ तेटला कालने ॥ बादर क्षेत्र पल्योपम कहिये ॥ ए पा
लोखालिथाता असंख्याति अवसर्प्पिणी उत्सर्प्पिणी वहिजाय ॥ एहवा दश
कोडाकोडि पल्योपमे १ बादर क्षेत्र सागरोपमथाय ॥ ए सागरोपमनो कांइ
प्रयोजननथि ॥ केवलप्ररूपणामात्रछे ॥ तथा मतांतरेजीव द्रव्यना परिणाम
मव्याछे ॥ ३ ॥ १ ॥ हवे सुक्ष्म क्षेत्रपल्योपमनुं स्वरूप कहेछे ॥ एक जोजन
नोलांबो पहोलोनेऊंडो पूर्ववत् पालोकल्पिये ॥ तेमांही पूर्ववत् देवकुरु उत्तर
कुरु क्षेत्रना जुगलियानावालाग्रना असंख्याता खंड करिभरिये ॥ पछि ते

पालामांहिलावालाग्रने फरस्या आकाश प्रदेश तथा अण फरस्या आका
श प्रदेशछे ते फरस्या अणफरस्या आकाश प्रदेशने समये समये अप
हरिये ॥ जेटले काले पालोखालिथाय ॥ तेटला कालने १ सुक्ष्म क्षेत्र पल्यो
पम कहिये ॥ एहवा दशकोडाकोडि सुक्ष्म क्षेत्र पल्योपमे १ सुक्ष्म क्षेत्र साग
रोपमथाय ॥ ए सागरोपमे द्रष्टिवाद सूत्रना भाव मल्याछे ॥३॥४॥ ए ३ प्रकारना
अंगुलतथा ३ प्रकारना पल्योपमनुं मानकह्युं ॥ इति प्रमाणबोधः समाप्तः ॥
अथ सिद्धांतना मूल श्लोकनुं मान तथा बीजा टीका चूर्णिभाष्यनुं मान
लिख्युं छे ॥ आचारांगमूलश्लोक ॥ २५०० ॥ आचा० निर्युक्ति ॥ ४५० ॥
आचा० चूर्णि ॥ ८३०० ॥ आचा० वृत्ति० ॥ १२००० ॥ १ ॥ सूयगडांगमूल
॥ २१०० ॥ तेनि निर्युक्ति ॥ २५० ॥ तेनि चूर्णि ॥ १०००० ॥ तेनि वृत्ति
॥ १२८५० ॥ २ ॥ ठाणांगसूत्रमूल ॥ ३७७० ॥ तेनि वृत्ति ॥ १५२५० ॥ ३ ॥

समवायांगमूल ॥ १६६७ ॥ तेनि वृत्ति ॥ ३७७६ ॥ तेनि चूर्णि ॥ ४०० ॥ ४ ॥
भगवतीसूत्रमूल ॥ १५७७२ ॥ तेनि चूर्णि ॥ ४००० ॥ तेनि वृत्ति ॥ १८६१६ ॥
॥ ५ ॥ ज्ञाताधर्मकथामूल ॥ ५५०० ॥ तेनि वृत्ति ॥ ४२५२ ॥ ६ ॥ उपाशाक
दशामूल ॥ ८१२ ॥ अंतगडदशामूल ॥ ७९० ॥ अनुत्तरोववाइमूल ॥ १९२ ॥
ए ३ सूत्रनि वृत्ति ॥ १३०० ॥ ९ ॥ प्रश्नव्याकरणमूल ॥ १२५० ॥ तेनि वृत्ति
॥ ४६०० ॥ १० ॥ विपाकमूल ॥ १२१६ ॥ तेनिवृत्ति ॥ ९०० ॥ ११ ॥ ए ११
अंगनुं मान कह्युं ॥ हवे १२ उपांगनुं मान कहेछे ॥ उववाइमूल ॥ ११६७ ॥ तेनि
वृत्ति ॥ ३१२५ ॥ १ ॥ रायपसेणीमूल ॥ २०७८ ॥ तेनि वृत्ति ॥ ३७०० ॥ २ ॥
जिवाभिगममूल ॥ ४७०० ॥ तेनि चूर्णि ॥ १५०० ॥ तेनि लघुवृत्ति ॥ १००० ॥
तेनि मलयवृत्ति ॥ १३००० ॥ ३ ॥ पन्नवणामूल ॥ ७७८५ ॥ तेनि लघुवृत्ति
॥ ३७२८ ॥ तेनि बृहद्वृत्ति ॥ १६००० ॥ ४ ॥ जंबुद्विपप्रज्ञप्तिमूल ॥ ४१४६ ॥

तेनि चूर्णि ॥ १८६० ॥ तेनि वृत्ति ॥ १२००० ॥५॥ चंद्रप्रज्ञप्तिमूल ॥२२००॥
तेनि वृत्ति ॥ ९४०० ॥६॥ सूर्यप्रज्ञप्तिमूल ॥२३००॥ तेनि लघुवृत्ति ॥१०००॥
तेनि बृहद्वृत्ति ॥ ९१३० ॥ ७ ॥ निरयावलिका ॥ ८ ॥ कप्पिया ॥ ९ ॥ पु
ष्फिया ॥ १० ॥ पुप्फचूलिया ॥ ११ ॥ विण्हिदसा ॥ १२ ॥ ए ५ नि मूल
संख्या ॥ ११०९ ॥ ए ५ निवृत्ति ॥ १८०९ ॥ १२ ॥ ए १२ उपांगनुं मान कह्यूं ॥
हवे ४ छेदनुं मान कहेछे ॥ व्यवहारमूल ॥ ६०० ॥ तेनुं भाष्य ॥ ६००० ॥
तेनि चूर्णि ॥ १०३६१ ॥ तेनि वृत्ति ॥ ३३६२५ ॥ १ ॥ बृहत्कल्पमूल ॥ ४७३
तेनुं लघु भाष्य ॥ ८००० ॥ तेनुं बृहद्भाष्य ॥ १३००० ॥ तेनि चूर्णि ॥ १४०००
तेनि वृत्ति ॥ ४२००० ॥ २ ॥ निशिथमूल ॥ ८१५ ॥ तेनुं भाष्य ॥ ७४०० ॥
तेनुं बृहद्भाष्य ॥ १२००० ॥ तेनि चूर्णि ॥ २८००० ॥ ३ ॥ दशाश्रुतस्कंधमूल
॥ १८३० ॥ तेनि निर्युक्ति ॥ १६८ ॥ तेनि चूर्णि ॥ २२४५ ॥ तेनि वृत्ति ब्रह्म

कृत ॥ ७५०० ॥ ४ ॥ ए ४ छेदनुं मान कह्युं ॥ पंचकल्पमूल ॥ ११३३ ॥ तेनुं
भाष्य ॥ ३१२५ ॥ तेनि चूर्णि ॥ ३१३१ ॥ १ ॥ जीतकल्पमूल ॥ २०५ ॥
तेनुं भाष्य ॥ ३१२५ ॥ तेनि चूर्णि ॥ १००० ॥ तेनि वृत्ति ॥ १७०० ॥ तेनुं टि
पण ॥१२००॥२॥ केटलाक ए २ ने छेदसूत्र कहेछे पण ए २ नुं नाम नंदीसूत्रमां
नथि ॥ एवं ६ छेद ॥ हवे ४ मूलसूत्रनुं मान कहेछे ॥ उत्तराध्ययनमूल ॥ २०००॥
तेनि निर्युक्ति ॥ ७०० ॥ तेनि चूर्णि ॥ ६००० ॥ तेनि लघुवृत्ति ॥ १२००० ॥
तेनि बृहद्वृत्ति ॥ १८००० ॥ १ ॥ दशवैकालिकमूल ॥ ७०० ॥ तेनि निर्युक्ति
॥ ४५० ॥ तेनि लघुवृत्ति ॥ ३५०० ॥ तेनि चूर्णि ॥ ७०० ॥ तेनि बृहद्वृत्ति
॥ ७००० ॥ २ ॥ नंदीमूल ॥ ७०० ॥ तेनि चूर्णि ॥ २००० ॥ तेनि लघुवृत्ति
॥ २३१२ ॥ तेनि बृहद्वृत्ति ॥ ७३५३ ॥ ३ ॥ अनुयोगद्वारमूल ॥ १८९९ ॥
तेनि चूर्णि ॥ ३००५ ॥ तेनि लघुवृत्ति ॥ ३५०० ॥ तेनि बृहद्वृत्ति ॥ ७००० ॥

॥ ४ ॥ ए ४ मूलसूत्रनुं मान कह्युं ॥ पाक्षिकसूत्रमूल ॥ ३०० ॥ तेनि वृत्ति
॥ ३००० ॥ १ ॥ पिंडनिर्युक्तिमूल ॥ ७०० ॥ तेनि लघुवृत्ति ॥ ४००० ॥ तेनि
बृहद्वृत्ति ॥ ७००० ॥ ओघनिर्युक्तिमूल ॥ १४०० ॥ तेनुं भाष्य ॥ ३०० ॥
तेनि चुर्णि ॥ ९००० ॥ तेनि वृत्ति ॥ ७००० ॥ आवश्यकमूल ॥ १०० ॥ तेनि
निर्युक्ति ॥ ३००० ॥ तेनि चुर्णि ॥ १८००० ॥ तेनुं टिपण ॥ ४६०० ॥ तेनि बृ
हद्वृत्ति ॥ २२००० ॥ तिलकवृत्ति ॥ १२००० ॥ विशेषावस्यकमूल ॥५०००॥
तेनि लघुवृत्ति ॥ १४००० ॥ तेनि बृहद्वृत्ति ॥ २८००० ॥ पर्युषणाकल्प ॥
॥ १२६० ॥ तेनि चुर्णि ॥ ७०० ॥ तेनि निर्युक्ति ॥ ६७५० ॥ तेनुं टिपण ॥
॥ ७०० ॥ तेनि संदेहवि० ॥ ३०५१ ॥ महानिशिथमूल ॥ लघुवाचना ॥
॥ ३५०० ॥ मध्यमवाचना ॥ ४२०० ॥ बृहद्वाचना ॥ ४५०० ॥ चउसरणपइ
नो मूलगाथा ६३ ॥ तेनि अवचुरि ॥ २२५ ॥ आउरपच्चखाणमूल ॥ ७० ॥

वृत्ति ॥ ९०० ॥ भत्तपच्चखाणमूल ॥ १७२ ॥ संथारकमुल ॥ १२२ वृ ॥ तंडुल वेयालियमूल ॥ ४०० ॥ चंडावेधकमूल ॥ १७३ ॥ देवेंद्रस्तवमूल ॥ ३०३ ॥ गणिविद्यामूल ॥ ८५ ॥ महापच्चखाणमूल ॥ १४३ ॥ वीरस्तवमूल ॥ ४५ ॥ अजीवकल्पमूल ॥ ४५ ॥ गछाचारमूल ॥ १३८ ॥ मरणविधिमूल ॥ ६५९ ॥ सिद्धप्राभृतमूल ॥ १२१ ॥ तिथोगालियमूल ॥ १२५३ ॥ आराधनपताका ॥ ९९३ ॥ दीवसागर पन्नत्तिसंगहणीमूल ॥२२३॥ ज्योतिष्करंडक ॥ १८५० ॥ अंगविद्या ॥ ९००० ॥ ऋषिभाषित सूत्र अध्ययन ४५ मूल ॥ ६०० ॥ इति सूत्रादिश्लोकसंख्या ॥ अथनंदी सूत्रमां ७२ सूत्रना नाम कह्याछे ते सूत्र ३ प्रकारना छे ॥ कालिक ॥१॥ उत्कालिक ॥ २ ॥ तद्व्यतिरिक्त ॥ ३ ॥ ए ३ भेद॥ तेमां प्रथम कालिक सूत्रना नाम कहेछे ॥ आचारंग ॥ १ ॥ सुयगडांग ॥ २ ॥ ठाणांग ॥ ३ ॥ समवायंग ॥ ४ ॥ भगवती ॥ ५ ॥ ज्ञाता ॥ ६ ॥ उपाशकदशा

॥ ७ अंतगडदशा ॥ ८ ॥ अनुत्तरोववाइ ॥ ९ ॥ प्रश्नव्याकरण ॥ १० ॥ वि
पाक ॥ ११ ॥ उत्तराध्ययन ॥ १२ ॥ दशाकल्प ॥ १३ ॥ ववहार ॥ १४ ॥ नि
शिथ ॥ १५ ॥ महानिशिथ ॥ १६ ॥ ऋषिभाषित ॥ १७ ॥ जंबुद्विपप्रज्ञप्ति ॥
॥ १८ ॥ द्विपसागरप्रज्ञप्ति ॥ १९ ॥ चंद्रप्रज्ञप्ति ॥ २० ॥ खुड्डियाविमाणप
विभत्ति ॥ २१ ॥ महल्लियाविमाणपविभत्ति ॥ २२ ॥ अंगचूलिया ॥ २३ ॥
वंगचूलिया ॥ २४ ॥ विवाहचूलिया ॥ २५ ॥ अरुणोववाए ॥ २६ ॥ वरुणोव
वाए ॥ २७ ॥ गरुडोववाए ॥ २८ ॥ धरणोववाए ॥ २९ ॥ वेसमणोववाए ॥
॥ ३० ॥ वेलंधरोववाए ॥ ३१ ॥ देविंदोववाए ॥ ३२ ॥ उठाणसुए ॥ ३३ ॥
समुठाणसुए ॥ ३४ ॥ नागपरियावलियाउ ॥ ३५ ॥ निरयावलियाउ ॥ ३६ ॥
कप्पियाउ ॥ ३७ ॥ कप्पवडंसियाउ ॥ ३८ ॥ पुप्फियाउ ॥ ३९ ॥ पुप्फचूलियाउ
॥ ४० ॥ विण्हिदसाउ ॥ ४१ ॥ ए ४१ कालिक सूत्र रात्रि तथा दिवशने पहि

पहोर सझाय नकर
ले तथा छेले पहोरे वांचवा नणवा सझायकरवीशेष ४ पहोर सझाय नकर
वि हवे उत्कालिक सूत्रना नाम कहेछे ॥ दशविकालिक ॥ १ ॥ कप्पियाकप्पियं
॥ २ ॥ चूलकप्पसुयं ॥ ३ ॥ महाकप्पसुयं ॥ ४ ॥ उववाइय ॥ ५ ॥ रायपसेणि॥
॥ ६ ॥ जिवाभिगम ॥ ७ ॥ पणवणा ॥ ८ ॥ महापणवणा ॥ ९ ॥ पम्मायपमा
यं ॥ १० ॥ नंदी ॥ ११ ॥ अनुयोगद्वार ॥ १२ ॥ देवेंद्रस्तव ॥ १३ ॥ तंडु
लवेयालिय ॥ १४ ॥ चंदगविझयं ॥ १५ ॥ सूरप्रज्ञप्ति ॥ १६ ॥ पोरिसीमं
मल ॥ १७ ॥ मंमलप्रवेश ॥ १८ ॥ विद्याचारणविणिछउ ॥ १९ गणिविद्या
॥ २० ॥ झाणविभत्ति ॥ २१ ॥ मरणविभत्ति ॥ २२ ॥ आयविसोहि ॥२३॥
वियरायसुयं ॥ २४ ॥ संलेहणासूत्र ॥ २५ ॥ विहारकप्पो ॥ २६ ॥ चरण
वीसोहि ॥ २७ ॥ आउरपच्चखाण ॥ २८ ॥ महापच्चखाण ॥ २९ दृष्टिवाद
सूत्र ॥ ३० ॥ ए ३० उत्कालिक सूत्र ते ४ अकाल तथा असझाय वर्जिने

आठे पहोर वांचवाजणवा सझाय करवी ॥ एक आवस्यक तद्यतिरिक्तबेथि न्यारुं ए ७२ सूत्रना नाम कह्या आज वर्त्तमानकाले केटला सूत्र नथि ते निविगत ॥ पाक्षिक सूत्रमां उत्कालिक २७ ॥ ने कालिक ३६ सूत्र कह्याछे ॥ तेमां १५ उत्कालिकने ॥ २१ कालिक सूत्र हमणा नथि ॥ उत्कालिक १५ ना नाम ॥ कप्पिया कप्पियं ॥ १ ॥ चुल्लकप्पसुयं ॥२॥ महाकप्पसुयं ॥ ३ ॥ महापन्नवणा ॥ ४ ॥ पमायपमायं ॥ ५ ॥ पोरसिमंमलं ॥ ६ ॥ मंडलपवेसो ॥ ७ ॥ विद्याचारणविणिछउ ॥ ८ ॥ झाणविभत्ति ॥ ९ ॥ मरणविभत्ति ॥ १० ॥ आयवीसोही ॥११॥ संलेहणासुयं ॥१२॥ वियरायसुयं॥१३॥ विहारकप्पो ॥१४॥ चरणविहि ॥१५॥ ए १५ नथि ॥ हवे कालिक २१ ना नाम कहेछे ॥ खुडिया विमाण विभत्ति ॥ १ ॥ महल्लियाविमाणविभत्ति ॥ २ ॥ अंगचूलिया ॥ ३ वंगचूलिया ॥ ४ ॥ विवाहचूलिया ॥ ५ ॥ अरुणोववाए ॥ ६ ॥ वरुणोववा

ए ॥ ७ ॥ गरुलोववाए ॥ ८ ॥ धरणोववाए ॥ ए ॥ वेसमणोववाए ॥ १० ॥
वेलंधरोववाए ॥ ११ ॥ देविंदोववाए ॥ १२ ॥ उठाणसुए ॥ १३ ॥ समुठा
णसुए ॥ १४ ॥ नागपरियावलियाणं ॥ १५ ॥ कप्पियाकप्पियाणं ॥ १६ ॥
आसिविसभावणाणं ॥ १७ ॥ दिठिविसभावणाणं ॥१८॥ चारणभावणाणं ॥
॥ १ए ॥ महासुमिणभावणाणं ॥ २० ॥ तेयग्गिनिसग्गाणं ॥ २१ ॥ ए २१
नथि ॥ अंगप्रविष्टमां १ दृष्टिवाद सूत्र ते पण नथि ॥ सर्वमिलिने ३६ सूत्र
हालनाकालमां नथि पाक्षिक सूत्रनिवृत्तिमां उत्कालिक २८ सूत्रना नाम
नि व्याख्याना अंतमां कह्युंछे के ए २८ अध्ययन यथार्थ कह्यावलिए उप
लक्षण मात्र छे स्यामाटे के हालमां एटला उत्कालिक नथि ॥ वली एज सूत्र
निवृत्तिमां कालिक ३६ सूत्रकह्या छे तेना नामनि व्याख्याने अंते कह्युं छे के
ए ३६ अध्ययनउपलक्षण (छलखावारूप) भूत छे स्यामाटे के हालमां ए

असo ॥ १० ॥ हवे १० उदारिकने आश्रिने असझाय कहेछे ॥ ठाणांगठाणे १० मे ॥ दसविहे उरालिए असझाइए ॥ तेमां प्रथम ॥ अठि केo हाडका नि असझाय ॥ १ ॥ मंसे केo मांसनि असo ॥ २ ॥ सोणिएकेo रुधिरनि असo ॥ ३ ॥ असुइसामंते केo अशुचि विष्ठानजीकमां पडि होय तेनि असo ॥ ४ ॥ सुसाण सामंते केo मशाणनजीक होय तेनि असo ॥ ५ ॥ चंदोवराएकेo चंद्रमांनुं ग्रहण थाय तेनि असo ॥ ६ ॥ सुरोवराएकेo सूर्यनुं ग्रहण थाय तेनि असo ॥ ७ ॥ ए २ असझाय ग्रहण थयाथि मांडिने मुक्त थया पछी बे घडिसुधि जाणवी ॥ पडणे केo मोटो अधिकारि राजा प्रमुखनो मरण थाय तेनिअसo ते आखो दिवश एकअसo ॥८॥ रायवुग्गहेकेo राजा राजाने मांहोमांहि लडाइ संग्राम थातो होय पोताना नगरनि समिपमां ते न

मिटे तिहांसुधि असo ॥ ९ ॥ उवसयस्स अंतो उराळियसरिरगे केo उपा
श्रयमांहि उदारिकपंचेंद्रियनुं शरिर जेटलीवार पड्युंहोय तेटलिवार असo
॥ १० ॥ ए १० उदारिक आश्री कहि ॥ सर्व मिली २० थइ ॥ आषाढशुद
पुर्णिमानि असo ॥ १ ॥ आषाडवद १ नि असo ॥ २ ॥ भाद्रवाशुद पुर्णि
मानि असo ॥ ३ ॥ भाद्रवावद १ नि असo ॥ ४ ॥ कार्त्तिकशुद पुर्णिमानि
असo ॥ ५ ॥ कार्त्तिकवद १ नि असo ॥ ६ ॥ चैत्रशुद पुर्णिमानि असo
॥ ७ ॥ चैत्रवद १ नि असo ॥ ८ ॥ प्रभातनि २ घडिसुधि असo ॥ ९ ॥
मध्यान्हनि २ घडि असo ॥ १० ॥ संध्यासमयनि २ घडि असo ॥ ११ ॥
मध्यरात्रिनि २ घडिसुधि असo ॥ १२ ॥ ए १२ असज्झायठाणांगसूत्रने
चउथे ठाणे तथा छेद सूत्रमां कहिछे ॥ सर्व मिलि विशने बार बत्रिश असज्झाय

थइ ॥ ३२ ॥ ए ३२ असझाय टालि सिध्धांतनि वांचता भणता सझायकरता
आशातना लागे नहि ॥ इति ३२ असझायसमाप्त ॥ इतिसिध्धांतमानंसमाप्तं ॥

॥इतिश्री प्रकरणसंग्रहः संपूर्णं॥

॥ श्लोकः ॥ वंदे सद्गुरुवर्यमेनमधुना लाधाजिसंज्ञं मुदा ।
सद्विद्यार्णवमार्यशीलसरसं सौजन्यरत्नाकरम् ॥
यत्पादार्चनतो जडोप्यलमहो जातोस्मि विद्यांबुधौ ।
तत्तुं शक्तिधरोहमुत्तमपुरश्चंद्राभिधानो मुनिः ॥ १ ॥

श्रीप्रकरणसंग्रह समाप्त.